

नाथूराम प्रेमी मंत्री
भाणिकचन्द्र दि० जनप्रथमालामिति,
हीराबाग, गिरगांव-बम्बई ।



मुद्र—
मितामणि सरवाराभ कुट्टे,
बम्बई, मेव प्रेस सी-हाउस रोड,
बम्बई ।

ग्रन्थकृतां परिचय ।



मूलस्य अर्थात् दिग्म्बरमम्प्रदायकी चार शारायें हैं—नन्दि, सिंह, सेन और दश । इन शारायें भी प्रतिशास्यें हैं, जो गणगच्छादि नामोंमें प्रसिद्ध हैं । नन्दिस्वयं जा कई गणगच्छादि हैं उनमेंसे एक दर्शय गण भी है । त्रिटाक्षसारक कृता महामना नेमिचन्द्र इसी दर्शय गणमें हुए हैं । यह गण कनाटकमें बहुत ही प्रसिद्ध हुआ है और इसमें बहुत बड़े बड़े विद्वान् हुए हैं । इस गणके बीसों विद्वान् 'सिद्धान्त चक्रवर्ती' की पदवीमें विभूषित हुए हैं । आचार्य नेमिचन्द्रको भी यह महती पदवी प्राप्त थी । इनकी गुरुपरम्पराका पता आचार्य गुणनन्दिसे लगता है । गुणनन्दिके शिष्य विबुधगुणनन्दि, विबुधगुणनन्दिक अभय नन्दि और उनका वीरनन्दि । यथा—

बभूय भयाम्बुजपद्मचन्द्रो पतिर्मुनीनां गणभूत्समान ।

सद्व्रणीदग्निगणाद्यगण्यो गुणाकर भीगुणनन्दिनामा ॥

गुणग्रामाम्भाधे सुकृतयसतेमित्रमहसा

मसाध्य यस्यार्सात्र किमपि मदीदासितुरिव ।

स तच्छिष्ट्या ज्येष्ठ गिगिरकरसौम्य समभवत्

प्रविरयाता नाम्ना विबुधगुणनन्दीति भुवने ॥ २ ॥

सनियननुतपाद् भास्तमिष्याप्रयाद्

सकलगुणसमृद्धस्तस्य गिष्य प्रसिद्ध ।

अभवद्भयनन्दी जैनधर्माभिनन्दी

स्वमहिमजितसिन्धुर्भव्यलकैकचन्द्रो ॥ ३ ॥

भयाम्भोजविधाधनाद्यतमतेभास्यत्समानत्विय

गिष्यस्तस्य गुणाकरस्य सुधिय भीवीरनन्दीत्यभूत् ।

स्वाधीनाखिलवाङ्मयस्य भुवनप्रख्यातकीर्त मता

सस सुद्वयजयन्त यस्य जयिना धाद्य कुतर्काङ्गना ॥

—दन्तप्रनव/११

धीरिण्येन विपद्यते जल्पसुद्वेण प्रयत्नं विशिरसेण ।

इत्येव चरितार्त्तम् । सुसूयिषा नेमिचंद्रण ॥ ६४ ॥

—सधिंगर ।

बमकाटकी ३९६ वीं गाथमें नेमिचंद्र स्वामी एक कनकनन्दि नामक आचार्यका भी उल्लेख करते हैं —

यत्र ईदृशं विगुरुणा पासे शोउज मयलसिद्धंते ।

सिरिकणयणं विगुरुणा मसद्वरणे समुदितं ॥

अथात्—भीकनकनन्दि गुप्त इन्द्रनन्दि गुरुके पास सारे सिद्धान्तोंका मुनकर सम्बन्धानका बयन किया ।

इन सब गाथाओंमें यह भी मान्य होता है कि अभयनन्दि, इन्द्रनन्दि, वीरनन्दि, कनकनन्दि और नेमिचंद्र ये सब प्राय एक ही समयमें हुए हैं । अब हम यह देखना चाहिए कि इनका समय क्या है ।

सुप्रसिद्ध एकीभाव स्तोत्रक कर्ता महाकवि वादिराजन अपना 'पार्ष्णिनाथ काव्य' शक संवत् ९४७ में सम्पूज किया है* । इसके प्रारंभमें उन्होंने अपनेसे पूर्वके अनेक प्रायकताओंका स्तवन करत हुए लिखा है —

चन्द्रमभाभिसम्बद्धा रत्नपुष्पा मनमियम् ।

सुमुहूर्त्तनीय म। धसे भारती धीरनन्दिन ॥ ३० ॥

इस श्लोकमें महाकवि वीरनन्दिचन्द्र चन्द्रमभचरितका स्पष्ट उल्लेख है । इससे मान्य होता है कि चन्द्रमभकाव्य शक संवत् ९४७ से पहले बन चुका था और इस लिए वीरनन्दि और नेमिचंद्र आदिका समय भी शक संवत् ९४७ से पहले मानना होगा ।

शास्त्रान्देन गवाधिराधगणने संवन्तरे बोधने
माने कार्तिबनमि बुद्धिमहिते पुत्रे तृतीयान्तिने ।
सिद्ध धानि अयादिके श्रमणी जैना कथेयं मदा
निगमि गमिना मनी भवतु व कल्याणनिश्रमय ॥

ये ' चामुण्डराय ' मंगलनाथ राजा रावमण्डक प्रधानमंत्री और सना प्रति थे । रावमण्डक भाई स्वयं मंगलराजने शक संवत् ९०६ से ९२१ तक राज्य किया है और उसके बाद रावमण्डक का समय प्रारंभ होता है । अर्थात् चामुण्डराय शककी १० वीं शताब्दिके प्रारंभमें मौजूद थे । यह समय बनर्डीभाषाके ' चामुण्डरायपुराण ' या ' त्रिपटिलभगमहापुराण चरित ' नामक ग्रन्थ और भी अच्छी तरह निहित हो जाता है । यह ग्रन्थ स्वयं चामुण्डरायका बनाया हुआ है और शक संवत् ९०० में—ईश्वरनामक भवसरमें—यह समाप्त हुआ है । * इसके मिश्राय ' रघु ' नामक प्रसिद्ध कविने अपने ' पुराणतिलक ' नामक कनहा ग्रन्थमें—जो शक संवत् ९१५ में बनकर पूरा हुआ है—अपने ऊपर चामुण्डरायकी विद्वय कृपा हानका उद्धरण किया है + । इन सब प्रमाणोंसे अच्छी तरह सिद्ध हो जाता है कि शककी दसवीं शताब्दिके प्रारंभमें नेमिचन्द्र स्वामी हो गये हैं और इसमें शक संवत् ९१७ में वादिसाजपुरी द्वारा धीरजन्दिका उद्धरण हाना भी सगत तथा निश्चय सिद्ध हो जाता है ।

नेमिचन्द्रभारमीके इस समयक विषयमें कई राजनाको सादह है । सन्दर्भका एक कारण यह है कि ' प्रमेयकमलमातण्ड ' म गोम्मत सारकी ' विगहसदिमावग्णा ' आदि गाथा उद्धृत हुई है और इन ग्रन्थके कला प्रमाचन्द्र शकसंवत् ७०० क लगभग हुए हैं । अत एव गोम्मत सारके कर्ता शक संवत् ९०० क लगभग नहीं किन्तु ७०० से पहले हान चाहिये । पर यह सन्दर्भ व्यर्थ है । प्रमेयकमलमार्तण्डमें जो गाथा उद्धृत हुई है, वह गोम्मतसारकी नहीं, किन्तु गोम्मतसार जिन विद्वान्त ग्रन्थम संश्लेषित किया गया है, उसकी है । गोम्मतसार ' जयध्वज विद्वान्त '

* इसके लिए देखा मि राजकी इतिहासम लखनऊके नामक भौगर्जी ग्रन्थका भूमिका ।

+ दया कजाटक कविचरित में रजवा कथान्त ।

परमे मारुप संप्रह किया हुआ ग्रन्थ है और इसी ग्रिण इन स्वयं प्रत्य-
कताने ग्रन्थान्तम 'गोम्मट-मगत-ग्रन्थ' कहा है । गोम्मटमागडी पत्नी और
भी कई गाथाय उममे बहुत पुरान ग्रन्थामे * (ओम हि राजशानिह और
मगवती आराधनाम) मिलती है, परन्तु इनमे गोम्मटमार मगवती आरा-
धना आदिसे पहले सिद्ध नहीं हो सकता । इसमे कवन ग्रन्थ मान्य होना
है कि गोम्मटसारम प्रार्थन ग्रन्थोंसे बहुतनी गाथाय संप्रह की गई है ।
पत्नी दशाम नेमिन्द्रका समय प्रमाण्डमे § पहले नहीं ठहर सकता ।

सन्देहका दूसरा कारण यह है कि 'वाचस्पतिवर्ति' नामक
संस्कृत ग्रन्थम लिखा है कि कल्कि सन् ६०० में चामुण्डराय मर्जने
गोम्मट देवकी प्रतिष्ठा कराई थी + और कुछ पण्डित महाशयाने विना

* देखो चैतहितैरी भाग १३ पृष्ठ ४१०-११ ।

§ प्रमेयकलमार्तगकी प्रशस्तिमें लिखा है कि इस ग्रन्थको धारानिबर्मा
प्रभाचन्द्र पण्डितने भोनेदेवक राज्यमें बनाया । इस पर हमार कुछ पण्डित महा-
शयाने प्रभाचन्द्रको विक्रमकी म्यारहवा शताब्दिका विद्वान् समन लिया है ।
क्योंकि सुप्रसिद्ध राजा भोजका निश्चय किया हुआ समय था है । परन्तु उद्दे
यह मान्य नहीं है कि धाराम कविद्वयग्रन्थ भाषके पहले शककी आठवीं शता-
ब्दिके प्रारंभम एक और भाजद्व नामका राजा हा गया है । उनाक समयमें
प्रभाचन्द्रका प्रमेयकलमातग लिखा गया है । हरिवशपुराण शक सन् ७०५ में
समाप्त हुआ है और आदिपुराण भी लगभग इसी मन्थयका ग्रन्थ है । पर इन दोनों
ही ग्रन्थोंमें प्रभाचन्द्रका स्मरण किया गया है और इस लिए प्रभाचन्द्र कुमार
भाजके समयके नहीं किन्तु प्रथम भाजके समयके शक सन् ७००के लगभगके
विद्वान् हैं और इस कारण नमिचन्द्रको उनम २०० वर्ष बाद मानना चाहिए ।

+ कल्पयन्द् पशुनाम्ये विनुगविभवर्मवत्पर मासि चैत्र

पंचम्यां पुरुषने त्तिमणिाद्वम वृभन्म मुधाग ।

सौभारये मन्मनाम्र प्रकृतिभगण मुप्राप्ता चकार

श्रीमच्चामुण्डराजो बन्मुल्लगर गोम्मटाप्रतिशाम् ॥

समय-बते कवि संवत् और शक संवत्को एक ही मान लिया है। परन्तु वास्तवमें कवि संवत् दूसरा है और शक संवत् दूसरा है। हरि वंशपुराणादि ग्रन्थोंके मतानुसार शक राजाके ३९४ वर्ष ७ महीने बाद कवि राजा हुआ है। अतएव कवि संवत् ६०० को शक संवत् १९४ समझना चाहिए और इसी समयमें गाम्मटशकी प्रतिष्ठा हुई, एसा मानना चाहिए। परन्तु इससे चामुण्डरायका समय लगभग १०० वर्ष पूर्व उल्टा जायगा, या इतिहाससे बहुत विरुद्ध जाता है। ११वीं दशम या १२वीं शताब्दी के आरम्भ में एम ए की कल्पनानुसार यह मान लेना चाहिए कि बाहुबलिचरितके 'बल्यचन्द्र पञ्चशतारथ' का उक्त कालिकी उगी इत्यादि है, ६०० संवत् नहीं, या कवि संवत् ६०० को कालिका 'सु' सु संवत् मान लेना चाहिए जो कि उसके जन्मसे ७२ वर्ष पीछे सुक्त होता है। हरिवंशपुराणमें उसकी आयु ७२ वर्षकी बतलाई गई है। सु' सु संवत् माननेसे गाम्मटशकी प्रतिष्ठाका समय शक संवत् ९२२ क लगभग आ जायगा जो कि संभव है।

इस तरह ये दोनों ही संवत् दूर हो जाते हैं और नेमिचन्द्र तथा चामुण्डरायका समय शककी दसवीं शताब्दिका प्रारम्भ निश्चित हो जाता है।

जैनसाहित्यमें चामुण्डरायकी बहुत बड़ी प्रसिद्धि है। ये मातृशत्रिय वैश्य कुलमें उत्पन्न हुए थे। जैसा कि पूर्वमें कहा जा चुका है, ये गंग वंशीय महाराज राघवमण्डके प्रधान मंत्री और सेनापति थे। अश्वमेध-गुरुकी जगन्मिच्छ बाहुबलि या गाम्मटशकीकी प्रतिमा इन्हींने प्रतिष्ठित कराई थी। नमिनाथ भगवानकी इन्द्रनील मणिकी प्रतिमा—जो एक हाथ ऊँची कही जाती है—उन्हींकी बनवाई गई है। गाम्मटशास्रमें इस प्रतिमाका उद्गम है। ये बड़े ही उदार थे। इनकी उदारतासे प्रसन्न होकर रामसे न इतना गपकी पड़ी थी। इनका एक नाम

' द्रव्यमण्ड ' नामक ग्रन्थ भी आचार्ये मणिन्द्रेका बनाया हुआ माना जाता है, परन्तु जैसा कि बाबू लालहरिचरण त्रिपाठी ने प्रकट किया है, जान पड़ता है कि द्रव्यमण्डक कता इत्यम भिन्न का दूगरे ही आचार्य थे । क्याकि द्रव्यमण्डक कतान मन्मथमण्ड भर्तृमि प्रमादका भी बनान दिया है और अविगतक पाण तथा कयाणक का भेद मण्डक दिये हैं । परन्तु गोम्मटमण्डक कतान प्रमादका भाषाणक भर्तृमि नहीं माना और अविगतक दूगरे ही प्रकाशके बारण तथा कयाणके पथीग भेद हीका दिये है x यदि दानाके कर्ता एक हों, ता उनक कतानम य विभिन्नता न हाती ।

त्रिलोकसार-व्याख्याक कता श्रीमन्मथमण्ड त्रैविद्यदेव है जैसा कि टीकाकी उपान्त्य गाथासे मान्म हाता है । आचार्य नमिन्द्रेके ये प्रधान शिष्य मान्म होते है । मूळ ग्रन्थम भी इनकी बनाई हुई का गाथाये सम्मिलित हैं और व मूळकर्ताकी आज्ञानुमार शामिल की गा है । गोम्मटसारमें भी इनकी कई गाथाये सम्ह की गई हैं, जो ससूत टीकाकी उत्थानिकासे मान्म होती हैं । ससूत गयरूप भवगामार भी जा कि लक्ष्मिसारम शामिल है-इही माधवचन्द्रका बनाया हुआ है । त्रैविद्यदेव इनकी पदवी थी । इससे मान्म होता है, कि ये भी अच्छे विद्वान् थे । इनके बनाये हुए और किसी ग्रन्थका हमें परिचय नहीं है ।

चन्द्रावाही बम्बई ।	}	नाथूराम मेरी ।
वैशाख सुक १३		
स० १९७५ वि ।		

* मिच्छताविरदपमादजोगकाहादभो व विष्णया ।
 पण पण पणह तिय चदु कममो भेदा दु पुक्खस्स ॥ ३० ॥
 —द्रव्यमण्ड ।

x मिच्छतमविरमय कयायजागा य आम्वा होंति ।
 पणवारस उणवास पणगरमा होंति न भवा ॥ ७८६ ॥
 —कमनाण ।



श्रीनेमिचंद्राय नमः ।

श्रीमन्नेमिचंद्राचार्यविरचित

त्रिलोकसारः ।

(टीकासहित)



श्रीमन्माधवचंद्राचार्यविरचिता सस्कृतटीका ।

त्रिभुवनचंद्रशिनेंद्रं भक्तयानत्य त्रिलोकसारस्य ।

वृत्तिरिवं किंचिन्नप्रबोधनाय प्रकाश्यते विधिना ॥ १ ॥

जीयाद्कलकापस्सुरिगुणभूरितुल्यवृषधारी ।

अनवरतविनताजिनमताधिरोधिषादिवशो जगति ॥ २ ॥

यस्माद्दक्षिणबुधानां विस्मयहृद्भूत् प्रवृत्तिरिह यस्य ।

तच्छासत्रमपनुदतादनप घनकुमततिमिरनिवहमत ॥ ३ ॥

श्रीमद्प्रतिहताप्रतिमनि प्रतिपक्षानि करण—नि जमकेवलज्ञानतृतीयलाघ
नाबलकितसकल्पद्वार्येण संरक्षितामरेन्द्रनोद्रमुनीन्द्रादिसार्थेन तीर्थंकरपुण्य
महिमावर्णभक्तभूतसमवसरणप्रतिशार्यातिशयादिबहिरंगलभ्मी विशापेण
निमूर्लीकृताश्रदापेण सबागसमालिं गितानतचतुष्टयादिगुणगणात्मकांत
रगलभ्मीप्रकण्ठितपरमा मप्रभावेण श्रीवधमानताथकरणमदन्न सर्वभाषा
स्वभावदियभाषाभाषताथ समर्थिसमद्गोतमस्वामिना विष्णु देवापरमेश्वरेण

श्रीमन्नेमिचंद्राय नमः ।
श्रीमन्नेमिचंद्राय नमः ।
श्रीमन्नेमिचंद्राय नमः ।

भूतकवलिना विरचितशब्दरचनाविशेषं तदपगतविज्ञानमपह्नवदर्म-
गुम्पयक्रमेण युक्तिग्नयया प्रवर्तमानमपिनष्टमृगाद्यन्वेन केवलज्ञानमन्त्र-
करणानुयोगनामान परमागमं कठानुगोथेन मीरिप्य निरूपयितुं कामो मगवत्के-
मिचदसैद्धातदेवधतुरनुयोगचतुर्दशितारगध्यामुडरायप्रतिशोपनयाजेन-
यत्रिनेयजनप्रतिशोधनार्थं त्रिलोकमारनामानं ग्रंथमारभयन् तदादो निर्दिष्ट-
शास्त्रपरिसिमाभ्यादिकं कठकुठमवठीस्य विनिष्पेष्टदेवनाममिष्टीनि,-

चलगोविन्दसिंहामणिकिरणकलावरुणचरणणहकिरण
विमलधरणेमिचद् तिहुवणचद्र णमसामि ॥ १ ॥

चलगोविन्दसिंहामणिकिरणकलावरुणचरणणहकिरणम् ।

विमलतरनेमिचद् त्रिभुवनचद् नमम्यामि ॥ १ ॥

अस्यार्थं कथ्यते । णमसामि नमम्यामि नमस्करोमि । क । विम-
लधरणेमिचद् विमलतरनेमिचद्, विगत मल द्रव्यमात्रात्मकं अन्तर्गुण-
घातिकर्म देहघातवो वा यन्मादसौ विमल स्वयं विगुद्धेरुदयस्य परमका-
ष्ठामधिष्ठितं सन्नन्येषामप्यात्माभिताना कर्ममलक्षालनहेतुं वादतिशयेन
विमलो विमलतर । अनेनापायातिशय प्रकाशित । नेमिचदो द्वाविंश-
तीर्थकरपरमदेव विमलतरनेमिचदस्त । कथमूत । 'त्रिभुवनचद्' त्रिभुव-
नानां चद् इव चद् प्रकाशकस्त त्रिलोकानां स्वरूपोपदेगक तत्स्वरूपपरिच्छे-
दक वेत्यर्थ । एतेन वागतिशय प्राप्त्यतिशयो वा प्रतिपादित । अवस-
रोचितं वैतद्विशेषण । ज्ञयाणां भुवनानां स्वरूपनिरूपणे बद्ध यवसायस्या-
चार्यस्य शब्दज्योतिषा ज्ञानज्योतिषा च तत्स्वरूपप्रकाशकस्यैव नमस्का-
रकरणं समुचितमेवेति । पुनरपि कथमूत । 'चलगोविन्दसिंहामणि-
किरणकलावरुणचरणणहकिरण' निजपादपद्मवन्तपद्मपद्मनामचूहाप्रसन्न
पद्मरागमणिमरीचिनालशालातपमजरीर्षिजतिपद्कजनसमरीचिपुजमित्यथ ।
अनेन मगवत पुजातिशय शेषातिशयाविनाभावी निवेदित । अत्रो

पयागी श्लोक । “अपायप्रतिवाङ्मूजा विहारात्पायिका तनु- प्रवृत्तय इति
रयाता जिनस्यातिशया इमे ॥” । अपरा नमस्यामि नमामि । क ।
विमलतरनेमिचंद्र, नेमिध्वजपारा नेमिरिव नेमि धर्मरथवर्तकत्वात् । चंद्र
यत्पद्मादयाति भन्यगननयनमनासीति चंद्र इद्रापसभविरूपातिशयसपन्न
इत्यथ । नेमिध्वजो चंद्रश्च नेमिचंद्र विमलतरध्वजो नेमिचंद्रश्च विमल
तर्गनेमिचंद्र । अथवा यथावस्थितमर्थं नयति परिष्ठिनसीति नेमिर्षोध
विगने मत्प्रज्ञान यस्माद्सौ विमल अतिगयेन विमलो विमलतर विमलत
रध्वजो नेमिश्च विमलतरनेमि सफलविमलक्षेपज्ञानमिति यावत् तेनोपल
भितध्वजो विमलतरनेमिचंद्र । अथवा विमलतरा रत्नरथपवित्रात्मानस्तेष्व
नमयो नक्षत्राणि तेषां चंद्र इव चंद्र स्वामी सं विमलतरनेमिचंद्रमंतिमतीर्थ
करस्यामिने चतुर्विंशतितीथकर समुदाय वेत्यथ । किं विंशतिं । त्रिभुवनचंद्र ।
त्रिभुवनशब्देनात्र त्रिभुवनस्था विनेया ग्राह्या तेषां चंद्र इव चंद्र अज्ञानत
माविनाशकस्तं । भूय किंभूत । ‘बल-किरण’ बल जवूर्द्धापरावर्तनरक्षणं शस्त्र
प्रतीक्षादिषु देशसैन्यं अतिमनोरंरं वा वियते अस्येति बल । अत्रोपयोगी
श्लोक । “बल शक्तिर्बल सैन्यं बल स्यौल्यं बलो बल । बल रूप बलो देव्या बल
काको बली बलः ॥” । गं स्वर्गं विदति पालयतीति गोविंदो देवेन्द्रं बलध्वजो गो
विंदश्च बलगोविंद तस्य शिखेत्यादि शब्दार्थं सुबोधं । भक्तिभरविनतशतमस
प्रमुखनिशिललेखित्वाणिसमूहमात्राकृणीकृतचरणनराकिरणमिति तात्पर्यं । अथवा । जमसामि । क । ‘विमलयरणोमिचंद्र’ पचर्विंशतिमन्तरहितम-
मवत्वसमन्वितत्वादिगुणज्ञानसमद्धत्वाच्चिरतिचारचारुचरित्रपवित्रीभूतत्वाद्वा
विमलतरं स ध्वजो नेमिचंद्राचायश्च विमलतरनेमिचंद्रस्तं नमस्यामीति
चामुहाराय स्वगुणमस्कारपूर्वकं शास्त्रमिदं प्रारभते । कथंभूतं सं । त्रिभुवनचंद्र
चंद्र इव चंद्रो धमाभूतस्यदित्वान् । अथवा चंद्र कांचन सर्वजनैरादेयत्वात् ।
त्रिभुवनानां चंद्रस्त्रिभुवनचंद्रस्तं । पुनरपि कथंभूतं । बल किरण बल
द्रासप्ततिनियोगव्रतनल एण इत्यादिकं वा अस्येति बलध्वजमुहारायं गोपुष्पी

विंदति पालयतीति गोविंदि गगमद्द्वय बलभ गोविंदश्च ब्रह्मोविंदी तथा
शिक्षेयादि पूर्ववत् ॥ १ ॥

अथ प्रथमद्वितीयगाथाद्वयकृतचेयत्रेयालयनमस्कारकरणेन नवदेवता-
नमस्कार कुर्वन् ग्रथम्य पञ्चाङ्गिकार सूत्रयन्नाह,—

भवणाञ्चिंतरजोइसविमाणणरतिरियलोयजिणभवणे ।
सव्वामरिंदणरवइसपूजियवाटिए वडे ॥ २ ॥

भवनन्यतरज्योतिर्विमाननरतिर्यन्त्रोक्कजिनभवनानि ।

सर्वामरेंद्रनरपतिसपूजितवदितानि वडे ॥ २ ॥

भवण । भवनन्यतरज्योतिर्विमाननरतिर्यन्त्रोक्कजिनभवनानि सर्वामरेंद्र-
नरपतिसपूजितवदितानि वडे ॥ २ ॥

अथ तानि जिनभवनानि कुत्रेत्याशङ्कयामाह,—

सञ्वागासमणत तस्स य बहुमज्झदेसमागमिह ।
लोगोसखपदेसो जगसेट्ठियणप्पमाणो हु ॥ ३ ॥

सर्वाकाशमनत तस्य च बहुमध्यदेशमागे ।

लोकोऽमस्यप्रदेशो जगच्छ्रेणीवनप्रमाणो हि ॥ ३ ॥

सख्य । सर्वाकाशमनत तस्य च बहुमध्यदेशमागे, बहव आतिशयिता रचनी
कृता असख्याता वाकाशस्य मध्यदेशा यस्य स बहुमध्यदेश स चासौ
भागश्च खडा तस्मिन् बहुमध्यदेशमागे । अथवा बहव अणो गोस्तनाकारा
आकाशस्य मध्यदेशा मध्यदेशे यस्य स तथोक्तस्तास्मिन् । लोकोऽस्यस्य
प्रदेश स च जगच्छ्रेणीवनप्रमाण सत्तु ॥ ३ ॥

अथ लोकविप्रतिपत्तिनिरासार्थमाह,—

लोगो अकिट्ठिमो रल्लु अणाइणिहणो सहावणिञ्चत्तो ।
जीवाजीवेहिं फुटो सञ्वागासवयवो णिच्चो ॥ ४ ॥

लोक अदृशिम सत्त्वं अनादिनिधन स्वभावनिर्वृत ।

जीवाजीवि स्फुट सर्वाकाशावयव नित्य ॥ ४ ॥

लगात् । अधिकारागतस्य लोकपदस्य पुनरुपादानं लोकमनूय दूषणार्थं ।
लोकोस्तीति । अनेन विशेषणेन शून्यवादनिराकृति कृता । अदृशिम सत्त्वं,
अनेनेश्वरकर्तृकत्वं निराकृतम् । अनादिनिधन । अनेन सृष्टिसंहारनिराकरणं ।
स्वभावनिर्वृत । अनेन परमाण्वारोपनानिराकृति । जीवाजीवि स्फुट
अनेन मायावादिनिराकरण । सषाकाशावयव । अनेन अलोकामाववादा
पहार । नित्य । अनेन क्षणिकमतनिरास । एतावता कथनेन लोकव्यत
इति लोक इति पदद्वयसमवायस्य लोकत्वमुक्तम् ॥ ४ ॥

इदानीं तदाधारस्याकाशस्य लोकत्वमुच्यते,—

धम्माधम्मगासा गदिरागदि जीवपोग्गलाण च ।

जावत्ताव्हल्लोगो आयासमदो परमणत ॥ ५ ॥

धर्माधमाकाशा गनिरागनि जीवपुद्गलयो च ।

यावत्ताव्हल्लोक आकाश अत परमनतम् ॥ ५ ॥

धम्मा । धर्माधर्माकाशा गतिरागतिजीवपुद्गलयो चकारात् काटाणवध
यावत्ताकाशमभिव्याप्य वर्तते तावत्ताकाश लोक, अत परमाकाशमनन्तं न
संरयात् इति ॥ ५ ॥

अथ परपरिकल्पितलोकसैस्थाननिराकरणार्थमाह,—

उम्मियदलेक्कमुरवज्जसचयसण्णिहो हवे लोगो ।

अद्दुदयो मुरवसमो चोद्दसरज्जुदओ सध्वो ॥ ६ ॥

उद्भूतदलेकमुरजध्वजसचयसन्निभो भवेत् लोक ।

अर्धादय मुरजसम चतुर्दशरज्जुदय सर्व ॥ ६ ॥

उम्मिय । उद्भाभूतदलमुरजैकमुरजसन्निभ । अत्र शून्यतानिराकरणार्थ
ध्वजसचयसन्निभा भवेत् लोक । अर्धमुरजोदय एकमुरजादयसम मितित्वा
सर्वलोकश्चतुर्दशरज्जुदय ॥ ६ ॥

त्रगमन्त्रिमत्तमागा १११ मन्त्रीवि फलछेदान् ।

होदि अमेनेत्तदिमत्तमागविं इगुलाण हर्षी ॥ ७ ॥

त्रगमेनिगामभाग १११ मेनिगि पन्नाउत्तव ।

माने असत्तं गममागं १११ मं हति ॥ ७ ॥

जग । अद्यमेनिगामभाग १११ मन्त्रीवि फलछेदान् । त्रगमेनिगामभाग

१८-५२-गममभाग १११ । अगिगि १११ । पन्ना १११ उत्तव

५ अमस्येय भाग २ अमिनदीइगुलाणी पन्नाहति अति ॥ ७ ॥

अथ बुद्धेगुत्तवित्तवयमाह,—

पल्लिदिमेत्तपत्ताणणोपणहर्षीण अगुलं मूर्द्ध ।

तत्तयग्गघणा कममो पत्तरघणागुल समस्सत्तो ॥ ८ ॥

पल्लिदिमेत्तपत्ताणणोपणहर्षीण अगुलं मूर्द्ध ।

तत्तयग्गघनी कममो पत्तरघणागुले समस्सत्ते ॥ ८ ॥

पल्ल । पल्ल १६ छेद ४ मात्तपन्त्यानी अन्त्येन्त्यान्त्या मूर्द्धगुत्त १५

तत्तयग्गघनी पत्तर ४२ घणागुले ४२×६५ कममो समस्सत्ते ॥ ८ ॥

अथ मानप्रतीत्यर्थं प्रक्रियामाह,—

माण द्विविह लोकिग लोगुत्तरमेत्थ लोकिग छद्धा ।

माणुम्माणोमाण गणिपत्तितत्तपत्तित्तिपमाणमिदि ॥ ९ ॥

माण द्विविध लौकिक लोकोत्तरमत्र लौकिक षोण ।

मानोन्मानावमान गणिप्रतिमानप्रतिप्रमाणमिति ॥ ९ ॥

माण । मान द्विविध लौकिक लोकोत्तरमिति । अत्र लौकिक षोण

मानोन्मानावमानगणिप्रतिमानप्रतिमानमिति ॥ ९ ॥

एतान् वृष्णां यथासख्यं दृष्टं तमुत्तेनोपपातिमाह —

पत्थतुल्युल्यएगप्पहुदी गुजातुरगमोहादी ।

दृष्व सित्त कालो भावो लोकोत्तर चतुर्धा ॥ १० ॥

प्रत्यनुजानुत्तैकप्रभृति गुंजातुरगमूल्यादि ।

द्रव्य क्षेत्र कालो भावो लोकोत्तर चतुर्धा ॥ १० ॥

पत्थ । प्रत्यप्रभृति तुजाप्रभृति पुत्रप्रभृति एकाप्रभृति गुंजादि तुरग-
मूल्यादीनि । इतो लोकोत्तरमानभेद उच्यते । द्रव्य क्षेत्र कालो भाव इति
लोकोत्तरं चतुर्धा ॥ १० ॥

अथ तेषां चतुर्णां यथासख्येन जस्योत्कृष्टप्रतीत्यर्थं गणचतुष्टयमाह —

परमाणु सखलदृष्व एगपदेशो य सन्धमागास ।

इगिसमय सखकालो सुहुमाणिगोदेशु पुण्णेषु ॥ ११ ॥

परमाणु सखलद्रव्य एकप्रदेश च सर्वमाकाशम् ।

एकसमय सर्वकाल सन्धमानिगोदेशु अपूर्णेषु ॥ ११ ॥

परमाणु । परमाणु सखलद्रव्य एकप्रदेश सर्वमाकाशं एकसमय सर्व
काल सन्धमानिगोदेशु अपूर्णेषु ॥ ११ ॥

णाण विणेषु य कमा अवर वर मज्झिम अणेषविह ।

दृष्व सुविह मखा उवमपमा उवम अट्टविह ॥ १२ ॥

ज्ञान विनेषु च वमान् अरर वर मध्यम अनेकविधम् ।

द्रव्य द्विविध सख्या उपमाप्रमा उपममष्टविधम् ॥ १२ ॥

णाण । जिनेषु च ज्ञान वमान्जपन्यमुत्कृष्ट मध्यम अनेकविधं । तथादि
द्रव्य द्विविध सख्याप्रमाणमुपमाप्रमाणमिति । तत्रोपमाप्रमाणमष्टविधं ।
अन्ववक्तव्यमात्रं वक्तव्यमिति । यापन यथाक्ताद्गोत्रेण निदना मुक्त्वा उपमाभेद
उच्यते उपमा अष्टविधमिति । १२ ॥

वाणविन्दुकात् वाणविन्दुकात् ७१ तन्मि यन्मि,—

तं उवदि मणिम्मामो संगेज्जममग्गतमिदि तिदिह ।
मगंतिहद्दु तिदिहं परित्तनुत्तंति दुग्गयं ॥ १७ ॥

ता उवदि मणिम्मामो संगेज्जममग्गतमिदि तिदिह ।

मग्गयं अग्गयं तिदिहं परित्तनुत्तंति दुग्गयं ॥ १८ ॥

त उवदि । तन्मि मणिम्मामो इति । अग्गयं अग्गयं मग्गयं
अग्गयं अग्गयं तिदिहं । मग्गयं अग्गयं तिदिहं परित्तनुत्तंति दुग्गयं
इति ॥ १९ ॥

ते अवर मज्झ जेट्ठु तिदिहा संगेज्जजाणणमिदि ।
अणवत्थ सल्लागा पट्टिमहासटा चाग्गि कुट्टाणि ॥ २० ॥

तानि अवर मग्गयं जेट्ठु तिदिहा मग्गयं अग्गयं तिदिह ।

अणवत्थ सल्लागा पट्टिमहासटा चाग्गि कुट्टाणि ॥ २१ ॥

ते अवर । तानि सल्लागा पट्टिमहासटा चाग्गि कुट्टाणि ।
अणवत्थ सल्लागा पट्टिमहासटा चाग्गि कुट्टाणि ।
अणवत्थ सल्लागा पट्टिमहासटा चाग्गि कुट्टाणि ।

अणवत्थ सल्लागा पट्टिमहासटा चाग्गि कुट्टाणि ।

जोपणलक्ख वासो महस्समुस्सेहमेत्थ मग्गयं ।

दुप्पहुदिमरिमवेहिं अणवत्था पूरपेदन्वा ॥ २२ ॥

जोपणलक्ख वासो महस्समुस्सेहमेत्थ मग्गयं ।

द्विमग्गयं अणवत्था पूरपेदन्वा ॥ २३ ॥

जोपण । यान्तत्थ वासो महस्समुस्सेहमेत्थ मग्गयं । अणवत्था
द्विमग्गयं अणवत्था पूरपेदन्वा ॥ २४ ॥

द्विभूतिभिर्गिति किमित्यादीकामपनुद्धार,—

एयादीया गणणा धीयादीया हयति संरेज्जा ।

तीयादीणं गियमा कदित्ति सण्णा मुणेद्वया ॥१६॥

एयादीका गणना द्वयादिका भवति सम्भ्याता ।

ध्यादीना नियमात् कृतिरिति सज्ञा मनया ॥ १६ ॥

एया । एयादिका गणना द्वयादिका संरयता भवति ध्यादीना नियमात् कृतिरिति संज्ञा ज्ञातव्या । यस्य कृतौ मूलमपनीय शेषे वर्गिति वर्धिति सा कृतिरिति । एकस्य द्वयोश्च कृतिरङ्गाभावात् एकस्य नो कृतित्वं द्वयोर वनव्यमिति कृतित्वं ध्यादीनामेव तन्क्षणयुक्तत्वात् कृतित्वं युक्तम् ॥१६॥

अधोनयोजनलक्षव्यासकुट्टस्य समस्तभेदप्रकृतशापनार्थमाह,—

वासा तिगुणो परिधि वासचतुर्धाहदो दु सेतफल ।

सेतफल येहगुण खादफल होइ सध्वत्थ ॥ १७ ॥

व्यासत्रिगुण परिधि ध्यामचतुर्धाहदस्तु क्षेत्रफलम् ।

क्षेत्रफल वेधगुण खानफल भवति सर्वत्र ॥ १७ ॥

वासा । व्यासत्रिगुण परिधि, व्यासचतुर्धाहदस्तु क्षेत्रफलं, क्षेत्रफलं वेधगुणितं खातफल भवति सर्वत्र कुट्टेषु ॥ १ ल व्यास $\times ३ = ३$ ल परिधि । $\frac{३}{२}$ ल $\times ३$ ल क्षेत्रफल । $३ \times \frac{३}{२} \times १०००$ घे = खातफल ॥ अथ व्यासत्रिगुण इत्यस्य वासना कथ्यते । योजनलक्षव्यासवृत्त अर्धाकृत्य तदूर्ध्वं पुनरप्यूर्ध्वार्धवृत्तस्य मध्यमत्तदद्वयमेलने अर्धं स्यात् । पुन परिधिं षष्ठांशं गत्वार्धाकृत्य एतदूर्ध्वद्वयं मध्येऽर्धार्धाकृत्य मध्यमत्तदद्वयमेलने अपरेऽर्धार्धं स्यात् । पुनरपि तथा षष्ठांशं गत्वा तथाकृते षट्धर्धानि भवति । तेषां षण्णांमेलने $\frac{३}{२}$ ल अप इते च व्यासत्रिगुण इत्यस्य वासना भवति ॥ इदानीं व्यासचतुर्धाहद इ यस्य वासना निरूप्यते । शङ्कुर्जाजाततद्व्यासकट १ ल ऊञ्जादध मध्य

पर्यत उित्वा विरलव्यायतनिकोण सस्याप्य पुनरपि मुक्तभूमिसमासार्ध
मध्यफलमिति मयफल साधयित्वा ३ ल तत्पर्यतमूर्ध्वादघ उित्वा खंड-
द्वये चायतचतुरस्र यथाभवति तथा क्रमहीनपार्श्वद्वये स्थापिते क्षेत्रस्य
व्यासचतुर्थाहतत्व भवति ॥ १७ ॥

स्थूलक्षेत्रफलप्रमाणयोजनस्य व्यवहारयोजनादिकं कुर्वन्नाह,—

स्थूलफल व्यवहार जोयणमपि सरिसव च कादव्य ।
चउरस्ससरिसवा ते णवसोडस भाजिदा बह ॥ १८ ॥

स्थूलफल व्यवहार योजनमपि सर्पपश्च कर्तव्य ।

चतुरस्रसर्पपश्च नवसोडश भाजिता वृत्तम् ॥ १८ ॥

स्थूलफल । स्थूलफलं $३ \times ३ \times १०००$ एतत् । एकप्रमाणयोजनस्य पचशत
व्यवहारयोजनानि इयतां प्रमाणयोजनानां किमिति त्रैराशिकविधिना
व्यवहारयोजन कर्तव्य । अपिशब्दात् पुनरपि त्रैराशिकविधिनेव योजन प्र १
कोश ४ । कोश १ दंड २००० । दंड १ हस्त ४ । हस्त १ अंगुल
२४ परस्परगुणननेव कृतैकयोजनांगुलानि ७६८००० यवश्च ८ कतव्यानि
सप्तश ८ कर्तव्य । पनराशेर्गुणकारामाहारौ घनरूपेण भवत इति न्यायेन
एत सर्व गुणकारा घनरूपेण भवति । एते सर्वे चतुरस्रसर्पपा भवति । त
एव नव षाडश $३ \frac{१}{४}$ भक्ता वृत्तसपपा भवति । “ हारस्य हारो गुणकोश
राशे ” इति षोडशापि गुणकारो भवति । तत्रैकाष्टक द्विकरूपेण विरलय्य
२।२।२ पंचशतानि गुणयित्वा तत्र राशौ स्थितानि सर्वाणि शून्यानि
एकत्रिंश संख्याकानि पृथक् कर्तव्यानि । पुनरप्येकाष्टक तथा विरलय्य
तेष्टमिकं ८।८।८ गुणयित्वा १६।१६।१६ प्राक्तनषोडशसहितचतुषोड-
शानां परस्परगुणने पण्डित्वा ६५५३६ अंगुलांकं विभिर्भद्रयित्वा बेसदृष्ट
पण्डित्वागुणनं पण्डित्वाजाता पण्डित्वाद्योगुणने षाडशमभूत् । परस्परगु-
णित्वादिद्वय ९ अत्र पण्डित्वाकेन भागाकारचतुर्भि समं चतुर्भिरेपरतितिन

८ गुणयेत् । उपरिचक्रद्वयं मंगुण्य ९ भागद्वारेण नवभिः सममपवर्तयेत्
शरिर्भवति ॥४२=२५६॥१८१०॥ १८ ॥

अथ नवषोडशभाजिता वृष्टमित्यस्य वासनारूपनिष्पन्नभेदफलमुच्चारयति,—

वासद्धघण दलितं णवगुणिय गोलयस्त घणगणिया।
सर्वेसिपि घणाणं फलत्रिभागात्पिया सूई ॥ १९ ॥

व्यासाद्धघनं दलितं नवगुणितं गोलकस्य घनगुणितम् ।

सर्वेषामपि घनानां फलत्रिभागात्पिया सूची ॥ १९ ॥

वासद्ध । व्यासाद्धघनो दलितं नवगुणितो गोलकस्य घनगुणितं सर्वेषां घनानां फलत्रिभागात्पिया सूचीफलं भवति ॥ णवषोडशभाजिता वृष्टमित्यस्य वासना निरूप्यते । एकव्यासकरात्गोलकमर्धाङ्गुत्याद्धमपहाय अत्र शिखरार्द्धं पुनरपि संद्वयं कृत्वा तत्राप्येकरांढं गृहीत्वा तदप्यूर्ध्वार्द्धं धृष्ट्वा चतुरस्रं यथा तथा संस्थाप्य तत्र गोलकस्य वृष्टमध्यदेशे विवक्षितवेधसद्भावोस्ति । पार्श्वेषु षमहानिसद्भावत्समीकरणार्थं हीनम्याने एता वृष्टा निरूप्य समस्यले सति तदपि पुनस्तिर्यग्मध्यं कृत्वा उपरि संस्थाप्य समच्छेदेन ऋणमपनोय ' भुजकोटी ' इत्यादिना सातफलमानीय एकरांढं स्वैतावति घणां रादानां किं फलमिति सवात्यापवर्त्यं गुणिने गोलकस्य घनगुणितमेव नवषोडशभाजितेत्यस्य वासना जाता । त्रिभुजचतुर्भुजवृत्तक्षेत्राणां फलं " मुरमूमि ओग " इत्यादिना " भुजकोटी " इत्यादिना " वासा तिगुण " इत्यादिना यथाक्रममानीय त्रिभिर्भक्ते तत्तत्सूचीफलं भवति ॥ १९ ॥

अथ स्थूलफलशरिमुच्चारयति,—

धादाल् साठसकदिसगुणिद् दुगुणणयसभम्भर्थं ।

इगितीससुण्णसहिय सरिसवमाण हवे पढम ॥२०॥

वादाल षोडशतृतिसगुणित द्विगुणनवसमभ्यस्तम् ।

एकत्रिंशत्शून्यसहित सर्षपमान भवेत् प्रथमे ॥ २० ॥

वादाल । वादाल ४२ षोडशतृति २५६ सगुणित द्विगुणनव १८
समभ्यस्त एकत्रिंशत्शून्यसहित सर्षपमान भवेत् प्रथमे कुटे ॥ २० ॥

अर्धतद्वृणितफलमुच्चारयति,—

विधुणिधिणगणवरविणमणि—

धिणयण—बलद्धिणिधिसराहत्थी ।

इगित्तिससृण्णसहिया जबूए लब्धसिद्धत्या ॥ २१ ॥

विधुनिधिनगनवरविनमोनिधिनयनवर्द्धिनिधिसरहम्निन ।

एकत्रिंशच्छून्यसहिता जशौ लब्धसिद्धार्था ॥ २१ ॥

विधु । एकनवसप्तनवद्वादशशून्यनवदिनवनवनवषट्ठी एकत्रिंशच्छून्यसहिता जबूदीपे लब्धसर्षपा १९७९१२०९२९९९६८००००००००

०००००००००००००००००००००००००००००००००००००० ॥ २१ ॥

सर्वेषां कुटानां सिद्धशिसापत्तमुच्चारयति,—

परिणाहेकारसम माग परिणाहच्छटभागस्त ।

वग्गेण गुणं णियमा सिहाफल सद्यकुटाण ॥ २२ ॥

परिणाहेत्रादश माग परिणाहपष्ठभागस्य ।

वर्गण गुण नियमात् शिसापत्त सर्वकुटानाम् ॥ २२ ॥

परिणा । परिधि (३८) रेखादशमा माग (१३ ल) परिधि
षट्भागस्य वर्गण (११) गुणिना नियमात् शिसापत्त सर्वकुटानां भव
ति ॥ अथ सिद्धकृतस्य वासना कथननिवेदिता । एतान् द्विगुण परिधि
(३८) आसन्नवत् (३८) एतु क्षेत्रात् परिधिदशमभाग

वेदेन गुणिते च " वल्लभिमन्त्रिय " इति आगतेन माग्रागधिकेन
 समन्तितिनरिधे विदमन्वय इयागचतुर्धस्य हारचतुष्टं विलवि
 त्वा एतेषाणापमुर्वेष्व विभिगुणितं हृदा परिणहृत्समेत्यादुत ।
 एतन्वत्पत्रं पूर्ववन् एतद्धारयोऽनादिकं कर्तव्यं ॥ १२ ॥

अथ वेदां वदं वध परिषेकाद्दशमभाग इत्याह;—

तिलसरिसपहृदादह-चणपतसिकुलत्परायमासादि।
 परिणाहेकारसमो वेदा यदि गयणगो रासी ॥ २३ ॥

तिलसर्पवहृदादीषणपतसिकुलत्परायमासादे ।

परिषेकाद्दशमो वेधो यदि गगनगो राशि ॥ २३ ॥

निल । तिलसपवहृदादीषणपतसिकुलत्परायमासादे परिषेकाद्
 दशमो वेधो यदि गगनराशि मयेत् ॥ २३ ॥

अथ गुणितराशिमुच्चारयति,—

देव्यतदियपचमवर्ग अष्टारसेहिं संगुणिय ।

तर्तीसगुणजुत हरमजिद जयुदीयसिहा ॥ २४ ॥

द्विपरतृतीयवर्गवर्ग अष्टारसे संगुणित ।

प्रयत्रिंशत्पूययुत्त हरभक्त जयुदीयसिहा ॥ २४ ॥

वर्ण्य । द्विरूपवर्गधारतृतीयवर्गवर्ग अष्टारसे संगुणित त्रयधि
 शच्छुन्यपुन हर (एकादश) भक्तधेत् जयुदीयसिहागलं भवति ॥ २४ ॥

अथ सिद्धाङ्कमुच्चारयति,—

इगिसगणवणवहुगणभणभटचउपणचउवापणसोल ।

सालसछतीसजुद हरहिदचउरो य पटमसिहा ॥ २५ ॥

एकममनवनवद्विकनभोनभाष्टचतु पचचतुःत्रयवषोदश ।

पात्रशपराश्रुत हरहितचतुष्ट व प्रथमशिखा ॥ २५ ॥

इति । एकसत्तनवनवद्विकृशून्यशून्याष्टचतुष्वपचत्रतुष्कपचपोहशयो
 षण्णपट्टनिशयुत एकादशमकचतुष्क प्रथमकुडशिसाफल भवति ॥ १७९९
 २००८४५४५१६३६३६३६३६३६३६३६३६३६३६३६३६३६३६३६३६३६३६३६
 ३६३६३६३६ ॥ २५ ॥

अथ कुडशिसयो फल मेलयित्वाञ्चारयति;—

वासद्धकदी तिगुणा वेहगुणेकारसहिदवासगुणा ।
 एयारस पविमत्ता इच्छिदकुडानामुमयफल ॥ २६ ॥

व्यासार्धवृति तिगुणा वेघगुणैकारसहितन्यासगुणा ।

एकादशप्रविमत्ता इच्छितकुडानामुमयफलम् ॥ २६ ॥

यासद्ध । व्यासार्धवर्मस्त्रिगुणो वेघगुणितेकादशसहितैकलक्षन्यास
 गुण एकादशप्रविमत्त इक्षितकुडानामुमयफल भवति । तद्यथा । “वासो
 तिगुणो परिही” इत्यादिना कुंडफलमानीतं । “वासो” इत्यादि
 परिणाहेकारसम वधेन गुणित फल तिभागधिये” इति सूत्रीकृतमानीतं ।
 वध्वत् कुंडफलशिसाफलार्थयोः परिधि “वासद्धकदी” इति गायोशाति
 फलप्रदानार्थं त्रिभिः समेष तत्रिकमुमयत्र गुणकाररूपेण संस्थाप्य यथा
 योग्यमपवर्गं समलक्षितैकस्यां कुंडकारस्य लकारं दर्शापित्वा अधिकलभे
 इतर्गं (११०००) मेत्न उभयफलं स्यात् । इदं लघु वासद्धकदीयार्थि
 उक्तं । ०८९९गुणान् व्यजगयोजनादिकं कर्तव्यम् ॥ २६ ॥

अथ गार्धकमुष्णयनि,—

बादाठमद्वयण इगिहीण सहस्राहद एगारहिद् ।
 इगितीम गुणमहिय जवृदीपुमयसिद्धरथा ॥ २७ ॥

वाग्धमप्यनेईहीनमहम इन एकादशसिधम ।

०८९७ ०२५म इन १५११ नाम समिद्धाया ॥ २७ ॥

बादाल । बादाले अष्टम ५१९ एकहीनसदस्याभ्यां ९९९ आहत
एकादशदत्तं एकत्रिंशत्पुन्यगतिं ऋद्धापप्रमितकुटाशिसाफलयो सि
द्ध्यते ॥ २७ ॥

अथ परस्परगुणितोक्तमुच्चारयति,—

इगि णय णव सगिगिगिदुगणवतिण्णटचउपणेक-
तिगिछव ।

पण्णरछत्तसिजुद् हरहिदचउरो य पढमुमय ॥२८॥

एव नव नव ससैकैकद्विकनत्रिभण्णतु पचैकप्येकपट्टम् ।

पचदशपट्टत्रिंशत्तुं हरहितचतुष्य च प्रथमोभयम् ॥ २८ ॥

इगिणय । एक नव नव ससैकैकद्विकनत्रिभण्णतु पचैकप्येकपट्टम्
चचदशपट्टत्रिंशत्तुं हरहितचतुष्यं प्रथमानवस्योभयफलं स्यात् ॥ १९७१
१२० २८४५१३१६ २६ ३६ ४६ ५६ ६६ ७६ ८६ ९६ १०६ ११६ १२६ १३६ १४६ १५६ १६६ १७६ १८६ १९६ २०६ २१६ २२६ २३६ २४६ २५६ २६६ २७६ २८६ २९६ ३०६ ३१६ ३२६ ३३६ ३४६ ३५६ ३६६ ३७६ ३८६ ३९६ ४०६ ४१६ ४२६ ४३६ ४४६ ४५६ ४६६ ४७६ ४८६ ४९६ ५०६ ५१६ ५२६ ५३६ ५४६ ५५६ ५६६ ५७६ ५८६ ५९६ ६०६ ६१६ ६२६ ६३६ ६४६ ६५६ ६६६ ६७६ ६८६ ६९६ ७०६ ७१६ ७२६ ७३६ ७४६ ७५६ ७६६ ७७६ ७८६ ७९६ ८०६ ८१६ ८२६ ८३६ ८४६ ८५६ ८६६ ८७६ ८८६ ८९६ ९०६ ९१६ ९२६ ९३६ ९४६ ९५६ ९६६ ९७६ ९८६ ९९६ १००६ ॥ २८ ॥

अथ दुष्यदिसरिसवेऽणयत्या पूरयेद्व्या इत्युक्त्वा तत्प्रसक्तानुप्र
सक्त्या तदन्तर्बन्धं निरूपयेदानीं प्रवृत्तमनुषेदधाति,—

पुण्णा सहमणयत्या इदि एग खिव सलागकुठमि ।

त मज्झिमसिद्धत्थे मादिए देवो घ घित्तण ॥ २९ ॥

पूर्णा सट्टदनवस्या इत्येकां भिप शलाराकुटे ।

सन्मध्यसिद्धार्थान् मत्या देवो वा गृहीत्वा ॥ २९ ॥

पुण्णा सह । पूर्णा सट्टदनवस्या इत्येकां भिप शलाराकुटे तन्मध्य
सर्पपान् मत्या देवो वा गृहीत्वा ॥ २९ ॥

किं कृतवानित्याशङ्कयामाह —

दीयसमुद्द दिण्ण एक्काक परिसमप्पटे जत्थ ।

ता हिट्ठिमदीउवही कयगत्तो तहि भरिद्ववो ॥३०॥

द्वीपसमुद्रे दत्ते एकैकस्मिन् परिसमाप्यते यत् ।

तत अधस्तनद्वीपोदधिषु घृतगर्तस्तै मर्तव्य ॥ ३० ॥

द्वीपे । द्वीपे समुद्रे च दत्ते एकैकस्मिन् सर्षपे परिसमाप्यते यत् तत्
आरभ्य अधस्तनसर्वद्वीपोदधिषु प्राक्तनवेधप्रमाणेन कृतगर्तं पुनस्तै
सर्षपैर्भतव्य ॥ ३० ॥

अथ तस्य द्वितीयकुडस्य क्षेत्रफलानयनोपायभूतगच्छमाह,—

त्रिद्विधे पट्टम कुड गच्छो तदिए द्वु पट्टमत्रिद्विधदुग ।

इदि सव्यपुञ्जगच्छा तहिं तहिं सरिसवा सज्ज्ञा ॥ ३१ ॥

द्वितीये प्रथम कुड गच्छ तृतीये तु प्रथमाद्वितीयादिकम् ।

इति सर्वपूर्वगच्छा तै तै सर्षपा साध्या ॥ ३१ ॥

त्रिद्विधे । द्वितीयकुडसर्षपानयने प्रथमकुडसर्षपप्रमाण गच्छ, तृतीयकु
डसर्षपानयने तु प्रथमद्वितीयकुडसर्षपमान गच्छ इति सर्वपूर्वपूर्वगच्छा-
स्तैस्तै सर्षपा साध्या त त गच्छ गृहीत्वा “रूऊणाहियपद्”
इत्यादिना सूचीव्यासमानीय पश्चाद् “वासो तिगुणो परिही” इत्यादि
तत्र तत्र कुडे सपपा साध्या इत्यर्थ ॥ ३१ ॥

अथ तत्कृतगर्तं भूते सति किं जातमित्यत्राह,—

त्रिद्विधे धारे पुण्ण अणवद्विदमिदि सलागकुडमिह ।

पुनरपि णिकिरविद्व्या अयरेगा सरिसवाण सला ३२

द्वितीय धारे पूर्ण अनवस्थितमिनि शलाकाकुण्डे ।

पुनरपि निभेसत्या अरैका सपपाणा शत्ररा ॥ ३२ ॥

त्रिद्विधे । द्वितीय धारे पूर्ण अनवस्थितकुण्डमिति शलाकागर्तं पुनरपि
निभेसत्या अरैका सपपाणा शत्ररा ॥ ३२ ॥

अथैवं वृत्तेषु किमित्यत्राह,—

एष सलागभरणे रूय णिकिरवदु पटिसलागम्हि ।
रिचीकदेवि भरिदे अवरंग पटिसलागम्हि ॥ ३३ ॥

एवं शलागभरणे रूप निक्षिपतु प्रतिशलाकायाम् ।

रिचीकृतेषु भूते अपरेक प्रतिशलाकायाम् ॥ ३३ ॥

एवं । एवमेव शलागभरण रूप (एक) निक्षिपतु प्रतिशलाकाकुण्डे
रिचीकृतेषु भूते सति अपरेक निक्षिपतु प्रतिशलाकाकुण्डे ॥ ३३ ॥

अथैव सत्यवि किमित्यत्राह,—

एयं सावि य पुण्णा एव णिकिरव महासलागम्हि ।
एसायि कमा भरिदा चत्तारि भरति तङ्गाल ॥ ३४ ॥

एव सावि च पूर्णा एक निक्षिप महाशलाकायाम् ।

एष पि कमाद्भृता चत्तारि भ्रियते तत्काले ॥ ३४ ॥

एयं सा । एवमेव सावि च पूर्णति एकं निक्षिपतु महाशलाकाकुण्डे,
एसायि कमाद्भृता सस्मिन्नव काले चत्तारि कुंडानि भ्रियते ॥ ३४ ॥

अथैतावता मरणेन किमित्यत्राह,—

चरिमणवद्विदकुटे सिद्धत्था जेतिया प्रमाण तं ।
अवरपरितमसख रूऊणे जेट सखेज्जं ॥ ३५ ॥

चरमानस्थितकुट सिद्धार्था यावति प्रमाण तत् ।

अवरपरितमसख्य रूपाने ज्येष्ठ संख्येयम् ॥ ३५ ॥

चरिम । चरमानस्थितकुटे सिद्धार्था यावति प्रमाणानि तदवरपरी
तासंख्ये । तत्र रूपे उन ज्येष्ठ संख्येयम् ॥ ३५ ॥

अथैतदेव धृवा संख्यातानतात्पत्तिभेदप्रभेदं षोडशगाथयाह,—

अवरपरितस्सुवरिं एगादीवद्विदे हये मज्झं ।

अवरपग्निं धिरलिय तमेव दाट्टण सगुणिद ॥ ३६ ॥

अवरपरीतस्योपरि एकादिवद्धिते मवेन्मध्यम ।

अवरपरीत विरलय्य तदेव दत्त्वा सगुणिते ॥ ३६ ॥

अवर । अवरपरीतस्योपरि एकादिके वृद्ध सति मवेन्मध्यम जघन्यपरीतमेकैकरूपेण विरलय्य तदेव जघन्यपरिमित रूप प्रति दत्त्वा सगुणिते ॥ ३६ ॥

अवर युक्तमसत्त्वं आवलिमरिस तमेव रूऊण ।

परिमिद्वरमावलिकिटि दुग्गारवर विरूप युक्तवर ॥ ३७ ॥

अवर युक्तमसत्त्वं आवलिसदृश तदेव रूपोन्म ।

परिमितवर आवलिकृतिद्विकवारावर विरूप युक्तवर ॥ ३७ ॥

अवर । जघन्ययुक्तसम्य स्यात् । एतदेवावलिसदृश । तदेव रूपोन्मपरिमितासख्यातवर आवलिकृति द्विकवारासख्यातजघन्य तदेव विगत रूपचेत् युक्तासख्यातोत्कृष्ट स्यात् ॥ ३७ ॥

अवरे सलागविरलणदिजे चिदिय तु विरलिदूण तर्हि ।

दिज दाऊण हदे सलागदो रूवमणिज ॥ ३८ ॥

अवरे शलाकाविरलनदेये द्वितीय तु विरलय्य तस्मिन् ।

देय दत्त्वा हते शक्यत रूपमनेतयम् ॥ ३८ ॥

अवरे । द्विकवारासख्यातजघन्ये शलाकाविरलनदीयमानरूपेण त्रिधा कृते तत्र द्वितीय विरलय्य तस्मिन् विरलिते देय दत्त्वा अन्योन्याहतमिति शलाकाशित रूपमनेतयम् ॥ ३८ ॥

तत्पुष्पण विरलिय तमेव दाऊण सगुण किञ्चा ।

अवणय पुणरवि रूध पुञ्चिहसलागरासीदो ॥ ३९ ॥

तत्रोत्पन्न विरलय्य तदेव दत्त्वा सगुणं कृत्वा ।

अपनयेत् पुनरपि रूप पूर्वतनशाश्राराशित ॥ ३९ ॥

सात्पुष्पणं । तत्रान्योन्याभ्यन्तरं विरलय्य तदेव इत्या संगुणे कृत्वा
अन्येन पुनरपि रूपं पूर्वतनसंज्ञाकाराक्षित ॥ ३९ ॥

पर्यं सलागराशिं णिद्धापिष तत्थतणमहारासि ।
विद्या तिप्पट्टि विरलणदिज्जादी कुणदि पुच्च व ॥ ४० ॥

एव शलाकाराशिं निष्ठाप्य तत्रतनयद्वारासिम् ।

इत्यापि प्रति विरलनदेयादि करोति पूर्वं व ॥ ४० ॥

पर्यं सला । एव शलाकाराशिं निष्ठाप्य तत्रतनान्यायाभ्यस्तमहारासि
कृत्वा त्रिप्रतिविरलनदेयादि पूर्वमिव शलाकारयनिष्ठपरं कुर्यात् ॥ ४० ॥

एव विदियसलाग तदियमलागं च णिद्धिदे तत्थ ।

ज मज्झासत्तेज्ज तहिमद् धम्मिरवेद्व्या ॥ ४१ ॥

एव द्वितीयशलाकाराया तृतीयशलाकाराया च निष्ठिताया तत्र ।

यन् मध्यासन्त्यात् तस्मिन् एते प्रथेसत्या ॥ ४१ ॥

एव । एव द्वितीयशलाकाराया तृतीयशलाकाराया च निष्ठापितायां सत्यां
तत्र धम्मप्यमासंन्यातं जातं तस्मिन् एते अये धम्मणा राशय प्रथे
सत्या ॥ ४१ ॥

धम्माधम्मिगिजीवगलोगागासत्पदेसपत्तेया ।

ततो अससगुणिदा पद्धिद्धिदा छप्पि रासीओ ॥ ४२ ॥

धर्माधर्मैकश्रीवज्जेराशप्रेशमयेका ।

तत अर्मस्यगुणिता प्रतिष्ठिता षडपि राशय ॥ ४२ ॥

धम्मा । धर्माधर्मैकश्रीवज्जेराशप्रेशमयेका अतिष्ठितप्रत्येका तता
छप्पिदाशप्रेशमयानगुणिता । ततापि प्रतिष्ठितप्रत्येका अपरेका
सन्त्यात्लाकाराजित । एव षडपि राशय प्रथेसत्या ॥ ४२ ॥

अवरपरीतस्योपरि एकादिवर्द्धिते मयेन्मध्यम् ।

अवरपरीत विरलप्य तदेव दत्त्वा संगुणिते ॥ ३६ ॥

अवर । अवरपरीतस्योपरि एकादिके वृद्ध सति मयेन्मध्यं जघन्यपरीतमेकैकरूपेण विरलप्य तदेव जघन्यपरिमित रूपं प्रति दत्त्वा संगुणिते ॥ ३६ ॥

अवर युक्तमसंख्य आवलिसरिस तमेव रुऊण ।

परिमितवरमायलिकिदि दुग्धारवरं विरूप युक्तवर ॥ ३७ ॥

अवर युक्तमसंख्य आवलिसहस्रं तदेव रूपोन्म ।

परिमितवर आवलिकृतिर्द्विकवारावर विरूप युक्तवरम् ॥ ३७ ॥

अवरं । जघन्ययुक्तासंख्य स्यात् । षण्णव्यावलिसहस्रं । तदेव रूपोन्मपरिमितासंख्यातवरं आवलिकृति द्विकवारासंख्यातजघन्यं तदेव विगतरूपं षट् युक्तासंख्यातोत्कृष्टं स्यात् ॥ ३७ ॥

अवरे सलागविरलणादिजे चिदिय तु विरलिवृण तर्हि ।

दिजं वाऊण ह्ये सलागदो रयमणिज ॥ ३८ ॥

अरे शलाकाविरलनदेये द्वितीय तु विरलप्य तस्मिन् ।

देय दत्त्वा ह्ये शलाकान रूपमानतथ्यम् ॥ ३८ ॥

अवर । द्विकवारासंख्यातजघन्ये शलाकाविरलनरूपमानरूपेण विधाकृतं तत्र द्वितीयं विरलप्य तस्मिन् विगडिते देयं दत्त्वा अयोन्महतमिति शलाकागतित रूपमानतथ्यम् ॥ ३८ ॥

तत्पुष्पणं विरलिय तमेव वाऊण संगुणं किद्या ।

अवणय पुणरधि रुय पुश्चिलसलागरासिदा ॥ ३९ ॥

नत्रापत्र विरलप्य तदेव दत्त्वा संगुणं कृत्वा ।

मननयनं पुनरधि रूपं पुश्चिलसलागरासिदा ॥ ३९ ॥

तदुत्पत्तौ । तत्रान्येन्द्राभ्यर्णं शिष्टस्य तदेव दत्त्वा संगुणे
अनप्य पुनरपि रूपं पुरानदनाकारादि ॥ ३९ ॥
एवं सलागरासिं णिष्टायिय तत्पतनमहारासिं ।
किंवा तिष्पाटि विरलणादिज्यादी कुणादि पुर्व्वं या ॥ ४० ॥

एव शालाकारासि निष्ठस्य तत्रननमहारासिश्च ।
इत्थं त्रि प्रति विरलनदयदि वरोते पूर्व्वं व ॥ ४० ॥
एवं सला । एव शालाकारासि निष्ठस्य तत्रननान्यान्याभ्यस्तमहारासि
इत्थं त्रि प्रति विरलनदयदि पूर्व्वं व शालाकारासिनिष्ठपत्तं पुर्व्वं व ॥ ४० ॥

एव विदिपसलाग तदिपसलाग च णिष्टिदे तत्थ ।
ज मज्झासखेज्ज तद्धिमद पविरयदव्या ॥ ४१ ॥

एव द्वितीयशलाकाया तृतीयशलाकाया च निष्ठितायां तत्र ।
यन् मज्झासख्यात तस्मिन् एते प्रपेत्तया ॥ ४१ ॥

एव । एव द्वितीयशलाकायां तृतीयशलाकायां च निष्ठापितायां सख्यां
एव धम्मपयमासंख्यातं जातं तस्मिन् एते अये वक्ष्यमाणा राक्षय प्रे
स्य्या ॥ ४१ ॥

धम्माधम्मिगिजीघगलागागासप्पदेसपत्तेया ।
तत्तो अससगुणिदा पदिष्टिदा छत्वि रासिओ ॥ ४२ ॥

धमाधर्मैव मीवइत्थोकाकाशप्रदेशप्रत्येका ।
सत्त अमभ्यगुणिता प्रतिष्ठिता पटवि राक्षय ॥ ४२ ॥

धम्मा । धमाधर्मैकजीवोकाकाशप्रदेशा अत्यतिष्ठितप्रत्येका तता
राकाकाशप्रदेशा इमंन्यातगणिता । ततापि प्रतिष्ठितप्रत्येका अपरोका
संख्यातलाकगुणिता एत वटपि राक्षय प्रभया ॥ ४२ ॥

त कयतिप्पाडिरासिं विरलादि करिय पढमविदियसल ।
तदिय च परिसमाणिय पुव्व वा तत्थ दायन्ना ॥ ४३ ॥

त कृतत्रि प्रतिराशिं विरलादिं कृत्वा प्रथमद्वितीयशलाक ।
तृतीया च परिसमाप्य पूर्व वा तत्र दातव्या ॥ ४३ ॥

त कय । तं कृतत्रि प्रतिराशिं विरलादि कृत्वा प्रथमशलाकां द्वितीय
शलाकां तृतीयशलाकां च परिसमाप्य पूर्वमिव एते तत्र दातव्या ॥ ४३ ॥

कप्पठिदिधधपच्चयरसबधज्झवसिदा असखगुणा ।
जोगुक्कस्सविभागप्पठिच्छेदा विदियपक्खेवा ॥ ४४ ॥

कल्पस्थितिवधप्रत्ययरसबधाभ्यवसिता असख्यगुणा ।
योगोत्कृष्टाविभागप्रतिच्छेदा द्वितीयप्रक्षेपा ॥ ४४ ॥

कप्पठिदि । कल्पं सख्यातपल्यमानं, ततः स्थितिवधप्रत्यया अस
ख्यातलोकगुणिता, ततः रसबधाध्यवसिता असख्यातलोकगुणा, ततो यो
गोत्कृष्टाविभागप्रतिच्छेदा असख्यातलोकगुणा । एते द्वितीयप्रक्षेपा ॥ ४४ ॥

त रासि पुव्व वा तिप्पाडि विरलादिकरणमेत्थ किदे ।
अवरपरित्तमणत रूऊणमसखसखवर ॥ ४५ ॥

त राशिं पूर्व वा त्रि प्रति विरलादिकरणं अत्र कृते ।
अवरपरीतमनत रूपोनममरयासग्यवरम् ॥ ४५ ॥

तरासि । त राशिं पूर्वमिव त्रि प्रति कृत्वा विरलनादिकरणं च त्रिधाय
अस्मिन् कृते अवरपरीतानत तद् रूपोन चेत् असग्यातासरयातवरम् ॥ ४५ ॥

अवरपरित्त विरलिय दाऊणेद् परोपर गुणिदे ।
अवर जुत्तमणत अभव्वसममेत्थ रूऊणे ॥ ४६ ॥

नेट्टपरिष्कारांत यगो गार्हिदे जहृषज्जुत्तरस ।
अपरमर्षताणतं कऊणे जुत्तरांतपरं ॥ ४७ ॥

अपरपरीत विरलपित्वा दत्त्वा इदं परस्परं गुणित ।
अपर गुणमनत अपयममं अत्र रूपाने ॥ ४९ ॥
उपेष्टपरीगानत वर्गं गृहीते मपन्यपुत्तम्य ।
अपरं अनगानत रूपाने गुणानतपरस्य ॥ ४७ ॥

अपर परिष्कं । अपयपरिष्कारानं विरलपित्वा तदेव दत्त्वा तस्मिन्
राशे परासां गुणिने अत्रं गुणानं अभव्यसमं । अत्र रूपानं ताति उपेष्ट
परिष्कारं भवति । जपन्यपुत्तानंताय वर्गे गृहीतं अपरमनतानतं स्यात् ।
अत्र रूपाने कृते गुणानतस्य वा स्यात् ॥ ४९ ॥ ४७ ॥

अपराणताणत तिष्पटि रासिं करित्तु विरलादिं ।
तिसलाग च समाणिय लब्धद पक्षिरायेद्व्या ॥ ४८ ॥

अपराणतानतं त्रि प्रतिराशिं कृत्वा विरलनादि ।
त्रिशलाकां च समाप्य लब्धे एते प्रसप्तया ॥ ४८ ॥

अपरा । अपराणतानं राशिं त्रिशलाकां कृत्वा विरलनादिं त्रिशलाकां
च समाप्य अत्र लब्धे एते प्रसप्तया ॥ ४८ ॥

सिद्धा णिगोदसाहिययणप्फादिपोग्गलपमा अणतगुणा ।
वाल अलोगागासं छेदेर्णतपकरेया ॥ ४९ ॥

सिद्धा णिगोदसं चिक्वन्नभ्यतिप्रमत्तप्रमा अनतगुणा ।
वाल अलोगागासं एतं अनतप्रभेषा ॥ ४९ ॥

सिद्धा णिगोदसं चिक्वन्नभ्यतिप्रमत्तप्रमा अनतगुणा पधिव्या
वाल अलोगागासं एतं अनतप्रभेषा ॥ ४९ ॥

सिद्धा णिगोदसं चिक्वन्नभ्यतिप्रमत्तप्रमा अनतगुणा पधिव्या
वाल अलोगागासं एतं अनतप्रभेषा ॥ ४९ ॥

सिद्धा णिगोदसं चिक्वन्नभ्यतिप्रमत्तप्रमा अनतगुणा पधिव्या
वाल अलोगागासं एतं अनतप्रभेषा ॥ ४९ ॥

सिद्धा णिगोदसं चिक्वन्नभ्यतिप्रमत्तप्रमा अनतगुणा पधिव्या
वाल अलोगागासं एतं अनतप्रभेषा ॥ ४९ ॥

राशि, निगोदराशे सकाशात् वनस्पतिराशि प्रत्येकेन साधिक १३०।
 ततो जीवराशेरनतगुण पुङ्गुराशि १६ स, ततो नतगुण कालराशि
 १६ स स, ततोप्यनतगुण अलोककाशराशि १६ स स स। षडेते
 अनतरूपप्रक्षेपा ॥ ४९ ॥

त तिणिणवारवर्गिदसवग्ग करिय तत्थ दायव्या ।
 धम्माधम्मागुरुलघुगुणाविभागप्पडिच्छेदा ॥ ५० ॥

त त्रिवारवर्गितमवर्गं कृत्वा तत्र दातव्या ।

धर्माधर्मागुरुलघुगुणाविभागप्रतिच्छेदा ॥ ५० ॥

त तिणिण । त राशिं त्रिवारवर्गितसवर्गं कृत्वा त्रिप्रति विरलनादिक
 त्रिशलाका च समाप्येयथ । तत्र राशौ दातव्या धर्माधर्मद्रव्यागुरुलघुगु
 णाविभागप्रतिच्छेदा । स स ॥ ५० ॥

लद्ध त्रिवार वर्गिदसवग्ग करिय केवले णाणे ।

अवणिय त पुण रिच्छे तमणत्ताणतमुकस्स ॥ ५१ ॥

लब्ध त्रिवार वर्गितमवर्गं कृत्वा केवलज्ञाने ।

अपनीय तं पुन क्षित्ते तमनतानतमुत्कृष्टम् ॥ ५१ ॥

लद्धं त्रिवार । लब्ध त्रिवारवर्गितसवर्गं कृत्वा पूर्वमिव त्रि प्रति विर
 ल्हादिं त्रिशलाका च समाप्येयथ । एतदेव केवलज्ञान अपनीय तदेव तस्मिन्
 पुनर्निहिते यो राशिरुत्पद्यत त अनतानतस्योत्कृष्ट जानीहि ॥ ५१ ॥

अथ श्रुतज्ञानार्थिना विषयस्यार्थं निरूपयति,-

जायदियं पञ्चकख जुगय तुदओहिकेवलाण ह्ये ।

तावदियं समेज्जमसखमणतं कमा जाणे ॥ ५२ ॥

याव च प्रथम युगपत् श्रुताविशेषणना भवेत् ।

ताव च मध्यममध्यमनव क्रमात् जानीहि ॥ ५२ ॥

जायदियं । यावन्मात्रं प्रत्यक्षं युगपत् श्रुतावधिद्वेषलज्जानानां भवेत्
तावन्मात्रं सख्यातमसंख्यातमनतः समाज्जानीहि ॥ ५२ ॥

अथ धनुदशधाराणां नामानि निवेदयति,—

धारेत्थ सद्यसमकदिघणमाउगइदरवेकदीविंद ।

तस्स घणाघणमाटी अत ठाण च सद्यत्थ ॥ ५३ ॥

धारा अत्र सर्वसमकृतिघनमातृकेतरद्विकृतिवृद्धम् ।

तस्य घनाघनपादि अर्तं म्यानं च सर्वत्र ॥ ५३ ॥

धारेत्थ । धारा अत्र शब्दे निरूप्यते । सर्वधाग, समधारा, कृतिधारा,
घनधारा, कृतिमातृकधारा, घनमातृकधारा, समादिभ्य इतरा विषमधारा,
अकृतिधारा, अघनधारा, अकृतिमातृकधारा, अघनमातृकधारा इति,
द्विरूपधारा, द्विरूपघनधारा, द्विरूपघनाघनधारा । आसामायतस्थानानि
च सर्वत्र धारासु कथ्यन्ते ॥ ५३ ॥

अथ सवधारास्वरूपं निरूपयति,—

उत्तेव सद्यधारा पुच्च एगादिगा हवेज्ज जदि ।

सेसा समादिधारा तत्थुप्पण्णेति जाणाहि ॥ ५४ ॥

उत्तैव सर्वधारा पूर्वं एकादिवा भवेत् यदि ।

शेषा समादिधारा तत्रोत्पन्ना इति जानाहि ॥ ५४ ॥

उत्तैव । उत्तैव सर्वधारा स्यात् । पूर्वमेकादिका भवेद्यदि, शेषा समा
दिधारा सवास्तत्रोत्पन्ना इति जानीहि ॥ अकसदृष्टौ च ज्ञातव्या “ १,
२,४,५,६,७,८,९,१०,११,१२,१३,१४,१५, के १६ ” ॥ ५४ ॥

अथ समधारामाह,—

धेयादि बिउत्तरिया केवलपज्जतया समा धारा ।

सद्यत्थ अधरमवर रुज्जुणुक्कस्समुक्कस्स ॥ ५५ ॥

राशि , निगोदराशे सकाशात् वनस्वतिराशि प्रत्येकेन साधिक १३०।
 ततो जीवराशेरनंतगुण पुद्गलराशि १६ स, ततो नंतगुण कालराशि
 १६ स स, ताप्यनंतगुण अलोकाकाशराशि १६ स स स । पदेने
 अनंतगुणप्रयोगे ॥ ४९ ॥

तं तिग्णिवारवर्गिदसंयुक्तं करिय तत्थ दापव्वा ।
 धम्माधम्मागुठलपुगुणाविभागप्पट्टिच्छेदा ॥ ५० ॥

तं विचारवर्गितमवर्गं कृत्वा तत्र दातव्या ।

धर्माधर्मागुणानुगुणाविभागप्रतिच्छेदा ॥ ५० ॥

तं तिग्णं । तं राशि विचारवर्गिसंयुक्तं कृत्वा विप्रति विरलनादिकं
 विशाखायां च समायेत्यर्थं । तत्र राशी दातव्या धर्माधर्मद्वय्यागुठलपुण
 नाविभागप्रतिच्छेदा । स स ॥ ५० ॥

सद्धं विचार वर्गिदसंयुक्तं करिय केयले णाणे ।

अवणिय तं पुण गित्त तमणतार्णतमुक्कम्मं ॥ ५१ ॥

सद्धं विचार वर्गितमवर्गं कृत्वा केयलज्ञाने ।

अपनीय तं पुन किये तमनताननमुक्कम्मं ॥ ५१ ॥

सद्धं विचार । सद्धं विचारवर्गिसंयुक्तं कृत्वा पूर्ववत् विप्रति विर
 लनादिकं विशाखायां च समायेत्यर्थं । एतद्धं कथं ज्ञानं अपनीय तद्धं तद्विचार
 वर्गिसंयुक्तं किये तमनताननमुक्कम्मं । अर्थात् तद्विचारवर्गिसंयुक्तं किये ॥ ५१ ॥

अथ च तत्र च तत्र विचारवर्गं न विचारवर्गं ।

अथद्विषं पयकम्मं जुगारं सुद्धाद्विषयत्वात्तु हवे ।

अथद्विषं मय उत्रमयणमणीने कमा जण ॥ ५० ॥

अथ च तत्र च तत्र विचारवर्गं न विचारवर्गं ।

अथ च तत्र च तत्र विचारवर्गं न विचारवर्गं ॥ ५१ ॥

जायदिय । यावन्मात्रं प्रत्यर्थं युगपत् श्रुतावधिद्वैवत्ज्ञानानां भवन्
तावन्मात्रं सरयातमसोरुयातमनत जमाग्नानीहि ॥ ५२ ॥

अथ चतुर्दशधाराणां नामानि निवेदयति,—

धारेत्य सध्वसमकदिघणमाउगहृदरयेकदीर्घिंद ।

तस्स घणाघणमाद्दी अत ठाण च सव्यत्थ ॥ ५३ ॥

धारा अत्र सध्वसमकृतिघनमातृस्तेरद्विट्टितिदृदम् ।

सम्य घनाघनमादि अतं म्यान च सर्वत्र ॥ ५३ ॥

धारत्य । धारा अत्र शाब्दे निरूप्यते । सर्वधारा, समधारा, कृतिधारा,
घनधारा, कृतिमातृकधारा, घनमातृकधारा, समादिभ्य इतरा विधमधारा,
अकृतिधारा, अधनधारा, अकृतिमातृकधारा, अधनमातृकधारा इति,
द्विरूपवर्धधारा, द्विरूपघनधारा, द्विरूपघनाधनधारा । आसामाद्यतस्थानानि
च सर्वत्र धारासु कथ्यते ॥ ५३ ॥

अथ सर्वधारास्वरूपं निरूपयति,—

उत्तेव सव्यधारा पुव्व एगादिगा हयेज जदि ।

सेसा समादिधारा तत्थुप्पणोत्ति जाणाहि ॥ ५४ ॥

उत्तेव सर्वधारा पूर्वं एकादिका भवेन् यदि ।

शेषा समादिधारा तत्रोत्पन्ना इति जानीहि ॥ ५४ ॥

उक्तय । उतैव सर्वधारा स्यात् । पूर्वमकादिका भवेद्यदि, शेषा समा
दिधारा सत्रास्तत्रोत्पन्ना इति जानीहि ॥ अंकसंहटो च शातध्या “ १, २,
३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, के १६ ” ॥ ५४ ॥

अथ समधागमाह,—

धेयादि घिउत्तरिया केवलपज्जतया समा धारा ।

सव्यत्थ अवरमघर रूऊणुकरसमुकम्स ॥ ५५ ॥

राशि, निगोदराशे सकाशात् वनस्पतिराशि प्रत्यकेन साधिक १३०।
 ततो जीवराशेरनतगुण पुत्रलराशि १६ स, ततो नतगुण कालराशि
 १६ स स, ततोप्यनंतगुण अलोकाकाशराशि १६ स स स। षडेते
 अनंतरूपप्रक्षेपा ॥ ४९ ॥

त तिणिणिवारवर्गिदसयग्ग करिय तत्थ दायव्या ।
 धम्माधम्मागुरुलघुगुणाविभागप्पडिच्छेदा ॥ ५० ॥

तं त्रिवारवर्गितमर्गं कृत्वा तत्र दानव्या ।
 धर्माधर्मगुरुलघुगुणाविभागप्रतिच्छेदा ॥ ५० ॥

त तिणिण । तं राशि त्रिवारवर्गितसवर्गं कृत्वा त्रि प्रति त्रिलनादिकं
 विशाळाकां च समाप्येयर्थं । तत्र राशौ दातव्या धर्माधर्मद्वय्यागुरुलघुगु
 णविभागप्रतिच्छेदा । स स ॥ ५० ॥

छन्द त्रिवार वर्गिदसयग्ग करिय केवले णाणे ।
 अवणिय त पुण रित्तं तमणत्ताणतमुकस्स ॥ ५१ ॥

छन्दं त्रिवार वर्गितमर्गं कृत्वा केवलज्ञाने ।
 अपनीय तं पुन त्रित्ते तमनेतानतमुकस्स ॥ ५१ ॥

छन्दं त्रिवार । छन्दे त्रिवारवर्गितसवर्गं कृत्वा पूर्वमिव त्रि प्रति त्रि
 लनादिकं च समाप्येयर्थं । एतदेव केवलज्ञान अपनीय तदेव तस्मिन्
 पुनर्निर्दिष्टं वा राशिप्रत्ययान तं अनंतानंतस्योत्कृष्टं जानीहि ॥ ५१ ॥

अथ अत्रलनादीना विषयसद्वर्तनं त्रिभयपति,-
 जावदियं पयक्कं जुगयं सुदओदिकवत्ताण ह्वे ।
 तावदियं मन्नउत्तममणमणतं कमा णाण ॥ ५२ ॥

जावदियं प्रत्ययं गुणवत् अतर्हि त्रिवारवर्गं ५२ ।
 तावदियं मन्नउत्तममणमणतं कमा णाण ॥ ५२ ॥

आयदियं । यावन्मात्रं प्रत्यक्षं युगपत् श्रुतावधिष्वेवज्ञानानां भवेत्
तावन्मात्रं सग्यातमसंख्यातमनतं ज्ञानं जानीहि ॥ ५२ ॥

अथ चतुर्दशधाराणां नामानि निवेदयति,—

धारेत्यथ सद्यसमकदिघणमात्रगद्दरवेकदीविंद ।

तस्स घणाघणमाद्दी अत ठाण च सव्यत्थ ॥ ५३ ॥

धारा अत्र सद्यसमकृतिघनमातृचत्तरद्विट्टित्तिदुदुम् ।

तस्य घनाघनमादि अतं म्यानं च सर्वत्र ॥ ५३ ॥

धारेत्यथ । धारा अत्र शाब्दे निरूप्यते । सर्वधागा, समधारा, कृतिधारा,
घनधारा, कृतिमातृकधारा, घनमातृकधारा, समादिभ्य इतरा विषमधारा,
अकृतिधारा, अघनधारा, अकृतिमातृकधारा, अघनमातृकधारा इति,
द्विरूपवर्धाधारा, द्विरूपघनधारा, द्विरूपघनाघनधारा । आसाम्नायतस्थानानि
च सत्र धारासु कथ्यते ॥ ५३ ॥

अथ सर्वधारास्वरूपं निरूपयति,—

उत्तेव सद्यधारा पुट्य एगादिगा हवेज्ज जदि ।

सेसा समादिधारा तत्थुप्पण्णेति जाणाहि ॥ ५४ ॥

उत्तैव सर्वधारा पूर्वं एकादिका भवेत् यदि ।

शेषा समादिधारा तत्रोत्पन्ना इति जानाहि ॥ ५४ ॥

उक्तयः । उत्तैव सर्वधारा स्यात् । पूर्वमकादिका भवेद्यदि, शेषा समा
दिधारा सवास्तत्रोत्पन्ना इति जानीहि ॥ अकसदृष्टौ च ज्ञातव्या “ १, २,
३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, के १६ ” ॥ ५४ ॥

अथ समधारामाह,—

धयादि चिउत्तरिया केवलपज्जतया समा धारा ।

सद्यत्थ अवरमवरं रूऊणुक्कस्समुक्कम् ॥ ५५ ॥

द्वयादि द्व्युत्तरिका त्रेवत्रपर्यन्ता समा वारा ।

सर्वत्र अरमवर रूपोनोत्कृष्टं उत्कृष्टम् ॥ ११ ॥

वयादि । द्वयादिका द्व्युत्तरा केवलज्ञानपर्यन्ता समधारा प्रोक्ता सत्र
मख्यातादिषु समधारास्थितजघन्यमेवात्र जघन्य । सर्वरागगतरूपन्यु
नोत्कृष्टमत्रोत्कृष्टं स्यात् । अकसहस्री २, ४, ६, ८, १०, १२, १४, के १९०५५ ॥

एगादि त्रिउत्तरिया विसमा रूऊणकेवलवसाना ।

रूवजुदमवरमवर वर वर होदि सन्नत्थ ॥ ५६ ॥

एकादि द्व्युत्तरा विषमा रूपोनकेवलवसाना ।

रूपयुतमवरमवर वर वर भवति सर्वत्र ॥ १६ ॥

एगा । एकादिका द्व्युत्तरा विषमधारा रूपन्यूनकेवलवसाना । सर्वरा
गागतसरयातादीनी जघन्य रूपयुत चेत् विषमधारायामवर स्यात् तत्रो
त्कृष्टमत्र सर्वत्रोत्कृष्टं स्यात् । अकसहस्री १, ३, ५, ७, ९, ११, १३,
के १५ ॥ ५६ ॥

अथ समविषमधारायो स्थान तद्वञ्चानयन चाह,—

केवलणाणस्सन्दू ठाण समधिसमधारयाण हवे ।

आदी अते सुद्धे वद्धिहिदे इगिजुदे ठाणा ॥ ५७ ॥

केवलज्ञानस्यार्थं स्थान समविषमधारयोर्भवेत् ।

आदी अते शुद्धे वृद्धिहने एकयुते स्थानानि ॥ १७ ॥

केवल । केवलज्ञानस्यार्थं स्थान समविषमधारयोर्भवेत् । आदी ० अते
१६ शुद्धे सति १४ वृद्धि २ इते ७ एकयुते च सति ८ स्थानानि भवति ।
एव चयोत्तरे सर्वत्र दृष्टव्यम् ॥ ५७ ॥

अथ कृतिधागमाह,—

इगिचादि केवलत कदी पद तप्पद कदी अवर ।

इगिहीण तप्पदकदी हट्टिममुक्कस्स सन्नत्थ ॥ ५८ ॥

एव चरवयादि संवर्गता वृत्ति पदं तापदं वृत्ति अरं ।

एवहीनतापवृत्ति अधमानमुत्पन्नं सर्वत्र ॥ ५८ ॥

हृदि च्यादि । एकं च चार्यादि केवलज्ञानांता वृत्तिधारा स्यात् । पदे वृत्तिधारास्थानं तापदं केवलज्ञानस्य प्रथममूलमात्रं संख्यातादीनां जपन्त्ये वृत्त्यात्मकमेव एवहीनस्यागोच्यतादीनां प्रथममूलस्य वृत्तिरेव सर्वत्राधस्ता-
धस्तनोत्पृष्टप्रमाणं भवति । अंकसंज्ञो १, ४, ९, के १६ ॥ ५८ ॥

अपावृत्तिधारोच्यते,—

दुष्पद्मिदिरुचयजिदकेषलणाणावसाणमकदीण ।

सेसविही विसम धा सपदृण केवल ठाण ॥ ५९ ॥

द्विप्रभृति रूपवर्धितकेवलज्ञानावमानमवृत्ती ।

शेषविधि विपमा वा स्वपदानं केवल स्थानम् ॥ ५९ ॥

दुष्पद्म । द्विप्रभृति रूपवर्धितकेवलज्ञानमवसानं अवृत्तिधारायां शेष विधि संख्यातादीनां जपन्त्यमुत्पृष्ट च विपमधारावत् 'रुच्युदमवरमवर धरं चर हादि सध्वत्थ' इति ज्ञातव्यमित्यर्थः । वृत्तिस्थानरत्नत्वात् स्वप्रथम मूलोर्न केवलज्ञानं स्थानं स्यात् । अंकसंज्ञो ०, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १४, के १५ ॥ ५९ ॥

अथ धनधारा कथ्यते,—

हृदिअटपदुदि केवलदलमलस्मुवरि चडिदठाणजुदे ।

तग्घणमत विदे ठाण आसण्णघणमूलम् ॥ ६० ॥

एकाष्टप्रभृति केवलदलमूलस्योपरि चरितस्थानयुने ।

तद्वनमन वदे स्थान आमन्वपनमूलम् ॥ ६० ॥

हृदि । अष्टसङ्गो प्रवर्धते । एकाष्टप्रभृति १ ८ २७, एवमनंतानि धनस्थानानि तादा केवल - तस्य धनरूपस्य २७६८ यमल तस्मि

३२ तुरिणि घनमूत्राणां च तिस्रस्यनां उक्तानां विष्ठाकगारानां
 ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, गण्यमाने तुने मणि तस्य
 ४० घनो भेदा भवति ४००० । तस्यति कथम् । यस्मिन् विष्ठाकगारानां ४०
 द्रुगाधिकस्य घनमूत्रस्य ४१ घनं गृहीतं ३८९२? केवलज्ञानं व्यतिरिक्तं
 राशिस्थानं तस्मान्म्ये ४० घनं ३४००० घनधारायाम् भेदा भवति ।
 स एवामन्नघनं इत्युच्यते, तस्मात्तत्र घनमन्नघनमूत्रमिति कथ्यते । तत्र
 केवलज्ञानस्यासन्नघनमूत्रप्रमाणं स्यात् ॥ ६० ॥

अथ केवलज्ञानस्य घनात्मकत्वं उक्तानि पदार्थानि दर्शयन्नुक्तानां घन
 धारामाह,—

समकदिसल यिरुदोण दलिदे घणमेत्य विसमगे तुरिणि ।
 अघणम्स दु सद्य वा विघणपद केवल ठाण ॥ ६१ ॥

समकदिसल विष्टौ दलिने घन अत्र विषमके तुरिये ।

अत्रनस्य तु सर्वं वा विघनपद केवल स्थानम् ॥ ६१ ॥

समक । द्विरूपवर्गधारायां समकदिसलाके वगाराशौ दलित घनो जायते ।
 यथा षोडशकादिके १६।६५=१८=। अत्रैव धारायां विषमकदिसलाके वर्ग-
 राशौ चतुर्भागे गृहीते घनो जायते । यथा चतुष्कादिके ४।२५६।४२=। एवमु-
 क्तन्यायेन केवलज्ञानस्य वगाराकाणां समत्वात्तस्मिन् केवलज्ञाने दलिने घनो
 भवतीति सिद्धम् । तत्समत्व कथं ज्ञायत इति चेद्विदमुच्यते । केवलज्ञानस्य
 वर्गशलाकाराशेर्द्विरूपवगधारायामेवोत्पन्नत्वात् । एतदपि कुत इति चेत् “अवरा
 खाइयलद्धीवग्गसलागा तदो सगद्धडिदी ” इति पुरस्ताद् वक्ष्यमाणत्वात् ।
 अघनधाराया सर्वधारावत् प्रक्रिया । अथ तु विशेष, विघनपद घनस्थान-
 रहितसवधारावदिति भाव्य । अस्या स्थानप्रमाणं “ काकाशुगोलकन्या
 येन ” विघनपद केवल घनस्थानन्यूनकेवलज्ञानमात्रं स्यात् । अकसदृष्टौ
 २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६ ॥ ६१ ॥

अथ षण्मातृकधारामाह,—

इह षण्मातृकधारत् सद्यगधारत् चरिमरासीदु ।

षट्म केवलमूल तद्भाण चापि तद्येव ॥ ६२ ॥

इह षण्मातृकाया सर्वधारा इव चरमराशिस्तु ।

प्रथमं केवलमूल तत्स्थान चापि तदेव ॥ ६२ ॥

इह ष । इह षण्मातृकधारया सर्वधारावत् चरमराशिस्तु केवलज्ञानस्य प्रथममूलं तस्या स्थानमपि तावदेव । अकसहृष्टौ । १, २, ३, के ४ ॥ ६२ ॥

अथावगमातृकधारोपते,—

अरुदीमातृक आदी केवलमूल सरुवमत तु ।

केवलमण्ये मज्झ मूलूण केवलं ठाण ॥ ६३ ॥

अकृतिमातृकाया आदि केवलमूल स्वरूपमत तु ।

केवलमनेव मध्य मूलोन् केवल स्थानम् ॥ ६३ ॥

अरुदी । अकृतिमातृकधारया आदि केवलज्ञानस्य प्रथममूल रूप सहित अतस्तु केवलज्ञान मध्यमनेकविधं तस्या स्थानं स्वमूलोन्केवल ज्ञानमात्रं । अकसहृष्टौ ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६ ॥ ६३ ॥

अथ धनमातृकधारामाह,—

धनमातृकधारत् सद्यगधार धा सद्यपच्छिमो रासी ।

आमण्णविंदमूल तमेव ठाण विजाणाहि ॥ ६४ ॥

धनमातृकाया सर्वधारा इव सर्वपश्चिमो राशि ।

आमण्णमूल तदेव स्थान विजानाहि ॥ ६४ ॥

घणमाउ । घनमातृकाया सर्वभागवत् प्रक्रिया, अकमष्टौ प्रदश्ये-
 १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, आदि ४० । अथ तु विशेष सर्वगच्छि-
 राशि । क इति चेत, केवलज्ञानस्य ६५=आसन्नघन ६१००० प्रदन्-
 ४० तदेव तस्या घनमातृकाया स्थानमिति जानीहि ॥ ६४ ॥

अथाघनमातृकधारोच्यते,—

त रूबसहिदमादी केवलमवसाणमघणमाउस्म ।
 आसण्णघणपट्टण केवलणाण ह्ये ठाण ॥ ६५ ॥
 तन् रूपसहित आदि केवलमवमानमरनमातृकाया ।
 आसन्नरनपदीन केवलज्ञान मवेत् स्थानम् ॥ ६६ ॥

त रूय । अकसष्टौ घनमातृकाया अत ४० स रूपसहितश्चेत् ४१
 अघनमातृकाया आदि अस्या अवमान केवलज्ञानमेव ६५= अस्या स्थान
 पुन केवलज्ञानस्य ६५= आसन्नघन ६१००० मूढो(४०)न केवलज्ञानमेव
 ६५४९६ भवेत् ॥ ६५ ॥

अथ द्विरूपवर्गधारा गायामतकेनाह,—

वेरुववर्गधारा चउ सोलसवेमदसहियदुष्ण ।
 पण्णट्टी मादाल एरुद्व पुन्वपुन्वकदी ॥ ६६ ॥
 द्विरूपवर्गधारा चत्वार षोडश द्विशतमहितवत्पचाशन् ।
 पण्णट्टा द्वावत्वारिंशन् एकाटी पूर्वपूर्वकृति ॥ ६६ ॥

वेरुव । द्विरूपवर्गधारा कथ्यते । चत्वारि ४ षोडश द्विशतमहितवत्
 पचाशन् २५६ एण्णट्टी इवमयाउत्तीषा ०५५३३ “वदन्त वदन्तुदी
 एण्णउदि विदन्तुपउष्णउदी” ४१५ ४९६७२९६ “एकं च चउ
 एस्मनय च च य मूष्णुननियसता । मूष्ण णव दण एव यण्कं एकेकग
 य उक्क च ॥” १८४४६७४४०७०३०९५५१६१६ ॥ एवमुत्तरोत्तर-
 शक्तिं पुनः पुनः कृति ॥ ६० ॥

तो संरठाणगमणे षग्गसलागन्दुत्तेदपढमपद् ।

अवरपरित्तासर आधलि पदरावली य हवे ॥ ६७ ॥

तत सक्यम्यानगमने वर्गशलाकाधच्छेदप्रथमपदम् ।

अवरपरीनामस्य आश्लि प्रतरावली च मरु ॥ ६७ ॥

तो संरठाण । तत्र संस्यतस्थानानि गत्वा षग्गसलाकाराशिक्ष्यते । तत संरयातस्थानानि गत्वा अर्धच्छेदराशिक्ष्यते । तत संरयातस्थानानि गत्वा प्रथममूलमुत्पद्यते । तस्मिन्नेकवारं वर्गिति अधन्यपरीतासंख्यातराशिक्ष्यते । तत "उप्यज्जि जो रासी विरल्लिद्विज्जमेण" इत्यादिना वर्गशलाकादेर्निषिद्धत्वात् संरयातस्थानानि गत्वा आश्लिरेवात्पद्यते । तत्रसंस्थानस्थानज्ञानं कथमिति चेत् । देवराशेस्परि विरल्लितराश्यधच्छेदमात्राणि वर्गस्थानानि गत्वा विशिन्नराशिक्ष्यते इति ज्ञातव्यं । तस्यामावन्त्यामेकवारं वर्गितायां प्रतरावलिभवेत् ॥ ६७ ॥

गमिय असंस ठाण षग्गसलद्वच्छिदी य पढमपद् ।

पल च सूहअगुल पदर जगसेदिषणमूल ॥ ६८ ॥

गत्वा असंस्य म्यान षग्गसलद्वच्छिदिस्य प्रथमपदम् ।

पल्यं च सूच्यगुल प्रतरं जगच्छेणिसनमूलम् ॥ ६८ ॥

गमिय । तत असंरयातस्थानानि गत्वा वर्गशलाकाराशि ततोऽसंख्यातस्थानानि गत्वा अर्धच्छेद । ततोऽसंख्यातस्थानानि गत्वा प्रथममूलं तस्मिन्नेकवारं वर्गिति अद्यापल्यमुत्पद्यते । तत विरल्लितराश्यधच्छेदमात्राणि वर्गस्थानानि गत्वोत्पन्नत्वात्तर्धच्छेदस्यासंख्यातरूपत्वात्संख्यातस्थानानि गत्वा सूच्यंगुलमुत्पद्यते । अत्र वर्गशलाकार्दीनामनुत्पत्तिं कथमिति चेत् । विरल्लितराश्यधच्छेदमात्राण्यस्य राशे उप्यज्जि जो रासी इत्यादिना धारा त्रये षग्गशलाकार्दीनां निषिद्धत्वात् अस्यापि सूच्यगुलस्य पलच्छिदिमे

अथ अत्रिषु विदुषु तेषु त्रयोविधं ब्रह्मण्यम् । तन्निष्कृष्टं ब्रह्म
 ब्रह्मण्यं तन्निष्कृतं । तत्र ब्रह्मण्यं तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं
 ब्रह्मण्यं ॥ ६८ ॥

तिष्ठति महत्तमं तं ब्रह्मण्यं तन्निष्कृतं । तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं ।

जीवो योगालो कालो मेरीजोगाम तन्निष्कृतं ॥ ६९ ॥

तिष्ठति तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं । तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं ।

जीवो पुत्रो वरुणेयं तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं ॥ ७० ॥

तिष्ठति । तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं । तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं ।
 तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं । तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं ।
 तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं । तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं ।
 तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं । तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं ।
 तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं । तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं ।
 तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं । तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं ।
 तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं । तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं ।
 तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं । तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं ।
 तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं । तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं ।
 तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं । तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं ।
 तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं । तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं ।
 तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं । तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं ।
 तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं । तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं ।
 तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं । तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं ।
 तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं । तन्निष्कृतं तन्निष्कृतं ।

धर्माधर्मागुरुलयु इगिजीवागुरुलयुस्तु ह्यति तद्दो ।

सुहमणिअपुण्णणणे अवेर अविभागपडिउंशा ॥ ७० ॥

धर्माधर्मागुरुलयु इगिजीवागुरुलयुस्तु ह्यति तद्दो ।

सुहमणिअपुण्णणणे अवेर अविभागपडिउंशा ॥ ७० ॥

धर्माधर्म । ततोनेतस्यानानि गत्वा धर्माधर्मागुणपुण्यविभागप्रति
 ष्टेदा । ततोनेतस्यानानि गत्वा एवर्जागुणपुण्यविभागप्रतिष्टेदा
 भवति ततोनेतस्यानानि गत्वा शुद्धमनिगोदल-उपर्य-सकज-एवम्यज्ञानाविभा
 गप्रतिष्टेदा उपर्यने ॥ ७० ॥

अथरा राह्यलद्धी वगसलागा तदो सगद्धिदिदी ।
 अटसगउप्पणनुरिय तदिपं विदियादि मूल च ॥ ७१ ॥

अथरा सायिकलद्धि वगालाका सन स्वसधच्छिदि ।

आप्तसतपृष्वनुरिय तृतीय द्वितीयादिमूले च ॥ ७१ ॥

अथरा । ततोनेतस्यानानि गत्वा तिर्यगा-वसंधनसम्यग्दृष्टी जपन्यशा
 दिहसाम्यक-वरूप-धरविभागप्रतिष्टेदा ततोनेतस्यानानि गत्वा वर्गश
 टाका, ततोनेतस्यानानि गत्वा अध-उत्तरा ततोनेतस्यानानि गत्वा अहम
 मत्, तन्मिभेदवारं वगिति सप्तममूल, तन्मिभेदवारं वगिति षष्ठमूल, तन्मि
 भेदवारं वगिति पंचममूल, तन्मिभेदवारं वगिति चतुर्थमूल, तन्मिभेदवारं
 वगिति तृतीयमूल, तन्मिभेदवारं वगिति द्वितीयमूल, तन्मिभेदवारं वगिति
 प्रथममूल श्रोत्यने ॥ ७१ ॥

सहमादिमूलवर्गे केवलमत प्रमाणजेद्वमिणं ।

वररह्यलद्धिणाम सगयगसला हवे ठाण ॥ ७२ ॥

सहृदादिमूलवर्गे केवलमत प्रमाणनेष्टमिदम् ।

वरनायिकलद्धिनाम स्वसकशश्र मवेत् स्यान्न ॥ ७२ ॥

सह । सहृदेदवारं तस्यादिमूलस्य वर्गे गहीते केवलज्ञानस्याविभागप्रति
 ष्टेदा । एतावद्व द्विरुचवगधारायामर्त इदमेव प्रमाण-वेधं एतदेवो
 वृष्टं सायिकलद्धिनाम । अस्या निरुपवर्गाधाराया स्थानं तस्य केवलज्ञा
 नस्य वगालाकाप्रमाण भवति ॥ ७३ ॥

अथ धारात्रये सवत्राविशेषेण वगशलाकादिप्राप्ती तन्नियममाह,—
उप्पज्जादि जो रासी विरलणदिज्जक्रमेण तस्सेत्थ ।
वग्गसलद्धच्छेदा धारातिदए ण जायते ॥ ७३ ॥

उत्पद्यते य राशि विरलनदेयक्रमेण तम्यात्र ।

वर्गशलाघच्छेदा धारात्रितये न जायते ॥ ७३ ॥

उपज्जादि । यत्र धाराया विरलणदेयक्रमेणोत्पन्नो यो राशिहत्वयने तस्य राशेर्वर्गशलाका अर्धच्छेदाश्च तत्रैव धारायां न जायते । इयं व्याप्तिर्द्विरूपवर्गादिधारात्रये । अकसदृष्टो विरलनराशि १६ देपरशि १६ उपन्नगाशि १८—तस्याधच्छेदा ६४ तस्य वगशलाका ६ द्विरूपवगधारायां न जायते ॥ ७३ ॥

अथ धारात्रये उपर्युपरि राशाधच्छेदप्रमाणमाह,—

वग्गादुपरिमवग्गे दुग्गुणा दुग्गुणा हवति अद्धच्छिदी ।

धारातय सट्ठाणे तिग्गुणा तिग्गुणा परट्ठाणे ॥ ७४ ॥

वर्गादुपरिमवर्गे द्विगुणा द्विगुणा भवति अर्धच्छेदा ।

धारात्रये स्वस्थाने त्रिगुणा त्रिगुण परस्थाने ॥ ७४ ॥

वग्गा । वर्गादुपरिमवर्गे द्विगुणा द्विगुणा अर्धच्छेदा भवति धारात्रये स्वस्थाने, त्रिगुणा त्रिगुणा परस्थाने । इयं व्याप्तिर्द्विरूपवर्गादिधारात्रयेऽपि । द्विरूपवगधारायामकसदृष्टिः स्वयुद्धितोवसेया ॥ ७४ ॥

अथ वर्गशलाकादीनामाधिस्यदिमवनप्रकारमाह,—

वग्गसला रूपहिवा सपदे परसम सवग्गसलमेत्त ।

दुग्गमाहदमद्धच्छिदी तम्मत्तदुगे गुणे रासी ॥ ७५ ॥

वगशला रूपाधिक्ये सपदे परमिन् समा म्बवर्गशलामत्रम् ।

द्विक्रमाहनमधच्छेदा तमात्रद्विके गुणे राशि ॥ ७५ ॥

पद्म । वर्गशलाका रूपधिका इत्येवमेव स्वकीयधारायां परस्मिन् स्थाने धारधारायां स्वसमाना स्वस्वर्गशलाकामात्रं द्विकं परस्परान्तं चेत् रागेर्ध्वेदा भवति । इयं व्याप्तिद्विरूपवर्गधारायामेव न द्विरूपधारायामेव धारधारायां तदर्ध्वेदमात्रे द्विके परस्परगुणिने सति राशिर्भवति । इयं व्याप्तिधारायामेव ॥ ७५ ॥

अथ वर्गशलाकाधारायामेव स्वरूपमाह,—

यग्निद्वारा वर्गशलाका रासिस्त अद्भुतेदस्य ।

अग्निद्वारा वा रज्जु दलद्वारा ह्येति अद्भुतेदौ ७६

वर्गशलाका वर्गशलाका राशि अर्ध्वेदस्य ।

अर्ध्वेदद्वारा वा रज्जु दलद्वारा भवति अर्ध्वेदौ ॥ ७६ ॥

यग्निद्वारा । रागेर्ध्वेदद्वारा वर्गशलाका, इयं व्याप्तिधारायामेव । अर्ध्वेदस्य अर्ध्वेदं वा वर्गशलाका, इयं व्याप्तिद्विरूपवर्गधारायामेव । रागेर्ध्वेदद्वारा अर्ध्वेदस्य भवति, इयं व्याप्तिधारायामेव ॥ ७६ ॥

अथ वर्गशलाकाधारायामेव द्विरूपधारायामेव,—

वेदधारायामेव अष्ट चतुसष्टी चतुस्रु सत्यपदे ।

आयलिघनमायलिघना कदिषिद् चापि जायेत् ॥७७

द्विरूपधारायामेव अष्ट चतुस्रु चतुस्रु सत्यपदानि ।

आयलिघन आयलिघना कदिषिद् चापि जायेत् ॥ ७७ ॥

वचन । द्विरूपधारायामेव अष्ट चतुस्रु चतुस्रु सत्यपदानि । एष पूर्वपुत्रवर्गधारायामेव ५०९६ सत्यपदानि सत्त्वा जपन्यपरीतसत्यपदानि घन सता विगलितरा यद्भुतेदमात्रगत्तोत्पन्नत्वात् । सैव सत्यपदानि चतुस्रु जायेत् घन ८ उत्पन्न । सत्त्वधारायामेव अष्ट चतुस्रु सत्यपदानि जयत ३ ॥

पल्लयण विंदगुलजगसेढीलोयपदरजीयण ।
ततो पढम मूळ सञ्जागास च जाणेजो ॥ ७८ ॥

पल्यगन वृदागुलभगच्छेणीलोकप्रतरजीववनम् ।
तत प्रथम मूळं सर्वाकाश च जानीहि ॥ ७८ ॥

पह । ततोऽसख्यातस्थानानि गत्वा वर्गशलाका, ततोसख्यातस्थानानि गत्वा अर्धच्छेदा, ततोसख्यातस्थानानि गत्वा प्रथममूळ तस्मिन्नेकवार वगिति पल्यधनमुत्पद्यते । ततोसख्यातस्थानानि गत्वा घनागुलमुत्पद्यते अत्र उपज्ज्दि जो रासीत्यादिना निषिद्धत्वात् वर्गशलाकादीनामभाव । ततोऽसख्यातस्थानानि गत्वा जगच्छेणिरूप्यते, अत्रापि उप्यज्ज्दीति निषिद्धत्वात् वर्गशलाकादीनामभाव । तस्यामेकवार वगितायां जगत्प्रतर उत्पद्यते । ततोऽनतस्थानानि गत्वा वर्गशलाका, ततोऽनतस्थानानि गत्वा अर्धच्छेदा, ततोऽनतस्थानानि गत्वा प्रथममूळ, तस्मिन्नेकवारं वगिति जीवराशेर्धन उत्पद्यते । उप्यज्ज्दीति निषिद्धत्वाद् वर्गशलाकादीनामभाव । ततोऽनतस्थानानि गत्वा प्रथममूळ तस्मिन्नेकवार वगिति सर्वा काश च जानीहि ॥ ७८ ॥

सखमसखमणत वग्गट्टाण कमेण गतूण ।
सखासखाणताणुप्पत्ती होदि सञ्चत्य ॥ ७९ ॥
सस्यमसस्यमनत वर्गस्थान क्रमेण गत्वा ।
सख्यासख्याननानामुत्पात्ति भवति सर्वत्र ॥ ७९ ॥

संखम—द्विक्वारासख्यातत्रयन्मपर्यंत संख्यातवर्गस्थानानि गत्वा तदुपरि द्विक्वारातत्रयन्पर्यंतमसख्यातवर्गस्थानानि गत्वा तदुपरि केवल-ज्ञानपर्यंतमनतवर्गस्थानानि गत्वा तत्र तत्र वर्गधारायां यथासंख्यं सख्याता-सख्यातानंनानां राशीनामुत्पत्तिभवति सर्वत्र ॥ ७९ ॥

जत्पुद्ग्लेसे जायदि जो जो रासी विरूपधाराए ।

घणरूपे तद्देशे उपज्जदि तस्स तस्स घणो ॥ ८० ॥

यत्रोद्देशे जायते यो यो राशि द्विरूपधाराया ।

घनरूपे तद्देशे उत्पद्यते तस्य तस्य घन ॥ ८० ॥

जत्पुद्ग्लेसे । यत्रोद्देशे द्विरूपवर्गधारायां यो यो राशिजायते द्विरूपघन धारायां तद्देशे तस्य तस्य राशेर्घन उत्पद्यते ॥ ८० ॥

एवमर्णत ठाण णिरतर गमिय केवलस्सेव ।

विदियपदपिदमंतं विदियादिममूलगुणितसमं ॥ ८१ ॥

एवमनत स्थानं निरतर गत्वा केवलम्यैव ।

द्वितीयपदवृद्धमतो द्वितीयादिममूलगुणितसम ॥ ८१ ॥

एवमर्णत । एवं सवाकाशराशेरुपयनंतस्थानं निरतरं गत्वा केवलज्ञानस्य द्वितीयमूलघन उत्पद्यते स एव द्विरूपघनधारायामतः । तत् विद्य विद्युक्ते द्वितीयादिममूलयो परस्परगुणितराशिसम ॥ ८१ ॥

एतदेवांतस्थानं कथमित्याशंकायामाह,—

चरिमस्स दुचरिमस्स ए णेध घणं केवलटवदिज्जमदो ।
तम्हा विरुवहीणा सगयग्गसला हवे ठाणं ॥ ८२ ॥

चरमस्य द्विचरमस्य च नैव घन केवलपतिवमत ।

तस्मात् द्विरूपहीना स्ववर्गशाल भवेत् स्थानम् ॥ ८२ ॥

चरिम । धारमाशोर्द्विचरमराशेर्घनानां नैव संतः । कुत ? केवलज्ञानपतिवमतो धरमात् । तस्मात्स्थानं पुनर्द्विरूपहीनस्ववर्गशालं वाप्यायं भवेत् । अकसंदृष्टिरभ्युद्या ॥ ८२ ॥

इदानीं द्विरूपघनधारायां गथाष्टकाह —

ते जाय विश्वकर्मा पद्माक्षरं मन्त्रिद्वयम् ।
छाया गुणगामला वग्गमलस्य च विद्वत् ॥ ८३ ॥

न मन्त्रिद्वयं विश्वकर्मा पद्माक्षरं मन्त्रिद्वयम् ।
मन्त्रो गुणगामला वग्गमलस्य च विद्वत् ॥ ८३ ॥

ते जाय । विश्वकर्मा पद्माक्षरं वा वा गि तस्य तस्य पद्माक्षरं वा वा
पद्माक्षरं वा वा कर्म मन्त्रिद्वयं । कर्म मन्त्रिद्वयं वा वा । आदिगणन २३०
तदुक्ति अत्र नमः २० २१ ४१ तदुक्ति अत्र नमः २३० २३१ ४१
उत्पदन । अत्र वर्गगणनादि विद्वत् विद्वत् २३० २३१ ४१ । ततो मन्त्रि-
तस्थानानि गत्वा गुणकारशलाकागणितानि । स कश्चिद्व्यं, छ कश्चिद्व्यं
द्विधा शलाकाया द्वा समस्तगणनायायं गुणद्विधा पञ्चदशं गुणितमिति
दोष विद्वत् शलाकागणिते रूपमानयेत् । अत्र गुणकारशलाका रूपान्तरं
मात्रा भवेति । तं पुनरस्य तन्मन्त्रं अयोन्वयगुणितराशिमेव विद्वत् द्विधा
तमेव द्वा अयोन्वयं गुणितमिति प्राक्तनशलाकागणितं अत्र रूपमनयेत्,
तत्र च गुणकारशलाका रूपान्तरं अयोन्वयगुणितराशिमेव विद्वत् द्विधा
काराशिसमाप्तिस्तावद्गुणकारशलाका वनि । एवं सत्येकवारशलाकानि
पने स्यात् । एवमाहुद्वार शलाकानिडावने कृत यावत्वा गुणकारशलाका
व योव गुणकारशलाका इत्युच्यते । ततो मरुयातस्थानानि मन्त्रा वर्गगणना
कास्ततो मरुयातस्थानानि गत्वा अरच्छेदास्तता मरुयातस्थानानि गत्वा
प्रथममूल तन्मन्त्रेकवार वर्गिते— ॥ ८३ ॥

ते उक्ता द्वयजीवा वग्गसलागतय च कायठिदी ।
वग्गसलादित्तिदय ओहिणिरद्ध पर खेत्त ॥ ८४ ॥

तनस्कायिरजीवा वग्गसलागतय च कायठिदी ।
वग्गसलादित्तिदय ओहिणिरद्ध पर खेत्त ॥ ८४ ॥

तत्र । तेजस्कायिकजीवराशौ सस्या उत्पद्यते । सा पुनराट्टुवारशला
 चानिष्ठापने यो राशिरुत्पद्यते तत्प्रमाणमित्यवसेय । अस्य षगशलाकाया
 अधो गुणकारशलाका तिष्ठतीति । कथमिति चतु, अकसंहृष्टौ प्रदश्यते ।
 वादाने अयोन्व्यं गुणिते एकट्टुमुत्पद्यते १८-अस्य गुणकारशलाका षका
 वर्गशलाका पुन' षट् ततस्तेजस्कायिकवर्गशलाकाया अधो गुणकारश
 लाका तिष्ठतीत्यवसेय । ततो संख्यातस्थानानि गत्वा षगशलाकारततां सं
 ख्यातस्थानानि गत्वा अर्धचोदास्ततोऽसख्यातस्थानानि गत्वा प्रथममूल,
 तस्मिन्नेकवारं वर्गिते कायस्थितिप्रमाणमुत्पद्यते । तस्कीदृशमिति चेत् ।
 अयथायादागम्य तेजस्कायिकेपूत्पन्नजीवराशौ तजस्कायिकमयतश
 अवस्थानं काल इति प्ररूपयाम' । ततो संख्यातस्थानानि गत्वा वर्गश
 लाकास्ततोऽसख्यातस्थानानि गत्वार्धचोदास्ततोऽसख्यातस्थानानि गत्वा
 प्रथममूलं, तस्मिन्नेकवारं वर्गिते सर्वावधिनिबद्धमुत्पद्यते प्रमाणमुत्पद्यते ।
 क्षेत्रस्य षोडशमात्रत्वपि सात्त्विकेभ्योत्पत्त्यात् एतदेतं ॥ ८४ ॥

यग्गसलागसिद्धय ततो त्रिदिवंधपययद्वाणा ।

यग्गसलादीरसबधज्जवसाणाण ठाणाणि ॥ ८५ ॥

वर्गशलाकाश्रितय तत्र स्थितिवंधप्रययस्थानानि ।

वर्गशलादीरसबधज्जवसानानां स्थानानि ॥ ८६ ॥

यग्गसला । ततो संख्यातस्थानानि गत्वा वर्गशलाकारततो संख्यात
 स्थानानि गत्वार्धचोदास्ततो संख्यातस्थानानि गत्वा प्रथममूलं तस्मिन्
 एकवारं वर्गिते ज्ञानावगणादिकमणं स्थितिवंधकाणकयापराणामस्य न
 उत्पद्यते । तत्परिणामस्य वा इत्यर्थः । असा संख्यातस्थानानि । वा वा
 गजकाजतासैरप्यतस्थानानि गत्वा अर्धचोदास्ततो संख्यातस्थानानि
 गत्वा प्रथममूलं तस्मिन्नेकवारं वर्गिते ज्ञानवगणादिकमणं तदा इत्यर्थः ।
 णं सत्त्विकेभ्योत्पत्त्यात् एतदेतं ॥ ८५ ॥

यग्गमलागपद्द्वि निगोद्रीयाण कापयगंया ।
यग्गमलागादितर्ष निगोदकापद्विद्वि होदि ॥ ८६ ॥

वगशाकाप्रभृती निगोद्रीयानां वगयगंया ।

वगमलागादितर्ष निगोदकापद्विद्वि ॥ ८६ ॥

यग । ततो मंभ्यातस्थानानि मत्वा वर्गशलाकास्ततो मंभ्यातस्थानानि
मत्वा मंभ्यातस्थानानि मत्वा प्रथममूल तस्मिन्नेकवारं वर्गिते
निगोद्रीयानां सर्वज्ययोगात्प्रथममस्यापय । निगोद्रीयानां सर्वज्ययोगात्प्रथममस्यापय
विठमानां र्जयानां न क्षेपे इति निगोद्रीयानां र्जयानां न क्षेपे इति निगोद्रीयानां र्जयानां न क्षेपे इति
निगोद्रीया इत्युच्यते । ततो मंभ्यातस्थानानि मत्वा वर्गशलाकास्ततो
मंभ्यातस्थानानि मत्वा अच्युदास्ततो मंभ्यातस्थानानि मत्वा प्रथममूल
तस्मिन्नेकवारं वर्गिते निगोदकापद्विद्वि भवेति । मा कीर्त्तयानि चत् । अत्र
निगोदकापद्विद्वित्युक्ते तादृकेऽङ्गीभ्य निगोद्रीयानां प्रथममूलानां न
गुह्यते तस्यार्धतृतीयपुद्गलपरिवृत्तत्वात् । तर्हि किं गुह्यते ? निगोद्रीयानां
रूपेण परिणतपुद्गलानां तदाकारमन्यस्वेत्कृतेनावस्थानकालो गुह्यते ॥ ८६ ॥

ततो असखलोग कविठाण चडिय यग्गसलतिद्वय ।

दिस्सति सज्वजेट्टा जोगस्सविभागपडिछेदा ॥ ८७ ॥

ततो असख्यलोक कृतिस्थान चटित्वा वर्गशलाकास्ततो मंभ्यातस्थानानि

दृश्यते सर्वज्येष्ठा योगस्याविभागप्रतिच्छेदा ॥ ८७ ॥

ततो । तत उपर्यसख्यातलोकमात्रकृतिस्थानानि चटित्वा वर्गशलाका-
स्ततोसख्यातलोकमात्रकृतिस्थानानि मत्वा मंभ्यातस्थानानि मत्वा प्रथममूल तस्मिन्नेकवारं वर्गिते
कृतिस्थानानि चटित्वा प्रथममूल तस्मिन्नेकवारं वर्गिते सर्वज्ययोगो-
त्कृष्टाविभागप्रतिच्छेदा दृश्यते । कमाकपणशक्तियोगस्तस्याविभागप्रति-
च्छेदा कमाकपणशक्त्यविभागाशा इत्यथ ॥ ८७ ॥

जो जो रासी दिस्सदि बिरुववग्गे समिट्ठठाणम्मिह ।
तट्ठाणे तस्सरिसा घणाघण णवणवुद्धिद्वार ॥ ८८ ॥

यो यो राशि दृश्यते द्विरूपवर्ग स्वजेष्टस्थाने ।

तत्स्थाने तत्सदृशा घनाघने नव नव उद्दिष्टा ॥ ८८ ॥

जो । द्विरूपवर्गधारायां स्वकीयेष्टस्थाने विरहितस्थाने यो यो राशि
दृश्यते तत्स्थाने घनाघनधारयां तत्सदृशा द्विरूपवर्गधारयास्थानसदृशा
राशयः द्विरूपवर्गधाराराशय एव नवनववारं परस्परं गुणिता उद्दिष्टा ॥ ८८ ॥

चट्टिट्ठणेवमणत्त ठाणं केवल्लचउत्थपदधिदं ।

सगवग्गगुण चरिम तुरियादिपदाहदेण सम ॥ ८९ ॥

चट्टिवैवमनंत स्थान केवल्लचतुर्थपदगृह्यम् ।

स्ववर्गगुणधरम तुरीयादिपदाहतेन सम ॥ ८९ ॥

चट्टि । ततो योगोक्तृष्टाविभागप्रति-उद्देत उपर्यनंतस्थानानि चट्टित्वा
केवल्लानाया ६५=चतुर्थमूलपन ८ स्वकीयवर्ग १४ गुणितो ५१२
घनाघनधारयाधरम । स च चतुर्थप्रथममूलयो परस्पराहत्या सम ॥ ८९ ॥

अन्येषां चरमकत्व कथं न संभवतीति चेत्,—

चरिमादिचउत्थास्त य घणाघणा एत्थ णेव समवदि ।

हेतु मणिवो तम्महा ठाण चउत्थीणवग्गसल्ला ॥ ९० ॥

चरमादिचतुर्थव्यस्य च घनाघना अत्र नैव संभवति ।

हेतु मणिव तम्महा स्थान चतुर्हनिर्गसल्ल ॥ ९० ॥

चरिमा । केवल्लानायाचतुर्थ स्थानानां ६५=५६ १६ ४
घनाघना अत्र द्विरूपघनाघनधारयां नैव संभवति । च

एतद्भूतं इति तेषामेवैतानाम् एतन्ने देवैश्च ॥११॥ तदुच्यते
एतद्भूतानाम् ॥११॥ ॥ ११ ॥

अथैतानां चत्वारो विष्णवः —

ववहारुद्धारुद्धापल्ला धारणां वृत्तिमिदं विष्णवत्तं ।
विष्णुदा विष्णुदुर्गमिष्णा ज्ञानानु पश्चिमम् ॥११॥

अथ योगेश्वरानां चत्वारो रूपाः । विष्णवः पञ्च ।

विष्णवो विष्णुर्गणेशिष्णा अथैव पश्चिमि ॥ ११ ॥

ववहारु । अथैतानामेषानां चत्वारो विष्णवो वृत्तिः, विष्णवः
विष्णुनिशिष्णा बुद्ध्यागणेशिष्णा ज्ञानानु ॥ ११ ॥
इति सप्तम्याप्रमाणे समाप्तम् ।

अथ सप्तम्याप्रमाणे विष्णुभूतेश्च चत्वारो अथैतानां चत्वारो
पश्चिममण्डलं निरूपयति,—

पल्लो सागर मूढ पदरो य यणगुलो य जगमेटी ।
लोपपदरो य लोमो उयमपमा एवमट्टविहा ॥ १२ ॥

पल्लो सागर सूची प्रतर च घनागुठ च जगच्छ्रेणी ।

लोकप्रतरश्च लोफ उपमाप्रमा एवमट्टविहा ॥ १२ ॥

पल्ल । पल्लो सागर सूच्यगुठ प्रतरगुठ घनागुठ च जगच्छ्रेणी
जगत्प्रतरश्च घनलोक इत्येवमुपमाप्रमाणमट्टविधं स्यात् ॥ १२ ॥

अथ तेषां मध्ये पल्लभेदं स्वस्वविषयनिर्देशपूर्वकमाह,—

ववहारुद्धारुद्धापल्ला तिण्णेव हाति णायन्वा ।
सररा दीवसमुद्दा कम्मट्टिदि वण्णिदा जेहिं ॥ १३ ॥

यवहारोद्धाराद्धापल्लयानि श्रीण्येव भवति ज्ञानव्यानि ।

सप्त्या द्वीपसमुद्रा कम्मस्थितयो वर्णिता ये ॥ १३ ॥

पयदाह । ध्यवहारोद्दाराद्यापल्यानीति पत्यानि त्रीण्येव भवति इति
शातव्यानि। ये पत्यत्रयेयथासरया द्वीपसमुद्रा कर्मास्थिन्यादयश्च वर्णिता ९३

अथ पत्यज्ञापनाद्यमाह,—

सत्तमजन्मावीण सत्तदिणध्मतरमिह गहिदेहि ।

सण्णह सण्णिचिद् भरिद् बालगगकोडीहिं ॥ ९४ ॥

सत्तमजन्मावीना सत्तदिनाभ्यतरे गृहीतै ।

सनट सनिचिन भरित बालगगकोटिमि ॥ ९४ ॥

सत्तम । सत्तमजन्मनामवर्तिना सत्तदिनाभ्यतरं गृहीतैवालामकोटिमि-
रनट सनिचित भरित ॥ ९४ ॥

तद्धिमित्याह,—

ज जोयणयित्थिण्ण तत्तिउण परिरयेण सविसेस ।

त जोयणमुच्चिद्ध पल्ल परिदोषम णाम ॥ ९५ ॥

यत् योजनविस्तीर्णं तत्रिगुण परिधिना सविशेषम् ।

तत् योजनमुच्चिद्धं पल्लय पल्लितोपम नाम ॥ ९५ ॥

ज जो । ययोजनविस्तीर्णं तत्रिगुण परिधिना सविशेषं सूक्ष्मफलत्वात्
योजनमुच्चिद्धं तत् कुटलोमप्रमाणं पल्लयोपमं पल्लितोपमं वा इति संज्ञा ॥९५॥

अथ परिधेः सविशेष इति विशेषणार्थं ज्ञापयन्नाह,—

विक्रमभदगद्दहगुणकरणी घट्टस्स परिरयो होदि ।

विक्रमचउब्भागे परिरयगुणिदे ह्वे गणिय ॥ ९६ ॥

विक्रमभदगद्दहगुणकरणे वत्तस्य परिधि भवति ।

विक्रमचतुर्भागे परिधिगुणिते भवेत् गणितम् ॥ ९६ ॥

यव । व्यवहारैः क्रोमोऽसंख्येयवर्षसमये सम उन्नत चेत् तदा तानि रोमाणि उद्धारपत्यस्य भवति । तदपहरणकालश्च तावान् उद्धारपत्यरोम्मान एव । प्रतिसमयमैकैः क्रोमोपह्रियत इति मात्र ॥ १०० ॥

अथोद्धारपत्य निदर्शयति,—

उद्धारैव रोम छिण्णमसरयेज्जवाससमयेहि ।

अद्धारै ते रोमा तत्तियमेत्तो य तत्कालो ॥ १०१ ॥

उद्धारैव रोम छिन्नमसस्येयवर्षसमये ।

अद्धारै तानि रोमाणि तावन्मात्रश्च तत्काल ॥ १०१ ॥

उद्धार । उद्धारैव रोमोऽसंख्यातवर्षसमये सम उन्नतचेत् तदा तानि रोमाणि अद्धारपत्यस्य भवति । तदपहरणकालश्च तावन्मात्र एव ॥ १०१ ॥

अथ सागरोपमस्वरूप सूचयति,—

एदेसिं पल्लाण कोडाकोडी हवेज्ज दसगुणिदा ।

त सागरोवमस्स दु हवेज्ज एकस्स परिमाणम् ॥ १०२ ॥

एतयो पल्ययो कोटीकोटी भवेत् दशगुणिता ।

तत् सागरोपमस्य तु भवेत् एकस्य परिमाणम् ॥ १०२ ॥

एदे । एतयोऽद्धारपत्ययोऽशगुणिता कोटीकोटी भवेद्यदि तदा तद्विवक्षितपत्य विवक्षितस्य एकसागरापमस्य प्रमाण भवति ॥ १०२ ॥

अथ सागरोपमसंज्ञाया अन्वयतादशनार्थमाह,—

लवणबुहिसुहुमफले चउरस्से एकजोयणस्सेव ।

सुहुमफलेणवहरिदे धट्ट मूल सहस्सवेहगुण ॥ १०३ ॥

लवणाबुधिसूक्ष्मफले चतुरस्रे एकयोजनस्यैव ।

सूक्ष्मफलेनापहत वृत्त मूत्र सहस्रव गुणम् ॥ १०३ ॥

एवम् । “अनादिसूयितोगं संदन्दगुणित्तु कुप्पदिं किञ्चा तिगुणं वरकर
 णिगुणं बाद्दरसुत्तमं फलं बलये ” अनेनोक्तप्रकारेण लक्षणावुधिसूक्ष्मफलं ३
 चतुरस्रं कथमिति चेदस्य वासना दृश्यते । लक्षणावुधिवलय उर्ध्वं त्रित्वा
 संद (२ ल) प्रमाणेन विषमशतुर्भुजं कृत्वा ‘ विकरंभवग्ग ’ इत्या
 दिना मुससूक्ष्मफलं । भूमिसूक्ष्मफलं वानीय मुरमूम्योस्संस्थाप्य मुस
 भूमिसमसाधमिति मध्यपत्नमानीय १, १, ल १० मध्ये संस्थाप्य उपरतिन
 मार्ग उर्ध्वं त्रित्वा चतुरस्रार्थं व्यत्यासन संस्थाप्य समानपेदेन मेठन कृत्वा
 अपवर्तित एवं ६ ल ६ ल १० र्द्रार्धेन १ ल गुणिते सति “ वर्गाराशे
 र्गुणकारभागहारा वगात्मका एव भवति ” इति “यायेन गुणित सति चतुरस्रं
 ग्यात् । ६ ल ६ ल १० । एतावच्चतुरस्रसूक्ष्मफलस्य एकयोजनवृत्तकुं
 फ १ एतावच्चतुरस्रसूक्ष्मफलस्य ६ ल ६ ल १० किमिति त्रैराशिक
 क्रमेणागतनैकयोजनसूक्ष्मफलनापदतपवर्त्य एवं “ हारस्य हारो गुणकोश
 राग ” इति गुणितेर्वाद् लब्धं २४ ल २४ ल वृत्तवर्गभूतकुण्ड
 फलशताका ग्यात् । मूत् २४ ल एतावत् २४ ल सहस्रवेध १०००
 गुणित कर्तव्य । २४ ल १००० ॥ १०३ ॥

अथ गुणकारांतरं दर्शयति,—

रोमहृद् छत्रेसजलोस्सेगे पणुवीससमयात्ति ।

सपाद् करिय हिदे केसेहिं सागरुप्पत्ती ॥ १०४ ॥

रोमहत पत्रेसजलोस्सेके पचर्षिशसमया इति ।

सपात् वृत्त्वा हिते केशी सागरोत्पत्ति ॥ १०४ ॥

राम । म कुड १ फ रोम ४१=३ कुड २४ ल १००० इति
 त्रैराशिकनागते रोमभिगुणितं २४ ल १०००, ४१=चत्रेसजलोस्सेके
 पचर्षिशसमयाधेन २४ ल १०० ४१= एतावत् रोमनालोस्सेके
 किंयत समया इति त्रैराशिक कृत्व प्रमाणीभनपत्न्यापत्त्यापवव्य २५, ४

लठ, १०००, ४१=एतावत्समयस्य एकस्मिन् पत्ये एतावत्समयस्य
 क्रिमिति २५,४ लठ १०००, ४१=, सपात्यापवतिति सागरोत्
 त्यत्तिर्भवति ॥ १०४ ॥

अथ द्विरूपवर्गधारायां सागरोपमस्यानुत्पन्नत्वात्स्यार्धच्छेदं शारयन्नात्-

गुणयारद्धच्छेदा गुणिज्जमाणस्स अद्धछेदज्जुदा ।

लद्धस्सद्धच्छेदा अहियस्स छेदणा णत्थि ॥ १०५ ॥

गुणकारार्धच्छेदा गुण्यमानम्यार्धच्छेदयुता ।

लब्धस्यार्धच्छेदा अधिकस्य छेदना नास्ति ॥ १०६ ॥

गुण । गुणकारा दशकोटीकोत्थस्तासामर्धच्छेदा सरुयाता, ते
 पुनर्गुण्यमानस्याद्वापत्यस्यार्धच्छेदयुता लब्धस्य सागरोपमस्यार्धच्छेदा
 भवति यत् अधिकस्य छेदना नास्ति । तत्र सागरोपमस्य वर्गशलाका
 नास्ति ॥ १०५ ॥

अथ गुण्यगुणकारयो छेदप्रदर्शने प्रसगान्द्राज्यमाजकयोरपि छेद
 प्रदर्शयति,—

भजस्सद्धच्छेदा हारद्धच्छेदणाहि परिहीणा ।

अद्धच्छेदसलागा लद्धस्स हवति सच्चरथ ॥ १०६ ॥

भान्यम्यार्धच्छेदा हारार्धच्छेदनाभि परिहीना ।

अर्धच्छेदसलाका लब्धस्य भवति सर्वत्र ॥ १०७ ॥

भज्ज । अकसंह्यो भान्यस्य ६४ अर्धच्छेदा ६ हारा (४)
 धेच्छेदनाभि २ परिहीना ४ लब्धस्य १६ अर्धच्छेदसलाका भवति
 सर्वत्र ॥ १०६ ॥

अथ सूर्यगुलस्यार्धच्छेद दर्शयन्नाह,—

विरलिज्जमाणरासिं दिण्णस्सद्धच्छिदीहिं सगुणिदे ।

अद्धच्छेदा होंति ह्नु सच्चत्थुप्पण्णरासिस्स ॥१०७॥

विरल्यमानराशी देयस्यार्धच्छिदिभि सगुणिने ।

अर्धच्छेदा भवति हि सर्वत्रोत्पन्नराशे ॥ १०७ ॥

विर । विरल्यमानराशिं पत्न्यच्छेदस्तस्मिन् देयस्य पत्न्यस्यार्धच्छेदे-
संगुणिते सत्युत्पन्नराशे सूर्यगुलस्यार्धच्छेदा भवन्ति सत्रु सर्वत्र ॥ १०७ ॥

अथ सूर्यगुलस्य वर्गशलाकां दर्शयन्नाह,—

विरलिदरासिच्छेदा दिण्णद्धच्छेदछेदसमिलिदा ।

वग्गसलागपमाण होंति समुप्पण्णरासिस्स ॥१०८॥

विरलित्तराशिच्छेदा देयार्धच्छेदछेदसमिलिता ।

वर्गशलाकाप्रमाण भवति समुत्पन्नराशे ॥ १०८ ॥

विरलिद । सूर्यगुलाधच्छेदस्यार्धितधारा व १ व १ युता व २
सूर्यगुलस्य वर्गशलाका भवति । “ वग्गादुवरिमवग्गे इगुणा इगुणा हवति
अद्धच्छिदी ” इति न्यायेन द्विगुणा सूर्यगुलार्धच्छेदा । छे छे २ प्रतरा-
गुलाधच्छेदा भवति । “ वग्गसला रूवहिया ” इतिन्यायेन रूपाधिकसूचीवर्ग
शलाका प्रतरागुलवर्गशलाका भवति । द्विरूपवर्गधारोत्पन्नस्य सूर्यगुलस्य
समानस्थाने द्विरूपधनधारण्यो धनागुलस्योत्पन्नत्वात् । “ तिगुणा तिगुणा
पट्टाणे ” इति न्यायेन त्रिगुणा सूर्यगुलाधच्छेदा धनागुलार्धच्छेदा भवति ।
“ सपदे परसम ” इति न्यायेन सूर्यगुलवर्गशलाका एव धनागुलस्य
वर्गशलाका भवति । “ विरलिज्जमाणरासिं दिण्णस्स ” इत्यादिन्यायेन
विरल्यमानपत्न्यच्छेदासंख्यातमागेषु धनागुलच्छेदेर्गुणितेषु सत्सु जगच्छेज्या
छेदा भवति ॥ १०८ ॥

इति 'यायेन त्रिगुणभेर्णांशे एव धनलोकदेश भवति । " सपदे पर
सम ' इति 'यायेन भेर्णिवर्गशलाका एव धनलोकवर्गशलाका भवति ॥१०९॥

अथ " तस्मिन्नुभो गुण राशि इति 'यायेनार्धरुदमात्रदिकानाम यो
न्याहती राशिना भवितव्यमित्यत्र साधिकदेशानां कथमित्यत्राह,—

विरलितरासीदो पुण जेत्तियमेत्ताणि अहियरूवाणि ।
तेसिं अण्णोण्णहदी गुणगारो लद्धरासिस्स ॥ ११० ॥

विरलितराशित पुन यावमात्राणि अधिकरूपाणि ।

तेषां अन्यो'यहति गुणकारो लब्धराशे ॥ ११० ॥

विर । विरलितराशित पुनर्यावन्मात्राण्यधिकरूपाणि तासां देश
तावमात्रदिकानामन्यान्यहति लब्धपत्यराशर्गुणकारो भवति । अकसहस्रो
विरलितराशि प'यउद् ४ तस्मादधिकरूपउद् ३ त'मात्रदिकान्योन्या
हती ८ ल'ध पत्यराश' १६ गुणकारो भवति । तयो गुण्यगुणकारयोर्गु-
णनेसामरोपम १२८ स्यात् ॥ ११० ॥

अथ प्रसंगेन हीनदेशानां किमित्याकांक्षायामाह,—

विरलितरासीदो पुण जेत्तियमेत्ताणि हीणरूवाणि ।
तेसिं अण्णोण्णहदी हारो उप्पण्णरासिस्स ॥१११॥

विरलितराशित पुन यावन्मात्राणि हीनरूपाणि ।

उपाम'यो'यहति हार उत्प'राशे ॥ १११ ॥

विरलित् । अस्याथ उायामात्रमेव ॥ १११ ॥

अधोत्तरप्रकरणस्य पातनिकागाधामाह —

जगसेट्ठीण धग्गो जगपदर हादि तग्घणो लोगा ।

इदि बाहियसरराणस्सत्ता पग्गद परुत्तमो ॥ ११२ ॥

जगच्छ्रेण्या वर्गं जगत्प्रतरो भवति तद्धनो षोड ।

इति त्रैविधिनसख्यानस्य इत प्रकृत प्रकल्पयाम ॥ ११२ ॥

जग । जगच्छ्रेण्या वर्गं तत्प्रतरो भवति । तस्यां श्रेण्या घना षोड
इत्यस्माभिर्विधिनसख्यानस्य शिष्यस्य इत पर प्रकृत प्रकल्पयाम ॥ ११२ ॥
उपमाप्रकरण समाप्तम् ।

पूर्वगाथयेवोक्ता पातनिका,—

उदयदल आयाम वास पुञ्जावरेण भूमिमुहे ।

सत्तेकपचएक य रज्जु मज्झाम्हि हाणिचय ॥ ११३ ॥

उदयदल आयाम वास पूर्वापरेण भूमिमुहे ।

सप्तैः पचैक च रज्जु मध्ये हाणिचयम् ॥ ११३ ॥

उदय । उदय १४ दल ७ आयाम दक्षिणोत्तरव्यास इत्यथ । पूर्वापर
हानिचयकथनात् चतुर्दशरज्जुत्सेधपर्यन्तमायाम् सर्वत्र सप्तरज्जुवेति
ज्ञातं य । पूर्वापरेण व्यासस्तु भूमौ मुहे च यथासस्य सप्तरज्जव एका रज्जु
पचरज्जव एका रज्जु तयोर्मुखमूम्योर्मध्ये हाणिचयो साध्यौ ॥ ११३ ॥

अथ तत्साधनप्रकार कथयन्नाह,—

मुहभूमौ विसेसे उदयहिदे भूमुहाद्दु हाणिचय ।

जोगदले पदगुणिदे फल घना वेधगुणिदफल ११४

मुखभूम्यो विशेषे उदयहिते भूमुखत हाणिचय ।

योगदले पदगुणिते फल घनो वेधगुणितफलम् ॥ ११४ ॥

मुह । भूमौ ७ मुख १ हीन कृत्वा ६ सप्तरज्जुदयस्य पदरज्जुहानै
एकरज्जुदयस्य क्विती हानिरिति सपात्य तद्धानि ६ समानछेदेन सप्त
रज्जुयामे म्कल्पयत् — पनस्तद्धानिमेव तत्रावशिष्ट एकरज्जुपयति स्फे-

येत् । तदा तत्तद्दानिरहिता तत्र तत्र आयतिभवेत् । उर्ध्वलोकार्धचयानयने
 मुख १ भूम्योर्विणये ५ सति ४ पद्मद्वयचतुषस्य ३ चतुर्धये ४ द्विती
 यार्धस्य २ विर्याधय इति सपात्यापवत्य गुणितराशौ ६ एकरज्जुस
 मानतेदेन धेत्ने कृते ६ सत्यर्धद्वितीयस्य प्रथमचयस्तस्मिन्धये प्राकृतच
 यमेत्ने कृते ६ उपरितनाधद्वितीयचयो भवति । अधचतुर्थस्य ३ चतु-
 र्धये ४ दत्तस्य २ किमिति सपात्यापवत्य ३ तत्प्राननचये ६ मेलयेत्
 ६ तदुपगितनचय स्यात् । उपरितनोष्णलोकहान्यानयन अर्धचतुषस्य च
 तुफानो दलोदयस्य किमिति सपात्यागतहानिं ३ प्रातनदलचय स्फेट
 येत् ३ । एव सति उपरितनदलहानिरहितफल स्यात् । एवमूषधदलचतु
 ष्यहान्यानयनेपि पूर्वपूर्वहानिफले चतु सप्तमहानिस्फटने ३ तत्तद्दानिर
 हितायतिभशति ३ । ६ । ३ दलोदयस्य २ एतावद्दानो ३
 एकोदयस्य किमिति सपात्य ३ पद्मदलहानिफले ३ स्फेटने एकरज्जुफलं
 स्यात् । अधोलोकत्रेकफलानयने मुख १ भूमि ७ योग ८ दले ४ पद् ७
 गुणित २८ क्षेत्रफल स्यात् । तदेव धेनेन ७ गुणित घनफल १९६
 स्यात् ॥ ११४ ॥

इनोऽधोलोकोऽप्या भवति;—

सामण्य दो आयद् जवमुर जवमज्झ मदर दृस ।
 गिरिगटगेणधि जाणह अट्टवियप्पो अधो लोको ११५
 सामान्य द्विचायन यवमुरज यवमध्य मदर दूप्यम् ।
 गिरिकटकेनापि जानीहि अष्टविकल्प अधोलोक ॥ ११५ ॥

सामण्य । सामान्यमूर्ध्वार्धन त्रियगायत यवमुरज यवमप्य मदर दूप्य
 गिरिकटकन सह अष्टविकल्पो अधालोक इति जानीहि । सामान्यत्रेकफल
 ४ मुखभमाजामदत्त त्यादिना सुगम । अधालोकस्य मध्य दित्वा आयतचतु
 रस्र यथा भवति तदा त्रय पासन संस्थाप्य भजकोन्विध न्यादिना

मुनिः कृत्वा वा तदर्थं श्रुत्वा । अथाग्रे कस्य मन्त्रस्य "मुत्तमुज्ज्वल" इत्यादिना नीय ऊर्ध्वं त्रिगोत्र निर्णयप्रमाणम् । यत्र मानी कस्य मन्त्रस्य "मुत्तकोटिः" इत्यादिना निर्णयप्रमाणमानयत् ॥ ११५ ॥

अथ यत्र मन्त्रस्योत्तरप्रमाणानि,—

रज्जुतयस्मोरणे मनुद्ओ यदि हयेज एकमे ।
किमिदि कदे सपादे एकजउग्मेहमाणमिणं ॥ ११६ ॥

रज्जुत्रयस्यावसरण सप्तोदया यदि मरेत् एकस्याम् ।

किमिति कृत सपाने एकयवस्यात्सेवमानमिदम् ॥ ११६ ॥

रज्जु । रज्जुत्रयस्यावसरण सप्तोदया यदि मरेत् एकस्यस्याम् कियानुदय इति सपात कृत आगतमक्यवात्सेवमाणमिदं ३ । एकयव १ इत्यनुदय ३ अयवस्य किमिति सपान अर्थयवामेधमानं स्यात् पश्चादर्थयवक्षेत्रफल "मुत्तमुज्ज्वल" इत्यादिना नीय ऊर्ध्वं एकयव इत्यति फले अष्टादशार्धस्य किमिति सपात्य षड्भिरपवर्तित सर्व यवक्षेत्रफल १२ स्यात् । मुत्त १ भूमि ४ जोग ५ दल ५ पदे ५ गुणिते ५५ धन होर्दत्यर्धमुरजक्षेत्रफलमानीयाधमुरजस्मितावति ४ फल एकमुरजम् किमिति सपात्यापवत्य ५ एतयवक्षेत्रफले ३ सयोज्य माजिते २ यवमुरजक्षेत्रफल मवाति । यवमध्यक्षेत्रस्थयवान् सवान् गुणयित्वा २। पूर्ववदधयवक्षेत्रफलमानीय पुनरधयवम्य ३ एतावति ३३ एकयवस्य किमिति सपात्यापवर्तिते एकयवक्षेत्रफल ३ स्यात् । एकयवम्य एतावति फले ३ चतुर्विंशतियवाना किमिति सपात्य षड्भिरपवर्तित यवमध्यक्षेत्रफल मवाति ११६

अथ मदरक्षत्रफलानयनप्रकारं दशयाति —

अद्ध चउत्थभागो सगचारसम तिदालचारसो ।
सगचारस दिउड् रज्जुद्ओ मदर सत्त ॥ ११७ ॥

अर्धं चतुर्थांशं सप्तद्वादशं त्रिचत्वारिंशन्द्वादशांशं ।

सप्तद्वादशांशं द्व्यर्धं रज्जुद्वया मदरे क्षेत्रे ॥ ११७ ॥

अर्धं । अर्धं १ चतुर्थांशं १ तयामैलने १ सप्तद्वादशांशं १ त्रिचत्वा-
 रिंशद्वादशांशं १ पुनरपि सप्तद्वादशांशं १ अर्धद्वितीयोशां १ रज्जुद्वया
 मंदरक्षेत्रे भवति । मुस १ भूर्माण ७ विमेषे इति हानिमानीय ६ सप्त रज्जुद्वयस्य
 ७ षट्शानो ६ त्रिचतुर्थ १ रज्जुद्वयस्य किमिति सपात्य द्वाभ्यां तिर्यग्य
 वार्यं १ गुणिते १ समानछिन्नसप्तरज्ज्वां १ स्फेटिते १ त्रिचतुर्थभेदोपरि-
 सनायाम स्यात् । सप्त रज्जुद्वयस्य षट्शानो सप्तद्वादश १ रज्जुद्वयस्य किमिति
 सपात्यापवत्य गुणिते १ पूर्वस्मिन्नायामे १ स्फेटिते १ उपरितनायाम
 स्यात् । सप्त रज्जुद्वयस्य षट्शानो त्रिचत्वारिंशद्वादश १ रज्जुद्वयस्य
 किमिति सपात्यापवत्य गुणिते १ पूर्वस्मिन्नायामे १ स्फेटिते १ उपरित
 नायाम स्यात् । सप्त रज्जुद्वयस्य षट्शानो सप्तद्वादश १ रज्जुद्वयस्य
 किमिति तथा गुणिते १ पूर्वस्मिन्नायामे १ स्फेटिते १ उपरितनायाम
 स्यात् । सप्त रज्जुद्वयस्य षट्शानो अर्धद्वितीय १ रज्जुद्वयस्य किमिति गुणिते
 १ समानछेदन १ अथस्तात् १ स्फेटने कृतं १ उपरितनायाम स्यात् ।
 षट्छिन्नयनार्थं सप्तद्वादशोदयभेदद्वयमायतचतुरस्रं कृत्वा तत्तमुरं १ १
 तत्तद्भूमौ १ स्फेटयित्वा १ सप्तभिरपवत्यं १ १ तद्वद्वयस्य
 एतावति १ एकसंख्यस्य किमिति सपातितं १ एकैकरसंख्यस्य भूमि । तेष्वेक-
 स्रद्भूमिमुपरितन कृत्वा सदनयभूमिसप्ततनभूमिं कृत्वा १ सप्तद्वादशोदयो
 षट्छिन्नं कुर्यात् । पश्चाद्विषमचतुर्भुजं त्रिकलं मुसभूमिजोगडलत्यादिनानीय
 आयतचतुरस्रभेदं भुजकोटिषधादित्यादिनानीय षण्णां कलानां च त्रि द्वि
 द्वि षट्चतर्दशभिः समानछेदनं मेलनं कृत्वा १ इत च मंदरभेदकलं
 भवति १८ । रज्जुतयमसेत्यादिनार्थयवोत्सध ६ मानीय समानछिन्नसप्त
 रज्ज्वां स्फेटनं सप्त रज्जुभूममस्य स्यात् । तत्रैव ६ पुनरर्धयवोत्सध
 स्फेटने ६ तदुत्तरस्य मम स्यात् । एव पुनर्पूर्वमस्य पुन पुन अधयवा

सोभङ्गत्रये तत्रानुगणनायां सुगमे साग १ । सुगमवित्रयेत्सादिना सनी
 येवगा कनमानीय मेवदिना ३^० कणा ११ मवगत्मेवने १
 वृष्णभेवकत्वं भाति । इज्जवपेयादिनाथ्याथवकत्वंमानीय पदमदमेव
 वनि ३^० अग्यन्नादिशर्मद्वानो किमिति संताय इदगाभिरपवमप १
 गुणिते २८ गिरिहृत्कभरफले भवति ॥ ११७ ॥

इरनीमूजनीकक्षेत्रभेदमात्रः—

सामण्ण पत्तयं अद्धत्थमं तहेय पिण्णट्ठी ।

एदे पचपयारा लोयकमेत्तल्लि णायज्या ॥ ११८ ॥

मामान्य प्रयेक अर्धं स्तम तथैव पिण्डि ।

एते पचप्रभारा लोकक्षेत्रे ज्ञातया ॥ ११८ ॥

सामण्ण । सर्माकृत प्रयेक अद्धं स्तम तथैव पिण्डि एने पचप्रभारा
 ऊवलोकक्षेत्रे ज्ञातया । मुह १ मूमि ५ जोग ६ दडे इत्यादिना सनी
 वृत्तोच्चलोकाक्षेत्रफल ३^० मानीय एकस्येतावति ३^० दयो किमिति
 सपात्यावत्य गुणिते सामान्यक्षेत्रफल २१ भवति । मूमो ५ मुह १ शेष-
 यित्वा अधचतुर्थोदयस्य २ चतुश्चय ४ अर्धद्वितीयो ३ दयस्य किमिय
 पवत्य सपातित १^३ समानडिनेकरज्ज्वा ३^० मेलने कृते १^३ अर्धद्विती-
 योपरितनव्यास ३^० तत्रैव तत्सपातमेलने ३^० तदुपरितनव्यास । अथ
 चतुर्थोदयस्य चतुश्चये अर्धोदयस्य किमित्यपत्रर्थं सपातित ३^० अधस्तात्
 ३^० मेलने उपरितनव्यास ३^० । एवमथादयस्य नय ३^० मेव तत्तद्मो स्फे-
 टने ३^० उपयुपरि व्यास स्यात् यावत्यचदल ३^० ३^० ३^० ३^० । अधचतुर्थोदये
 चतुश्चये ४ एकोदयस्य १ किमिति सपातित ३^० अधस्तात् १^३ स्फेटने ३^० लोक-
 मव्यास स्यात् । मुहमूमिजोगदडेत्यादिना अधद्वितीयोदयादिभेवफलमा-
 नीय सर्वपा मेलने कृते १^३ प्रयेक भेवफल भवति २१ । अर्धस्तमयो
 क्षेत्रफल सुगमे । मुह १ मूमो ५ विससे ४ उदयदिदेत्यादिना दिवहा-

द्विपरितननवभूमिव्यासमानाय ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० दिव
 द्विपरितना व्यासे ६ समच्छेदेन मध्यमैकरज्जुं स्फोटयित्वा ७ उभयभाग
 स्येतावति ८ एकभागस्य किमिति त्रैराशिकं कृत्वा अर्धित ९ अथा
 दिवद्विपरितनवभूमि १० अथोद्विपरितनवभूमि ११ समच्छिन्नत्रिरज्ज्वं
 १२ स्फोटयित्वा १३ अर्धित १४ बहि सुधीभूमि ॥ ११८ ॥

अथ त्रिभुजोद्धार्य मायादयमाह,—

रज्जुद्विगहाणिवाणे आहुद्दुदओ जदीह एकस्से ।

किमिदि तिरासियकरणे फल दल्लण तिवाहुदओ ११९

रज्जुद्विगहानिस्थाने अर्धचतुर्धादयो गदीह एकस्य ।

किमिनि त्रैराशिककरणे फल दलेन त्रिवाहुदय ॥ ११९ ॥

रज्जु । रज्जुद्विगहानिस्थाने अर्धचतुर्धादयो १ यदि तदेकस्य १
 किमिति त्रैराशिककरणे फलं २ दल्लणिया ३ ३ प्रणिधियेन्द्रयोदय
 तत्फलं ४ समच्छिन्नदल्लण्यूनं ५ दिवद्विपरितनवभूमि ॥ ११९ ॥

तिभुजुदयणुहयुचं सुद्धेरोत्तस्स भूमिमुहसेसे ।

भूमीतप्फलहीण चउरस्सधराफलं शुद्ध ॥ १२० ॥

त्रिभुजोद्धार्योनमुषयोष सुधाक्षेपस्य भूमिमुत्तरोषे ।

भूमितत्फलहीनं चतुरस्रधराफलं शुद्ध ॥ १२० ॥

तिभुजु । त्रिभुजोद्धार्येन १ ऊन समच्छिन्नदिवद्विपरितनवभूमि २ बहि
 सुधीभूमि ३ भूमिमुत्तरोषे ४ शवभूमि ५ तत्फलहीनं शुद्धं चतु
 रस्रधराफलं भवति । समच्छिन्नत्रिरज्जुं ११ द्विपरितनवभूमि १२
 अर्धनीय अर्धिते १ अर्धनीयभूमि तत्र तत्र व्यासे १३
 १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० अर्धित १ २ तत्र

त्रिभुजभूमि । रज्जुदुगेत्यादिना त्रैराशिकफलमानीय ५ तत्र समच्छिन्नत्रिदल
 ६ न्यून ७ उपरतिनात सूच्युदय तदुदये ८ समच्छिन्नदलोदये ९ अपरति
 अवाशिष्टे १० उपरतिनवहि सूच्युत्सेध । तदुपरतिनव्यास ११ समच्छिन्न
 त्रिरज्ज्वा १२ मपनीय अवाशिष्टे १३ अर्धिते १४ तद्दहि सूचीमामि । पुनरपि
 तद्दयासे १५ एकसमच्छिन्नरज्जु १६ मपनीय अवाशिष्टे १७ अर्धिते १८
 उपरतिनत्रिभुजभूमि । एतदुपरतिनव्यासे १९ एकरज्जु २० मपनीय अवा
 शिष्टे २१ अर्धिते २२ अगसूचीभूमि । मुखभूमिजोगदलेत्यादिना अथउप
 तनवहि सूचीक्षेत्रफल २३ २४ मानीय तत् तयोरत क्षेत्रफले भुजकोटि
 वधेत्यादिना आनीति - २ अष्टाविंशत्या समाच्छिन्ने २५ २६ स्फेद्यित्वा एक
 क्षेत्रस्यैतावति २७ २८ द्वयो किमिति सपात्यापवर्तिते २९ ३० अधस्तनोपरि
 तनवहि सूच्यन क्षेत्रफल भवति । इतरेषां क्षेत्राणां फल मुखभूमि जोगदले
 त्यादिनानीय चतुर्भि समानउद् कृत्वा परस्पर मेलयित्वा भक्ते दशरज्ज्व
 मध्यसप्तारज्ज्व तत्पादवाष्टदलाना चतुरज्ज्व । एव सवर्षा मेलने पिनष्टि
 क्षेत्रफल २१ भवति ॥ १२० ॥

अतो लोकस्य पूर्वापरेण दक्षिणोत्तरेण च परिधिं दर्शयन्नाह,—

पुत्रावरेण परिही उगुदाल साहिय तु रज्जुण ।
 दक्षिरणउत्तरदो पुण वादाल होंति रज्जुण ॥ १२१ ॥

पूर्वापरेण परिधि एकोनचत्वारिंशत् साधिकं तु रज्जुनाम् ।

दक्षिणोत्तरत पुन द्वाचत्वारिंशत् भवति रज्जुनाम् ॥ १२१ ॥

पुष्ट्या । पूर्वापरेण परिधि एकोनचत्वारिंशत् ३९ साधिका १२१
 रज्जुनां, दक्षिणोत्तरत पुनर्द्वाचत्वारिंशद्भवति रज्जुनाम् ॥ १२१ ॥

साधिकत्वं कथमिति च्छाह,—

भुजशोडिकदिसमासो कण्णकदी होदि वग्गरासिस्म ।
 गुणधारमागदारा वग्गाणि ह्यति णियमेण ॥ १२२ ॥

भुजकोटिकृतिममास वर्णकृति भवति वर्गराशे ।

गुणकारभागहारौ वर्गो भवन नियमेन ॥ १२२ ॥

भुज । भुज ७ कोटि ३ कृति ४९।९ समास ५८ कणकृतिर्भवति ।
एकपार्श्वस्यैतावति ५८ द्वयो पार्श्वयो किमिति वर्गराशेर्गुणकारभागहारौ
वर्गात्मको भवत ५८।२२ नियमेन । एतत्सगुण्य २३२ मूले गृहीति
१५ $\frac{१}{२}$ अधोलोकस्य साधिकत्वमभूत् । भुज ७ कोटि २ कृति ५ $\frac{१}{२}$ । ४
चतुर्भित्तसमच्छेदेन समासे ५ $\frac{१}{२}$ कर्णकृति एक पार्श्वस्यैतावति ५ $\frac{१}{२}$ चतुर्णा-
किमिति सपात्यापवत्य गुणयित्वा २६० मूले गृहीति १६ $\frac{१}{२}$ ऊर्ध्वलोकस्य
साधिकत्वमभूत् । मिलितोभयपरिधिरञ्जुषु ३१ अधोलोकाय परिधि ७
ऊर्ध्वलोकपरिधेः १ मेलने ८ व्येक्यत्वारिहात् ३९ अधिकोभयहारा
३०।३२ वर्धाकृत्य १५।१६ ताभ्यामन्योऽयमशुद्धौ १६ $\frac{१}{२}$ १२ १५
गुणयित्वा ११ $\frac{३}{४}$ १ $\frac{१}{२}$ समेस्य १८ $\frac{१}{२}$ चतुर्भिरपवर्तने ११ $\frac{३}{४}$ उभयलोका
धिक्यं स्यात् । दक्षिणोत्तरपरिधि सुगम ॥ १२२ ॥

अथ लोकपरिवर्धितवायुस्वरूपादिनिर्णयार्थमाह,—

गोमुत्तमुरगणाणाधण्णाण घणबुघणतणूण ह्ये ।

यादाण वलयतयं रुक्खम्स तय घ लोगरस ॥ १२३ ॥

गोमुत्रमुद्गनानावर्णाना घनाबुघनतनुना भवेत् ।

याताना वलयत्रय वृत्तस्य त्वगिव लोचम्य ॥ १२३ ॥

गामुत्त । गोमुत्रमुद्गनानावर्णाना घनोद्दिघिनघाततनुघाताना वलयत्रय
लोकस्य भवेत् वृत्ताय त्वगिव ॥ १२३ ॥

अथ तद्वायना बाहु यनिर्णयार्थमाह

जायणधीससहम्स घट्ट वलयणयाण एसेयं ।

भुलायतल पास हहादा जाय रञ्जुसि ॥ १२४ ॥

योजनविंशसहस्र बाहुल्य वलयत्रयाणां प्रत्येकम् ।

मूलोक्तले पार्श्व अघस्तात् यावत् रज्जुरिति ॥ १२४ ॥

जोयण । योजनविंशतिसहस्र बाहुल्य वलयत्रयाणां प्रत्येकं भवेत् । कुत्र कुत्रेति चेत् । भुवा ८ तले लोक्तले पार्श्व अघस्तात् यावदेका रज्जुस्तावत् ॥ १२४ ॥

अथोपरिमवायुबाहुल्यनिणयाद्यमाह,—

सत्तमस्त्रिदिपणिधिम्हि य सग पणचत्तारिपणचउक्तति
तिरिये घम्हे उट्टे सत्तमतिरिए च उक्तक्रम ॥ १२५ ॥

सत्तमक्षितिप्रणिधी च सप्त पच चतुष्क पच चतुष्क त्रिकम् ।

तिरश्चि ब्रह्मे ऊध्वे सत्तमतिरश्चि च उक्तक्रम ॥ १२५ ॥

सत्तम । सत्तमक्षितिघट्टे च वायुत्रयाणां यथासस्येन सप्त पच चतुष्क बाहुल्य, तिर्यक्क्षितिप्रणिधी पच चतुष्क त्रिक बाहुल्य । ब्रह्मलोकोर्ध्वलोकप्रणिधी पुन सत्तमतिर्यक्क्षितौ उक्तक्रम ॥ इदानीं सत्तमक्षितिमाभ्यतियग्भूमिपर्यन्त मध्यक्षितिना हानिं मुह १२ भूमिण १६ विसेसे ४ उदय ६ इतेत्यादिना हानिं आनीय ६ भूमौ १६ एक निष्काश्य समच्छिन्ने ६ तस्मिन् तद्धानिं स्फटयित्वा ६ अपवर्तिते ३ पृष्ठभूषणिधिवायुबाहुल्य स्यात् ३ तत्रैक गृहीत्वा तद्धानि ६ मेव तथा स्फटयित्वा ६ पचत्य ३ प्राक्तनत्रिभागमेतने पचमूवायुबाहुल्यं स्यात् ३ । एवमेव तिर्यग्लोकपर्यन्त वायुहानिबाहुल्यं ज्ञातव्यं १४ १/३ १/३ १२ । इत उर्ध्वलोकवायुचयं मुस १२ भूमयो १६ विशेष कृत्वा ४ आहुट्टी दमस्य ३ चतुर्ध्वे ४ अधद्वितीयोदयस्य - क्रियान् चय इति सवात्पानीय तत् १/३ एतावन्मुसे १२ सम-उदेन १/३ सयोग्य १/३ भक्ते १/३ दिव कृषणिधिवायुबाहुल्यं स्यात् । एतद्वे तत्र तत्र श्यक पृथक् त्रैताशिकविधिना उपरितनतनदायचयानिवाह यमानयत् ॥ १२५ ॥

अथ लोकामवायुबाहुल्यं योतयन्माह,—

कोसाण दुग्मेक देसूणेक च लोपसिहरम्भि ।

ऊणधणूण प्रमाण पणुवीसज्जहियचारिसर्य ॥ १२६ ॥

कोशाना द्विकमेक देशेनेक च लोकशिगरे ।

ऊनधनुषा प्रमाण पचविंशतिचतु शतम् ॥ १२६ ॥

कोसाण । कोशानां द्विकमेक देशेनेक च लोकशिगरे ऊनधनुषा प्रमाण । किमित्युक्ते पचविंशत्यधिकचतु शतमित्युक्तम् ॥ १२६ ॥

अथ लोकाधस्तनशमुत्त्रफलमानयन्माह—

लोयतले वादतये बाहल्ल सट्टिजोयणसहस्स ।

सेट्टिमुजकोट्टिगुणिदं किंचूण वाउखेत्तफल ॥ १२७ ॥

लोकतले वातत्रये बाहुल्यं पष्ठियोजनसहस्रम् ।

श्रेणिभुजकोट्टिगुणितं किंचिदूनं वायुभेत्तफलम् ॥ १२७ ॥

लोकतले । लोकतले वातत्रये बाहुल्यं पष्ठियोजनसहस्रं, श्रेणिभुजकोट्टिगुणितं पूषापरण समचतुरस्रत्वाभावात् किंचिन्न्यूनत्वेन वायुभेत्तफलं स्यात् ॥ १२७ ॥

अथ तदुपरि वायुभेत्तफलमानयन्माह,—

किंचूणरज्जुवासी जगसेदीदीहर हवे वेहो ।

जोयणसट्टिसहस्सं सत्तमसिदिपुण्वअवरे प ॥ १२८ ॥

किंचिदूनरज्जुवासी जगत्सेजिरीयं भवेत्तवेध ।

योमनपष्ठिसहस्रं सत्तमसिदिपूषापरं च ॥ १२८ ॥

किंचूण । किंचिन्न्यूनरज्जुवासी जगत्सेजिरीयं भवेत्तवेध । यथा योज

नपठितार्थं सप्तमपुष्टिभ्या पूवात्तद्वयो क्षेत्रयो फल । मुजङ्गादिग्या-
दिना षष्ठमागम्येतायति द्वयोर्भागयो किमिति मंफातेन चानतन्वम् ॥ १२८ ॥

इत परं सिद्धफलमाह,—

जगत्प्रतरसप्तभाग सट्टिसहस्रैहि जोयणेहि गुण ।
विगगुणिदमुभयपासे वातफल पुञ्चअधरे य ॥ १२९ ॥

जगत्प्रतरसप्तभाग षष्टिमहस्रै योजनै गुण ।

द्विगुणित उभयपार्श्व वातफल पूर्वापरयो ष ॥ १२९ ॥

जग । जगत्प्रतरसप्तमभाग षष्टिसहस्रैयोजनेर्गुणित द्विगुणित उभय
पार्श्वे वातफल पूर्वापरयो ॥ १२९ ॥

अथ दक्षिणोत्तरवातक्षेत्रफलानयनप्रकारमाह,—

उदयमुखभूमिवेहो रज्जुसप्तमपट्टरज्जुसेढी य ।
जोयणसट्टिसहस्र सप्तमक्षितिदक्षिणोत्तरदो ॥ १३० ॥

उदयमुखभूमिवेधा रज्जुसप्तमपट्टरज्जुश्रेण्य ष ।

योजनषष्टिसहस्र सप्तमक्षितिदक्षिणोत्तरत ॥ १३० ॥

उदय । उदयमुखभूमिवेधा यथासंख्य रज्जुसप्तमपट्टरज्जुश्रेण्य योज
नषष्टिसहस्र सप्तमक्षितिदक्षिणोत्तरत । मुखभूमिजोगदलेत्यादिना प्राग्वा
राशिकविधिना चानेतन्वम् ॥ १३० ॥

तथैव तत्फलमुच्चारयति,—

तस्स फल जगत्प्रतरी सट्टिसहस्रैहि जोयणेहि हदो ।
चाणउदिगुणो सप्तघणसप्तमजिदो उभयपासम्हि ॥ १३१ ॥

तस्य फल जगत्प्रतर षष्टिसहस्रै योजनै हत ।

द्वानवतिगुण सप्तघनसप्तक उभयपार्श्व ॥ १३१ ॥

तस्स । छायामात्रमेवार्थ ॥ १३१ ॥

अथ तदुपरि पूर्वापरपार्ववातफलमानयन्नाह,—

सेढी छरज्जु चोद्दसजोयणमायामवासमुस्सेह ।
पुव्ववरपासजुगले सत्तमदो तिरियलोगोत्ति ॥ १३२ ॥

श्रेणी पद्दरज्जु चतुदशयोजन आयामयासोत्सेधम् ।

पूर्वापरपार्व्वयुगले सप्तमत तिर्यग्लोकात् ॥ १३२ ॥

सेढी । श्रेणी पद्दरज्जुचतुर्दशयोजनानि आयामयासात्सेधा पूर्वा-
परपाद्दयुगले सप्तमतस्तिपरग्लोकपर्यत । भुजकोटीत्पादिना द्विपरवर्ग्यमय-
पार्व्वार्ध द्वाभ्यां सगुण्य नेतव्यम् ॥ १३२ ॥

अथ तस्य सिद्धफलमुच्चारयति,—

तव्वादरुद्धसेत्त जोपणचउवीसगुणिदजगपद्दर ।
उभयदिसासजणिद णादध्व गणिदकुसलेहिं ॥ १३३ ॥

तद्वातरुद्धसेत्र योजनचतुर्विंशतिगुणितजगत्प्रतरम् ।

उभयदिशासजातं शातव्यं गणितकुशले ॥ १३३ ॥

तव्वाद् । तद्वातावच्छेदं योजनचतुर्विंशतिगुणितजगत्प्रतरं उभय
दिशासंजातं शातव्यं गणितकुशले ॥ १३३ ॥

अथ दक्षिणोत्तरपार्व्ववातफलमानयति,—

उदय भूमुह वेहो छरज्जु सत्तमछरज्जु रज्जु य ।
जोयण चोद्दस सत्तमतिरियोत्ति ह्दक्खिरणुत्तरदो । १३४ ॥

उदय भूमुह वेध पद्दरज्जुव सप्तमपद्दरज्जुव रज्जुय ।

योजनचतुदश सप्तमभितयगत हि दक्षिणोत्तरत् ॥ १३४ ॥

उदय । उदय भूमय वेध पद्दरज्जुव सप्तमपद्दरज्जुव एकरज्जु

पयं वरा मया भवन्मिषं च धर्तुं शक्तिं ॥ १४१ ॥

१५) मया ॥ पूर्वा मन्त्रित मन्त्रिं च य ॥ १४२ ॥

धर्ममा । यमा वरा मेधा अत्र रि ध मन्त्रिं जनेग धा धर्मिण्ड
न न वरी धर्तुं पूर्वा मन्त्रित मन्त्रिं च य ॥ १४२ ॥

अथ तत्र धर्ममूर्ति रोरुप ७ —

रयणव्यहृतिहा मरमागा पकापयहृत्तमागाति ।

मोक्षम चउरार्मादी मीदी पायणमहम्मवाहृता ॥ १४३ ॥

रत्नप्रभा विरा मरमागा पकापयहृत्तमागा इति ।

पौदश धर्ममूर्ति अर्शति यानमश्रयवाहृत्या ॥ १४३ ॥

रय । रत्नप्रभा विरा मरमागा पकापयहृत्तमागा चनि वरुप
चनुपशीति अर्शतिपाजनमश्रयवाहृत्या ॥ १४३ ॥

पौदशभुवो मशा गाधादयनात् —

चित्ता वज्रा वेदुरिपलोहिदक्या मसारगल्लवणी ।

गोमेदा य पवाला जोदिरसा अजणा णवमी ॥ १४४ ॥

चित्रा वज्रा वेदूर्या लोहिनास्या मसारकल्यावनि ।

गोमेदा च प्रवाला जोतिरसा अजना नवमी ॥ १४४ ॥

चित्ता । चित्रा वज्रा वेदूर्या लोहिनास्या मसारकल्यावनि गोमेदा च
प्रवाला ज्यातिरसा अजना नवमी ॥ १४४ ॥

अजणमूलिय अका फलिहा चदण सत्रथगा वकुला ।

सेलक्खा य सहम्सा एगेग लोगचरिमगया ॥ १४५ ॥

अजनमूलिका अक्षा स्फटिका चदना सवार्धका बकुला ।

शैलारया च सहस्रा एकैका लोकचरमगता ॥ १४८ ॥

अजम् । अजनमूलिका अक्षा स्फटिका चदना सवार्धका बकुला शै-
लारया च सहस्रमिता एकैका लोकचरमगता ॥ १४८ ॥

अथ द्वितीयादीनां बाहुल्यमाह,—

चत्तीसमट्टवीस चउवीस वीस सोलसट्टाणि ।

हेट्टिमट्टप्पुट्टवीण महस्समाणेहिं बाहुलिय ॥ १४९ ॥

द्वात्रिंशद्दशविंशति चतुर्विंशति विंशति षोडशाष्टौ ।

अवन्तेनपट्टवीणा सहस्रमानै बाहुल्य ॥ १४९ ॥

चत्तीस । द्वात्रिंशद्दशविंशति चतुर्विंशति विंशति षोडशाष्टौ अथ
स्तेनपट्टवीणा याजनसंख्यबाहुल्यम् ज्ञेयम् ॥ १४९ ॥

अथ तामु स्थितपट्टानां स्थानान्याह,—

सत्तमपिदिबहुमज्जे विलानि सेसासु अप्पचट्टलोत्ति ।

हेट्टुपरिं च सहस्स वज्जिय पट्टलक्कामे होत्ति ॥ १५० ॥

सत्तमभिनिबहुमध्ये विजानि शेषामु अब्बहुत्त ।

अथ उपरि च महस्य वज्जियत्ता पट्टक्कमेण भवति ॥ १५० ॥

सत्तम । सत्तमभिनिबहुमध्ये विजानि शेषामु अब्बहुत्तभाष्यमेत अथ
उपरि च सहस्रशतन वर्जयेत्ता पट्टक्कमेण भवति ॥ १५० ॥

अथ प्रथमादीनां विस्तारणमाह —

तीस पणुवीस पण्णरस दस विण्णिण पचहीणक्क ।

लक्ख सुट्टं पच प्पुट्टवीसु कमण्णिणियाणि ॥ १५१ ॥

त्रिंशत् पञ्चविंशति पंचदश दश त्रीणि पञ्चहीनैक ।

लक्ष शुद्ध पंच च पृथ्वीषु क्रमेण निरयाणि ॥ १९१ ॥

तीर्म । त्रिंशत् पञ्चविंशति पंचदश दश त्रीणि पञ्चहीनैक एवम् ।
लक्षं शुद्ध पंच च पृथ्वीषु क्रमेण निरयाणि विडानि इत्ययं ॥ १९१ ॥

अथ तास्वनिशीतोष्णविभागमाह,—

रयण्यहपुढवीदी पचमतिचउत्थओत्ति अदिउण्ह ।
पचमतुरिए छट्टे सत्तमिए होदि अदिसीढ ॥ १९२ ॥

रत्नप्रभापृथ्वीत पचमत्रिचतुर्यात अत्युष्णम् ।

पचमतुरीये षष्ठ्या सप्तम्या भवति अतिशीतम् ॥ १९२ ॥

रयण्य । रत्नप्रभापृथ्वीमारभ्य पचममुक्त्वा त्रिचतुश्चमागपर्यंत अत्युष्णं
पचममुक्त्वात्तुर्ये मागे षष्ठ्या सप्तम्या च मुक्त्वा भवत्यातिशीतम् ॥ १९२ ॥

अथ तार्क्ष्विद्रकश्रेणीवद्दसरयामाह,—

तेरादि दुहीणिदय सेढीबद्धा दिसासु विदिसासु ।
उणवण्णडदालादी एक्केकेणूणया क्रमसो ॥ १९३ ॥

त्रयोदशाद्या द्विहीना इद्रका श्रेणीवद्धा दिशासु विदिशासु ।

एकोनपचाशदष्टचत्वारिंशादि एक्केकेन न्यूना क्रमशः ॥ १९३ ॥

तेरादि । त्रयोदशाद्या द्विहीना इद्रका श्रेणीवद्धा दिशासु यथासंख्यमे
कोनपचाशदष्टचत्वारिंशादि षट्ठ षट्ठ प्रत्येकैकेन न्यूना क्रमशः ॥ १९३ ॥

अथ तार्क्ष्विद्रकसंज्ञा गाथापठनाह,—

सीमतणिरयरौरवमतुड्मतिंदया य समतो ।

तत्तोवि असमतो वीभतो णयमओ तत्थो ॥ १९४ ॥

सीमतनिरयरीखभ्रातोद्भ्रतैद्रका च सभ्रात ।

ततोपि अभभ्रात विभ्रात नवम व्रस्त ॥ १५४ ॥

सीर्मत । सीमतनिरयरीखभ्रातोद्भ्रतैद्रका च सभ्रात ततोप्यसभ्रात
विभ्रात नवम व्रस्त ॥ १५४ ॥

तसिदो वक्रतकरो होदि अवक्रतणाम विक्रतो ।

पदमे तदगो धणगो वणगो मणगो खडा साडिगा ॥ १५५ ॥

प्रसितो वक्रताण्य भवति अवक्रतनाम विक्रत ।

प्रथमाया ततक स्तनक वनक मनक खडा तडिकर ॥ १५५ ॥

तसिदो । प्रसितो वक्रताण्यो भवति अवक्रतनाम विक्रत प्रथम-
पुषिष्या १३ ततकस्तनक वनक मनक खडा तडिका ॥ १५५ ॥

जिष्मा जिष्मिगसण्णातो छोलिगलोलवत्थधणलोलो ।

बिदिए ततो तविदो तवणो तावणणिदाहा य ॥ १५६ ॥

जिह्वा जिह्विसज्ञा ततो छोलिगलोलवत्थधणलोलो ।

द्वितीयाया तत तपित तपन सापननिदाषी च ॥ १५६ ॥

जिष्मा । जिह्वा जिह्विसज्ञा ततो छोलिगलोलवत्थधणलोलो द्विती-
याया ११ तमस्तपितस्तपनस्तापननिदाषी च ॥ १५६ ॥

उज्जलिदो पञ्जलिदो सजलिदो संपञ्जलिदणामा य ।

तदिए आरा मारा तारा च्या य तमगी य ॥ १५७ ॥

उज्जलिन प्रञ्जलित संञ्जलिन संप्रञ्जलिननामा च ।

तनीयाया आरा मारा तारा च्या च तमगी च ॥ १५७ ॥

उज्ज । उजासि प्रसिद्धिं संसृजि । सन्तुष्टिनामा चतुर्षु
घाटा ९ आग माग ताग चर्गा च तमही च ॥ १५७ ॥

घाटा घटा चउत्ये तमगा ममगा य क्षमग अद्विगा ।
तिमिमा य पचमे हिमरद्वललहगितय छट्टे ॥ १५८ ॥

पाग पग चतुर्षु तमगा भ्रमगा च प्रथगा अद्वेदा ।

निमिभ्रा च पचम्या हिमवात्प्रिच्छाप्रिनय पष्टयम् ॥ १५८ ॥

घाटा । घाटा पग चतुर्षु ७ तमका भ्रमका च द्रवका अद्वेदा
तिमिभ्रा ७ पचम्या ५ हिमवात्प्रिच्छाप्रिनय इति त्रयं ३ पष्टया ॥ १५८ ॥

ओहिद्व्याण चरिमे तो सीमतादिसेटिचिलणामा ।

पुव्वादिदिसे करणापिपासा महकरस अइपिपासा य ॥ १५९ ॥

अप्रतिम्यान चरमे तन सीमतादिश्रेणिचिलनामानि ।

पूर्वादिदिशाया काभा पिपासा महाकाभा अनिपिपासा च ॥ १५९ ॥

ओहि । अवधिस्थान अप्रतिष्ठितम्यान वा चरमे चरमाया । ततः
सीमतादिश्रेणिचिलनामानि । घमाया पूर्वादिदिशाया काभा पिपासा
महाकाशा अतिपिपासा च ॥ १५९ ॥

अथोत्तराधस्य पातनिका गर्भाकृत्य गाथात्रयमाह,—

वसतदगे अणिच्छा अविज्ज महाणिच्छ महअविज्जा य ।
तत्ते दुक्खा वेदा महदुक्खस महादिवेदा य ॥ १६० ॥

वशाततके अनिच्छा अविद्या महानिच्छा महाप्रविद्या च ।

तत्ते दुक्खा वेदा महदुक्खा महादिवेदा च ॥ १६० ॥

वस । वशायास्तनकदके अनिच्छा अविद्या महानिच्छा महाविद्या च ।
मेधाया तत्तदके दुक्खा वेदा महादुक्खा महावेदा च ॥ १६० ॥

आराए दु णिसिद्धाणिरोहअणिसिद्धमहणिराहा य ।
तमगणिरुद्धविमद्वण अइपुव्वणिरुद्धमहविमद्वणया ॥

आगया तु निगृष्टा निरोधा अनिगृष्टा महानिरोधा च ।

तमके निरुद्धविमर्दनअतिपूव्वानेरुद्धमहाविमर्दना ॥ १६१ ॥

आराए । अजनाया आरेद्धके तु निगृष्टा निरोधा अनिगृष्टा महानि
रोधा च अरिष्टाया तमकेद्धक निरुद्धविमर्दनअतिनिरुद्धमहाविम
र्दनकाथ ॥ १६१ ॥

हिमगा नीला पका महणील महादिपक सत्तमय ।
पढमो फाटो रउरयमहकालमहादिरउरयया ॥ १६२ ॥

हिमके नीला पका महानीला महादिपका सत्तमायाथ ।

प्रथम काल रौरवमहाकालमहारौरवा ॥ १६२ ॥

हिमगा । मपय्या हिमकमके नीला पका महानीला महापका च
सत्तमाया प्रथम काल रौरवमहाकालमहारौरवा ॥ १६२ ॥

अथ प्रतिपत्ति प्रथमपट्टधन धत्वा चरमपट्टधनमानेजु चरमपट्टधन
धत्वा प्रथमपट्टधनमानेजु वा माथ माह,—

वेगपद् चपगुणिदं भूमिद्वि मुहम्मि रिणधनं च वए ।
मुहभूमिजोगदले पद्गुणिदे पद्धण होदि ॥ १६३ ॥

व्येकपद् चपगुणिदं भूमि मुहे चरण धनं च वृते ।

मुहभूमियोगदले पद्गुणि । पद्धन भवति ॥ १६३ ॥

चपगपद् । प्रथमपट्टधनद्विद्विदिमानभाजवद् इ ४९ ४८ मन्दि वा
९७ चनुदि समाजन इ । भासमबाल चरमपट्टधनद्विदिदिदिमानभाज
वद् इ ४७+३ मत्ताय व ३३ चन गोगन ३५ ४५ ५५ ५६

मूमो ३८८ मुने च २९० यथासम्भवेन विगतेकं पद १२ चय ८ गुणिं
 ९६ ऋणे घने च कृते २९०३८८ मुम्बुमी स्यातां । तयोर्गो ६/०
 दलिते ३४० पद १३ गुणिते ४४२० प्रथमपृथ्वीश्रेणिवद्दसकलितपद
 घन भवति । इद्रकसहितमेवामनेतय्य ४४३३ । समस्तपृथ्वीश्रेणी
 बन्धानयनेप्येवमेवानेतय्यम् । तत्र मुग ५ मूमि ३८९ ॥ १६३ ॥

इद्रकश्रेणीचद्वप्रमाणानयने सकलितसूत्रमाह,—

पदमेगेणचिहीण दुभाजिद उत्तरेण सगुणिद ।
 पमवजुद पदगुणिद पदगणिद त विजणाहि ॥ १६४ ॥

पदमेकेन विहीन द्विमत्त उत्तरेण सगुणित ।

प्रमवयुत पदगुणित पदगणित तत् विजानीहि ॥ १६४ ॥

पद । पद १३ एकेन हीन १२ द्वाभ्यां मक्त ६ उत्तरेण सगुणित ४८
 प्रमव २९२ युत ३४० पद १३ गुणित ४४२० तत्सकलितपदगणित
 मिति विजानीहि । एव द्वितीयादि सर्वपृथिव्यामानेतय्य ॥ १६४ ॥

अथ प्रकारातरेण सकलितानयनमाह,—

पुढविंदयमेगुण अद्भकय वगिगय च मूलजुद ।
 अद्भगुण चउसहित पुढविंदयताडिय च पुढविधणं १६५

पृथ्वीद्रकमेरोन अर्धकृत वर्गित च मूलयुतम् ।

अद्भगुण चतु सहित पृथ्वीद्रकताडित च पृथ्विघनम् ॥ १६५ ॥

पुढविं । पृथ्वीद्रकसख्या १३ एकोनां १२ सस्थाप्य अनेन हानि
 वृद्धयोरमावात् प्रथमपटले चयशलाका प्ररूपिता । अर्धीकृतां चयश
 लाकां ६।८ स्थापयेत् । अनेन सर्वत्र पटलेषु रूपानगच्छार्धमात्र्यभ्य-
 शलाका समीकृता जाता इति अद्भकय मित्युक्तं । वगिगयं च अत्र

दिग्गतेषु सर्वत्र रूपचतुष्टयमपनीय पृथक् संस्थाप्य अपनीतद्विविदि-
 ग्मात् संख्या ३६।८ सर्वत्र समाना । इदमेवादिदय । इदं सत्र सप्तशमेवा
 धनिष्ठे । इदं दृष्ट्वा वर्गितं चेत्युक्तं । मूलजुह आदिधनत्रयमूल प्रमाणया
 चयशलाक्या ६।८ युत आदिधन ३६।८ गुणकारयो साम्यात् आदिधने
 ३६ चयशलाका ६ संयोज्या ४२ अद्वगुणं दिग्दिग्गतगुणकाराष्टकेन
 ८ चयशलाकायुतादि ३६।८ घन ४२ गुणयेत् ३३६ । अत्र चउसर्द्वि
 पूर्व पृथक्स्थापितदिग्गताधिकरूपचतुष्टय मेठयेत् ३४० पुढविदयता
 द्विय च इदं समीकरणवशात् सर्वेषु पत्रेषु समानमिति कृत्वा एकस्मिन्
 पट्टे १ एनावति श्रेणिनिबद्धानि यदि स्यु ३४० तदा त्रयोदशसु
 पट्टेषु १३ कियति स्फुरिति त्रैशिकेन समुत्पन्नगुणकारेण पृथ्वीद्रक
 प्रमाणेन तादृते पुत्रविघणं पृथ्वीगतश्रेणीबद्धप्रमाणं स्यात् ४४२० ।
 एवं द्वितीयादिषु पृथ्वीष्वपि श्रेणिबद्धप्रमाणमानेतव्यम् ॥ १६५ ॥

अथ प्रकीर्णकसंस्थानयनमाह,—

सेटीण विद्याले पुष्पपद्मणव इव द्विया गिरया ।
 ह्योति पद्मणयणामा सेद्विदयहीणरासिसमा ॥ १६६ ॥

श्रेणीना अंतराले पुष्पप्रकीर्णकानि इव स्थितानि निरयाणि ।

भवति प्रकीर्णकनामानि श्रेणीद्रकहीनराशिसमानि ॥ १६६ ॥

सेटीणः । श्रेणीनां विद्याले अंतराले पुष्पाणि प्रकीर्णकानीव स्थितानि
 निरयाणि भवति । प्रकीर्णकनामानि श्रेणीद्रक ४४२०।११ हीनराशि
 ३००००००० समानानि ३९९५५६७ । एवं पृथ्वी प्रत्यानेतव्यम् ॥ १६६ ॥

अथ नरकविहारां विन्तारप्रतिपादनायमाह,—

पंचमभागपमाणा गिरयाण ह्योति सखवित्थारा ।
 सेसषडपंचभागा असंखवित्थारया गिरया ॥ १६७ ॥

पञ्चमभागप्रमाणा निर्याणा भवन्ति सस्यविस्तारा ।

शेषचतुःपचभागा असस्यविस्ताराणि नर्याणि ॥ १६७ ॥

पञ्चम । पञ्चमभागप्रमाणा ३०००००० नरकाणां भवन्ति सस्ये
विस्तारा ६००००० तन्त्रेपरतुःपचभागा २४००००० असस्य
विस्ताराणि नरकाणि सस्येयविस्तारेषु ६००००० इद्रकापनयने १८
कृते ५९९९८७ अव शिष्टानि सस्येयविस्तारप्रकीर्णकानि भवन्ति । अ-
स्येयविस्तारेषु २४००००० श्रेर्णावद्वा ४४२० पनयन कृते २३९५५८०
शेषाणि असस्येयविस्तारप्रकीर्णकानि भवन्ति प्रत्येक द्वितीयादिप्रतिधा
सप्तस्ते च धने एवमवमानेन य ॥ १६७ ॥

अथ सरयातासरयातयोनिवत्त्व प्रदशयन्नाह,—

इदयमेढीचिद्धा पइण्णयाण कमेण वित्थारा ।

सखेज्जमसखेज्ज उमय च य जोयणाण हवे ॥ १६८ ॥

इद्रकश्रेर्णावद्वाप्रकीर्णकाना क्रमेण विस्तारा ।

सरयेयमसस्येयमुमय च य योजनाना भवेत् ॥ १६८ ॥

इदय । छायाभात्रमेवाथ ॥ १६८ ॥

अधेन्द्रकगतरुदत्व विशेषयति,—

माणुसखेत्तपमाण पढम चरिम तु जचुदीवसम ।

उमयविसेसे रूऊणिंदयमजिदग्धि हाणिचय ॥ १६९ ॥

मानुषभेत्तप्रमाण प्रथम चरम तु जचुदीवसमम् ।

उमयविशेषे रूपोनेन्द्रकमत्ते हानिचय ॥ १६९ ॥

माणुस । मानुषभेत्तप्रमाण ४५०००० प्रथमेन्द्रकप्रमाण चरमेन्द्रक
जचुदीव १००००० सम उमयोर्विशेषे शोधने ४४००००० रूपन्यूनैन्द्रक

४८ मते शेषे च ३ पादशान्तिरपवर्तिते ११६६६३ हानिचय शातयं ।
 एतद्धानिचय पचचत्वारिंशत्तमे स्फग्ने कृते ४४०८३३३ द्वितीयद्रका
 यमप्रमाण स्यात् । एवमुपयुपरीद्रकायामप्रमाणे ४४०८३३३ तद्धानि-
 मेव ११६६६३ स्फेटयित्वा अत्रशिष्टमधो ४८४ इद्रकायामप्रमाण
 स्यात् ॥ १६९ ॥

अर्धेद्रकादिमयाणा बाहुल्य प्रमाणयति,—

छकट्टुचोद्दसादिषु पटिपुटविमुरज्जसहियकोसेषु ।

छहिं मजिदेसु बहल इदयसेटीपइण्णाण ॥ १७० ॥

पट्टाष्टचतुर्दशादिषु प्रतिपृष्ठांमुलाधसहितकोशेषु ।

पट्टि मत्तेषु बाहुल्य इद्रकश्रेणीप्रकीर्णानाम् ॥ १७० ॥

छकट्टु । पट्टा ६ ए ८ चतुर्दशसु १४ आदिषु प्रथमपृष्ठांद्रकादिषु
 पट्टिमत्तेषु १३ ३ प्रथमभितीद्रकादिबाहुल्यं स्यात् । द्वितीयादि प्रतिपृ
 ष्ठिमुलाध २ । ४ । ७ । सन्तिषु तेषु ६ । ८ । १४ कोशेषु ९ । १९ ।
 २१ छ १२ । १६ । २८ छ १५ । २० । ३५ छ १८ । २४ छ २१ ।
 २८ । ४९ छ २४ । ३२ । ० पट्टिमत्तेषु ३ । २ । ३ इत्यादि, बाहुल्यं
 इद्रकश्रेणीवद्प्रकीर्णानाम् ॥ १७० ॥

अथ पुनरपि तद्बाहुल्यं प्रकारैतरेणाह,—

रूवहियपुटविसल तियचउसत्तेहि गुणिय छमजिदे ।

कोशाण वेहुलिय इदयसेटीपइण्णाण ॥ १७१ ॥

रूपाधिकपृष्ठिमग्यां विरचतु ससमि गुणयित्वा पट्टमत्ते ।

कोशाना बाहुल्य इद्रकश्रेणीप्रकीर्णानाम् ॥ १७१ ॥

रूप । रूपाधिकपृष्ठिसंख्या २ । २ । ९ । ७ ३ । ३ । ३ ७ ४ ।
 ४ । ४ ७ । इत्यादि वि ३ चतु ४ ससमि ७ गुणयित्वा ६ । ८ १४

छ ९ । १२ । २१ । छ १२ । १६ । २८ इत्यादि प्रत्येक पदमिमी कृत
१ । ५ । ५ । ५ । २ । ५ । २ । ५ । ५ । इत्यादि क्रोशाना बाहुन्य इदं
श्रेणीबद्धप्रकीर्णकानाम् ॥ १७१ ॥

अथद्रकप्रभृतीना व्यवधानप्रमाणमाह,—

पदराहय विलचहल पदरद्विदभूमिदो विसोहिता ।
रूऊणपदहिदाए विलतर उडुगं तीए ॥ १७२ ॥

प्रनराहत विलवाहल्य प्रतरस्थितभूमित विशोध्य ।

रूपोनपहनाया विलतर ऊर्ध्वग तम्या ॥ १७२ ॥

पदर । प्रतरा १३ हत विलवाहल्य इदं १ श्रेणीबद्ध ५ प्रकी
र्णकाना ५ बाहुल्य १३ । ५३ । ५३ चतु क्रोशाना एकयोजने इय
क्रोशाना किमिति सपात्य योजन कृत्वा तत् १३ । ५३ । ५३ प्रतरस्थित
भूमित उपर्यथ सहस्रसहस्रयोजनहीनाशीतिसहस्रे ७८००० तथा हीन
वर्तीस ३०००० मट्टावीसादि २६००० सहस्रे च समानउदेनापनी
३११५८७ श्रेणीबद्ध चतुर्भिरेपवर्त्यापनीय ३३३५८७ प्रकीर्णक समच्छेदे
नापनीय ३३५५९ रूपन्यूनपद १२ इतायां सत्या ३११५८७ । ३३३५८७
३३५५९ तत्पृथिव्या ऊर्ध्वग विलतर भवति ॥ १७२ ॥

अथोपरिमाधस्तनपट्टयोरतर निरूपयति,—

उपरिमपच्छिमपट्टला हिट्टिमपट्टमिल्लपट्टरतरय ।

रज्जु तिसहस्सुणिदधम्मा यमुदयपरिहीणा ॥ १७३ ॥

उपरिमपश्चिमपट्टलात् अधस्तनप्रथमप्रस्तरातरका ।

रज्जु त्रिमह्योनितथमा वशोदयपरिहीणा ॥ १७३ ॥

उपरिम । उपरिमपश्चिमपट्टलात् अधस्तनप्रथमपट्टलातरगा रज्जु

सा इयमूता ? वमापरिमचित्रामंबद्धधर्मापश्चिमपट्टलाधस्तनसहस्रं वंशा

प्रथमपरलोपरितनसहस्रमिति त्रिसहस्रोनितधर्मा १८०००० वशो ३९०००
दश २१२०००० परिहीना स्यात् ७२०९००० ॥ १७३ ॥

अथ ततोप्यधो भूमिनां पञ्चशतं निरूपयति,—

कमसो त्रिसहस्रसूणियमेघादीण च वेहपरिहीणा ।
परिमे चितिभागाहियजोयणतिसहस्रपरिवज्जा ॥ १७४ ॥

कमसो द्विसहस्रोनितमेघादीना च वेहपरिहीना ।

परमे द्वित्रिभागाधिकयोजनत्रिसहस्रपरिवर्ना ॥ १७४ ॥

कमसो । कमसो द्विसहस्रोनितमेघादीनां च वेह ३६ — । २३५ ।
३६ । ३६ — परिहाना चरमांतरानयने द्वित्रिभागा ३ चिक्रयोजन
त्रिसहस्रपरिवर्जा रज्जु । चितिभागाहिय इत्यादेर्वासनोच्यने-सप्तमपृथ्वी
वाहस्ये ८००० श्रेणीवद्धवाहस्य ३६ योजनोक्तस्य ३६ अपवर्तितश्रेणी
वद्धवाहस्य ५ समच्छेदन ३५ — अपनीय २७५५५ अर्थात् ३३५५५
भवत्वा ३३५५५ पञ्चमित्यवसानपटलाय सहस्रमत्र मेळयित्वा ३३५५५ ।
ई सप्तमपृथ्वीवाहस्ये ८००० श्रेण्यन तद्वासना भवति ॥ १७४ ॥

अथ बिलानां तिर्यगंतरं गाथाद्वयेन निरूपयति—

ससेज्जवासाणिरए तेरिच्छ अतरं जहण्णमिण ।
इगिजोयणमद्धजुद जोयणतिदयं हवे जेट्टं ॥ १७५ ॥

सरुयातअपासनिरये तैरथयतर जयन्यमिद ।

एकगोननमर्धयुतं योजनत्रिनय भवेत् उयेसुम ॥ १७५ ॥

सखंज्ज । सरुयातअपासनरकविद यथाणक तिर्यगंतर जयन्यमिद
एकयाजनमर्धयुत ३ याजनमय भवति जयसुम ॥ १७५ ॥

जोयणमत्तमहम्म अमग्यवित्थारजुत्तणिरयाण ।
अतरमवर णेय जेद्धममसेज्जजोयणय ॥ १७६ ॥

गोजनसप्तमहम्म अमग्यविम्भारगुत्तनिरयाणां ।

अतरमवर ज्ञेय ज्येष्ठममसरेयगोजनकम् ॥ १७६ ॥

जोयण । योजनसप्तमहम्मं अमग्यविम्भारयुत्तनरकाणां नियन्त्रणम्
ज्ञेय ज्येष्ठमसरयेयगोजनकम् ॥ १७६ ॥

अथ तेषां विग्नानां मस्थानादिकं निरूपयति,—

वज्जघणभित्तिभागा वृत्तिचतुरस्रबहुविधाकारा ।
णिरया सदापि भूता सर्वेन्द्रियदुःखदायिहिं ॥ १७७ ॥

वज्जघनभित्तिभागा वृत्तिचतुरस्रबहुविधाकारा ।

निरया सदापि भूता सर्वेन्द्रियदुःखदायिभिः ॥ १७७ ॥

वज्ज । वज्जघनभित्तिभागा वृत्तत्रयस्रचतुरस्रबहुविधाकारा निरया
सदापि भूता सर्वेन्द्रियदुःखदायिभिर्द्रव्ये ॥ १७७ ॥

अथ तत्रस्य दुर्गंधं दृष्टातमुत्तेन निर्दिशति,—

मज्जारसाणसूयरखरवाणरकरहहत्थिपहुदीण ।
कुहिदादहिदुग्गधा णिरया णिच्चधयारचिटा ॥ १७८ ॥

मार्जारश्वसूकरखरवानरकरभहन्तिप्रभूर्तानां ।

कुपितादतिदुर्गंधा निरया नित्याधकारचिता ॥ १७८ ॥

मज्जार । छायामात्रमेवाथ ॥ १७८ ॥

अथ तत्रोत्पद्यमानजावान् तत्रोत्पत्तिमानं च निर्दिशति,—

उत्पज्जाति तहि बहुपरिगहारभसचिदाउस्सा ।
उट्टादिमुखारमुत्तरिल्लुववादठाणेसु ॥ १७९ ॥

उत्पद्यते तेषु बहुपरिमहारभसचित्तियुष्या ।

उट्टादिमुखाकारेषु उपरितनोपपादस्थानेषु ॥ १७९ ॥

उत्पद्यति । उत्पद्यते तेषु बहुपरिमहारभसचित्तनरकायुषा उट्टादि
मुखाकारेषु उपरितनोपपादनस्थानेषु ॥ १७९ ॥

अथ तेषामुपपादस्थानानां ध्यासबाहस्ये कथयति,—

इगिवित्तिकोसो घासो जोषणमपि जोषण सय जेहू ।

उट्टादीण बहल सगवित्थारेहि पचगुण ॥ १८० ॥

एकद्वित्रिक्रोश ध्यास योजनमपि योजनशन ज्यष्ठ ।

उट्टादीना बाहस्य स्वकविम्नारेभ्य पचगुणम् ॥ १८० ॥

इगिवि । एकद्वित्रिक्रोशो ध्यास योजनमपि एकद्वित्रियोजनानां कृत ।
पूतानि सप्तपुष्पीनां यथासत्येन ज्येष्ठ-यासप्रमाणानि उट्टाद्युपपादस्थानानां
सदाहस्ये स्वकविम्नारेभ्य पचगुणम् ॥ १८० ॥

अथोपपादस्थानेषुत्पन्ना किं कुर्वतीत्यत आह—

अंतोमुहुत्तकाळे तदो चुदा भूतलमि तिकरराण ।

सत्थाणमुपरि पट्टिदृणुर्दुय पुणोपि णिवटति ॥ १८१ ॥

अन्तर्मुहत्तकाळे तदश्चना भूतले ती गानास ।

सत्थाणामुपरि पट्टिदृणु पुनरपि नवधान ॥ १८१ ॥

अथा । उपासनाप्रवृत्तयः ॥ १८१ ॥

अथ किञ्चिद्दृष्टव्येन इत्यत आह

पणपणजापणमाणं मोल्लट्टिद् उत्पद्यति णरइया ।

घम्माण वसादिगु दुग्ण दुग्णान णाण्डव ॥ १८२ ॥

नववन्तः नववन्तः नववन्तः पुनः नववन्तः ॥

पयोर्गा वीर्यवन्तः त्रिगुणं त्रिगुण इति ज्ञानमगम ॥ १८२ ॥

एतत् । नववन्तः नववन्तः नववन्तः पुनः नववन्तः ॥
त्रिगुणं त्रिगुणं त्रिगुणं त्रिगुणं त्रिगुणं त्रिगुणं ॥ १८३ ॥

अथ तत्रत्या नववन्तः इति नववन्तः इति नववन्तः इति नववन्तः
वीर्याणिषा तदा न नववन्तः इति नववन्तः ॥

नववन्तः इति नववन्तः इति नववन्तः इति नववन्तः ॥ १८३ ॥

वीर्याणिषा तदा न नववन्तः इति नववन्तः ॥

इति नववन्तः इति नववन्तः इति नववन्तः ॥ १८३ ॥

वीर्याणिषा नववन्तः इति नववन्तः इति नववन्तः
अगम्य इति नववन्तः इति नववन्तः ॥ १८३ ॥

अथ त नववन्तः इति नववन्तः आह,—

तेषु विभगेण तदो जाणिद्वयव्यवहारसिद्ध्या ।

असुहापुहविधिकारिया ह्यति ह्यति वा तेहि ॥ १८४ ॥

तेषु विभगेन तत ज्ञानपूर्वापरारिसिद्ध्या ।

असुहापुहविधिकारिया ह्यति ह्यति वा ते ॥ १८४ ॥

तेषु । तेषु विभगेन तत पर ज्ञानपूर्वापरारिसिद्ध्या असुहापुहवि-
धिकारिया सत इति परान् स्वय ह्यति वा तेरन्ते ॥ १८४ ॥

अथापुहविधिकारियाकरणप्रकाशमाह —

वयवग्घघूगकागहिविच्छिद्यमल्लकगिन्द्रमुणयादि ।

सुलगिकातमोग्गरपहुदी सगे विकुध्वति ॥ १८५ ॥

लाक्षरामान्याधिकार ।

पृषदमन्त्रकारादिष्वधिकभूतगुणभूतशक्ति ।

गुणपितृन्तमुत्तरप्रभृति स्वामे विवृति ॥ १८५ ॥

अथ । उक्तमानवशब्द ॥ १८५ ॥

अथ क्षत्रगतशब्दकोषे मायद्वयेनाह,—

वेदाङ्गिरी भीमा जतसयुक्कटगुहा य पट्टिमाओ ।

लोहणिहग्निक्वण्टा परशुशुरिकासिपत्रवण ॥ १८६ ॥

वेनाङ्गिरस्य भीमा यत्रशतोत्कटगुहाश्च प्रतिमा ।

लोहनिमाग्निक्वण्टा परशुशुरिकासिपत्रवनम् ॥ १८६ ॥

पदाह । वेताङ्गाङ्गिरीस्य भीमा यत्रशतोत्कटगुहाश्च तत्रस्या

प्रतिमा लोहनिमाग्निक्वण्टाश्च वनं च परशुशुरिकासिपत्रवनम् ॥ १८६ ॥

कूटा मामलिरुक्त्वा षडिदरणिणदी उ म्वारजलपुण्णा ।

पृरुहिरा दुग्धा हृदा य किमिकोटिकुलकलिदा १८७ ॥

कूटा शास्मलिवृथा वैतरणिनद्य क्षारजलपूर्णा ।

पूरधिरा दुग्धा हृदाश्च किमिकोटिकुलकलिता ॥ १८७ ॥

कूटा । कूटा असस्या शास्मलिवृथा वैतरण्यास्या नद्य क्षारजल-

पूर्णा पूरधिरा दुग्धा हृदाश्च किमिकोटिकुलकलिता ॥ १८७ ॥

अथ तथाविधनदीमास्य कि मवतीत्यत आह,—

अग्निमया धावता मण्णता सीयलति पाणीय ।

ते षड्दरणिं पविसिय सारोदयद्दृसध्वगा ॥ १८८ ॥

अग्निमयाद्धावन मन्यमाना शीतलमिति पानाय ।

ते वैतरणीं प्रविश्य सारोदकदग्धसर्वागा ॥ १८८ ॥

अग्नि । अग्निमयाद्वावत मन्थमाना शीतलमिति पानीय ते नूतन-
नारका वैतरणीं प्रविश्य क्षारोदकदग्धसर्वाणां सत ॥ १८८ ॥

अथ ते पुन किं कुर्वतीत्यत आह,—

उद्विय वेगेण पुणो अमिपत्तयण पयाति छायेति ।
कुतासिसत्तिजट्टिहिं छिज्जते वादपडिदेहि ॥ १८९ ॥

उत्थाय वेगेन पुन अमिपत्तवन प्रयाति छायेनि ।

कुतासिशक्तियाष्टिमिदिठ्यने वातपनितै ॥ १८९ ॥

उद्विय । तत्रेति शेष । छायाभाजमेवाय ॥ १८९ ॥

अथ तथा बहिदुससाधनमाह,—

लोहोदयभरिदाओ कुभीओ तत्तवहुकडाहा य ।
मततलोहफासा मू सूईसडुलाइण्णा ॥ १९० ॥

लोहोदकपरिता कुम्भ्य तत्तवहुकडाहाश्च ।

सतसगोहस्पर्शा मू सूचीशाडुलाकीर्णा ॥ १९० ॥

लोहो । छायाभाजमेवाय ॥ १९० ॥

अथ क्षेत्रस्पर्शजडु स दृष्टातमुत्तेनाह,—

विच्छियसहस्सवेयणसमधियदुक्ख धरिचिफासादो ।
कुक्खक्खिसीसरोगगद्धुधतिसमयवेयणा तिन्वा ॥ १९१ ॥

वृश्चिकमहस्ववेदनासमधिकदुख धरित्रीस्पर्शान् ।

कुक्ष्यभिशीर्षरोगगन्धुधातृषामयवेदना तीन्वा ॥ १९१ ॥

विच्छिय । स्यादिति शेष । छायाभाजमेवाय ॥ १९१ ॥

अथ ते किं भुजते इत्यत आह,—

सादिकुहिदातिगध सणिमप्यं महिय विभुजंति ।
घम्ममथा वसादिस्तु असंसगुणिदासुह तत्तो ॥ १९२ ॥

एतेषु येषानिगर्षा नभैरग्या मृत्तिका विभुजते ।

वमयसा वगादिषु असाध्यगुणिनाशुभा तत ॥ १९२ ॥

आदि । एतेषु येषानिगर्षा नभैरग्या मृत्तिका विभुजते वमयसा
वगादिषु तत्र असाध्यगुणिनाशुभा मृत्तिका विभुजते ॥ १९२ ॥

अथ तद्वारासदुत्पत्करणसामर्थ्यं वक्ष्यति,—

पटमासणमिह खित्त कोसद्ध भयदो विमारोदि ।

कासद्धद्धहियधराद्वियजीये पत्थरसामदो ॥ १९३ ॥

प्रथमादानमिह भित्त बोशार्थं गयतो विमारयति ।

बोशार्थं धधिकपराग्धितजीवात् प्रन्तरकमत ॥ १९३ ॥

पटमा । वयमपुर्धाप्रथमपट्टागनं इह मनुष्यभेदे क्षिप्तं चेत बोशार्थं
गयता विमारयति । बोशाधाधाधिकपराग्धितजीवात् ततः परं प्रन्तर-
कमतं विमारयति ॥ १९३ ॥

अथ एतेषु ससाधनेष्विष्यते किमित्याशङ्कयामाह,—

ण मरति ते अकाले सहस्ससुत्तोदि छिण्णसम्बगा ।

गच्छति तणुस्स लया सघादं सुदगस्सेव ॥ १९४ ॥

न भ्रियते ते अकालं महसकृत्वोपि उन्नसर्वागा ।

गच्छति ततो एषा सघानं सूतकम्बेव ॥ १९४ ॥

ण मरति । छायाभाजमेव ॥ १९४ ॥

अथेतेषु ससाधनेषु सवदा सर्वे कुसमायुवति किमित्यत्राह,—

तित्थयरसतकम्मुषसग्ग णिरए णिवारयति सुरा ।

उम्मात्माउगसेसे सग्गे अमलाणमालको ॥ १९५ ॥

एह । प्रथमं ३६ दण १०००० भवति २०००० वर्ष सहस्रायुष्ये
जन्मदितात् तन् उपरि बहवमाण सर्व उदह भवति तस्य असंख्यपूर्वाणां
हेत्यर्थ ॥ १९८ ॥

सागरदशम तुरिये सगसगचरमिंदयमिह इगि तिणिण ।
सत दसं मचरस उपही चार्यास तत्तीसं ॥ १९९ ॥

सागरदशम तुरिये म्बाम्बकचरमंदके एक श्रीणि ।

सत दश सप्तदश उदधय द्वाविंशति त्रयस्त्रिंशत् ॥ १९९ ॥

सागर । तुरिये चतुर्थे, उदधय सामरोपमानि इत्यर्थ । शेष
छापामात्रमवश्यं ॥ १९९ ॥

आदी अतविसेसे गुरुणद्धादिदमिह हाणिचय ।

उपरिम जेट समयेणहियं हेट्टिमजहणं तु ॥ २०० ॥

आदि अंतविशेषे रूपोनाद्धाहिते हानिचय ।

उपरिम ज्येष्ठ समये नाधिक अधस्तनजघन्य तु ॥ २०० ॥

आदी । आदि सागरदशमांशादिक ११।१।३।७।१०।१७।२९ अते
एकसामरोपमादौ १।२।७।१०।१७।२९।३६ यथायोग्य समच्छेदेन स्पष्टिते
तत्तत्पृथ्वीनां हानिचयो स्यातां १३।२।४।६।७।९।११ कथितायुप्रमाण
पटलत्रयं मुक्त्वा माननपटलसहितरूपानतत्तत्पटलानां ९।१२।१५।१७।२।२
प्रतिपृथ्वि एतावदायुप्रमाणं १३।२।४।६।७।९।११ एकादिपटलानां
क्रियदायुरिति सवात्य यथायोग्यमवश्यं गुणिते तत्तत्पटलानामायुश्च
भवति । १३।२।४।६।७।९।११ एतत्रये माननमाननरिषतो सयोगिते
तत्तत्पटलानामुक्तुं आयु प्रमाणं स्यात् । उपरिमज्येष्ठ ९०००० इत्यादि
समयेनाधिक चेत् अधस्तनाधस्तनजघन्य स्यात् ॥ २०० ॥

अथ नारदादिगुणाय जीवाय प्रतिनियममाह—

गिरिपादो गिम्सरिदो णरतिरिण कम्मसण्णिपज्जत्ते ।
गम्ममये उप्पज्जदि सत्तमपुट्ठयीद्दु तिरिण य ॥ २०३ ॥

निरयासिगुल मरानिग्घो कम्मणिपय्यात्त ।

गमभो उप्पयने मममट्ठणिग्घाम्नु निग्घि एव ॥ २०३ ॥

गिरिया । निरयासिगुल मरानिदृष्यामणे कम्मभूमो संज्ञिनि पर्यात्त
कर्मभवे उप्पयत । सत्तमपुट्ठिय्यात्तु निगन्नाहविषयतिग्घो गतो
उप्पयने ॥ २०३ ॥

अथ णरतिरिण इति नियमे समाधि किं संज्ञित्यागद्यामाह,—

गिरयचरो णत्थि हरी वट्ठचरणी तुरियपट्ठदिणिससरिदो ।
तिन्धयरमगसज्जद्दु मिम्सतिप णत्थि णियमेण ॥ २०४ ॥

निरयचरो नाम्ति हरि वट्ठचरिणो तुरियप्रभतिनि मृत ।

तीयचरमागसयता मिधन्नयं नाम्ति नियमेन ॥ २०४ ॥

गिर । नरकचरो नाम्ति हरि वट्ठचरिणो तुरियप्रभतिनि मृत यथा
सत्यं तीर्थचरचरमागसयता मिधन्नया विश्रासयतदेशसयता न संनि
नियमेन । असयतवस्यनिधिदत्त्वाद्वास्तासाद्नस्वस्याप्यथाव एव ॥ २०४ ॥

अथ नारकं गच्छतो जीवानो पुच्छीं प्रति नियममाह—

अमणसरिसयधिद्दगम फणिंसिंहिस्त्रीण मच्छमणुषाण ।
पट्ठमादिहु उप्पत्ती अट्ठारादो हु दोण्णिवारोत्ति २०५

अमणसरिसरीसयधिद्दगमफणिसिंहस्त्रीणा मत्स्यमनुष्याणात्त ।

प्रथमादिषु उत्पत्ति आत्पारतस्तु द्विषार इति ॥ २०५ ॥

अमण । अमणसरिसरीसयधिद्दगमफणिसिंहस्त्रीणा मत्स्यमनुष्याणां प्रथ
मादिषु यथ सरयमुत्पत्ति । निरंतर कथयित्ति चत्त, अट्ठारात् आरभ्य

द्वितीयोऽपि न्यायकः प्रयागं कुरु प्रयागं विदुः ३ उच्यते अत्र
पुत्रानामेवैतन्मन्त्रं भवति भवति प्रयागं कुरु प्रयागं विदुः ३ उच्यते अत्र
द्वितीयोऽपि न्यायकः प्रयागं कुरु प्रयागं विदुः ३ उच्यते अत्र
कथितं भवति । अत्र न्यायकः कुरु प्रयागं कुरु प्रयागं विदुः ३ उच्यते अत्र
अत्र न्यायकः कुरु प्रयागं कुरु प्रयागं विदुः ३ उच्यते अत्र
द्वितीयोऽपि न्यायकः प्रयागं कुरु प्रयागं विदुः ३ उच्यते अत्र

अथ प्रथमं विष्णुं योगं यत्कुरु ३ अत्र न्यायकः कुरु प्रयागं कुरु प्रयागं विदुः ३ उच्यते अत्र

अथर्ववेदस्योक्तं पुणः कथं तत्र प्रथमं प्रथमं च ।
दुःखं दुःखं कथं च यत्र प्रथमं प्रथमं तत्र प्रथमं ॥ २०६ ॥

आविर्भावमुक्तं पुनः प्रथमं तत्र प्रथमं ।
द्वितीयं तत्र प्रथमं च यत्र प्रथमं तत्र प्रथमं ॥ २०६ ॥
अथर्ववेदः । यत्र प्रथमं इति तत्र । अथर्ववेदः प्रथमं ॥ २०६ ॥

तेषां दुःखं कथं च यत्र प्रथमं —

अच्छिणिमीलणमत्तं तत्र सुखं दुःखं तत्र अनुबद्धं ।
गिरं परद्रियाणं अहोनिमं पञ्चमाणाणं ॥ २०७ ॥

अभिनिर्मूलनमात्रं नाम्नि सुखं दुःखं तत्र अनुबद्धं ।
निरये नैरयिकाणां अहानशं पञ्चमानानाम् ॥ २०७ ॥
अत्रि ३ । अथर्ववेदः प्रथमं ॥ २०७ ॥ इति नरकम्बरूपनिरूपणं ।

इति श्रीनमिचन्द्राचार्यविरचिते त्रिलोकसारे
लाकसामान्याधिकारे ॥ १ ॥



भवनाधिकार ॥ २ ॥



अथ नगरस्य सामान्यवर्णनां कृत्वा 'भवनोत्तर' इत्यादिगाथा
 कृषितर्पणधिकाराणां मध्य तथेव भवनाधिकारं प्रथममाणस्तदधिगमनभूतां
 रत्नप्रभां तत्सत्वरितां हार्कशामभादिभूमिं तद्वननरकमन्वान् तद्वतनारका
 युगादिकं च प्रागगिकं शब्द व्याख्याय प्रकृत भवनाधिकारं प्रथमुक्तामस्त
 दादौ भवनलोकधेत्याख्यायान् वदमान इव मगलमाह,—

मयणसु सप्तकोटीं चावत्तरिलकरा हाति जिणगेहा ।

मयणामरिंद्रमहितानि भवनसमानानि तानि वदामि ॥२०८॥

भवनेषु सप्तकोट्य द्वासप्ततिस्थानि भवति जिणगेहानि ।

भवनामरिंद्रमहितानि भवनसमानानि तानि वदे ॥ २०८ ॥

मयण । मयनेषु सप्तकोट्य द्वासप्ततिस्थानि भवति जिणगेहानि ।

भवनामरिंद्रमहितानि तेषां भवनसमानानि तानि वदे ॥ २०८ ॥

अथ भवनवासिनां कुम्भेर्द तेषामिंद्रनामानि च गाथाप्रयेणाह,—

असुराणागमुषण्णादीषोदहिविज्जुधणिददिसअग्गी ।

वातकुमारा पढमे चमरो वइरोहणो हदो ॥ २०९ ॥

असुरो नागमुषणीं द्वीषोदधिविद्युत्तनितदिगमय ।

वातकुमार प्रथमे चमरो वैरोचन इद्र ॥ २०९ ॥

असुरा । असुर नागमुषणीं द्वीषोदधिविद्युत्तनितदिगमय वातकु-
 मार । कुमारदा इ प्रथमकामिसवभ्यत । प्रथमे कुलचमरो वैरोचनभ्यति

दाविद्रो ॥ ०९ ॥

आद्येण । अथ यत्र च जनानां भाषणशोभया उत्कर्षेण असंगत्यात्
 वाच्यं तद्विज्ञानानु धनुःस्य विगतय जनकत्वे । तत्र प्रविशत्ये दानतु
 मेवकृतानुपरि योग्यान्वयः ॥ २२० ॥

अथ तेषां भयनाधिकारिस्थानानि गत्यादयेन ह,—

पैतर अप्पमहद्विषमजिदामभयणाभरण भयणाणि ।
 सूमीदोषो इगिदुगवादात्सहस्रहगित्करे ॥ २२१ ॥

यत्राणा अल्प महर्विक्रमध्यमभयनाभराणा भयनानि ।

धूमिनेष णवद्विवाधत्वारिगतसहस्रएकलक्षणि ॥ २२१ ॥

पैतर । ध्यत्राणां अल्पधिमहर्षिक्रमध्यमधिवनाभराणां च भयनानि
 विनाभमित अधोष एकसहस्रदिसहस्रद्विवाधत्वारिगतसहस्रएकलक्षणि
 गत्या भवति ॥ २२१ ॥

एयणप्यहपकट्टे भागे अमुराण एति आवासा ।
 भौम्मेसुरकत्तसाण अवसेसाणं एरे भागे ॥ २२२ ॥

रत्नप्रभापकाले भागे अमुराणा भवति आवासा ।

भौम्पेसु राक्षसाना अवशेषाणा एरे भागे ॥ २२२ ॥

एमण । भौम्पेसु ध्यत्रेषु, अवशेषाणां नागादीनां इत्यर्थः । शेषं
 उच्यते ॥ २२२ ॥

इदानीमिन्द्रादिभेदमाह,—

इदपट्टिददिगिदा तेत्तीससुरा समाणतपुरकता ।
 परिसत्तयआणीया पद्वण्णगभियोगकिच्चिमसिया २२३ ॥

इन्द्रप्रतीन्द्रदिगीद्रा अथर्विशतसुग सामानिकतनुर रक्वी ।

परिवर्षयानीकौ प्रवीणवाभियोऽयत्रिलिपिका ॥ २२३ ॥

इत् । छायामात्रमेवार्थ ॥ २२३ ॥

अथ इन्द्रादिपद्मीनां दृष्टीतमाह,—

रायजुयततराण पुत्रकलत्तगरम्भरमज्ज्ञे ।

अधरे तत्रे सेणापुरपरिजनगायणेहि समा ॥ २२४ ॥

राजयुवतत्राने पुत्रकलत्तगरम्भरमयेन ।

अधरेण तत्रेण मेनापुरपरिजनगायणे समा ॥ २२४ ॥

राय । राजयुवतत्रानेभ्य पुत्रकलत्तगरम्भरेण मयेन अधरेण च तत्रेण अवलोगनमेनापुरपरिजनगायके समा ॥ २२४ ॥

अथ चतुर्निकायामरेष्विन्द्रादीनां संभवप्रकारमाह,—

घेंतरजोयिसियाण तेत्तीससुरा ण लोयपाला य ।

भवणे कप्पे सव्वे हवति अहमिंद्या तत्तो ॥ २२५ ॥

व्यतरज्योतिष्काणां त्रयस्त्रिंशत्सुरा न लोयपाला च ।

भवने कल्पे सर्वे भवति अहमिन्द्रका तत ॥ २२५ ॥

घेंतर । व्यतरज्योतिष्काणां त्रयस्त्रिंशत्सुरा न संति लोयपालाश्च भवने कल्पे च सर्वे भवति तत्र परमहिन्द्रा ॥ २२५ ॥

अथ भावनेष्विन्द्रादिपरिव्रज्यातानां सरयां गायत्रयेणाह,—

इदसमा हु पडिंदा सोमो यम वरुण तह कुवेरा य ।

पुट्यादिलोयवाला तेत्तीससुरा हु तेत्तीसा । २२६ ॥

इदसमा खत्रु प्रतीद्रा सोमो यमो वरुणस्तया कुवेरश्च ।

पूर्वादिलोयपाला त्रयस्त्रिंशत्सुरा हि त्रयस्त्रिंशत् ॥ २२६ ॥

इत् । हि एव इत्येव । शेषे छायामात्रमेवार्थ ॥ २२६ ॥

चमरतिषे सामानियतणुरक्खाण पमाणमणुकमसो ।
अहसोलकदिसहस्सा चउसोलसहस्सहीणकमा ॥२२७॥

चमरतिषे सामानिकननूरक्षाणा प्रमाणमणुकमस ।

अष्टपोडशकृत्तिमहम् गि चतु पोडशसहस्रहानकमाणि ॥२२७॥

चमर । चमरतिषे सामानिकननूरक्षाणा प्रमाणमणुकमस अष्टकृत्ति
पोडशकृत्तिसहस्राणि चतु सहस्रपोडशसहस्रहीन कमा ॥ २२७ ॥

पण्णसहस्स बिलवसा सेसे तट्टाण परिसमादिह ।

अटछट्ठीस छचउसहस्स दुसहस्सवाट्टिकमा ॥ २२८ ॥

पंचाशत्सहस्राणि द्विस्त्रये शेषे तत्स्थाने परिषदादिमा ।

अहर्षट्टिशचतु सहस्राणि द्विमहम्बृद्धिकम ॥ २२८ ॥

पण्ण । पंचाशत्सहस्राणि द्विस्त्रये शेषे नागादिषु तत्स्थाने चमरतिषे
शेषस्थाने आदिमा परिषदादिषु द्विस्त्रयसहस्राणि षट्शतसहस्राणि
सहस्राणि चतु सहस्राणि मध्यमशास्त्रपरिषदोस्तु उक्तसहस्रेभ्येव द्विसहस्रवृद्धि
कमो ज्ञातव्य ॥ २२८ ॥

अथ परिषद्व्याणां विशेषाभिधानमाह,—

पट्टमा परिसा समिदा विदिया चंदोत्ति णामदो हीदि ।

तदिया जदुअहिधाणा एव सध्वेणु देवेणु ॥ २२९ ॥

प्रथमा परिषत् समित् द्वितीया चंद्रा इति नामतो भवति ।

तृतीया अल्पभिधाना एवं सर्वेषु देवेषु ॥ २२९ ॥

पट्टमा । उच्यतेमात्रमर्थ ॥ २२९ ॥

इदानीमानीकभेदं तत्पर्यायां चाह,—

सत्तेय प आणीया पत्तेयं सत्तसत्तककसजुदा ।

पट्टमं सत्तमाणसम तद्गुण परिमक्कवत्ति ॥ २३० ॥

नैर्गन्धममरं करम मर्द्दी मृगागिरिविहासम् ।

प्रथमानीर शोपे शोपानी, ताम्नु पूर्वं इव २३३ ॥

णाया । शोपे नागादी इत्यथ । अन्य छायामात्र ॥ २३३ ॥

अथ भावनदेवानाममभ्यासत्यान् प्रकीर्णकादिदेवानाममभ्यासत्वनमु
क्तमप्यवगत्यमिति तन्प्रमाणमनुसरा सांप्रतमगुरादिदेवीनां सख्यां गण-
द्वयनाम्,—

असुरतिष्ठ देवीओ छप्पणसहस्रस तत्थ बह्ममिया ।

सोलसहस्रस छकसहस्रेणणकमो होइ ॥ २३४ ॥

असुरत्रिके देय ५२५चाशत्सहस्राणि तत्र बह्ममिया ।

षोडशसहस्राणि ५२५सहस्रेणोनक्रमो भवति ॥ २३४ ॥

असुर । तत्र तामु देवीषु इत्यथ । शोपे छायामात्र ॥ २३४ ॥

बत्तीस चे सहस्रा सेसे पण पण सजेद्धदेवीओ ।

तिसु अट्ट छस्सहस्रस विगुञ्जणामूलतणुसहिय ॥ २३५ ॥

द्वात्रिंशत् द्वे सहस्राणि शोपे पच पच स्वज्येष्ठेय ।

त्रिषु अष्ट ५२५सहस्र विक्कुर्वणामूलतनुसहिता ॥ २३५ ॥

बत्तीस । द्वात्रिंशत्सहस्राणि द्वे सहस्र शोपे द्वीपादी तासां मध्ये पचपच
ज्येष्ठेय असुरादिदेवीत्रिस्थानेषु शोपे च ज्येष्ठेय अष्टसहस्रसहस्र
विक्कुर्वणामूलतनुसहिता ॥ २३५ ॥

अथ चमरवेोचनयो ५२५देवीनां सज्ञामाह,—

किण्ह सुमेघसुकट्टा रयाणि य जेद्धित्थि पउम महपउमा ।

पउमसिरी कणयसिरी कणयादिममाल चमरदुगे ॥ २३६ ॥

कृष्णा सुमेषा मुक्ताणा रत्ना च ज्येष्ठाश्रिय पद्मा महापद्मा ।
पद्मश्री कनकश्री कनकामाता पद्मरद्विके ॥ २१६ ॥

विण्ट । कृष्णा सुमेषा मुक्ताणा रत्नी च ज्येष्ठाश्रिय पद्मा महापद्मा
पद्मश्री कनकश्री कनकामाता पद्मरद्विके ॥ २१६ ॥

अथदादिपदानां द्वादशानां समानमित्यनुस्त्वा इतरणां कृता निरूपयति
गाथापेग,—

अष्टादश तिस्र पण्णागुण कम तु चमरद्वगे ।
पारिसदेयी णाग चिसय तु सप्तद्वितालसय ॥ २३७ ॥

अथतृतीय त्रिंशत् पचाशद्दून क्रमस्तु चमरद्विके ।
पारिषदेव्य नागे द्विंशत् तु सप्तद्वित्वात्रिंशच्छत ॥ २३७ ॥

अष्ट । अथतृतीय शत त्रिंशत् पचाशद्दूनक्रमस्तु शतव्यधमरद्विके
पारिषदेय । नागे तु द्विंशत् सप्तद्वित्वात्रिंशच्छत ॥ २३७ ॥

गरुडे सेसे मौलसचउदस दससगुण तु धीसुणा ।
सयसयदेवी पेधामहत्तराणगरकखाण ॥ २३८ ॥

गरुडे शेषे षडशानुर्दश दशसगुणा तु विशोना ।
शतशतदेव्य वृत्तनामहत्तराणा अगरसाणाम् ॥ २३८ ॥

गण्ट । गरुडे शेषे षडशसगुणा षोडश दशमगणाधनुदश । तत्रैव
मध्यवाशपरिष्कारित्युना शतशतदेव्य वृत्तनामहत्तराणा अगरसा
णाम् ॥ २३८ ॥

सेणादवाण पुण देवीयो तस्म अद्भुपरिमाण ।
सव्वणिगिद्धसुराण वप्तीसा होंति देवीओ ॥ २३९ ॥

सेनात्वाना पुन देय तस्य अर्धपरिमाण ।

सर्वनिष्टमुराणा द्वात्रिंशद्भवति देय ॥ २३९ ॥

सेना । तस्य तस्य सेनामहनस्य ५० इत्यथ । नेप छायामात्रं ॥ २३९ ॥

अथ भवनवासिनामये उच्यमाण यतराणां च जघनोत्कृष्टमायुराक्षे-

असुरादिचतुसु सेसे मौम्मे सायर त्रिपञ्चमाउस्म ।

दलहीणक्रम जेष्ठ दमवाससहस्समवर तु ॥ २४० ॥

अमुरादिचतुर्षु शेषे भांमे मागर त्रिपञ्च आयुष्यम् ।

दलहीनक्रम ज्येष्ठ दशवर्षसहस्र अवर तु ॥ २४० ॥

असुरा । असुरादिषु चतुर्षु शेषे ६ मौम्मे च यथासख्य सागरोपम
त्रिपञ्च आयुष्य दलहीनक्रम । एतत्सर्वं ज्येष्ठ अवर त्वायुदशवर्ष
सहस्र ॥ २४० ॥

अथोक्तानामेव सविशेषणायुः कथयन् तदेवान्यत्रेति निरूपयति,-

असुरचउक्के सेसे उदही पल्लत्तिय दल्लणकम ।

उत्तरइदाणाहिय सरिस इदादिपचण्ह ॥ २४१ ॥

असुरचतुष्क शेषे उदधि पल्यत्रिक दलोनक्रम ।

उत्तरेद्राणामधिक सहस्र इद्रादिपचानाम् ॥ २४१ ॥

असुर । असुरचतुष्के शेषे उदधि पल्यत्रिक दलोनक्रम । एतद्वी
त्तरेद्राणा साधिक सहस्रमिद्रादिपचानाम् ॥ २४१ ॥

अथ तदेव साहस्य विशयण निरूपयति,-

आऊपरियाहिरिणीरिक्किरियाहि पडिदयादि चऊ ।

सगसगइदहि ममा दहरच्छत्तादिसजुत्ता ॥ २४२ ॥

आयु परिवारधिविक्रियाभि प्रतीक्षादय चत्वार ।

स्वक्वक्वैर्द्रै समा दधच्छत्रादिमयुक्ता ॥ २४२ ॥

आऊ । दध हस्व तेन इत्यय । षोष छायामात्र ॥ २४२ ॥

असुरादीन्द्रिदेवीनामायु प्रमाणमाह,—

अष्टाद्वज्जतिपल्ल चमरदुगे णागगरुडसेसाण ।

देवीणमहम पुण पुट्ठवस्साण कोटितय ॥ २४३ ॥

अधतृतीयत्रिपल्य चमरद्विके नागगरुडशेषाणा ।

देवानामहम पुन पूर्ववर्षाणा कोटित्रयम् ॥ २४३ ॥

अष्टा । अधतृतीय पल्य त्रिपल्य चमरद्विके देवीनां नागगरुडशेषाणां देवीनां यथासंख्य पल्याहमभाग पुन पूर्वकाटित्रय वर्षाणां कोटित्रयं शातव्य ॥ २४३ ॥

अगरक्षपरिच्रयाणामायुष्य गाथाचतुष्केणाह—

चमरगरक्षसेणामहत्तराणाउम हवे पल्ल ।

साणीकवाहणाण दल तु यद्दरोयणे अहिय ॥२४४॥

चमरगरक्षसेनामहत्तराणामायुष्य भवेन् पल्य ।

सान्नीकवाहनाना दल तु वैरोचने अधिकम् ॥ २४४ ॥

चमर । चमरगरक्षसेनामहत्तराणामायुष्य भवेत्पल्य आनीक आरोहक तेन सजितानी वाहनानां दल अधपल्य एतदेव वैरोचने साधिकम् ॥२४४॥

फणिगरुडसेसायाण तहाणे पुट्ठवस्सकोठी य ।

वस्साण कोटि लक्ख लक्ख च तदद्दय कमसो ॥२४५॥

फणिगरुडशेषाणा तत्स्थाने पूर्ववर्षकोटि य ।

वर्षाणा काटि ऋक्ष लक्ष च तदधर कमस ॥ २४५ ॥

... ..
... ..
...

... ..
... ..

... ..
... ..

... ..
... ..
... ..

... ..
... ..

... ..
... ..

... ..
... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

असुरे । असुर त्रिखिषु च उच्छ्वासाक्षरी पक्षे एकवार समासहस्र च
एकवार समुहूर्तदिनयोरर्धत्रयोदश द्वादशे दलानाष्टमे भागे एकैकवार ॥२४८॥

अथ भवनप्रयाणामुत्प्रेषमाह,—

पणवीस असुराण सेसकुमाराण दसधणू चैव ।

विंतरजाहसियाण दससत्त शरीरउदओ दु ॥ २४९ ॥

पचविंशति असुराणा शेषकुमाराणा दशधनुषा चैव ।

व्यतरज्योतिष्कयो दशसत्त शरीरोदय तु ॥ २४९ ॥

पणवीस । पचविंशति असुराणा धनुषामुदय शेषकुमाराणा दश
धनुषा चैवादय । व्यतरज्योतिष्कयो दशसत्तधनु शरीरादयस्तु ॥२४९॥

इति श्रीनमिचन्द्राचार्यविरचित त्रिलाकसारे

भवनलाकाधिकार ॥ २ ॥

श्रीमद्भागवतम् ॥ १ ॥

~ * ~

इति श्रीमद्भागवतम् अथ श्रीमद्भागवतम् अथ श्रीमद्भागवतम्
पुस्तकम् ॥ १ ॥

विष्णुवन्दनं चतुर्दशमोऽध्यायः ।
श्रीकृष्ण उवाच ॥ १ ॥

यत्किञ्चिदपि कुरुष्वेतदपि वा ॥
मम च तद्द्विधा विदुर्नरान् ॥ १ ॥

विष्णोः प्रसङ्गं श्रुत्वा श्रीकृष्ण उवाच ॥ १ ॥
अथ त्वं ज्ञानमवस्थां विदुःशुभमवस्थां च विदुः
यत्किञ्चिदपि कुरुष्वेतदपि वा ॥ १ ॥
मम च तद्द्विधा विदुर्नरान् ॥ १ ॥
१०००० इति श्रीमद्भागवतम् अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ १ ॥
यत्किञ्चिदपि कुरुष्वेतदपि वा ॥ १ ॥
मम च तद्द्विधा विदुर्नरान् ॥ १ ॥
१०००० इति श्रीमद्भागवतम् अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ १ ॥
यत्किञ्चिदपि कुरुष्वेतदपि वा ॥ १ ॥
मम च तद्द्विधा विदुर्नरान् ॥ १ ॥
१०००० इति श्रीमद्भागवतम् अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ १ ॥
यत्किञ्चिदपि कुरुष्वेतदपि वा ॥ १ ॥
मम च तद्द्विधा विदुर्नरान् ॥ १ ॥
१०००० इति श्रीमद्भागवतम् अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ १ ॥
यत्किञ्चिदपि कुरुष्वेतदपि वा ॥ १ ॥
मम च तद्द्विधा विदुर्नरान् ॥ १ ॥
१०००० इति श्रीमद्भागवतम् अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ १ ॥

जगत्प्रनरे मन्त्रे=४।६५=८१।१० नृ । व्यतराणां त्रिभोगप्रमाण
स्यात् ॥ २५० ॥

अथ व्यतराणां कुलभेदं निरूपयति,—

किंणरकिपुसिता य महोरगगधव्व जक्खणामा य ।
रक्खसभूयपिसाया अट्टविहावतरा देवा ॥ २५१ ॥

किंणकिपुसिपौ च महोरगगधर्वयथनामान च ।

राक्षसभूतपिशाचा अष्टविधा व्यतरा त्वा ॥ २५१ ॥

किंणर छायामात्रमेवाथ ॥ २५१ ॥

अथ तेषां शरीरवर्णं निरूपयति,—

तेसिं कमसो वण्णा प्रियगुफळधवलकालयसियाम ।
हेम तिसुवि सियाम किह्ल बहुलेवभसा य ॥ २५२ ॥

तेषां त्रयश वर्णा प्रियगुफळधवलकालयसियाम ।

हेम त्रिष्वपि श्याम कृष्ण बहुलपभूषा च ॥ २५२ ॥

तेसिं । तेषां क्रमशः शरीरवर्णा प्रियगुफळधवलकालयसियाम हेमवर्ण-
स्त्रिष्वपि श्यामवर्णं कृष्णवर्ण । ते देवा बहुलपभूषणा ॥ २५२ ॥

अथ तेषां चैत्यतरुभेदमाह —

तेसि असोपचपयणागा तुप्पुरुषटो य कटतरु ।
तुलसी कदवणामा चत्तरु होति तु कमेण ॥ २५३ ॥

तेषां अशोकचपवनागा तुप्पुरुषटोश्च कटतरु ।

तुलसी कदवणामा चैत्यतरुणा भवन्ति खलु कमेण ॥ २५३ ॥

तेसिं । नामा नागकस्त इत्येव । तेषां छायामात्रे ॥ २५३ ॥

अथ तद्वै यत्तदम्भुत्प्रतिप्रतिमादिभ्यः -

तम्भुत् पठिपंक्तगजिनपठिमा पठिदिममिह चत्तारि ।
चउतोरणयुता ते भयणगु र जयुमाणद्धा ॥ २५४ ॥

तम्भुत् पठिपंक्तगजिनप्रतिमा प्रीतिरां यतः ।

चउतोरणयुताभ्या मानेगु र संभुतानार्था ॥ २५४ ॥

तम्भुत् । जयुमानार्था ये यतः जयुत्पठिदिममाणाद्वा इत्यर्थः ।
क्षरं छायाभाप्रमत्त ॥ २५४ ॥

अथ तद्वै यत्तदम्भुत्प्रतिप्रतिमा निरूपयति,—

पठिपठिम एकेका माणत्थमातिपीठशालजुदा ।
मौत्तिकदाम सोहइ घटाजालादिय दिन्व ॥ २५५ ॥

प्रतिप्रतिमा एकैका मानस्तमा त्रिपीठशालयुता ।

मौत्तिकदाम शोभते घटानालादिक दिन्वम् ॥ २५५ ॥

पठि । प्रतिप्रतिमा एकैका मानस्तमा त्रिपीठशालयुता । तत्र
मौत्तिक दाम शोभते दिन्व घटाजालादिक च ॥ २५५ ॥

अथ अष्टविधयतराणां प्रतिकुन्मवातरभेदमाह,—

किंणरचउ दसदसधा सेसा चारसगसत्तचोदसधा ।
दो द्दो इदा दो द्दो बल्लमिया पुह सहस्सदेविजुदा ॥ २५६ ॥

किंनरचत्वार दशदशधा शेषा द्वादशमत्तचतुर्दशधा ।

द्वौ द्वौ इद्वौ द्वे द्वे बल्लभिके पृथक् सहस्त्रदेवीयुते ॥ २५६ ॥

किंणर । किंनरादय चत्वार दशधा दशधा भिद्यते शेषा यक्षादय

हादग्धा वनधा चतु, राधा । अत्र द्वा द्वौ इदौ तयाद्वेद वामिदे पुषङ्ग
पुषङ्ग रात्र इधीय ॥ २५६ ॥

अथ तर्षा रीणा वाह्यागाथाभिर्निरूपयति,—

किंपुरिसकिंणरावि य हिदयगमगा य रूपपाठी य ।
किंणरकिंणरऽणिदित मणरम्मा किंणरत्तमगा ॥ २५७ ॥

किंपुराकिनरावि च हिदयगमगा रूपपाठी च ।

किनरकिनर अनिदित मनारम किनरात्तम ॥ २५७ ॥

किंपुरिण । टायामात्रमेवार्थ ॥ २५७ ॥

रतिपियजेद्वा इदा किंपुरिसाकिंणरावतसा ए ।
केतुमती रतिसणा रतिप्रिया हाति बह्नुभिया ॥ २५८ ॥

रतिप्रियज्येष्ठौ इदा किंपुराकिनरी अवनमा हि ।

केतुमती रतिमेना रतिप्रिया भवति बह्नुभिका ॥ २५८ ॥

रतिप्रिय । रतिप्रिय-ज्येष्ठो १० तत्रेन्द्रो किंपुराकिनरो तयारवर्तसा
केतुमतीरतिसेनारतिप्रिया भवति बह्नुभिका ॥ २५८ ॥

पुरुसा पुरुसुत्तमसप्पुरसमहापुरुसपुरुसपह्णामा ।
अतिपुरुसा मरुओ मरुदवमरुप्पह्जसोवतो ॥ २५९ ॥

पुरुष पुरोत्तमसत्पुरमहापुरपुरुप्रमतामान ।

अतिपुरष मरुर्मरुदेवमरुप्रमयशम्वन ॥ २५९ ॥

पुरुसा । टायामात्रमेवाथ ॥ २५९ ॥

सप्पुरसमहापुरुसा किंपुरिसिदा कमण बह्नुभिया ।
राहिणिया णवमी हिरि पुष्कवदी य इयरस्त ॥ २६० ॥

मण्डपमहामुखां त्रिंशत्तमैः कमेण नमामि ।

राशिणी नमो ह्ये पुण्डरीक नमः ॥ २६० ॥

मण्डपमहामुखां त्रिंशत्तमैः कमेण नमामि ।
नामो ह्ये पुण्डरीक नमः ॥ २६० ॥

भुजगा भुजगमाली महाकायतिकाय शयसाली य ।

मणहर अमणिजयस्वरा महामगमीरपियठरिसा ॥ २६१ ॥

भुजग भुजगमाली महाकाया भनिनाय मण्डपमाली य ।

मणहर अमणिजयस्वरा महेश्वर्यगमागप्रियदर्शिन ॥ २६१ ॥

भुजग । छायामात्रमेवाथ ॥ २६१ ॥

महकायो अतिकायो महारगदा हु भोग भोगवती ।

इदरस्य पुष्पगधी अणिदिता हाति वह्निभिया ॥ २६२ ॥

महाकाया भनिनाय महोरगेंद्री हि भोगा भोगवती ।

इतरस्य पुष्पगधी अनिदिता भवत वह्निभिके ॥ २६२ ॥

महकाया । महाकायोऽतिहायश्चेति महोरगेंद्री सत्तु । भोगा भोगवती
पूर्वस्य, इतरस्य पुष्पगधी अनिदिता भवत वह्निभिके ॥ २६२ ॥

हाहा हूहू णारयतुबुरुककदववासवक्खा य ।

महसर गीतरतीवि य गीतयसा दइवता दसमा ॥ २६३ ॥

हाहा हूहू नारयतुबुरुककदववासवक्खाय ।

महास्वरो गीतरति अपि च गीतयशा दैवता दशम ॥ २६३ ॥

हाहा । छायामात्रमेवाथ ॥ २६३ ॥

गीतरत्नी गीतयगा मंधविदा इति याभिषा ।
 सारमति सरसणावि य णदिणि पियदरिणिणादयी २६३

गीतरति गीतयगा मंधविदा भवत वाभिषा ।

सारमति सरसणावि य मन्दिनी शिवदानदयी ॥ २६४ ॥

गीतरत्नी । वाभिषा । तय गिति शेष । अथराजमात्रं ॥ २६४ ॥

अह माणिपुण्णमैलमणोभटा भट्टगा सुभटा य ।
 तह सद्यभट माणुम धणपाल सुखवकरा य ॥ २६५ ॥

अथ माणिपूर्णैलमनभटा भट्टक सुभट्ट य ।

तथा सर्वभट्ट मानुष धनराज सुखवपथ ॥ २६५ ॥

अह । अथ माणिभट्टपणभट्टैलमनभटा भट्टक सुभट्टय तथा
 सर्वभट्ट मानुष धनराज सुखवपथ ॥ २६५ ॥

जकमुत्तमा मणोहरणामा तह माणिपुण्णमहिदा ।
 कुद बहुपुत्रदेवी तारा पुण उत्तमा देवी ॥ २६६ ॥

दशोत्तमा मनेहरणामा तत्र माणिपूर्णभट्टेश ।

कुदा बहुपुत्रदेवी तारा पुनरात्म देवा ॥ २६६ ॥

जकरु । यथात्तमा मनाहरणामा १२ तत्र माणिभट्टपणभट्टादिद्वी ।
 तदोद्वेय कुदा बहुपुत्र देवा तारापुनरुत्तमा देवी ॥ २६६ ॥

भीममहभीमपिण्णविणायक तह उदकरकरमा य तहा ।
 रक्खसरकखस तह बग्हरकखसा होति सत्तमया ॥ २६७ ॥

भीमा महाभीम विण्णविनायक तथा उदक रथमथ तथा ।

राभमराभम तथा ब्रह्मराभम भवति सत्तमय ॥ २६७ ॥

भीम । उदकः । भव । ॥ - ॥

भीमा य मत्तभीमो रक्तमईश हर्षति बलमिया ।
पउमा वसुमिताये य ग्यण्डा कणपपह देवी ॥ २१८ ॥

भीमश्च महाभीमा गणपती मत्त । वसुमिया ।

यमा वसुमिताये च ग्यण्डा कणपपहा देवी ॥ २१८ ॥

भीमा । वसुमिया । ग्यण्डा । कणपपहा । मत्त । ग्यण्डा । ॥ २१८ ॥

मूदाणं नु सुरूपा पट्टिरुवा मूदतमा तथा ।
पट्टिमूद महामूदा पट्टिउण्णागाममूद इदि ॥ २१९ ॥

मूदाना न मरुता प्रनिरुवा भूतोत्तम तत ।

प्रनिभूत महामूद प्रनिरुवा आकाशभूत इति ॥ २१९ ॥

मूदाण । उपायामात्रमेवाथ ॥ २१९ ॥

इदा य सुपट्टिरुवा बलमिया तह य हीदि रुववदी ।
बहुरूवा य सुभीमा सुमुहा य हवति देवीयो ॥ २२० ॥

इद्री च सुप्रनिरुवो बलमिका तथा च भवति रूपवती ।

बहुरूवा च सुभीमा सुमुहा च भवति देव्ये ॥ २२० ॥

इदा । इद्री च सुरूपप्रतिरुवो तथावसुमिका तथा भवति रूपवती बहुरूवा च सुभीमा सुमुहा च ण्ता देव्यो भवति ॥ २२० ॥

कुम्भड रक्ख जक्खा समोहो तारका अचोक्खा य ।
काल महकाल चोक्खा सतालया देह महदेहा ॥ २२१ ॥

कूप्पाडो रक्षोयस्य समोह तारक अशुचिश्च ।

काल महाकाल शुचि सतालक देह महादेह ॥ २२१ ॥

कुम्भ । उपायामात्रमेवाथ ॥ २२१ ॥

नुण्डिय पवपणणामा इदा तसिं तु कालमहाकाठा ।
कमलकमलपुष्पहृष्पलसुदरिसणा ह्येति बहुभिया ॥२७२॥

तूष्णीक प्रवचननामा इद्री तथा तु कालमहाकाली ।

कमलाकमलप्रपोत्पलासुन्दरीना भवति कल्भिका ॥ २७१ ॥

नुण्डिय । तूष्णीक प्रवचननामा १४ इद्री तेषां तु कालमहाकाली
कमला कमलप्रभा उत्पला सुदशमिका एतास्तथोक्तभिका ॥ २७२ ॥

अथ पुनरिन्द्रिमज्ञामेव पृथग्यद्वाति गथाद्वयेनाह,—

किंपुग्स किणरा सप्पुरसमहापुग्सणामया कमसो ।
महकायो अतिकायो गीतरती गीतयसणामा ॥ २७३ ॥

किंपुग्स मित्रर सपुग्स महापुग्सनामा कमरा ।

महाकय अतिशय गीतरति गीतयशोनामा ॥ २७३ ॥

किंपुग्स । छायामात्रवेशय ॥ २७३ ॥

ता माणिपुष्णभद्रा भीममहाभीमया सुख्वा य ।
पटिख्वो काल महाकालो भोम्मेसु जुगल्लिदा ॥२७४॥

ततो माणिपुष्णभद्रा भीममहाभीमौ मुख्वाथ ।

प्रतिरूप काल महाकाल भोम्मेसु जुगल्लेद्रा ॥ २७४ ॥

सा । तता माणिभद्र पूष्णभद्र भीम महाभीम मुख्वाथ प्रतिरूप
कालो महाकाल एते सर्व भोम्मेसु जुगल्लेद्रा ॥ २७४ ॥

अथ किंपुष्पादीश्रणां गणिकामहत्तरीणांवाचतुष्पथेन कथयति,—

गणिकामहत्तरीयो इद् पटि पल्लदलठिदी दो हो ।
मधुरा मधुरालावा सुस्तर मउमासिणी कमसो ॥२७५॥

गणितमहत्तय इदं श्री गणितमहत्तय के द्वे ।

मनुग मनुगताया मन्वग मृत्कभिर्गी वमश ॥ २७१ ॥

गणिका । उच्यतेऽत्रमथ ॥ २७० ॥

पुरिमपिया पुरुता मामा पुशगिमिणी य मोगस्या ।

भोगयदी य मुजगा भुजगपिया तां मुद्योम विमलेत्ति ॥ २७२ ॥

पुशप्रिया पुरता मीभ्या पुशगिना च मोगस्या ।

भोगयदी च मुजगा भुजगप्रिया च मुद्योम विमले इति ॥ २७१ ॥

पुरिम । उच्यतेऽत्रमथ ॥ २७० ॥

सुस्मर अणिदिदस्या भद्र सुमद्रा य मालिणी ह्यंति ।

पडमादिमालिणीवि य ता मन्वरी मन्वसेणेत्ति ॥ २७३ ॥

सुस्मरा अनिदिदस्या भद्रा सुमद्रा च मालिनी भवति ।

पडमादिमालिनी अपि च तत शर्वरी स्वमेना इति ॥ २७३ ॥

सुस्मर । उच्यतेऽत्रमथ ॥ २७३ ॥

रुद्रकव रुद्रदरिमिण मद्रादीकद्र भूद्र भूद्रादी ।

दत्त महाभजा अत्रा फ्राड सुलसा सुदरिमणया ॥ २७४ ॥

रुद्रक्या रुद्रदरिणा भूनादिना मूना भूनाति ।

दत्ता महाभजा अत्रा क्राया मन्मा सुदर्शनका ॥ २७४ ॥

रुद्रक्या । भूनादिना नवकाना त्यथ । भूनादिना भूनात्ता इत्यत्र । अथ उच्यतेऽत्रमथ ॥ २७४ ॥

अथ किंपुण्यार्द्धाणां सामानिकार्द्धानां सत्याभेदमाह,—

इदसमा ह्यु पडिंदा समाणुतणुरक्खपरिसपरिमाण ।
चउसोळसहस्स पुण अट्टसय विसद्वद्विकमो ॥ २७९ ॥

इदसमा खलु प्रतीक्षा सामानिकतनुरक्षारिपद्ममाण ।
चतु षोडशसहस्र पुनरष्टशत द्विशतवृद्धिक्रम ॥ २७९ ॥

इदम्मा । इदसमा खलु प्रतीक्षा सामानिकतनुरभवारिपद्ममाण चतु
सहस्र षोडशसहस्र पुनरष्टशत मध्यमवाद्यपरिपदे द्विशतवृद्धिक्रम ॥ २७९ ॥

अथ तेषां सप्तार्णाक कथयति;—

कुजरतुरयपाददीरहगधव्वा य णच्चयसहेत्ति ।
सत्तेयय आणीया पत्तेर्य सत्त सत्त कक्खजुदा ॥ २८० ॥

कुजरतुरयपादातिरभगधर्माश्च गृह्यवृषभाविनि ।
मसैव अनीक्य प्रत्येकं सप्त सप्त कथयुता ॥ २८० ॥

कुजर । छायाभात्रमेवार्थ ॥ २८० ॥

अथ तप्तोनामहत्तरभेदमाह,—

सेणामहत्तरा सुजेट्ठा सुग्गीषविमत्तरुदेवा ।
सिरिदामा दामसिरी सत्तमद्वयो विसात्कत्तो ॥ २८१ ॥

सेन महत्तरा सु येत सुग्गीषविमत्तरुदेव ।
शीशवा दामधी सत्तमदेवे विगात्रय ॥ २८१ ॥

सेना । सागणाम्भय ॥ २८१ ॥

अथ तदानीं इमं न्यायमाह,—

अष्टाश्रीसप्तहस्तं पद्मं दुग्ुणं कमण चरिमोत्ति ।

सविदाण मरिसा पडण्णयादी असस्यमिदा ॥ २८० ॥

अष्टाविंशमहस्याणि प्रथमं द्विगुणं क्रमेण परमानम् ।

सर्वेद्राणां सदृशां प्रकीर्णानां अमम्यमिना ॥ २८१ ॥

अष्टाश्रीसप्तहस्तं । अष्टाविंशति सहस्राणि प्रथमं प्रमाणं क्रमेण द्विगुणं चरमं यावत् । सर्वेद्राणां सदृशां आनीकसस्यां चतुर्निकायसु प्रकीर्णानां दयं असस्यातमिता ॥ २८२ ॥

अथ अथरदागां नगराश्रयदीपसंज्ञामाह,—

अजणरुवज्जधाडकसुवण्णमणोसिलरुवज्जरज्जेसु ।

हिगुलिके हरिदाले दीपे भोमिंदणयराणि ॥ २८३ ॥

अजणरुवज्जधाडकसुवर्णमण शिखरज्जरतज्जेसु ।

हिगुलिके हरिताले द्वीपे भोमिंदनगराणि ॥ २८३ ॥

अजणक । छायामात्रमेवाथ ॥ २८३ ॥

अथ तन्नगरसंज्ञामायाम् आह,—

भोमिंदक मज्झे पहकतावत्तमज्झ चरिमका ।

पुव्वादिषु जवुसमा पणपणणयराणि समभागे ॥ २८४ ॥

भोमिंदक मध्ये प्रमकातावत्तमध्यां चरमाका ।

पुवादिषु जवुसमानि पच पच नगराणि समभागे ॥ २८४ ॥

भोमिंद । भोमिंद किंनरस्तदवाक मध्ये पुरि प्रमकातावत्तमध्यां भोमिंदकचरमाका पुवादिषु जवुसमानि पच पच नगराणि समभाग ॥ २८४ ॥

अथ तत्रगणप्रकारद्वारयारद्वयादिभद्रमाह,—

नप्पायारुदयतिय पणहत्तरिपण्णयीमपचदल ।
दारदओ विरधारो पचघणञ्च तदञ्च च ॥ २८५ ॥

तत्र प्रकारदयत्रय पचसप्ततिपचविंशतिपचदलम् ।
द्वारोदयो विम्भार पचयनार्थं तदर्धं च ॥ २८५ ॥

तप्पाया । तत्राकारोदयत्रय पचसप्ततिदलं ५० पचविंशतिदलं ५०
पचदलं ५ तद्द्वारोदयो विम्भारश्च पचयनार्थं १३ तदर्धं च १४ ॥ २८५ ॥

अथ तदुपरिमप्रासादम्बरूप निरूपयति,—

तस्सुवरिं प्रासादो पणहत्तरितुगओ सुधम्मसहा ।
पणकादिदल तद्वल णव दीर्घरयासुदय कोम ओगाढा २८६

तस्योपरि प्रासाद पचसप्ततितुग सुधर्मसभा ।
पचकृतिदल तदल नव दीर्घव्यासोदया कोश अक्काट ॥ २८६ ॥

तस्सुव । तस्यापरि प्रासाद पचसप्ततितुग स णव सुधर्मसभेत्याख्या-
यने । पचकृतिदलं ३ तदल ४ नव ९ एते यथासरप दीर्घव्यासादया
तदवगाटं कुट्टिमा भूमि एक्कणो ॥ २८६ ॥

अथ तत्रप्रासादस्य द्वारोदयादीभिरूपयति,—

तिस्स दारुदओ दुगइमि वासो दक्खिणुत्तरिंदाण ।
सव्वेसिं णगराण पायारादीणि सरिसाणि ॥ २८७ ॥

तस्या द्वारोदय द्विवक्क यास दम्भिणोत्तरेद्वाणाम् ।
सव्वथा नगराणां प्राकाराणानि मत्तशानि ॥ २८७ ॥

अथ तदानीकसंख्यामाह,—

अट्टाशीसमत्सं पट्टम दुगुणं क्रमेण चरिमोत्ति ।

सविदाण मरिमा पट्टणयादी अमग्गमिदा ॥ २८० ॥

अष्टाविंशमहस्याणि प्रथमं त्रिगुणं क्रमेण चरमानम् ।

सर्वेद्राणां महशां प्रणिणत्तादयं अर्षम्यमिता ॥ २८१ ॥

अट्टार्याम् । अष्टाविंशति महस्याणि प्रथमं प्रमाणं क्रमेण द्विगुणं चरमं यावत् । सर्वेद्राणां महशां आनीकसंख्यां चतुर्निहायेषु प्रदीर्घकदयं अमस्यातमिता ॥ २८२ ॥

अथ यत्तरेद्राणां नगराभ्रयद्दीरसंज्ञामाह,—

अजणकवज्जधाडकसुवण्णमणोत्तिलरुपञ्जरज्जेसु ।

हिगुलिके हरिदाले दीवे भोम्मिदणयराणि ॥ २८३ ॥

अजनकवज्जपातुकमुवर्णमन शिडकवनरत्तज्जेसु ।

हिगुलिके हरिताले द्वीपे भौमिद्रनगराणि ॥ २८३ ॥

अजणक । छायामात्रमेवार्थं ॥ २८३ ॥

अथ तन्नगरसंज्ञामायाम् चाह,—

भोम्मिदक मज्जे प्हकतावत्तमज्ज चरिमका ।

पुन्वादिषु जच्चुसमा पणपणणयराणि समभागे ॥ २८४ ॥

भौमिद्राक मध्ये प्रभक्तातावर्तमस्यां चरमाका ।

पूर्वादिषु जच्चुसमानि पच पच नगराणि समभागे ॥ २८४ ॥

भौमिद्र । भौमिद्र किंनरस्तद्वाक मध्ये पुरि प्रभक्तातावर्तमस्यां भौमिद्राकचरमाका पूर्वादिषु जच्चुदीपसमानि पच पच नगराणि समभागं ॥ २८४ ॥

अथ तत्रगणप्रकारद्वारायाद्द्वयोदिभदमाह,—

तत्प्रायारुदयतिय पणहत्तरिपण्णवीसपचदल ।
दारुदओ वित्थारो पचपणञ्च तदञ्च च ॥ २८५ ॥

तत्प्रायारोदयत्रय पचमसतिपंचविंशतिपचदलम् ।
द्वारोदया विस्तार पचपनार्थं तदर्थं च ॥ २८५ ॥

तत्प्राया । तत्प्रायारोदयत्रय पचमसतिदलं ३० पचविंशतिदलं ३०
पचदलं ३ तत्प्रायारोदया विस्तारश्च पचपनार्थं ३, तदर्थं च ३ ॥ २८५ ॥

अथ तदुपरिमप्रासादश्चरूप निरूपयति,—

तस्मुवरिं प्रासादो पणहत्तरितुगओ सुधर्मसहा ।
पणकादिदल तदल णव दीहरयासुदय कोस ओगाढा २८६

तस्योपरि प्रासाद पचमसतिर्तुग सुधर्मसमा ।
पचकृतिदल तदल नव दीर्यामोदया काश अगगा ॥ २८६ ॥

तस्मुव । तस्योपरि प्रासाद पचमसतिर्तुग स एव सुधर्मसमं याम्या
यत् । पचकृतिदलं ३ तदलं ३ नव ९ एत यथासरयं दीधव्यासादया
तदवगात् कुट्टिमा भूमि एककोश ॥ २८६ ॥

अथ तत्प्रासादस्य द्वारोदयादीन्निरूपयति,—

तिस्से दारुदओ द्वुगइगि यासो दक्खिणुत्तरिंदाण ।
सद्वेसिं णगराण पायारादीणि सरिमाणि ॥ २८७ ॥

तस्या द्वारोदय द्विकमक् यास दक्षिणात्तरेद्राणाश्च ।
सवथा नगराणा प्राकारादीनि मन्शानि ॥ २८७ ॥

विष्णोः । अथ चतुर्दशोऽध्यायः ।
 विष्णोः चतुर्दशोऽध्यायः ।
 अथ चतुर्दशोऽध्यायः ।

अथ चतुर्दशोऽध्यायः ।

पुत्राणां गौराणां चतुर्दशोऽध्यायः ।
 इति चतुर्दशोऽध्यायः ॥ २८८ ॥

पुत्राणां गौराणां चतुर्दशोऽध्यायः ।

अथ चतुर्दशोऽध्यायः ।

पुत्राणां गौराणां चतुर्दशोऽध्यायः ।
 इति चतुर्दशोऽध्यायः ॥ २८९ ॥

अथ चतुर्दशोऽध्यायः ।

तथैव य गणितानां चतुर्दशोऽध्यायः ।
 सोम्याणां मोक्ष्याणां चतुर्दशोऽध्यायः ॥ २९० ॥

तथैव य गणितानां चतुर्दशोऽध्यायः ।

शोभाणां चतुर्दशोऽध्यायः ॥ २९१ ॥

तथैव य गणितानां चतुर्दशोऽध्यायः ।
 मोक्ष्याणां चतुर्दशोऽध्यायः ॥ २९२ ॥

अथ चतुर्दशोऽध्यायः ।

मूढाणां रक्षसाणां चतुर्दशोऽध्यायः ।
 सोम्याणां चतुर्दशोऽध्यायः ॥ २९३ ॥

भूतानां राक्षसानां चतुर्दशोऽध्यायः ।

शोभाणां चतुर्दशोऽध्यायः ॥ २९४ ॥

भूदान । भूदानां तरभागे राक्षसानां पङ्क्तौ चतुर्दश षाट्शसहस्र
भवन्ति देवानां दानव्यतरदेवानां उपरि सप्तलोके निलयानि संति ॥ २९० ॥

अथ नीचोपपादादि पतरविशेषात् मायाद्वयेनाह,—

इत्थपमाणे णिच्युववादा दिगुवासि अतरणिवासी ।
कुमटा उत्पण्णाणुप्पण पमाणया गधा ॥ २९१ ॥

हस्तप्रमाणे नीचोपपादा दिग्गामिन अतरनिवासिन ।

कूप्पाडा उत्पन्ना अनुत्पन्ना प्रमाणक गधा ॥ २९१ ॥

इत्थ । छायामात्रमेवार्थ ॥ २९१ ॥

महागध भुजग पीदिक आगासुववण्णगा य उवकधरिं ।
तिमु दसहत्थसहस्स वीससहस्सतर सेसे ॥ २९२ ॥

महागधा भुजगा प्रातिका आकाशोत्पन्नाश्च उपर्युपरि ।

त्रिषु दशहस्तसहस्राणि विंशतिहस्तानर शेषे ॥ २९२ ॥

मह । महागधा भुजगा प्रातिका आकाशोत्पन्नाश्च १२ एते सर्वे
मूनविशेषा विद्याभूमित उपर्युपरि । त्रिषु दशहस्तसहस्राणि अंतरं शेषे
उत्पन्नादौ विंशतिहस्तसहस्राणि अतर ॥ २९२ ॥

अथ तेषां नीचोपपादादीनां क्रमणायुष्यमाह,—

दसवरिससहस्सादो सीदी चुलसीदिकं सहस्स तु ।
पल्लुम तु पाद पल्लु आउग कमसो ॥ २९३ ॥

दशवर्षसहस्रात् अशीति चतुरशीतिक सहस्र तु ।

पल्याष्टम तु १८ पल्यार्धमायुष्य क्रमश ॥ २९३ ॥

दस । दशत्रयसहस्रादारभ्य दशमहस्रोत्तरवृद्धिक्रमेणार्शीतिसहस्रपर्यन्तं
ततश्चतुरशीतिसहस्राणि पत्याष्टमभाग पत्यचतुर्धाश पत्यार्धमाप्तुर्ध
शमश ॥ २९३ ॥

अथ व्यतराणां निलयभेदमाह,—

वितराणिलयतियाणि य भवणपुरावासभरणणामाणि ।
दीवसमुद्रे दृहगिरितरुग्निह चित्तावणिग्निह क्रमे ॥ २९४ ॥

व्यतरनिव्यत्रयाणि च भवनपुरावासभवननामानि ।

द्वीपसमुद्रे दृहगिरितरौ चित्तावण्या क्रमेण ॥ २९४ ॥

वितर । व्यतराणां निव्यत्रयाणि च भवनपुरं आगतां भवनमिति
नामानि । इह कुत्र कुत्रेति श्ले । द्वीपसमुद्रे दृहगिरितरौ चित्तावण्या
श्रमेण भवन्ति ॥ २९४ ॥

अथ निव्यत्रय विवृणाति,—

उद्भृगया आवासा अधागया वितराण भयणाणि ।
भयणपुराणि य मज्जिमभागगया इदि तिय णिलुर्ध २९५

उर्ध्वगता आगता अग्रेगता व्यतराणां भवनानि ।

भवनपुगणि च म यमभागगतानीति त्रये निव्यत्रय ॥ २९५ ॥

उद्भृगया । छायाभावरवार्ध ॥ २९५ ॥

अथ भवती व्यतराणां लयभेदं निव्यत्रयमुद्दिशति,—

चित्तरुद्राद् वावय मरुदये तिरियलोपशिथारं ।
भाम्मा ह्वयति भयण भयणपुरावासाग जाग ॥ २९६ ॥

चित्रावज्ञात यावन् मेरुद्वय त्रियम्लोकविस्तार ।

भौमा भवति भवने भवनपुरावासके योग्यं ॥ २९६ ॥

चित्त । चित्रावज्ञामध्यादारम्य यावन्मेरुद्वय यावत्त्रियलोकविस्तार तावति क्षेत्रे भौमा भवति स्वस्वयोग्यभवने भवनपुरे आशासे च ॥ २९६ ॥

अथ निलयसप्तममावेदयति,—

भवण भवणपुराणि य भवणपुरावासयाणि केसिंपि ।

भवणामरेषु अमुरे विहाय केसिं त्रिय णिलय ॥२९७॥

भवन भवनपुरे च भवनपुरावासरानि केषांचिन् ।

भवनामरेषु अमुरान् विहाय केषां त्रय निलयम् ॥ २९७ ॥

मरणं । केषांचित् भवनमेव, केषांचिद्भवनपुरे च भवत, केषांचिद्भवनभवनपुरावासकानि च भवति । भवनामरेषु अमुरान् विहाय केषांचित् त्रय निलयम् ॥ २९७ ॥

अथ निलयत्रयाणां ध्यासादिकं गाथात्रयेण कथयति,—

जेद्वापरमयणाण चारसहस्रं तु शुद्धं षण्णुधीसं ।

षहलं त्रिसय त्रिपादं षहलतिमागुदयकूटं च ॥२९८॥

षडेष्टापरमवनयो द्वादशसहस्रं तु शुद्धं षवविंशति ।

षाहस्यं त्रिशतं त्रिपादं षाहस्यत्रिभागोदयकूटं च ॥ २९८ ॥

जेद्वा । जेद्वापरम्यभवनयोर्विस्तारो द्वादशसहस्रपावनानि शुद्धं षवविंशति तयोर्षाहस्यं त्रिशतपावनानि त्रिपादपावनं तयोर्षादे तद्वाहस्यत्रिभागोदयकूटं चास्ति ॥ २९८ ॥

जेद्दुमयणाण परिदो षदी जोषणदृष्टिष्या होदि ।

अथ शार्णं भवणाणं दृष्टार्णं षण्णुधीमुदया ॥ २९९ ॥

ज्येष्ठमवनाना परित वेदी योजनदलोच्छ्रिता भवति ।

अक्षराणा मवनाना दद्याना पार्श्वशतस्युदया ॥ २९९ ॥

श्लोक । वेदीशब्द द्विगार सव्ययते । अथत् पायामात्रमेवार्थ ॥२९९॥

षष्ठादीण पुराण ज्येष्ठलक्ष क्रमेण एक च ।

आवासाण विसयाहियचारसहस्र य त्रिपाद ॥ ३०० ॥

वृत्तादीना पुराणा योजनलक्ष क्रमेण एक च ।

आवासानां द्विशताधिकद्वादशमहत्याणि च त्रिपादम् ॥३००॥

यद्वा । वृत्तादीनां पुराणां योजनलक्षमुत्पृष्टवित्तर क्रमेण जप-
मेवयोगने । वृत्तादीनामावासानां द्विशताधिकद्वादशमहत्याण्युत्पृष्टवित्तर
जपन्य त्रिपादयोगने ॥ ३०० ॥

अथ नित्यनवाणां विशेषस्वरूप भौमाहाराद्यासां च कथयति,—

मथणावासादीण गोपुरपायारणक्षणादिघरा ।

भौमाहाराद्यसासा साहियपणदिणमुहुत्ता य ॥ ३०१ ॥

मथनावासादीना गोपुरप्राकारनर्नादिगृहाणि ।

भौमाहाराद्यसासा साहियपणदिनाति मुहुत्ता ॥ ३०१ ॥

मथणा । मथनावासादीनां गोपुरप्रकारनर्नादिगृहाणि भवति ।
भौमाहाराद्यसासा साहियपणदिनाति साहियपणमुहु
त्ता ॥ ३०१ ॥

इति श्रीमत्साम्प्रदायविद्विने त्रिलोकसारे द्वायनरत्नाकराधिकारः ॥ ३॥

अथ ज्योतिष्काधिकार ॥ ४ ॥



अथ व्यंतरलोकाधिकार निरूप्य तदनंतराद्देशभाज ज्योतिष्काधिकारं
निरूपयितुकामस्तदादौ ज्योतिर्विचक्षण्यप्रदर्शनमर्थं ज्योतिष्काधिकार-
वदनालक्षणं मंगलमाह,—

षेसदृष्ट्युपपणगुलकदिहिदपदरस्स सखभागमिदे ।
जोइसजिणिंदमेहे गणणातीदि णमसामि ॥ ३०२ ॥

द्विशतपट्टपचाशद्गुलकृतिद्वनप्रतरस्य सख्यातभागमितान् ।
ज्योतिष्कनिनेद्रगेहान् गणनातीतान्नम्यामि ॥ ३०२ ॥

षेसद । छायामात्रमेवार्थं ॥ ३०२ ॥

अथ तद्वेदस्य ज्योतिष्कमेवमाह,—

चदा पुण आइया गह णकसत्ता पइणतारा य ।
पचविहा जोइगणा लोयतघणोदहिं पुट्ठा ॥ ३०३ ॥

चदा पुन अदित्या महा नक्षत्राणि प्रकीर्णकताराश्च ।
पचविधा ज्योतिर्गणा शोकातरनोदधिं पृष्टवन् ॥ ३०३ ॥

चदा । छायामात्रमेवार्थं ॥ ३०३ ॥

अथ द्वीपसमुद्रनिरूपणमन्तरेण ज्योतिगणनिरूपणासम्भवात् तदाधारद्वीप-
समुद्रान् गाथाचतुष्टकेण निरूपयति,—

जबूधादकिपुकसरवा रुणिसरिषदसोदवरदीओ ।
णोदीसररुणअरुणभासा वर कुटला सरा ॥ ३०४ ॥

ज्येष्ठभवनाना परित वेदी योजनदलोच्छ्रिता भवति ।

अवराणा भवनाना दहाना पचविंशत्युड्या ॥ २९९ ॥

जेठ । वेदीशब्द द्विवार सचयते । अन्यत् छायामात्रमेवार्थ ॥ २९९ ॥

बृहदादीण पुराण ज्येष्ठलक्ष्म क्रमेण एक च ।

आवासाण चिसयाहियचारसहस्र य त्रिपाद ॥ ३०० ॥

वृत्तादीना पुराणा योजनदक्ष क्रमेण एक च ।

आवासाना द्विशताधिद्वादशमहस्याणि च त्रिपादम् ॥ ३०० ॥

यद्वा । वृत्तादीना पुराणां योजनलक्ष्मुत्कृष्टविस्तार क्रमेण जघन्य
मेकयोजन । वृत्तादीनामावासानां द्विशताधिकद्वादशसहस्राण्युत्कृष्टविस्तार
जघन्य त्रिपाद्योजनं ३ ॥ ३०० ॥

अथ नित्यत्रयाणां विशेषस्वरूप भौमाहारोच्छ्वास च कथयति,—

भवनावासादीण गोपुरपायारण्यणादिधरा ।

भौमाहारुन्सासा साहियपणदिणमुहुत्ता य ॥ ३०१ ॥

भवनावासादीना गोपुरमारुत्तर्तनादिगृहाणि ।

भौमाहारोच्छ्वासी साधिकर्पचदिनानि मुहुत्ताश्च ॥ ३०१ ॥

भवना । भवनावासादीनां गोपुरमारुत्तर्तनादिगृहाणि भवति ।
भौमाहारोच्छ्वासी यथाक्रमेण साधिकर्पचदिनानि साधिकर्पचमुहु
त्ताश्च ॥ ३०१ ॥

इति श्रान्तमिच्छद्वाधाधिविग्निने त्रिलोकसार इत्यंतरलोकधिका ॥ ३ ॥

अथ ज्योतिर्लोकधिकार ॥ ४ ॥



अथ ध्यंतरलोकधिकारं निरूप्य तदनन्तरोद्देशभाजं ज्योतिर्लोकधिकारं
निरूपयितुं कामस्तदादौ ज्योतिर्विवरयामदृष्टेनगर्भं ज्योतिर्लोकचैत्याहय-
वदनालक्षणं महत्माह,—

बेसदृष्टप्यणगुलकदिहिदपदरम्स सरवभागमिदे ।
जोइसजिणिदगेहे गणणातीदे णमसामि ॥ ३०२ ॥

द्विशतपट्पचाशदगुलकृतिहनमतरस्य सख्यातभागमितान् ।
ज्योतिष्कजिनेद्रगेहान् गणनातीतान्नमम्यामि ॥ ३०१ ॥

बसद । छायामात्रमेवार्थं ॥ ३०२ ॥

अथ तद्वेदस्य ज्योतिष्कभेदमाह,—

चदा पुण आइया मह णकरत्ता पइणतारा य ।
पंचविहा जोइगणा लोपतघणोइहिं पुट्टा ॥ ३०३ ॥

चदा पुन अश्रिया महा नक्षत्राणि प्रहीणवताराश्च ।
पंचविधा ज्योतिगणा लोकांतवनोदधिं शृण्वत ॥ ३०१ ॥

चदा । छायामात्रमेवार्थं ॥ ३०३ ॥

अथ दीपसमुद्भनिरूपणप्रतरेण ज्योतिगणनिरूपणासंभवात् तदाधारदीप
समुद्धान् गाथाचतुष्टयेण निरूपयति,—

जघुधादकिपुक्करवाणिसीरपदसादवरदीओ ।
जीदीसररुणअरुणरभासा पर कुट्टला सरा ॥ ३०४ ॥

जबूधानभिपुष्करवाणिभीरवृत्तौद्राद्रीपा ।

नदीश्वरारणारणाभामा मरा कुडल शव ॥ ३०४ ॥

जबू । जबूदीप घातुकीमडदीप पुष्करव वामणिवर क्षीवर घृ-
वर क्षौद्रवर नदीश्वरवर अरुणवर अरुणामामवर कुडलवर
शस्रवर ॥ ३०४ ॥

तो रुजगभुजगकुसगयकोचवरादी मणस्सिला ततो ।

हरितालदीवसिंदूरसियामगजणयहिंगुलिया ॥ ३०५ ॥

ततो रचरभुनगशुशगजौचवरादय मन शिष्टा तत ।

हरितालदीपसिंदूरश्यामजाननकहिंगुलिका ॥ ३०५ ॥

तो । ततो रुचकवर भुजगवर कुशगवर जौचवरादय । एते
अभ्यतरपोडशदीपा । तत उपरि असरयातदीपसमुद्रान् त्यक्त्वा अत्य-
पोडशदीपानाह-ततो मन शिलादीप हरितालदीप सिंदूरवर श्यामवर
अजनकवर हिंगुलिकवर ॥ ३०५ ॥

रूप्यसुयणयवज्जयवेलुरिययणागमूदजकखवरा ।

तो देवाहिंदवरा सयभूरमणो हवे चरिमो ॥ ३०६ ॥

रूप्यसुवर्णकवन्नरवैडूर्यकनागभूतयश्वरा ।

ततो देवाहिंदवरौ स्वयभूरमणो भवेत् चरम ॥ ३०६ ॥

रूप्य । रूप्यवर सुवर्णवर वन्नवर वैडूर्यवर नागवर भूतवर यश-
वर ततो देववर अर्हीद्वर स्वयभूरमणो भवेच्चरम ॥ ३०६ ॥

लवणबुहि कालोदयजलही ततो सदीवणामुवही ।

सन्धे अट्टाइज्जुन्दारुवाहिमेत्तया होति ॥ ३०७ ॥

लवणावुधि कालोदकजलधि तत्र स्वर्दीपनामोदधय ।

सर्वं अर्धतृतीयोद्धारोदधिमात्रा भवति ॥ ३०७ ॥

लवणं । लवणावुधि कालोदकजलधि तत्र स्वस्वर्दीपनामान उदधय सर्वे द्वीपसमुद्रा क्रियन्ते इति चेत्, अर्धतृतीयोद्धारसागरोपममात्रा भवति ३०७

इदानीं तेषां विस्तारं सस्यान च निरूपयति,—

जम्बू जोयणलक्ष्मो घट्टो तद्गुणद्विगुणवासेहि ।

लवणादिभि परिमितो स्वयम्भूरमणुवहियतेहि ॥ ३०८ ॥

जम्बू योजनलक्ष्म वृत्त तद्द्विगुणाद्विगुणव्यासे ।

लवणादिभि परिमित स्वयम्भूरमणोदध्यते ॥ ३०८ ॥

जम्बू । जम्बूय योजनलक्ष्मव्यास वृत्त तद्द्विगुणाद्विगुणव्यासे लवण समुद्रादिभि परिमित परिवेष्टित स्वयम्भूरमणोदध्यते ॥ ३०८ ॥

अथ तत्राभिमतस्य द्वीपस्य समुद्रस्य वा सूचीव्यासे कल्पव्यासे चानेतुं कारणसूत्रमिदम् —

रुऊणादियपदमिदद्गम्यगते पुणोषि लक्ष्महृद् ।

गयणतिलकसविष्टाणि शसो चलयन्त सृष्टस्त ॥ ३०९ ॥

रूपोनापिशपदमिताद्विकमर्श पुनरपि लभ्यते ।

गणनत्रिलभविहीने द्याप्तो चलयन्त सूत्र ॥ ३०९ ॥

रुऊणा । द्वीपसमुद्राणामिगणनप्रमाणं कालोदके एकत्र रूपोना यत्र रूपविष्टं च कृत्वा शशापतीये ३१५ तत्रद्वयमपि विरहयित्वा ॥ ११११ । १११११ । सर्वं शि द्विक द्वा ७२२ । १२२२२२ । अ योग्य कारणं ईह ते शशी जायते १३५ वनत्रयेण शशाप । ८ ल ३२ ल

एव च प्रथमगुणो ह्येति आचार्यश्च द्वितीयगुणोऽप्यस्येति । एतत् । एवं कृते
 मति वत्प्रमाणम् ८८ सूचीध्यायस्य त्रयो २९ ल । अत्र वलय
 स्य मानयने प्रामाणा । एतन्ना । अत्र द्वितीयगुणो ह्येति । अत्र प्रथमगुणम
 सा द्वितीयगुणा द्विगुणाद्विगुणप्रमाणा भाति इति । एतन्ना । अत्र प्रथमगुणम
 द्विगुणाद्विगुणप्रमाणं गुणितं तत्र तत्र प्रामाणा वत्प्रमाणं भाति । इदं मनसि कृत्य
 ' अत्र प्रथमगुणमिदं द्विगुणप्रमाणं ' इत्युक्तं । अत्र सूचीध्यायस्य मानयने वाचना ।
 इत्यस्य द्वितीयस्य समुद्रस्य वा वलयध्यायस्य उभयदिग्गणप्रमेयत्वात् द्विगुण
 स्यपदित्वा १६ ल तथा तत्रार्थानानां द्विगुणमद्राणां वलयध्यायस्य द्विगुण
 द्विगुण स्यापयेत् ८ ल । ४ ल । जयद्वितीयस्य द्विगुणप्रमाणप्रमाणमेव
 १८ स्यापयेत् । तत्र ध्यायानां व्यास । १६ ल ८ ल ४ ल १ ल
 गुणमङ्कलनाथ । अत्र द्वितीयस्थाने सूत्रेण लक्ष्यप्रमाणं प्रतिभेत् । एव कृते
 रूपाधिकगच्छोत्पत्ति भवति । इदं संशयाय " रूपाधिकपदद्वयं सवग "
 इत्युक्तं । अत्र " पदमेने गुणयारे " इत्यनेन गुणसङ्कलनसूत्रेण रूपाधिक-
 पदमात्रद्विकसवर्गणोत्पन्नराशावेकरूपं प्राक् प्रक्षिप्तं कणद्वयं चापनयेत् । इदं
 मेवाशयाय " तिलकसविहीण " इत्युक्तं । एव कृते इष्टस्थाने सूचीध्यायस्य
 प्रमाणमुत्पद्यते ॥ ३ ९ ॥

तथाभ्यतरमध्यमवाद्यसूच्यमानयने इदं करणसूत्रम्,—

लवणादीण वास दुर्गतिगचदुसगुण तिलकसूत्रं ।
 आदिममज्झिमवाहिरसूइत्ति भणति आचार्या ॥३१०॥

लवणादीनां व्यास द्विकत्रिकचतुसगुण त्रिलसोनम् ।

आदिममध्यमवाद्यसूची इति भणति आचार्या ॥ ३१० ॥

लवणा । लवणसमुद्रादीनां मध्ये इष्टस्य द्वितीयस्य समुद्रस्य वा वलय
 व्यास द्विसगुण कृत्वा तत्र लक्षत्रय शोधिते अभ्यतरसूचीप्रमाणं भवति ।
 तथाहि । विवक्षितवलयव्यास उभयदिग्गणप्रमेयत्वात् अवर्चनीयानां द्विगुणसमु-

द्राणां उभयदिकमजनितवलययासयुत मकाशात् त्रिलभाधिको यतस्तत
त्रिलक्षेण उभयदिवसजनितो विवक्षितवलययास अम्यतरसूचीप्रमाणमित्य
भिप्राय । विवक्षितवलययास त्रिसगुण कृत्वा तत्र लक्षत्रये शाधित मध्यमसू
चीप्रमाण भवति । तथाहि । विवक्षितस्य द्वीपस्य समुद्रस्य वा बलयव्याप्तो
द्विगुणितत्रिलक्षेणभेत् तदा तदभ्यतरसूचीप्रमाण भवति यतस्तत कारणात्
तमिन्नभ्यतरसूचीप्रमाणे विवक्षितवलययासमभ्यानदर्धस्य दिग्द्वयगतस्य
विवक्षितवलययासप्रमाणस्याभ्यधिकत्वात् मध्यमसूचीप्रमाण त्रिगुणितत्रिदू
क्षेणविवक्षितवलययासप्रमितमिति भाव । विवक्षितवलय यास चतुसगुण
कृत्वा तत्र लक्षत्रये शाधिते च ससूचीप्रमाण भवति । तथाहि । यदा द्विगु
णितत्रिलक्षेणविवक्षितवलय यासप्रमिते अभ्यतरसूचीप्रमाण विवक्षित
बलयव्यासस्य दिग्द्वयगतस्य प्रक्षेपणात् बाह्यसूचीप्रमाणमुत्पद्यत तत्र
कारणात् चतुगुणितत्रिलक्षेणविवक्षितवलय यासप्रमिता बाह्यसूचीत्याचार्या
भिप्राय ॥ ३१० ॥

अथोक्तसूचीयासमाभित्य तत्र भेदपादरसूक्ष्मपगिधि तत्रदादरसूक्ष्मभेद
पत्र चानयति,—

त्रिगुणियथास परिही दहगुणवित्थारवग्गमूल च ।
परिहिहृदयासतुरिय धादर सुहुम च रेतफाउं ॥ ३११ ॥

त्रिगुणितयास परिधि दशगुणविन्तारवग्गमूले च ।
परिधिहृत य सतुराय धादर सूक्ष्म च क्षेत्रफलम् ॥ ३११ ॥

त्रिगुणिय । त्रिगुणित यासा बाह्यपरिधि ३ ल दशगुणवित्थारवर्ग
१ ल १ ल १० तमिन् मूल महीत सुभ्यपरिधि योजन ३१६९०७
तत्रेययोजनभाग ४८४४७१ चतुर्भि सगुण्य कोटी कृशा १०२८८८४
पूर्वभागहारेण ६३२४५४ भागे कुत वा तत्रागरे ४००९२ लक्ष
द्वयन २००० सगुण्य द्दान् निधाय ८१०४४ ०० याननभागहारेण

मक्ते तस्मिन् दद्यात् स्यु १२८ तददशेष ८९८८८ चतुर्भि हस्ते कृते
 ३५९५५२ भागाभावात् चतुर्विंशत्यागुल कृत्वा ८६२९२४८ प्राक्तन
 हारेण मक्ते तस्मिन् अगुलानि स्यु १३ तद्गुणशेष ४०७३४६ याव
 द्वागेन अववर्तित साधिकैक तावद्वागेन तद्धारोणि ६३२४५४ व्यववर्तये
 चेत् द्वे भवत । एव सति साधिकार्धे ३ भवति । तत् योजनादिक सर्व सूक्ष्म
 परिधि स्थूलपरिधिना ३ ल व्यास १ ल चतुर्थांशेन २५००० हतो ७५।८
 जवूदीपस्य वादरक्षेत्रफल स्यात् । इदानीं योजनरूपसूक्ष्मपरिधिं ल
 ३१६२२७ व्यासचतुर्थांशेन २५००० गुणयित्वा ७९०५६७५०००
 अत्रैव क्रोशलक्षणसूक्ष्मपरिधिं क्रो ३ तेनैव २५००० सगुण्य ७५०००
 चतुर्भागेन योजन कृत्वा १८७५० मेलयेत् ७८०५६९३७५० अत्रैव
 पुनर्दंडलक्षणसूक्ष्मपरिधिं १२८ तेनैव २५००० सगुण्य ३२०००००
 अष्टसहस्रभागान योजन कृत्वा ४०० मेलयेत् ७९०५६९४१५० अगुल
 लक्षण सूक्ष्मपरिधि २३^३ समच्छेदेनान्योन्य मेलयित्वा ३^७ द्वाभ्यां तिय
 गववर्तितपचविंशतिसहस्रेण १२५०० गुणयित्वा ३३७५०० तस्मिन्
 क्रोशागुलेन १९२००० मक्ते साधिकक्रोशो भवति । एतत्सर्व जवूदी-
 पस्य सूक्ष्मक्षेत्रफल स्यात् । एवमेव सर्वेषां द्वीपसमुद्राणां च स्थूलसूक्ष्म-
 क्षेत्रफले चानेतन्ये ॥ २११ ॥

अथ जवूदीपस्य सूक्ष्मपरिधि सिद्धाङ्कमुच्चारयति,—

जोयणसगदुदु छक्किगि तिदप तिक्कोसमद्वदुगि द्दहो ।
 अहियदलगुलतेरस जवूए सुहुमपरिणाहो ॥ ३१२ ॥

योननाना मत्राद्विद्वि षट्क त्रय त्रिकोशा अष्टद्वयेरे ददा ।

अधिकदगुदत्रयांश नत्रो सू.मपरिणाह ॥ ३१२ ॥

जायण । या ननाना सप्तद्विद्विषट्कत्रय त्रय कात्ता अष्टद्वयेरे ददा

अथ जज्ञानि अथ, दक्षिणानि एतन्मर्कं जज्ञानिपद्य मन्मन्तिधिवमार्कं
मर्कं ॥ ३१६ ॥

अथ न > अत्राय सिद्धीवमुदाहरति,—

एषणाममेवदालं णय एष्यणामतुष्णणयमदरी ।
माद्विषयार्कं च ह्ये जंघदीवमत सुहमफल ॥ ३१३ ॥

एषणामेवदालं रिगलाम् एषणामुत्थ नमसति ।
माद्विषयार्कं धरेज्जज्ञानम्य सुःनवत् ॥ ३१३ ॥

एषणाम । एषणामाम्वाय ॥ ३१३ ॥

अथ जंघदीवमाय परिधिमाधरं कृत्वा विशक्तिपरिधानयने करण-
मन्मन्तिध, —

जग्मय परिधी इच्छिपदीउवहिमूह सगुणिय ।
जग्मयासविमत्ते इच्छिपदीउवहिपरिधी दु ॥ ३१४ ॥

जग्मय परिधी इच्छिपदीउवहिमूहया सगुण्य ।
जग्मयासविमत्ते इच्छिपदीउवहिपरिधा तु ॥ ३१४ ॥

जग् । जंघदीवम्येभयपरिधी एष्यत् इ ल मूहम ३१६२२७ को इई
३२८ अगुत् १३ भा ३ इच्छिपदीउवहिमूहण लण्ये ५ ल घातकीसडे
१३ ल सगुण्य १५ ल ल रघु १५८११३९ ल मूहमजग्मयासविमत्ते
१५ ल १५८११३९ इच्छिपदीउवहिप्या परिधी भवत ॥ ३१४ ॥

इदानीमुभयभवेत्तमानयति,—

अंताइमूहजाम रुद्धं गुणित्तु कुप्पटि किया ।
तिगुण दसकरणिगुण पादरमुहम फल वलय ॥ ३१५ ॥

मणुसुतरांति मणुगा मणुसुतरत्पमतिपरिहीणा ।

एतदो सपपामेति ए जहण्णभोगायणीतिरिषा ॥ ३२३ ॥

मणुसुतरांति मनुष्या मानुषात्तरत्पमतिपरिहीणा ।

एतत् शब्दप्रथमं च जपयभागावितिनिर्देश ॥ ३२३ ॥

मणुसु । मणुसु मणुसुतरांति मनुष्या मानुषात्तरत्पमतिपरिहीणा ।

आमानुषान् एतदभोगायणीतिर्न जपयभागावितिनिर्देशो भवति ॥ ३२३ ॥

वम्मायणिपटिषद्धो पाटिरभागा सपपहगिरिस्त ।

वरजोगाहणजुत्ता तसर्जावा हाति तत्थेष ॥ ३२४ ॥

वर्णवितिनिर्देशो च तदभाग एवप्रथमिरे ।

वरावगाहनपुत्ता प्रसमीया भवति तत्रैव ॥ ३२४ ॥

वम्माय । वम्मायवम्माय च ॥ ३२४ ॥

अथैवज्ञानावसायैतोत्तुणवगाहनमद्वैदियावगाहनपुत्तरमाह,—

अधियसहरस पारस तिचउत्थेका सहम्मय पडमे ।

सत्ते गोमिह भमरे मच्छे वरदेहदीहो दु ॥ ३२५ ॥

अधियसहरस द्वादश त्रिचतुषमक सहस्रक एव ।

सत्ते इत्ये भमरे मत्स्ये वरदेहदीर्घे तु ॥ ३२५ ॥

अधिय । साधिकसहस्रयोजनानि द्वादशयोजनानि योजनत्रिचतुर्थ एव-

योजनसहस्रयोजनं च यदासुरवेन दष्टे, शैले, शैले सहस्रवधारद्व-

चविषे इत्यथ, भमरे, मत्स्ये वरदेहदीर्घे स्यात् ॥ ३२५ ॥

अथ सपामेह इत्याह द्वयो कथयति —

सासिगि कमले सत्त मुदुदजा चउपचरणमिह गोमिहो

आसुदजो दिग्घट्टमतदलमलिह तिपाददल ॥ ३२६ ॥

जलचरजीवा लवणे काण्डनिमस्वयभुरमणे च ।

कर्ममहीप्रतिबद्धे न हि शेषे जलचरा जीवा ॥ ३२० ॥

जलयर । जलचरजीवा लवणसमुद्रे कालादकसमुद्रे अतिमस्वयभूमणसमुद्रे च कर्ममहीप्रतिबद्धत्वात् साति । शेषेषु नहि जलचरा जीवा ३२०

अथ स्थानानिर्देशेन समुद्रत्रयावस्थितमस्थाना देहावगाहनमाह,—
लवणद्रुगतसमुद्रे णदीमुद्बुवहिम्हि दीह णर दुगुण ।
दुगुण पणसय दुगुण मच्छे वासुदयमन्द्रकम ॥ ३२१ ॥

लवणद्विजात्यसमुद्रे नदीमुखे द्यौ देर्य नव द्विगुण ।

द्विगुण पचशत द्विगुण मत्स्ये व्यासोदयौ अर्धकमी ॥ ३२१ ॥

लवण । लवणद्विके लवणकालोदकयो अयसमुद्रे च नदीप्रवेशमुने उदधी च समुद्रमध्ये यथासरप्र लवणोदके मत्स्यैर्य नव ९ तद्विगुण १८ कालोदके तये द्विगुण १८ । २६ स्वयभूमणे पचशत ५०० तद्विगुण १००० म स्यासोदयौ तत्तदधाधकमी भवत ॥ ३२१ ॥

साप्रत मनुष्यक्षेत्रेतरविभागस्य कर्मभोगभूमिविभागस्य च सीमावर्णनयतो पवतयो स्वरूप निरूपयन् तद्विभागमव समधायितु गाथात्रयमाह,—

पुकरसयभुरमणाणद्धे उत्तरसयपहा सेला ।

कुडलरुचगद्ध वा सन्व पुन्व परिक्रिसत्ता ॥ ३२२ ॥

पुकरसयभुरमणयोरर्धे उत्तरसयप्रवी शैतौ ।

कुडलरुचक र्धे वा सन्व पुन्व परिक्रिसत्ता ॥ ३२२ ॥

पुकर । पुकराध स्व भूमणार्धे च यथासम्य मानुषोत्तरसयप्रवी शैतौ भवत कुडलरुचकाधमित्त्र कुन्वगिरि रुचकाध रुचकगिरिर्यधैत्यर्थ । एत सर्व पवता पर्व स्वस्वाभ्यन्तरदापममदान् परिक्रिस्य तिष्ठति ॥ ३२२ ॥

मणुसुत्तरोत्ति मणुसा मणुसुत्तरलघसत्तिपरिहीणा ।

परदो सयपहोत्ति य जहण्णभोगावणीतिरिया ॥ ३२३ ॥

मानुषोत्तरानं मनुष्या मानुषोत्तरलघसत्तिपरिहीणा ।

परत मयप्रभात य जपयभोगावनिनिर्घोष ॥ ३२३ ॥

मणुसु । मानुषोत्तरलघसत्तिपरिहीणा मनुष्या मानुषोत्तरलघसत्तिपरिहीणा ।

अगम्य परत स्वयप्रभातलघसत्तिपरिहीणा जपयभोगावनीतिरिघोषो भवति ॥ ३२३ ॥

कम्मायणिपटिचद्धो वाहिरभागो सयपहगिरिस्स ।

वरओगाहणमुत्ता तसज्जीषा हाति तत्थेव ॥ ३२४ ॥

वर्मावनिप्रनिर्घोषो वाहिरभाग स्वयप्रमगिरे ।

वरावगाहनमुत्ता प्रसमीषा भवति तत्रैव ॥ ३२४ ॥

कम्माय । छायाभाजमेवा य ॥ ३२४ ॥

अथेत्तातापरार्पोत्तात्तृणावगाहनमद्वेदियावगाहनपुरस्सरमाह,—

अधियसहस्स वारस तिचउत्थेक्क सहस्मय पडमे ।

सखे गोम्हि ममरे मच्छे वरदेहदीहो हु ॥ ३२५ ॥

अधिकमहस्य द्वादश त्रिचतुषमेक सहस्रक पद्ये ।

सखे मध्ये ममरे मत्स्ये वरदेहदीर्घे तु ॥ ३२५ ॥

अधिय । साधिकसहस्रयोजनानि द्वादशयोजनानि योजनत्रिचतुर्थ एव-

योजनसहस्रयोजनं च यथासत्येन पद्ये, शस्ते, मध्ये सहस्रवारयज-

नविशये इत्यथ, ममरे, मत्स्ये वरदेहदीर्घे स्यात् ॥ ३२५ ॥

अथ तयोमेव प्याशोदयो कथयति,—

वासिगि कमले सखं मुहुदओ चउपचपरणमिह गोम्ही

वासुदओ दिग्घट्टमतहलमलिण तिपाद्दल ॥ ३२६ ॥

व्यास एक ऋग्वेदे शब्दे मुत्तोदयो चतु पचवर्ण इह ग्रामे ।
 व्यासोदयो दीर्घाष्टमनदलमयं त्रिपाददलम् ॥ ३२६ ॥

वासिनि । व्यास एक योजन कमलनाले तद्वाहुल्य ममवृत्तत्वात्तदेव
 शब्दे मुत्तोदयो चत्वारि याजनानि पच भवति चरणा चतुर्याशा
 योजनस्य । इह ग्रामे व्यासोदयो दीर्घ्या (४) षममागदीषषोडश
 मागो ऋग्वेदे अमरे व्यासोदयो प्रयश्चरणा योजनस्य दल च स्वातामन-
 योजनमित्यथ । “ वासो तिगुणो परिही ” इत्यादिना कमलस्य सर्वक्षेत्र-
 फल ७५० मानयेत् ॥ ३२६ ॥

अथ वासनारूपेण शसस्य मुरजत्नेनफलमानयति,—

आयामकदी मुहदलहीणा मुहवास अद्भुवग्गजुदा ।
 विगुणा वेहेण हदा सखावत्तस्त सेत्तफल ॥ ३२७ ॥

आयामकृति मुहदलहीणा मुख्यास अर्धवगयुता ।

द्विगुणा वेधेन हता सखावर्नम्य क्षेत्रफलम् ॥ ३२७ ॥

आयाम । एतावत्तदय १२ मुत्तयासे ४ शब्दे एतावत्मात्रे कणे
 विक्षित सपूर्णमुरजाकारो भवति । मुत्तायामसमासार्धमध्यफलमिति कृते
 एव भवति । सडदये कृते एव । अत्रैकसटस्य क्षेत्रफलमानीयते । सडि-
 तत्वादिदमर्धमृण भवति । “ विस्तरमवग्गददगुणकरणी वद्वस्त परिषो
 होदी ” इत्यनन एकसडस्य मुत्त ४ भूम्यो ८ वर्गमूलमध्ये क्षेत्रराहनानुगुणेन
 गृत्वा १२^१ १२^४ १२^८ मुत्तमूलशेषे ३^१ अष्टभिरपवर्तिते ३^२ मूमिमूलशेषे
 ३^३ षोडशभिरपवर्तिते ३ तयो सूत्रपरिधी स्याता । इद क्षेत्रनाहुय ८
 मय ४ पर्यत सडयित्वा प्रसारिते परिधिप्रमाणेन तिष्ठति तत् क्षेत्र तत्र
 त्योमयशास्त्र पुन मुत्त ० मूमि ४ समसार्ध मध्यफलमिति वेधरूपमध्य
 पत्र साधयित्वा तत्र याभयपाद्भवस्थितक्षेत्रं गतीत्वा चतुरस्यरूपेण साधिते
 एव । तत्र सातपुरणार्थ काणद्वयस्त्विनवारककल्प गतीत्वा न्ययस्याने

निमित्तेषु सपूर्णं न भवति एवावति षण्णे निमित्ते सपूर्णं भवति । पार्व
दपरतिविद्याजोत्तरानि पचत्तराः । एकाद्यापरि एकस्मिन् विषयात्क
एण निमित्ते णव । तस्योपरि पूजमानीने क्षेत्रे निमित्ते एव । अत्रत्यतृतीयांश
पुष्क स्यादपित्वा त्रिधा सतिने सत्ये । अस्मिन् संदत्रय एकभूतरूपेण
संधिते सत्येव । तदपि त्रिषष्टेण दत्तयित्वा पार्व सस्याप्य संधित णव ।
त पुनरपि त्रिषष्टेण दत्तयित्वा पुष्क स्यादिने क्षेत्रद्वये णव । अत्रैकक्षत्र
द्विषष्टेण एतमानमिति तन्मे द्वावर्ध्व । त्रिभागवदितवत्क्षत्र नियम्येण
दत्तयित्वा पार्व सस्याप्य संधिते एवं । तदपि पुनस्त्रियम्येण दत्तयित्वा
उध्वाभा ६ संधिते सत्येव । एव समभुजकोटीस्तयो आचामकदीप्त्युक्त । त
त्रायामहती १४४४४४४४ १४४४४४४४ १४४४४४४४ १४४४४४४४ २ अधुना
संश्रयन इति देवा मुहदहलीने युक्त । तत्र मुहदहसममणहीनराशी १४२
कणाव दत्ता अत्रिष्टोत्तरा ४ वेधसम द यित्वा अधुना सथयत इति
कृत्वा “मुग्धास अद्भवगुदा” इत्युक्त । तत्र मुसध्यासार्धवर्गयुक्तराशि
१४६ एक सुराराहस्येतावति १४६ द्योस्तथा सद्यो किमित्यागतेन
गुणकारद्वय गुरुयत इति लघु “विगुणा” इत्युक्त । एव दित्तराणि
२९२ वेधेन चतुर्भिर्वर्तितन ७२५ एयन इति ‘वर्ण हदा’ इत्युक्त ।
एत उलावनसर्वे अत्रल ३६५ भवति । त्रीद्विचतुर्दिपपचेद्विद्याणी
सातक “मुग्धासि चवा” इत्य दिना नेतव । एत द्विद्यासि सातकानां
अल्पवत्प्रदेशतज्ञानापाभिदमुच्यत । तत्रत्यत्वं त्रीद्विचसातक २११६
एकयोजनस्येतायस्यगुह्यु ७६८००० एताञ्च २११६ किमिति स्यात्य
चनरूपराशित्वात् णकारमपि चनरूपेणैव सस्याप्यांगुलं कृत्वा २११६ ।
७६८०००।७६८०००।७६८००० तथैवेकीगुह्यस्य सूच्यगुह्यप्रदेशे एतावर्द-
गुह्यानी किमिति स्यान्नन सूच्यगुलं कृत्वा सूच्यगुह्यस्य प्रमाणांगुलत्वात्
व्यवहाररूपात्तनांगुह्यानी १।१।७६८०००।७६८०००।७६८००० प्र
माणांगुह्यकरणार्थं यचनात् ५०० एव । रांगुह्यानामकरिप्रप्रमाणांगुले एताव
द्व्यवहारो गुह्यानी १।१।७६८०००।७६८०००।७६८००० किमिति स-

वास । वषादिनमासा द्वादश १२ एकोनपचाशत् ४९ षट् ६
 विकटोद्विषणां षषासराय ज्येष्ठमासु मत्स्यानां पूर्वकोटि नक्षत्राणामनि
 नक्षत्राणितचनुरशोतिलक्षणाणांत्यर्थं सरीसृपाणाम् ॥ ३२९ ॥

घायत्तरि पादात् सहस्रमाणादि पक्षिसुतरगाण ।
 अतामुत्तमवर कम्ममहीणरतिरिक्ताः ॥ ३३० ॥

द्वाप्तसति द्वाचत्वारिंशत् सहस्रमानानि प. युरगाणां ।

अनर्मुहूर्तमवर कर्ममहीनरतिरिक्ता मासु ॥ ३३० ॥

घायत्तरि । द्वाप्तसति द्वाचत्वारिंशत् सहस्रमनानि षणिणामुत्तमाणां
 च अतमुत्तमवरमासु पुद्गमुत्तमाणां सवर्षा कर्ममहीनानिश्चात् ॥ ३३० ॥

अथ प्रागायुष्य निरूप्येदानीं तेषामेव वेदगताविशेष निरूपयति,—

गिरया द्विगिषिगता समूहणपचकत्वा होति सदा ह्य ।
 भोगसुरा भट्टणा तिवेदगा गदभणरतिरिया ॥ ३३१ ॥

निय. एतद्विषय मयूजनेषाभा भवति षण राट् ।

भोगसुरा पशेना त्रिवेदगा गर्भेनरतिरियत् ॥ ३३१ ॥

गिरया । नारदा एवेंद्रिया विकटप्रया संमर्त्तनर्व द्विषाथ भवति
 षण राट् । भामभूमिता सुराथ ष वदनांता । त्रिवेदगा गभजनेर-
 तिरियत् ॥ ३३१ ॥

एव प्रासागिकानुपगिवा ई प्रतिपाद्येदानीं षट्ताई तारादिविधित्वापानं
 गथात्रयण निर्दिशति —

णउदुत्तरसप्तसण दस सीदी चडुदुगे तियषउवे ।
 तारिणससिगिक्तरपुहा पुकागुर्गगारभदगदी ॥ ३३२ ॥

मयूजनेषाभा तानि दत्ता अत्रात् । षण ईवे त्रिकणपुष्प ।

तारेण तात्रात् ३३२ पुष्पगुणं एतत् ॥ ३३२ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥

अथ ह्यगण्यं कथयिष्ये विनाशं तांसादि तावदिति ॥

जाह्नवदहं च दहं नमोऽह्ये जायमानं मये ॥ ३३३ ॥

अथो देवे नमस्कृत्यै विष्णवे तस्मात् ॥ ३३४ ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३३५ ॥

अथ ह्यगण्यं कथयिष्ये विष्णवे तस्मात् ॥ ३३६ ॥

अथ ह्यगण्यं कथयिष्ये विष्णवे तस्मात् ॥ ३३७ ॥

अथ ह्यगण्यं कथयिष्ये विष्णवे तस्मात् ॥ ३३८ ॥

अथ ह्यगण्यं कथयिष्ये विष्णवे तस्मात् ॥ ३३९ ॥

अथ ह्यगण्यं कथयिष्ये विष्णवे तस्मात् ॥ ३४० ॥

अथ ह्यगण्यं कथयिष्ये विष्णवे तस्मात् ॥ ३४१ ॥

अथ ह्यगण्यं कथयिष्ये विष्णवे तस्मात् ॥ ३४२ ॥

तारतर । तारकाया सकाशात् तारकांतर जघन्य तियमूप चोत्तमसमभाम
 ३ पचाशयोजनानि मध्यमांतर योजनसहस्रमुत्कृष्टांतर भवति ॥ ३३५ ॥

इदानीं ज्योतिर्विमानस्वरूप निरूपयति,—

उत्ताणद्वियगोलकदलसरिसा सद्य चोद्भवाविमाणा ।

उपरिसुरनगराणि य जिणमधणजुदाणि रम्माणि ३३६

उत्तानस्थितगोलकदलसदृशा सर्वज्यातिप्रविधाना ।

उपरि सुरनगराणि च निनभवनयुनानि रम्माणि ॥ ३३६ ॥

उत्ताण । उपरि 'तपामुपरि' इत्यथ । शेषश्चायामात्रमेवाप्य ॥ ३३६ ॥

अथ तया विमान यास याहृत्य च गाथाद्वयेनाह,—

जोयणमेकाद्विकल छप्पणददालचदरविधास ।

मुक्कुरिदरतिपाण कोस किंचूणकोस कासद्ध ॥ ३३७ ॥

योजन एकपष्टित्ते पर्यन्त शब्दवत्कारिणान् पदविधासा ।

मुक्कुरिदरतिपाणा मेण किंचिन्नुक्कुरिदर कोशाधम् ॥ ३३७ ॥

जायण । एकयोजने एकपष्टिभागं कृतं तत्र पर्यन्तान्ताद्भागा अष्ट
 पत्वारिंशद्भागान्ध क्रमेण पदविधिमानव्यासौ भवत । मुक्कुरिदरति-
 तपाणां सुवमगन्तव्यनीनां विमान यास यास किंचिन्नुक्कुरिदर कोशाध
 च इत्यात् ॥ ३३७ ॥

कोसस्त नुरियमधर नुरियहियकमेण जाव कोसोत्ति ।

ताराण रिक्कुराण कोस पदल तु यासद्ध ॥ ३३८ ॥

कोशाध्य मुत्तयपर सुय विक्रमेण यावन् यावत् इति ।

ताराणां प्रकाशां शोभ याहृत्य तु इत्यात् ॥ ३३८ ॥

कामरूप । कालस्य च तूर्णतः जाता इत्यनुसिद्धकाले
 बुद्ध काले भावि तर्का इति भाग्ये । काले भाग्ये इत्युक्तं
 उक्त्यागते काले विमानस्य काले सति काल्ये मन्-
 श्यसार्थे ॥ ३३८ ॥

अथ राहु विमानस्य विमानस्य तद्वर्षे तद्वर्षे न तद्वर्षे
 राहुअग्निविमाणा किञ्चूण जोयण अयोगता ।
 छम्मास पथते चंद्रर्या छाटयति क्रमे ॥ ३३९ ॥

राहुरिष्टविमानो विहितो योनौ अयोगतां ।
 पन्नामे पर्वते चंद्रर्या छाटयति क्रमेण ॥ ३३९ ॥

राहु । राहुअग्निविमानो किञ्चिन्नुनयोजनदानी चंद्रर्योरघोरयो-
 पन्नासे पर्वते चंद्रर्या छाटयति क्रमेण ॥ ३३९ ॥

राहुअरिष्टविमाणधयादुरि पमाणअगुलचउक ।
 गतूण ससिदिमाणा मूरविमाणा क्रमे होंति ॥ ३४० ॥

राहुरिष्टविमानचनदुपरि प्रमाणागुलचतुष्कम् ।
 गत्वा शशिविमाना सूर्यविमाना क्रमेण भवति ॥ ३४० ॥

राहु । राहुरिष्टविमानचनदुपरि प्रमाणागुलचतुष्कम् गत्वा शशि-
 विमाना सूर्यविमानाश्च क्रमेण भवति ॥ ३४० ॥

अथ चंद्रादीनां किरणप्रमाणं तत्स्वरूपं चाह,—

चदिणं चारसहस्सा पादा सीयल खरा य सुके तु ।
 अद्वाइज्जसहस्सा तिव्वा सेसा हु मदरुरा ॥ ३४१ ॥

चत्रेनयो द्वाणशमहस्या पादा शीतला खराश्च सुके तु ।
 अर्धतनायमहस्या तत्र शशा हि मन्करा ॥ ३४१ ॥

संदिग्ध । चन्द्रादिरप्यसौ द्वादशमन्त्रः, पादा करा इतिहा सरा-
 ट्काध । शुभे च धृतीः २५०० सहस्रा तीर्था प्रकाशेनोच्चवत्
 रीरागु मदकरा मदमन्त्राणा ॥ ३४१ ॥

अथ चन्द्रमन्त्राय वृद्धिदानिश्चममावेद्यति,—

चक्षो णियसोलसम विण्हो सुषो य पण्णरदिणोत्ति ।
 हेष्टिल णिञ्च राहूगमणविसेसेण वा होदि ॥ ३४२ ॥

चक्षु निगोडरा कृष्ण शुभश्च पचशदिनामश्च ।

अधमन निश्च राहूगमनविशेषेण वा भवति ॥ ३४२ ॥

चक्षु । चक्षु निगोडशभागमभिः याम्य कृष्ण शुभश्च भवति । पचदश
 दिनपर्यन्त पोदशकलाना १६ मेतागति विधये ३६ एककलाया किमिति
 सपात्पाष्टाभिः पचस्य गुणिते एव १६ एककलाया एतावति क्षेत्रे ३६
 पोदशकलाना १६ किमिति सपात्स्य द्वाभ्यामपचस्य गुणिते एव ३६ आचा-
 र्यातराभिः पचेषामनन नित्यराहूगमनविशेषेण वा भवति ॥ ३४२ ॥

अथ चन्द्रादीनां विधानवाहकदशनामाकारविशेषे तत्संख्यां चाह,—

सिंहगणपथसहजटिलम्नायारसुरा वहति पुष्यादि ।

इदुरवीणा सोलसहस्रमद्दमिदरतिथे ॥ ३४३ ॥

सिंहगणपथमन्त्रिः शशाङ्कारसुरा वहति पूषादिम् ।

इदुरवीणा पोदशमहस्र अशधमितरत्रये ॥ ३४३ ॥

सिंह । सिंहगणपथमन्त्रिः शशाङ्कारसुरा वहति तद्विमानपूषादि-
 तसंख्यां इदुरवीणा पादसहस्रणि तदुपाधमन्त्रितरत्रये महनक्षत्र
 तारकारूपे ॥ ३४३ ॥

अथाकाण चरतीं द्विपञ्चमगां द्विविभागमाह —

उत्तरद्विपणउद्धाधोमज्ज अभिजिमूलतादी य ।

मरणी कित्तिथ रिकरा चरति अवराणमेय तु ॥ ३४४ ॥

अथ तेषु बलयेषु व्यवस्थितानां चन्द्रादित्यानां सम्यगाम्यानि,—
 दीवद्वपदमवलये चउदालमय तु बलयवलयेषु ।
 चउचउवङ्गी आदी आदीदो दुगुणदुगुणकमा ॥३७॥

द्वापार्श्वप्रथमवलये चतुश्चत्वारिंशच्छत तु वलयवलयेषु ।
 चतुश्चतुर्वद्वय आग्नि आग्नि द्विगुणद्विगुणक्रम ॥ ३९० ॥
 दीव । मानुषोत्तराद्वाहि स्थितपुष्करद्वीपाधप्रथमवलये चतुश्चत्वारिंशदुत्तरशत १४१ तत उपरि बलयवलयेषु चतस्रश्चतस्रा वृद्धयो भवति ।
 १४८१५२१५६१२०१७६४१६८१७० उत्तरोत्तरद्वीपस्य समुद्रस्य वा आदि प्रथमप्रथमस्य द्वीपस्य समुद्रस्य वा प्राक्तनवलयस्यादित द्विगुण-
 द्विगुणक्रम ॥ २८८ ॥ २५० ॥

अथ तत्तद्वलयव्यवस्थितचन्द्रचन्द्रातर सूर्यसूर्यातर च निबंदयति,—
 सगसगपरिधिं परिधिगरविंदुमजिदे हु अतर होदि ।
 पुस्ताम्हि सन्वमुराद्विया हु चदा य अभिजिम्हि ॥३५१॥

स्वस्वकपरिधिं परिधिगरवीटुमक्ते तु अतर भवति ।
 पुष्ये सवसूर्या स्थिता हि चन्द्राश्च अभिमिति ॥ ३९१ ॥

सग । स्वकीयसूत्रपरिधौ परिधिगतरवीटुप्रमाणेन मक्ते सति अतर भवति । तत्र तावज्जबुद्धीपादारम्योभयमागगततत्तद्द्वीपसमुद्रवलययासमे लनसजातद्विनीयपुष्करार्धप्रथमवलयसूचीयासस्य ४६००००० विस्स-
 भवगा १८यादिना परिधिमानाय १४५४२४७७ तस्मिन् तत्परिधिगतर वीटुप्रमाणेन १४४ मक्ते विंशसहितातर चन्द्रादित्यानां १०१२७ शेष ३४४ विंशसहितातरानयने विंशसहितातरलब्धादेकभपनाय १०१०१६ शेषेण ३४४ सह सम-उद् कृत्वा ३४४ त-उपे मेलयित्वा ३४४ अनेन सह चन्द्रविंश ३४४ सूयविंश वा ४१ परस्परहारागुणन सम-उद् कृत्वा शेष

१०५१ च १०५१५ १०५१६ विवे तस्मिन् कद्रुषिच उपनाते
 १०५१७ पूर्वदिशि आनाय १०५१८ विवाहिने चद्रुपूर्वतः यथा । पुन
 र्वे पुनः सिधना कद्रुषिच अभिमिति सिधता ॥ ३५१ ॥

अपराधघातदपममुद्रमनघद्रुदिसरघानघने गच्छमानघन सकारण
 सुतार रघातद्रुदिसरघाया गाद्यष्टकनाह,—

रज्जुदण्डिदे मदिरमज्जसादो चरिमसायरतोसि ।

पटादि तददे तस्स तु अम्मतरयोदिया परदो ॥ ३५२ ॥

रज्जुदण्डिने मदिरमज्जयत चरमसागरान इति ।

पनाते तदथे तस्य तु अम्मतरयोदेका परत ॥ ३५२ ॥

रज्जु । रज्जुदण्डे कुने सति मदिरमज्जयत आरभ्य चरमसागरत यावत्
 तावत्तया पतति तस्या पुनरप्यर्पिनाया तस्य चरमसागरतयाभ्यतरयोदिका
 यात ॥ ३५२ ॥

दसगुणपणस्रिसयजोपणमुपगम्म दिस्सदे जम्हा ।

इगिलफरसहिओ लब्धो पुच्चगसधुयहिदिधेहि ॥ ३५३ ॥

दशगुणपषस्रमनिशानयोमनमुपगम्य दृश्यते यस्मात् ।

एकस्रधिक एक पूर्वगसर्वादधिर्हीयेम्य ॥ ३५३ ॥

दस । दशगुणपचस्रस्रतिशत ७५००० योजनमुपगम्य रज्जुदण्डे यते ।
 कुत इतिचेत् । यस्मात् कारणात् पूर्वसिधनाभ्य सर्वोदधिर्हीयेम्य सकाशात्
 उत्तर एक कभिद्रुदाय समुद्रो वा एकलभाषिह । एतदेव स्पष्टायोति ।
 एक ३० ल, स्वयंभुमेण संकल्प्य जगदीपगतापठ ललित सर्व द्वापसमुद्रप
 लयव्यासीह ५००००१२ ल । ४ ल । ८ ल । १६ ल । ३२ ल । इत्यादि मेटयित्वा
 ६२५ ००० अर्थाकृते ३ [२५००० द्विनायवारुटिषारज्जुममाण । तस्मिन्
 तस्मात्यावतनस्रवषटपव्यास ३०५०००० पुने सति त् अम्मतरयोदिकापरतो

एतन्ने द्वि पानिन एव जसौ त्रै आत्मा पत्र ।

नैपोदधय मेग्शाज प्रष्टनोयोगिन न १२ १३ ॥ ३५८ ॥

एतन्ने । एतन्नेसमुद्र द्वि छद्म पानिन तत्रैक जवूर्दीप द्वेदि । तत्र
छेदे आदिमा पत्र द्वीपोदधि-उद्दे मेरुशलाका च पठने प्रष्टने ज्ये-
द्विधानयने उपयोगिनो न मघति इत्यपेनप्यते ॥ ३५८ ॥

कुप्रति चेदाह,—

तिपहीणसंदिछेदणमेत्तो रज्जुच्छिद्यी हने गच्छां ।

जवूर्दीपच्छिद्यिणा छरूपयुक्तेण परिहीणा ॥ ३५९ ॥

त्रिहीनत्रेणिउदनमात्र रज्जुच्छेद भवेत् गच्छ ।

जवूर्दीपच्छेदेन पद्मरूपयुक्तेन परिहीन ॥ ३५९ ॥

तिय । त्रिहीनत्रेणिउदनमात्रो रज्जुच्छेद तस्मिन् जवूर्दीपम्याम्यनरे
चहिश्च पचाशत्पचाशत्सहस्राणि इति मिलित्वा एकलक्षयोजनानि तेषां
छेदान् १७ तद्गतांगुल ७६८००० छेदान् १९ मेरुमयैकछेद च मेलयित्वा
तत् सर्वमेकसरथात् कृत्वा तेन सहितसूच्यगुलछेदान् अपनयनत्रैराशिक-
विधिना अपनीते द्वीपसमुद्राणां सख्या भवति । कथमपनयनत्रैराशिक-
विधिरितिचेत् । एतावत् । प्रच्छेदे छे ३ गुणकार प्रदश्य यदि गुण्ये छे ।
एक फल=१ रूपमपनीयेत एतावत् इ छे छे गुणकार प्रदश्य कियदपनीयेते
इति त्रैराशिकेन फलगुणितामिच्छा प्रमाणेन विमज्य गुणकार छे छे ?
भागहारयो छे छे ३ पत्य छेदवर्ग पत्यछेदवर्गेण सहस्र प्रदश्य अघस्तनं
छे छे ३ यावद्भागोनेक उपरितन छे छे ? तावद्भागोने साधिकैकमित्यप-
वत्यं ३ एतद्रज्जुच्छेदस्य गुण्ये छे छे छे ३ अपनयेत् । इदमेव द्वीपसमु-
द्राणां सरथा भवति । इदानीं प्रष्टनमनुसधयति । जवूर्दीपच्छेदेन पद्मरूप-
युक्तेन छे छे परिहीनो रज्जुच्छेद एव समस्तद्वीपसमुद्रगतचद्रादित्यप्रमाणा-
नयन गच्छो भवति ॥ ३५९ ॥

अथ ज्योतिर्विम्बानयनगण्टस्यादिमाह,—

पुष्करसिंधुमयधन चउघणगुणसयछहत्तरीपभओ ।

चउगुणपचआ रिणमपि अटकदिमुहसुवारि दुगुणकभ

पुष्करसिंधुमयधन चतुर्थनगुणानपन्मसति प्रभव ।

चतुर्गुणप्रचय ऋणमपि अटकृतिमुहसुवारि द्विगुणकर्म ॥ ३६० ॥

पुष्कर । पुष्करसमुद्रस्यानुत्तरधनमानेतस्य । कथमिति चेत् । आदी
 आदीदो दुगुण दुगुण कमे इति न्यायेन पुष्करोत्तरार्धस्यादित १४४
 पुष्करसिंधोर्दिद्विगुणा १४४।२ भवति । त मुहं कृत्वा पद ३२ हत
 मुहं १४४।२।३२ मुहसिधितन द्विकन २ पद ३२ गुणयित्वा स्याविते
 १४४।६४ आदिधन स्यात् । ध्येकपद ३१ अथ ३^१ प्रचय ४
 गुणो गण्ट ३^१।४।३२ अत्राधननद्विकमुपरितनचतुष्केनापवर्त्य अवशिष्ट
 द्विकेन पद गुणित एव ३१।६४ अभिसुत्तरधने ऋणनिक्षेपार्थ उत्तरधन
 गतगुणकारस्य ३१।६४ ऋण १।२४ गुणकार ६४ सदृश प्रदर्श्य १।६४
 आत्मप्रमाणेरूप ऋणं निम्निय ३२।६४ इदमप्यादिधने १४४।६४
 तथा सादृश प्रदर्श्य चतुर्त्तराचत्वारिंशत्तरूपे १४४।६४ आदिधन
 गुण्ये द्वानिंशद्भूषोत्तरधनगतगुण्ये ३२।६४ मिलिते सति चतुर्थनगुणित
 चतुस्रन्त्युत्तरघातस्य १७६।६४ पुष्करसिंधुमयधनमेव ज्योतिर्विम्बानयन
 गण्टस्य प्रभव स्यात् । एवमुत्तरत्र वारुणिवारुणीयादिषु सर्वत्र प्राक्नादित
 १४४।२ द्विगुणकमेण स्थित मुह १४४।२।२।२ पदहत कृत्वा १४४।२।२।
 ६४ द्विकद्वयमन्योन्व सगुण्य चतुर्वाहिरमे स्याविते आदिधन १४४।
 ६४।४।१ ध्येकपदेत्यादिना उत्तरधनमन्यानीय ३^१।४।६४। तस्मिन्प्रप-
 चर्तितद्विक चतुर्वाहिरम सस्याप्य ६३।२४।२ अत्रैतद्गुणकारगुणितैकरूपं
 ऋण ६४।२ निम्निय सत्र चउघणगुणसयछहत्तरिणा भवितपमि
 स्तेतदथ द्वानिंशद्भूषोत्तरधन तथा तथा समेय तन्द्विकेन पूत्रद्विक सगुण्य

३२।६४।४ आदिघन १४४६४।४ उत्तरघनयो ३२।६४।४ मेलने
 १७६।२४।४ चतुर्गुणप्रचयो भवताति ज्ञातव्य । एव सर्वत्र घन चतुर्गुणो-
 त्तरक्रमेण गच्छति । ऋणमपि अष्टकृतिमुख उपर्युपरि द्विगुणोत्तरक्रम-
 च स्यात् ॥ ३२० ॥

अथैवमादि १७६।६४ उत्तर ४ गच्छ छे छे ३ मानीय तत्संकलितघ-
 नमानयन् सर्वज्योतिर्विज्ञानयनप्रकारमाह,—

आणिय गुणसकलिद् किंचूण पचठाणसठविद् ।

चदादिगुण मिलिदे जोइसचिंधाणि सञ्जाणि ॥ ३६१ ॥

आनाय्य गुणसकलित किंचित् न पचस्थानसम्थापितम् ।

चद्रादिगुण मिलिने ज्योतिष्कचिंधानि सर्वाणि ॥ ३६१ ॥

आणिय । पदमेत्ते गुणयारे इत्यादिना पदगतोपरितनराशि छे छे
 ३ मात्रगुणकारप्रमाणद्विके २।२ अन्योऽय गुणिते सति ' तम्मेतदुमे गुणे
 रासी ' इति न्यायन श्रेणिर्भवति । तमात्रगुणकारपरद्विके गुणिते अपर
 श्रेणिर्भवति । पदगताधस्तनराशि ३ गतेकलक्षयोजनछेद् १७ मात्रद्विक-
 द्वये परस्पर गुणिते लक्षवर्गो भवति १ ल । १ ल, तद्गतांगुल ७६८०००
 छेद् १९ मात्रद्विकद्वये अ योऽय गुणिते अगुण्यवर्गो भवति १७६८०००।
 ७६८००। सूच्यगुलछेद्मात्रद्विकद्वये अ योऽय गुणिते चतुर्गुणवर्गो
 भवति ६४।६४तद्गतत्रिकमात्रद्विकद्वये अन्योऽय गुणिते सप्तवर्गो भवति
 ७७ पदमात्रगुणकारपरराशिक्रमश्रेण अपनीयने रूपयुनगुणकोण
 ३ इने मुसल १७६।६४ गुणिते च संकलितघन भवतीति ३३३३३३ ।
 ७८०००० । १ ल १ ल ६४।६४।७।७२ एवमेव सागसंकलितघनमप्याने
 तस्य । ३३३३३३ । १ ल ७६४।१ संकलितघनराशिम्योपरितनपदम-
 ण्यनियन १७ अधस्तनचत यथा ६४ सह षाट्शान्तिवर्गनीय । उपरि
 तनचत वर्ग ६४ अधस्तनचत यथा ६४ सह षाट्शान्तिवर्ग ६४ पच-

सप्तम् । अगुण्यगण्यद्वयानि लक्षणतद्गण्यै सह षोडशान्यानि पुषङ्क
 कृत्वा स्यापद्यत् । अगुलीकषण विमि समेष बेसदुत्पण्णवर्गमयोन्व्ये
 गुणिते दण्णुी स्यात् । अपस्तननिकनयम-वो-य गुणयित्वा २७ तेन
 सप्तवर्ग ४९ सगुण्य १३२३ अवशिष्टयगुण्येण गुणयित्वा तस्मिन् तानि
 गुण्यानि मेलयेत् ३ । ३३=५२९२००००००० ००००००० एव
 मानाने गुणसकलिते "गुर्द पादारभ्य " दो दो वर्गा " इत्यावर्त । श्रेद्रा
 दक सर्व २।४।१२।४२।७९ मेलयित्वा १३२ तस्मिन् पुन पुष्करोत्तार्थ
 गतसद्वर्णा संकलितधनं " वदमेगेण विहीजे ७ कुमाजिर्द ९ उत्तरेण
 सगुणिर्द १ । ४ अपवत्य १४ पमव १४४ जुर्द १५८ पद ८ गुणिर्द १२
 ६४ ह्यनीय मेलयित्वा १३९६ इर्द कणसंकलितधनेन समपठेर्द
 कृत्वा सू १३९ सू ७७६८००० । १ ल । ६४।७।१।७६८०००।१ ल
 ८४।७।१ एतसर्व सरयात सूच्यगुलं कृत्वा सू २ । कणस्य कण १।३
 धने भवतीति "यायन कणसंकलितधनश्रेणावपनीय सु ३ । ३३ ।
 ७८००० १ ल । ७।६४।१ एवंभूतकणसंकलितधनेकश्रेण्या सह
 कणमहितधनसंकलितं समानठेर्द कृत्वा सू २।४।७६८०००।१ ल
 ७।६४।२।४।७६८०००।७६८०००।१ ल । १ ल । ७।७।६४।६४।३
 तस्य सूच्यगुलप्यतिरिक्तगुणकारं सर्व संख्यातं कृत्वा सरसंरयातसू-य
 गुण्यगुणकारश्रेणी सू २ । संकलितधनेकश्रेण्या साम्यं प्रदुर्व्य तत्रैवापरस्यो
 श्रेणावपनीते विधि-न्यूनं भवति २ । १ । ११ । ४ । ६५=५९९२।१६
 एतत्पञ्चसु स्थानेषु सस्याप्य चद्रादिप्रमाणन गुणयित्वा २।१।१।१।२।५।
 ५९९०।१६०१।११।१।२।५=५२९२।१६०१।११।८८।४।२५=५२९२।
 १६०२।११।२८।१।६५=१९९२।१६०२।११।६६९७५।१।४।६५=
 ५९९२।१६ समिलिते ५३५५३५ । १२९८ मत्रस्थान
 सहशापवर्तनन्यायेन विंशतिस्थानान्यपवर्त्यते । इर्द मनसि कृत्य " बेसद
 उत्पण्णगुलकदिहिदपद्रसस इत्यायुन । एतदेव असरयातद्विषसमुद्र
 गतसर्वज्यातिविदप्रमाण स्यात् ॥ ६१ ॥

अटसीदट्टापीसा गहरिकसा तार कोटकोडीण ।

छात्रद्विसहस्माणि य णवसयपण्णत्तरिगि चदे ॥ ३६० ॥

अष्टाशीत्यष्टाविंशति ग्रहकृतयोन्मारा कोटिकोटीनाम् ।

पट्पष्टिमहत्याणि च नवशतपचसप्ततिरेकस्मिन् चदे ॥ ३६१ ॥

अट । अष्टाशीत्यष्टाविंशति ८८।२८ ग्रहनक्षत्रयो तारकाणा प्रमा

पट्पष्टिसहस्राणि नवशतपचसप्ततिकोटीकोट्य एकस्मिन् चदे परिवारा २

अथाष्टाशीतिग्रहाणा नामान्यष्टाभिर्गाथाभिर्निरूपयति;—

कालविकालो लोहितनामो कणयस्त्र कणयसठाणा ।

अतरदो तो कवयत्र दुदुभि रत्तणिहरूपणिद्विभासो ॥ ३६३ ॥

कालविकालो लोहितनामा कनकाल्य कनकमस्थान ।

अतरदस्तत कवयत्र दुदुभि रत्तनिभ रूपनिर्माण ॥ ३६३ ॥

काल । छायामात्रमेवार्थ ॥ ३६३ ॥

णीलो नीलभासो अस्सस्सहाण कोस कसादि ।

वण्णा कसो सखादिमपरिमाणो य सखवण्णोवि ॥ ३६४ ॥

नीलो नीलभासोऽश्वोद्वम्यान कोस कसादि ।

वर्ण कस शखादिपरिमाण च शखवर्णोवि ॥ ३६४ ॥

णीलो । कसादि वर्ण कसवर्ण शखादिपरिमाण शखपरिमाण

इत्यर्थ । शेष छायामात्रं ॥ ३६४ ॥

तो उदय पचवण्णा तिलो य तिलपुच्छ छाररासीओ ।

तो धूम धूमकेदिगिसठाणण्णो कलेवरो वियडो ॥ ३६५ ॥

तन उदय पचवण्णम्लिथ्य तिलपुच्छ क्षारराशि ।

तना धूमो धूमकेतु एकमस्थान अज्ञ कलेवरो विकट ॥ ३६५ ॥

ता उदय । छायामात्रमेवार्थ ॥ ३६५ ॥

इह भिण्णसधि गठी माण चयुष्पाय विञ्जुजिम्मणमा ॥
तो सरिस णिण्ण कालय कालादीकेउ जणयकरा ॥३६६॥

इराभिसमधि धंधि मानधनु पादो विण्णुत्तिहो नम ।

सत सत्तो निउय कालध कागिक्केनुनपाण्य ॥ ३६६ ॥

इह । छायाभावमेवार्थ । कालादि केतु कालकेतु ॥ ३६६ ॥

सिंहाउ पिउल काला महकालो रुद्धणाम महरहा ।

सताणसमवकरा सद्यद्वि दिसाय सति वत्थूणो ॥३६७॥

सिंहायुर्विपुल काले महाकाले रदनाया महाम्द्र ।

सतान समवाण्य सवार्थी दिसा शानिर्वम्भून ॥ ३६७ ॥

सिंहाउ । छायाभावमेवार्थ (१२) ॥ ३६७ ॥

णिञ्चलपलमणिम्मतज्जोदिमता सयंपहो होदि ।

भासुर विरजा सत्तो णिदुक्खो वीदसोगो प ॥ ३६८ ॥

निश्चल प्रलभो निर्वभो ज्येतिष्मान् मयप्रमो भवति ।

भासुरो विरजस्ततो निर्दुक्खो वीदशोकथ ॥ ३६८ ॥

णिञ्चल । छायाभावमेवार्थ (१) ॥ ३६८ ॥

सीमकर सेममयकर विजयादिचउ विमलतरथा य ।

विजयिण्हु वीयसो करिकाट्टिगिजट्टिअग्गिजालजलकेट्टु ॥

सीमकर सेममयकर विमयादिवर विमलस्यस्तथ ।

विजयिणु विजय करिकाट्ट एरजगिग्गिगाउ ज्वलकेतु ॥३६९॥

सीमकर । सीमकर सेमकर अमयंकर विजयो वैजयतो जयतो परराजित इति चत्वार । विमलस्यस्तथ विजयिणुर्विकृत करिकाट्ट

एकजगिग्गिवाला ज्वलकेतु १५ ॥ ३६९ ॥

केतुर्शीरमऽप्यग्गयणा राट् मरुगता य मायगहो ।
कुजमणि बुधसुकुगुरु गहाण णामाणि अट्मर्दि ३७३

केतु शीरम अग यणा राट् महामरुध मायगह ।

कुज मणि बुध गुरु गहाणो नामाणि अट्मर्दि ३७३

कट् । इति शिवाय । ८८ । एतावन्मन्त्रः ॥ ३७३ ॥

अथ अशुद्धिभङ्गनादिदेवतानां तारा गण्यद्वयं विमज्जति,—

णउदिमयमजिदतारा सगदुगुण दुगुणमलममया ।
मरहादि विदेहात्ति यतारा यम्मे य वस्सधरे ॥ ३७१ ॥

नानिशनमत्ततारा म्वद्विगुणद्विगुणशलासमम्यम्ता ।

मरतादिविदेहात् च तारा वों च वपधरे ॥ ३७१ ॥

णउदि । नक्त्युत्तरशनशलाकानां १९० चंद्रद्वयतागधेत १-३९५।
१५ मरतादिदेवप्रमाणरूपेकशलाकादीनां १।२।४।८।१६।३२।६४।१२८।
१६।८।४।२।१ कियत्यस्तारा स्युरिति त्रैशिकविधिनानवतिमकतारा
७०५।१४ स्वर्कियम्बर्कियाद्विगुणाद्विगुणशलाकासमम्यम्ता मरतादिविदेह-
पर्यंत वर्ष क्षेत्रे वर्षधर पवते च तारा भवति ॥ ३७१ ॥

अथ लब्धांकमुच्चारयति,—

पञ्चुत्तरसत्तसया कोडाकोडी य मरहताराओ ।
दुगुणा हु विदेहोत्ति य तेणपर दलितदलितकमा ३७२

पचरेत्तरसत्तशतकोटिकोत्थ च भरततारा ।

द्विगुणाहि विदेहात् च तेन पर दलितदलितकमा ॥ ३७२ ॥

पञ्चुत्तर । पचोनरसत्तशतकोटिकोत्थ ७०५।१४ भरततारा स्यु ।
द्विगुणाद्विगुणा खलु विदेहपर्यंत हिमवति पर्वते १४१।१५ हैमवतक्षेत्रे

२८२।१५ महादिमवति पवते ५६४।१५ हरिक्षेत्रे ११९८।१५ निषप
 पवत २२५६।१५ विदरभेदे ४५१२।१५ तत परं दहितदन्तितकमो
 नातम्य । नीटपवन २२५६।१५ रम्यकक्षत्र ११९८।१५ रुक्मिणपवते
 ५६४।१५ होण्यवतने २८२।१५ शिखरिपवते १४१।१५ पेशवतक्षेत्रे
 ७०५।१४ ॥ ७२ ॥

अथ लवणादिपुष्करार्थान्स्थिनचद्राकाणामतरमाह—

सगरविदलपिंपूणा लवणादी सगदिवापरद्धहिषा ।
 सूरतर तु जगदीआसण्णपहतर तु तस्स दल ॥ ३७३ ॥
 स्वरविदलविचोन लवणादे स्वरदिवापरार्थाधिक ।
 सूर्यातर तु जगत्यामसपघातर तु तस्य दलम् ॥ ३७४ ॥

सगदल । स्वर्दीपस्वर्दीपादि ४ प्रमाणार्थ २ गुणितरविषिव ४६
 प्रमाणेन ३६ न्यूनसमानउद्दिष्टलवणादिव्यास २ ल । ११११११
 द्योतरयो २ रेतावच्यते ११११११ एक्षस्य क्रियत्तमिति सवातेनाग-
 तस्वर्दीपदिवाकरा ४ र्थ २ इतधेर ११११११ वापे ११६ द्वाभ्यामप
 वर्तिने ३३ लवणसमुद्रगतसूर्यसूर्यातरं आगत्या आसन्नपघातरं पुनस्तस्य
 दलप्रमाण स्यात् ४१११११ विपमत्वाद्दलन कथमितिचेत्, राशावकमपनीय
 ११११८ दलित्वा ४१११११ अपनीतेक दलरूपेण संस्थाप्य ३ प्रान्तन-
 दोपमपि ३३ तद्राश्यशत्वाद्दलित्वा ३३।२ आसिन्नपनीतदलरूप समानउद्दि
 ष्टत्वा ३३ । २ मेलयित्वा ३३।२ द्वाभ्यामपवर्तिते ३३ जगत्यासन्नपघातरस्य
 शेषो भवति । एवं धातर्दीसंढकालोद्दकसमुद्रपुष्कराधिस्थिनसूर्यसूर्यातरं
 आगत्यासन्नपघातरं चानेतथ ॥ ३७३ ॥

इदानीं चारक्षेत्रमाह—

दो हो चदरविं पदि एकेक होदि चारखेत तु ।
 पचसय दससहिय रविषिषहिय च चारमही ॥ ३७

द्वौ द्वौ चद्ररवी प्रति एकैक भवति चारक्षेत्र तु ।

पञ्चशत दशमहिन रवित्रिवधिक न चारमही ॥ ३७४ ॥

दा हो । द्वौ द्वौ चद्ररवी प्रति एकैक भवति चारक्षेत्र । सममन्चारक्षेत्र
पुन क्रियदिति चेत, पञ्चशतानि दशमहितानि रवित्रिवप्रमाणेनाधिकानि
५१०।६६ चारमहीप्रमाणं स्यात् ॥ ३७४ ॥

अथ तयोश्चारक्षेत्रविभागनियममाह,—

जम्बुर्विद्व द्वीपे चरति सीदि सद च अवसेस ।

लवणे चरति सेसा सगसगखेत्ते व य चरति ॥ ३७५ ॥

जम्बुर्विद्व द्वीपे चरति अशीतिशत च अवशेषम् ।

लवणे चरति शेपा स्वम्बुक्षेत्रे एव च चरति ॥ ३७५ ॥

जम्बु । जम्बुद्वीपस्थर्विद्व अशीतिशतयोजनानि १८० द्वीपे चरति
अवशिष्ययोजनानि ३३०।६६ लवणसमुद्र चरति । शेपा पुष्कराद्यपर्यन्त-
चद्रादित्या स्वर्गीयस्वर्गीयक्षेत्रे एव चरति ॥ ३७५ ॥

अथ तत्र सूयाचद्रमसोर्वीथीप्रमाणं कथयति,—

पण्डिवसमेकवीथिं चदाइच्चा चरति हु कमेण ।

चद्रस्त य पण्णरसा इणस्त चउसीदिसय वीथी ॥३७६॥

प्रतिदिवस एकवीथिं चद्रादित्या चरति हि क्रमेण ।

चद्रस्य च पचदश इनस्य चतुरशीतिशत वीथ्य ॥ ३७६ ॥

पण्डिवस । द्वौ द्वौ मिलित्वा प्रतिदिवसमेकवीथीं चद्रादित्याश्चरति
सलु क्रमेण चद्रस्य पचदश वीथ्य इनस्य चतुरशीतिशतवीथ्य स्यु ३७६

अथ वीथीनाभतरेण दिवसगतिं कथयति,—

पथवासापिंडहीणा चारखेत्ते णिरेयपथमजिदे ।

वीथीण विञ्चाल सगधिंचजुदो हु दिवसगदी ॥ ३७७ ॥

पयःप्यासपिंडरीना चारभ्रे निरेकपयसते ।

वीथीनां विद्यां मरुद्विद्युन तु दिनमगति ॥ ३७७ ॥

पयः । पयःप्यासेन ६९ गुणिता वीथ्य १८४ पयःप्यासपिंडं ६६३
समानतेदीप्तने दशोत्तापयसते ११११ आदिस्थविदे ६९ मिळिते
सति ११११८ चारभ्रे स्थात् । अस्मिन् पयःप्यासपिंडे ६६३ अपनीते
सति एवं १११११ अन्नपभागहार ६१ निरेकपयेन १८३ गुणयित्वा
१११६३ अनेन मागणरेण अपनीतव्यासपिंडं १११११ मके सति २
वीथीनां विद्यां अत्रालं स्थात् । एतत्त्वहीयसिं ६९ युन चेत १११
प्रतिदिवस गमनभेदप्रमाणं स्थात् । एवमेव चंद्राय चारभ्रे ११११८
पयःप्यासपिंडं ६९ वीथ्यतरालं ३५ । ३३६ दिवसगति ३६ । ३३३
चानेत्य ॥ ३७७ ॥

एवमानीतदिवसगतिमाभित्यमेरोरारभ्य प्रतिपाम्मतर तत्त्परिधिं चाह,—

सुरगिरिचद्रवीणां मग्ग पदि अतर च परिहिं च ।

दिणगदितत्परिहीणं सेवादो साहए कमसो ॥ ३७८ ॥

सुरगिरिचद्रवीणां मार्गं प्रत्यतर च परिधिं च ।

दिनगतितत्परिधानां क्षेपान् माघयेन् नमशः ॥ ३७८ ॥

सुरगिरी । सुरगिरिचद्रवीणां मार्गं प्रत्यतर च परिधिघानेनभ्यो ।
इयमिति चेत, जवृद्धीपयासे एकस्मिन् तमे १ ट, तद्दीपाभ्यतरोभयपा-
र्श्वस्थचारभ्रेप्रमाणं (३६०) मपनीयते चत् अभ्यतरवीथीविष्कंभं
९९४० स्थात् । तद्व च सूर्यसूर्यांतरं स्थात् । तत्र मेरुव्यास १०००
मपनीय १९५० अर्धीकृते ४४८२० सुरगिरिभ्यतरवीथीस्यसूर्यांतरं
स्थात् । तत्र दिवस २१६ गतिक्षेप कृते सति ४४८२२६९ द्वितीयवी-
थीगणसूर्यसुरगिरिचद्रवीणं स्थात् । एव गार्चीनप्रार्चीनसुरगिरिसूर्यांतरे

दिनगतिक्षेपे कृते उत्तरोत्तरसुरगिरिसूर्यांतर स्यात् । अम्यतरवीथीविष्कमे
 ९९६४० द्विगुणदिनगतिं $\frac{३५०}{६५}$ भक्त्वा $५१\frac{५}{६५}$ क्षेपे कृते ९९६४१ $\frac{५}{६५}$
 द्वितीयवीथीगतसूर्यसूर्ययोरंतर स्यात् । एव स्वस्वाम्यतरे विष्कमे द्विगुण
 दिनगतिक्षेप $५१\frac{५}{६५}$ कृत्वा उत्तरोत्तरसूर्यसूर्ययोरंतर ज्ञातव्य । विष्कमे-
 त्यादिनाभ्यतरविष्कमस्य परिधिमानाय तस्मिन् अम्यतरवीथीपरिधौ
 ३१५०८९ द्विगुणदिनगति $\frac{३५०}{६५}$ परिधिं विस्तृतम $\frac{३५०}{६५}$ वगदहगुण
 $\frac{११५६}{६५}$ करणी $\frac{१०७५}{६५}$ त्यादिनानीय निजहारेण भक्त्वा $१७१\frac{५}{६५}$
 निक्षेपे $३१५१०६\frac{५}{६५}$ द्वितीयवीथीपरिधि स्यात् । अमुमेव द्विगुणादिन
 गतिपरिधि पूर्वपूर्वपरिधौ क्षेपे कृते उत्तरोत्तरवीथीपरिधि स्यात् । एवमुक्त
 प्रकारेण दिनगतिक्षेपात् द्विगुणदिनगतिक्षेपात् द्विगुणदिनगतिपरिधि-
 पाच्च सुरगिरिसूर्यांतर परिधिं च साधयेत्कमश ॥ ३७८ ॥

अथैवमुक्तपरिधौ पश्चिमत सूर्यस्य दिनरात्रिहेतुत्व तयो प्रमाण च
 भागाश्रयेणाह,—

सूरादो दिणरत्ती अट्टारस वारसा मुहुत्ताण ।
 अब्भतराम्हि एद विवरीय बाहिराम्हि हवे ॥ ३७९ ॥

सूर्यात् दिनरात्री अष्टादश द्वादश मुहूर्तानाम् ।
 अम्यतरे एतत् विपरीत बाह्ये भवेत् ॥ ३७९ ॥

सूरादो । सूयात् मुहूर्तानामष्टादश द्वादशसंख्ये द्वे यथास्य दिन
 रात्री स्याता । केति चेद्, अम्यतरपरिधौ एतदेव विपरीत बाह्यपरिधौ
 भवेत् ॥ ३७९ ॥

अथ सूर्यस्यावस्थितिस्वरूप दिनप-योहानिचय चाह,—

कक्कळमपरे सच्चम्भतरबाहिरपहट्टिओ होदि ।
 मुहभूमिण विसेसे धीथीणतरहिदे य चय ॥ ३८० ॥

ककटमकरे सर्वाभ्यन्तरबाह्यपथम्भितो भवति ।

मुत्रभूम्यो विरोधे षीधीनामंतराहिते च षय ॥ ३८० ॥

ककट । ककटक मकरे च यथासंख्यं सर्वाभ्यन्तरपथस्थितो बाह्य
पथस्थितश्च भवति सूर्यः । अथ तद्वाशिसमाप्तिर्यत किं तात्रत्येव १८।१२
तिष्ठतीत्याशेष्य प्रतिदिनं हानिचयोस्तीत्याह । मुत्र १२ भूम्यो १८
विशेषे ६ ध्यनीनिगत १८३ षीध्यंतराणां दिनरूपाणां षण्मुहूर्ता यदि
एक षीध्यन्तरस्य द्विषण्मुहूर्ता इति संगतेनाग्नेने षीधीनामंतरेण १८३
इत ५१- भागाभावात् विभिरपवर्तिते च ११ प्रतिदिनं हानिचयो
भवति ॥ ३८० ॥

अथैवमुक्तदिनरायोस्तापतमसो वतमानकाळत्वात् तच्चापक्षेत्रपमार्ण-
निरूपयन् श्रावणमाघमासादीनां दक्षिणोत्तरानयन निरूपयति;—

श्रावणमाघे सद्यन्मतरबाहिरपहृष्टिओ होदि ।

सुराट्टियमासम्स य तावतमा सव्वपरिहीसु ॥ ३८१ ॥

श्रावणमाघे सर्वाभ्यन्तरबाह्यपथम्भितो भवति ।

सूर्यम्भितमासम्य च तावतममी सर्वपरिधीषु ॥ ३८१ ॥

श्रावण । श्रावणमासे माघमासे यथासंख्यं सर्वाभ्यन्तरपथबाह्यपथ
स्थितो भवति सूर्यः । तस्य सूर्यस्थितमासस्य तापतमसी सर्वप-
थिध्वान्तत्ये । एण्णां मासानामेवावत्सु दिनेषु १८३ श्रावणायेकादि
मासानां किमिति सप्राप्त्यापवर्तिते तत्तमासानां दिनसख्या १५ । आ ५
भा ६१ आ १ का १-२ मा पु १८३ मा ६१ का ६१ चे २५
वे १-२ -४ आ १८३ इमायेव दक्षिणावनीनरावणदि-
नानि १५ ॥ २८१ ॥

अथ सवपरिधिषु तापतमसोरानयनप्रकारमाह,—

गिरिअन्ततरमज्झिमवाहिरजलछट्टभागपरिहिं तु ।
साट्ठिहिदे सूरट्ठियमुहुत्तगुणिदे दु तावतमा ॥ ३८२ ॥

गिर्यन्तरमध्यमबाह्यजलपष्ठभागपरिधिं तु ।

पष्ठिहिते सूर्यस्थितमुहूर्तगुणिते तु तापतमसी ॥ ३८२ ॥

गिरि । गिरिविष्कम १०० ० एतावानेव जवूर्द्धीपप्रमाणे १००००
द्वीपचारक्षेत्र १८० द्विगुणीकृत्य ३६० अपर्नति अभ्यतरवीथीविष्कम,
९९६४०, चारक्षेत्र ५१० मर्षीकृत्य २५५ अस्मिन् द्वीपचारक्षेत्र १८०
मपनीय ७५ इदमुमयपाश्चार्थ द्विगुणीकृत्य १५० जवद्वापे १ ल निक्षिते
१००१५० मध्यमवीथीविष्कम, लवणसमुद्रचारक्षेत्र ३३० मुमयपा
श्चार्थ द्विगुणीकृत्य ६६० जवूर्द्धीपे १ ल मिलिते १००६६० बाह्यवा
थीविष्कम । लवणसमुद्रप्रमाण २ ल पद्भिभवत्वेद ३३३३३ पाद्व
द्वयार्थ द्विगुणीकृत्य ६६६६६६ शेषमपवत्य ३ इद जवूर्द्धीपे निक्षिते
१६६६६६३ जलपष्ठभागविष्कम स्यात् । एतान् पचविष्कमान् भूत्वा
“ विस्समवग्ग ” इत्यादिना गिरिपरिधिं ३१६२२ अभ्यतरपरिधिं ३१-
५०८९ मध्यमपरिधि ३१६७०२ बाह्यपरिधि ३१८३१४ जलपष्ठभाग
परिधिं ५२७०४६ चानीय एतया गिरिपरिध्यादीनां मायेविक्षितपरिधि
३१६२२ मुहूर्तपष्ठ्या विमज्य ५२७३३ यस्मिन् मासे सूर्यस्तिरिति
तन्मासदिनरात्रिमुहूर्ते १८।१७।१६।१५।१४।१३।१२ गुणिते ९८८६
शेषे ३६ पचभिरपधर्तिते दे च लब्धं तस्मिन् मासे तापतमसो
र्विषयक्षेत्रमागच्छति । विवन्निपरिधिं ३१६२२ मुहूर्तपष्ठ्या ६०
विमज्य मासं प्रति मुहूर्तवृद्ध्या गुणिते ५२७३३, मासं प्रति क्षयशान्ति
चयनागच्छति । मास प्रयेकमुहूर्तवृद्धिरिति कथं ? एकास्मिन् दिने मुहूर्तप
ष्ठ्या ६० विमज्यमासं प्रति ६०, शान्तिचयपष्ठ्यादिदिनद्वयाय ३० विमज्यमासं प्रति

संघात्यापवर्तिते तन्महूर्ते एक १ । एतं यथा षष्ठिमहूर्तानामेतावति
क्षेत्रे एते ३१६९९ एक महूर्तस्य द्वियत् क्षेत्रमिति संपात्यापवर्तिते तस्य
मिदं ५२७, १ मासं प्रति क्षेत्रानिषय इत्यतः । इदं दक्षिणायने तत्तन्मासे
तापनेत्रे अपनदेत् तमः क्षत्रं युज्यात् । उत्तरायणे तत्तन्मासताप नेत्रं युज्यात्
तमः क्षेत्रं अपनदेत् । एवं कृतं विवाहिनमासे दिवक्षिणपरिधौ तापतमसे दिवस्य
क्षेत्रमापच्छति ॥ ३८२ ॥

अथेवमानीततापतमसावर्चनाभिन्नमाह,—

परिधिद्वि जह्नि चिद्वदि सूरौ तस्सेष तापमाणदल ।
विंबपुरटा पसप्पादि पच्छाभागे च सेसद्ध ॥ ३८३ ॥

परिधौ षष्मिन् निष्ठति सूर्यं तस्यैव तापमानदलम् ।

विंबपुरतः प्रभवति पश्चाद्भागे च शेषार्धम् ॥ ३८३ ॥

परिधि । दक्षिण परिधौ सूर्यस्तिष्ठति तस्यैव तापप्रमाणदलं विंबपुरतः
प्रभवति, शेषार्धं पश्चाद्भागे अपरतापति ॥ ३८३ ॥

इदानीं तापतमसे हानिवृद्धिमाह,—

पणपरिधीयो भजिदे दशगुणसूरतरेण जहद्ध ।
सा होदि हाणियद्वी दिवसे दिवसे च तापतम ॥ ३८४ ॥

पणपरिधिषु भक्तेषु दशगुणसूर्यान्तरेण यल्लब्धम् ।

सा भवति हानिवृद्धिर्दिवसे दिवसे च तापतमसो ॥ ३८४ ॥

पण । षष्ठिमहूर्तानां पचपरिधयन्वयप्रमितेषु क्षत्रेषु गतषु द्व्येकपञ्चि ह्ये
महूर्तानां द्वियत् क्षेत्रमिति संपातेन पचपरिधिषु दशगुणसूर्यान्तरेण १८३०
भक्तषु यदय १७, १ सा भवति हानिवृद्धिर्दिवसे दिवसे च ताप-
तमसा ॥ ४ ॥

इगिरीसद्युत्तमस्य साहियमागम्भ णिसहउवरिमिणो ।
दिस्सादि अउज्झमज्झे तेणूणो णिसहपासमुजो ॥३९०॥

एकविंशतिपञ्चत्वारिंशच्छत माधिक आगत्य निषधोपरि इत् ।
दृश्यते अया याम धे तेनोन निषधपार्श्वभुज ॥ ३९० ॥

इगिरीम् । एकविंशत्युत्तमपञ्चत्वारिंशच्छत साधिक १४२१ किं
तत्साधिक, अत्रचापयो शय -^२/_{११} परस्परहारेणाध उपरि जुगापित्वा
३८-१३२- शेषिन ३८- एवमनन साधिकमित्युच्यते । एतावन्निषधस्यो-
पयागत्य नो दृश्यते अयो याम धे उत्कृष्टपुम्प । निषधपार्श्वभुज २०१९-
तेनागतक्षत्रेण १४२२१ न्यून अग्रे वक्ष्यमाण भवति ॥ ३९० ॥

णिसहउवरि गतव्व पणसगण्णास पच्च देसूणा ।
तेत्तियमेत्त गत्ता णिसहे अत्थ च जादि रयी ॥ ३९१ ॥

निषधोपरि गतय पचसप्तपचाशत् पचदेशोना ।

तावमात्र गत्वा निषधे अस्त च याति रवि ॥ ३९१ ॥

णिसह । निषधोपरि गतय पच सप्त पचाशत् पच देशो ना ५५७१
एतावन्मात्रमेव निषधस्योपरि गत्वा रवि अस्त याति ॥ ३९१ ॥

इदानीं प्रश्नचापानयनार्थं तद्वाणानयनप्रकारमाह,—

जञ्चारधरूणो हरिवस्ससरो य णिसहवाणो य ।
इह बाणाउट्ट पुण अम्मतरयीहिप्पित्थारो ॥ ३९२ ॥

जञ्चारधरोन हरिवशर च निषधवाणध ।

इह बाणवृत्त पुन अम्मतरयीधीविम्भार ॥ ३९२ ॥

जञ्चार । अनरण १६ गण २ गुणिय २२ आदिविहीणं ३१ कृत्तणु
चरमजिय - इति गणकामानाय एतावच्छतकानां १९० एतावति क्षेत्रे

१००००० एतास्माद्विषयशताकांती ३१ नियमशताकांती च ६३ द्विय क्षेत्र-
 मिति तपास्य गुणित हरिविषयण $\frac{1}{11}$ नियमवाण $\frac{1}{31}$ — एतो
 हरिविषयनियमवाणो समानतेदीकृत $\frac{1}{11}$ जघुचारपरा १८० न्यूनो चेत
 ११ $\frac{1}{11}$ पानपन वाणो स्यातो $\frac{1}{11}$ $\frac{1}{11}$ — तयोवृत्तविक्रम
 पुन जघदाव १ १ ६ पचारक्षत्र १८० दिगुणीकृत्य ३६० अपनीते
 अभ्यनरवीधायिन्मार स्यात् ९९६४० अमु विक्रम समच्छेदीकृत्य
 $\frac{1}{11}$ अत्रसु $\frac{1}{11}$ हीण विक्रम $\frac{1464}{11}$ चउगुणिदिगुणा
 $\frac{1111}{11}$ १३ इ जावका $\frac{1111}{11}$ $\frac{1464}{11}$ वाणकदि
 $\frac{1111}{11}$ $\frac{1464}{11}$ छदिगुणिदे $\frac{1111}{11}$ $\frac{1464}{11}$ तय जुदे धणुकदी
 होदी २५० $\frac{1111}{11}$ — ताम् १५० $\frac{1111}{11}$ स्वहारण भक्त चेत
 ८३३७७, १ हाव हरिविषयचाप स्यात् । नियमस्य तावत् समच्छेदीकृते तस्मि
 ९९६४० अथ विक्रमे $\frac{1}{11}$ ३१ $\frac{1464}{11}$ हीण विक्रम $\frac{1464}{11}$
 चउगुणिदिगुणा $\frac{1111}{11}$ ६दे इ जीवकदी $\frac{1111}{11}$ $\frac{1464}{11}$
 वाणकदि $\frac{1111}{11}$ $\frac{1464}{11}$ छदिगुणिदे $\frac{1111}{11}$ $\frac{1464}{11}$ — तस्य
 जुदे धणुकदी होदि $\frac{1111}{11}$ $\frac{1464}{11}$ — ताम् ११११ एतस्मिन्
 स्वहारण १९ मने १२३७६८ शेव ३६ नियमगिरिचाप स्यात् ॥ ३९२ ॥

अधेवमानीतयोभापयो किं कत-यमित्यत्र,—

हरिगिरिधणुसेसद्ध पासभुचो सत्तसगतितेसीदी ।

हरिवरस गिसहधणू अटछस्सगतीसचार च ॥ ३९३ ॥

हरिगिरिधनु शेषार्ध पाश्र्वभुज सप्तसप्तत्रि-यशानि ।

हरिवर्ष नियमधनु अष्टपत्सप्तत्रिराद्वादश च ॥ ३९३ ॥

हरि । हरिक्षेत्रधनु ८२२७७, १५ नियमगिरिधनुषि १२३७६८, ३६
 शेषित ८० ९९, ११ साति तद्राशावक १ मपनापार्थीकृत्य २०१९५

मेतयेत् । मित्रिणेषु तत्र यथागम अथवागमिण्येकदशमप्रमाणं मन्त्र-
 णां भवति ६६ एव इने अभ्यन्तप्रथादागम्य चतुष्षष्टिमन्त्राणां
 दीपगते षट्त्रिंशत्या एकपष्टिमागे ३३ वदिकागतेद्वाविंशत्या षट्त्रिं-
 मागेश्च ३३ सिद्धा भवति । दीपवेदिना सप्तौ मूयम्य चतुष्षष्टिमी वीणा
 भवतीति तात्पर्यं वदितव्यम् । अतः पुरस्तात् वदिकायोजनद्वयं मानसमि-
 क्रम्य मूयस्य एकं पथा ३६ ततः पुरस्तात् द्वाववाशं कषाष्टिमागे ३३
 अगशिष्टा अन्तरं दद्यात् । एव दीपवदिकामग्निपथ्यासगतद्वाविंशत्येक
 षष्टिमागेभ्यः ३३ आगम्य चतुःशतप्रमाणं वदिकापथेन समाप्तम् । तत्र अथ
 लवणसमुद्रे एतावतिक्षेत्रे ३३ यत्रैक उदयस्तदा वायव्यवर्जितसमुद्रप्रमाणे
 ३३० एतावति कियन्त उदया इति सम्पात्यापवतित लवणोदया अष्टदशशत
 ११८ शेषोदयाणां सप्ततिशतमाणा ३३ एतंपु पूर्वक्षेत्रीकृतेषु योजनाशा-
 सप्ततिरेकषष्टिमागा ३३ एतान् वेदिकासम्प्राप्तं घृष्टान्तरगनेषु द्विपचाशदेक
 षष्टिसागरेषु ३३ प्रथेय एकपष्ट्या विभक्ते लवणं योजनद्वयं सम्पूर्णमन्तरप्रमाण
 स्यात् । अतः परं रवित्रिम्बमहितान्तरप्रमाणदिनगतिशलाका चरमान्तर
 पर्यन्ता अष्टादशोत्तरशतप्रमिता ११८ सुगमा तत्रोदयाश्च तावन्त एव
 ११८ ततः पुरस्तात् वायव्यपथ्यासे एक उदय इति सर्वं मिलित्वा लवण-
 समुद्रे एकात्रिंशत् शतमुदया ११९ एव दक्षिणायने समस्तोदया इयशीत्यु-
 त्तरशत १८३ अथोत्तरायणे लवणसमुद्रे रवित्रिम्बाधिकचारक्षेत्रमिदं
 ३३०।३६ समष्टेदीकृत्य युक्ते एव ३३० एतावत्क्षेत्रस्य ११९ यत्रैक
 १ दिनगतिशलाका तदा एतावत्क्षेत्रस्य ६६ कियन्तपो दिनगतिशलाका
 इति सम्पात्य भक्ते ११८ शेषे ३३३ अब रूपोनदिनगतिशलाकामागोदया
 ११७ कृत वायव्यपथोदयस्य दक्षिणायनसम्बन्धित्वेनाग्रहणात् । शेषेषु
 ३३६ क्षेत्राकृतेषु ३३६ अथत्वारिंशदेकषष्टिमागान् ६६ पौरस्त्यपथ्यासे
 दद्यात् । तत्र एक उदय एव समस्तलवणसमुद्रे उत्तरायण उदया अष्टाद-
 शोत्तरं शत अवशिष्टा सप्ततिषष्टिमागा ३३ पौरस्त्य अन्तरे देया इति

एकमुद्रकात्रे समाप्तम् । वदिकायां प्रागनीय एव एक उद्यम चतुस्ततिरे
 कपटिभागा ० ११ तदुभागुद्वापचागदकपटिभागा ११ मृत्ना तरेपुदा
 एवं समद्विकी योगाजनद्वय प्रमितं अतरे सम्पूर्णं भवति । अत एकस्यो
 दिनगतयेक उद्यम अथ द्विविगतिरेकपटिभागा ११ अथे तत्पय्यासोदया
 एव चतुष्पादनप्रथिते वदिकात्रे समाप्तम् । अथ वेदिकात्रिजितर्हपय्यासोदये
 १७६ अथन्तरपय्यासस ११ यने ११ एतावन्नत्राय ११ यय
 का दिनगतगटाका १ तदा एतावन्नत्राय ११ कियन्त्यो दिनगतिश
 टाका इति सम्पात्य भन ६२ योप ११ एतन्दिनगतिगटाका । शेषांशपु
 पूववापेर्मात्रपु ११ वदिकात्रिरेकपटिभागा द्वापवदिकात्रिरेकपटिभागासे
 देया, एव कृतं तत्रय यास सम्पूर्णो भवति । शेषांशपु एकपट्या भनेपु
 एते योजनद्वय पुरस्तादन्तरं भवति । तत पर द्विपटिप्रमिता दिनगति
 टाका उदयाश्च तत्रत एव । अथन्तरपय्य एक उद्यम । एव वदिकात्रिजिते
 द्विपय्यासस्युत्पेन सप्त चतुषष्टुदया । एव मित्रित्वा उत्तरायण उदया
 प्यन्तिपुनरं सत १८३ सुधस्य गत य । चन्तरपय्ययनत्रिभागममृत्वा
 सामा येन द्विपय्यासक्षेत्रे १८० पचोदया समुद्रचार । त ३३०११ दशा
 दया समस्त मित्रित्वा पचदगादया १५ अथ वदिकात्रिने पय यास
 पिषटहाण इत्यादिना आनीति एतावति चन्द्रस्य दिनगतिने १५५५
 यत्क १ उद्यमस्य द्वा एतावति द्विपय्यासक्षेत्रे १८० कियन्त उद्यम
 इति सम्पात्य भन एतन्दिनगतिधत्वार ४ शेष १५५५ एतन्दिन
 कोदयस्य एतावति क्षेत्रे सति १५५५ एतावत्तुदयापय्यासस्य ३५५५५ कियन्ते
 प्रमिति सम्पात्य नियमपय्य य १५५ अस्मिन् चन्द्रपय्यासप्रमाण
 ११ सप्तमि सप्तच्छदीकृत य गतीत्वा द्विपय्यासान्तरस्य पुस्तान्
 पधि द्य तत्रक उद्यम इति पचसुदयपु मध्य अथन्तरपय्योदयस्य उत्तरा
 यणसप्तमि यनामणान् द्विपय्यासस्य द्या शपमिद १५५५ अस्मि
 मृत्नकायण भन ० तय ५ एव इदं पय्यतादन्तरं द्य । अथ समस्त

चारक्षेत्रमिदं ३३० ॥ समच्छेदीकृत्य मिलिते एवं २०१५ एतावति क्षेत्रे १५५५ यद्येक उदयस्तदा एतावति क्षेत्रे २०१५ क्रियन्त उदया म्युरिति सम्पादय एकपद्यथापवर्त्य ते सप्तभिर्गुणयिवा १५५५ मते लभ्यते नव ९ शेषमिदं १५५५ पूर्ववत्क्षेत्रीकृत्य १५५५ अस्मात् चन्द्रविम्बप्रमाणं सप्तभिः समच्छेदीकृत्य १५५५ गृहीत्वा बाह्यपथि देय । एव सति लवणममुद्रे चन्द्रस्य दशोदया शेष १५५५ स्वहारेण मत्वा यो २ शेष १५५५ इदं प्राक्तने पचमेऽन्तरे द्वीपगताश यो ३३ शेषे १५५५ देय । एवमुभयांशमेलनात् यो ३५३३ पचममन्तर सम्पूर्णं भवति । एव चन्द्रस्य दक्षिणायने द्वीपो दक्षयोर्मिलित्वा चतुर्दशादया । अयोत्तरायणे समुद्रचारक्षेत्रे ३३० ॥ प्राक्प्रक्रियया आनाता उदया नव ९ शेषोदयांशा । १५५५ पूर्ववत्क्षेत्रीकृता १५५५ अस्माच्चन्द्रविम्बप्रमाणं सप्तभिः समच्छेदीकृत्य १५५५ गृहीत्वा बाह्यपथान्तरादारभ्य नवमान्तरस्य पौरस्त्ये पथव्यासे देय तस्मिन्नेक उदय इति समुद्रे दशसूदयेषु बाह्यपथोदयस्य दक्षिणायनसम्बन्धित्वेनाग्रहणान्तरेऽदया शेष मत्वा यो २१५ इदं दशमेऽन्तरे देय । एव कृते समुद्रचारक्षेत्र समाप्त । अथ द्वीपचारक्षेत्रे उदया ४ शेष १५५५ पूर्ववत् क्षेत्रीकृत्य १५५५ अस्मात् यो ३३ शेषे १५५५ एतत्समच्छेदीकृत्य युक्तं १५५५ गृहीत्वा दशमेऽन्तरे देय । इत्येव दशममन्तरं परिपूर्णं भवति । अवशिष्टं १५५५ उपपद्यन्त सप्तभिर्पवर्त्य १५५५ इदमभ्यन्तरपथव्यासे देय अस्मिन्नेक उदय एव द्वीपे चन्द्रस्य उत्तरायणे पचोदया । अत्र सूर्यचन्द्रम उत्तरायणे उदयविभाग सूत्रकारैरनुक्तोऽपि दक्षिणायनी दयमार्गात् भिरभ्युक्तं कथितं ॥ ३९६ ॥

इदानीं दक्षिणोत्तरोष्वाधरेषु स्यातापस्य क्षेत्रविभागमाह,—

मन्दरगिरिमज्जादो जावय लघणुवहिच्छद्भागो द्व ।
हेट्टा अट्टरससया उवरि सयजोयणा ताओ ॥ ३९७ ॥

मन्दिगिरिमध्यात् यावन् एतज्जोदधिपष्ठभागस्तु ।

अधस्तनो अष्टादशशतानि उपरि शतयोजनानि ताप ॥ ३९७ ॥

मन्दर । अभ्यन्तार्वीथी म्बितस्य सूर्यस्य जम्बूदीपार्द्धं ५०००० दीप
पारमेन १८० मयनीत वेदिर्द् ४९८२० मन्दरमध्यादाभ्यन्तार्वीथी
पर्यन्त उच्यते विदुः । एतज्जोदधिं २००००० बहभिभवत्वा ३३३३३
शो ३ अत्र दीपपारक्षेत्रे १८० मेटने ३३५१३ शो ३ अभ्यन्तार्वीथ्या
भ्यन्त एतज्जोदधिपष्ठभागपर्यन्त दक्षिणताप विदुः । सूर्यत्रिम्बार्द्धपताव
ष्टादशशतानि १८०० योजनानि अधस्ताप विदुः । तद्विम्बस्योपरि शतयो
जनानि ऊर्ध्वताप वि ॥ ३९७ ॥

अपेक्षानी च द्वात्रिंशत्सहास्री नभत्रभुक्ति प्रतिपादयितुं कामरतावदेकैकन
शत्रुसम्बन्धिमीमांसनसंढमाह,—

अभिजिस्स गगणखटा छस्सपतीस च अवरमज्झवरे ।
छप्पण्णरसे छव इगिदुत्तिगुणपण्युतसहस्सा ॥ ३९८ ॥

अभिजिन गगणखटानि पञ्चान्विंशत् च अवरमज्झवराणि ।

पञ्चषण्णे पट्टे एवद्विगुणपण्युतसहस्राणि ॥ ३९८ ॥

अभिजिस्स । अभिजित गगणखटानि पञ्चान्विंशत् ६३० जपन्व
मधमोत्तुएनभ्रत्र यथाक्रम च ६ द्र पञ्चदश १५ पट्ट ६ प्रमाणे यथासौम्ये
एवद्विगुणितपण्युतसहस्रे गगणखटानि ज १००५ म २०१० उ
३०१५ ॥ ३९८ ॥

अथ तानि जपन्वमधमोत्तुएन त्राणि माथादयेनाह;—

सद्धमिस भरणी अहा सादि असिलेस्स जेद्धमपर घरा ।
राह्णिणिसा पुण्यसु तिउत्तरा मज्झिमा सेसा ३९९

शतभिषा मरणी आद्रा म्याति आश्लेषा ज्येष्ठा अवरणि वराणि ।
रोहिणा विशाखा पुनर्वसु त्र्युत्तरा मयमा शषा ॥ ३९९ ॥

सदमिस । शतभिषङ्क शतविशामेत्यर्थं मरणी आद्रा स्वानि अश्लेषा
ज्येष्ठा इत्यवरनक्षत्राणि ६ वराणि ३ रोहिणी विशाखा पुनर्वसु त्रिन्तरा
उत्तराफाल्गुनी उत्तराषाढा उत्तरभाद्रपदेत्यथ शेषा तारा मयमा ॥ ३९९ ॥

अथ ता शेषा का वत्याह,—

अस्मिणिकित्तिमियसिर पुस्ममहाहृत्य चित्त अणुराहा
पुष्यतिय मूल सत्रणास वणिट्टा रेवती य मज्झिमया ४००

अश्विनी कृत्तिका मृगशीर्षा पुष्य मघा हस्त चित्रा अनुराधा ।
पूर्वाषाढा मूल श्रवण मघनिष्ठा रेवती च मयमा ॥ ४०० ॥

अस्मिणि । अश्विनी कृत्तिका मृगशीर्षा पुष्य मघा हस्त चित्रा
अनुराधा पूर्वत्रिका पूर्वाफाल्गुनी पूर्वाषाढा पूर्वाभाद्रपदेत्यथ । मूल श्रवण
घनिष्ठा रेवतीति म यमास्तारा ॥ ४०० ॥

अथोक्तानि गगनखण्डानि पिण्डीकृत्य चन्द्रादित्यनभ्रजाणां परिधि-
भ्रमणकालमाह,—

दोचडाण मिलिदे अट्टसय णसहस्समिगिलफस ।
सगसगमुहुत्तगदिणमसडहिदे परिधिगमुहुत्ता ॥ ४०१ ॥

द्विनद्रयो मिञ्जिने अट्टसय नवमहस एरुत्थ ।

स्वस्वस्सुहूनगनिनम स्वन्हिने परिधिमुहूर्ता ॥ ४०१ ॥

दोचडाण । जयन्धमप्यमात्तनभ्रमणकालानि ज१००५ म २००१ उ

३०१५ वनसभारणस्य ६०१५ गणस्य ६०३०३ १५०१६०१०

एतानि तन्मन्त्रानि ३ त्रिभिस्तन्मन्त्रैश्च ३० तद्विधानि तेषां मेरुदिशा ५४१००
 चन्द्रदाय द्विगुणित्वस्य भित्तिमानि समुद्रितानि अण्डात् नवसह
 द्वेकस्य १०९८०० प्रमाणानि भवन्ति । एतेषु स्वकीयमुहूर्तगतियमाण
 नभस्तन्त्रे इत्यु सप्तम् । कथं तदणमिति चेत्तुच्यते । एतावता सप्तदशानां गतो
 १७९८ एकस्मिन्मुहूर्ते इयतां सप्तदशानां गतो १०९८०० द्विपन्तो मुहूर्ता
 इति तन्मन्त्रे भवेत् च तस्य परिधिभ्रमणकालं मुहूर्तं शयं १५६८ अणभिए
 षतिते १५६८ तन्मुहूर्तादा । एवमाशियन त्रिणामानेत यं प्र १८३० फ १
 इ १०९८०० तथ मु ६० अयमद्वित्यस्य परिधिभ्रमणकाल । प्र
 १८३५ फ=मु १ इ १०९८०० तथ मु ५९ से १०९८
 एभिरेववर्तिते ३३३ मुतागा अय न तस्य परिधिभ्रमणकाल
 एवं सति परिधिगतमुहूर्ता भवन्ति ॥ ४०१ ॥

अथ ता स्वकीयस्वकीयमुहूर्तगतय का इत्यत्राह —

अट्टट्टी सप्तसप्तमिन्दू छायाद्वि पचअहियकम ।
 गच्छन्ति सूरिरिकसा णमसटाणिगिमुहूर्तण ॥४०२॥

अष्टपष्टि समदशशत इदु प्पष्टि पचाधिकरमाणि ।
 गच्छन्ति सूर्यरुभाणि नभ त्वणानि एकमुहूर्तन ॥ ४०२ ॥

अट्टट्टी । अष्टपष्टि सप्तदशशतगणनसप्तदशानि इत्तु १७९८ तान्येव
 द्विपष्टया ६२ धिकान्यादित्य १८३० तान्येव पुन पचाधिकरमाणि
 नभस्तद्विधानि नभस्तद्विधानि गच्छन्ति १८३५ एकमुहूर्तन ॥ ४०२ ॥

अथ चन्द्रादितागन्तानां समनत्रि एष्ववस्थाह,—

चदा मदा गमणे सूर्यो सिग्घो तदा गहा तत्ता ।
 ततो रिकसा मिग्घा मिग्घयरा तारया तत्ता ॥ ४०३ ॥

चन्द्रो मन्दो गमने सूर शीघ्र ततो ग्रहा तत ।

तत ऋक्षाणि शीघ्राणि शीघ्रतरा तारका तत ॥ ४०३ ॥

चन्द्रो मन्दो । चन्द्रो मन्दो गमने तत सूर्य शीघ्र ततो ग्रहा शीघ्र
ततो नक्षत्राणि शीघ्राणि तत शीघ्रतरास्तारका ॥ ४०३ ॥

अथ साम्प्रत चन्द्रादित्ययोर्नक्षत्रमुक्तिमाह,—

इदुरवीदो रिकसा सप्तष्टी पच गगणसडहिया ।

अहियहिदरिकसरसडा रिकसे इदुरविअत्थणमुहुत्ता ४०४

इदुरवित ऋक्षाणि सप्तपष्टि पच गगनसडहियाधिकानि ।

अधिकहितऋक्षसडानि ऋक्षे इदुरविअस्तमनमुहूर्ता ॥ ४०४ ॥

इदुरवीदो । इदुरविगगनसण्डेभ्य यथाक्रम १७६८ रवि १८३० ऋक्षाणि
सप्तपष्टिगगनसण्डे ६७ पचगगनसडहियाधिकानि १८३५ एकस्यां वेलायां गमनं
प्रारभ्य चन्द्रो नक्षत्राणि च एकास्मिन्मुहूर्ते स्वस्वगगनसण्डसमाप्तिकरणे चन्द्रो
नक्षत्रासप्तपष्टिसण्डानि पृथग्भागे अपसरति एतदपसरणं धृत्वा एतावद्
धिकसण्डा ६७ पसरणे यथेको मुहूर्तस्तदा एतावत् अभिजितसण्डा ६३०
पसरणं क्रियन्तो मुहूर्ता स्युगिति सपातविधिना आधिकेन ६७ अभिजित
दिनघन्यमध्यमोत्कृष्टनक्षत्रसण्डेषु अभिजित ६३० जय १००५ म २०१०
उ ३०१५ इतेषु तत्तन्मक्षत्रे इदुरवीदो आसन्नमुहूर्ता स्यु अभिजितो
मु ९ मा ३० अ १५ म ३० उ ४५ जय-वनक्षत्रे त्रिंशन्मुहूर्तानाम
कस्मिन् दिने इतना १५ मुहूर्तानां क्रिमिति संवाप पंचदशभिःपवर्तिने
एतद्यदिन ३ म दिन १ उ=न=मु=६५ एतदिने कृत्वा पंचदशभिःपवर्तिने
एव ६ पत्रमवादित्यस्य नक्षत्राणां भूति काला शातथ्य । अभिजितः दि=६।
मु ६ न-दि ६ मु=२१ म-दि १३। मु १२। उ=दि २० मु ३ ॥ ४०४ ॥

अथ राहागगनस्यदाभिधानद्वारेण ताव नभभूमिमाह,—

रविस्यदादो धारमभागूण षड्जदे जदो राहू ।

तस्या ततो रिकसा धारद्विदिगिसटिसटहिया ॥४०५॥

रविषटस द्वादशभागोन ममनि यनो राहू ।

तस्यात्तत षड्भागि द्वादशहिनक्यष्टिसंदाधिकानि ॥ ४०६ ॥

रवर्गगनस्यदेभ्य १८३० द्वादशभागो ३२ नैवावत्संज्ञानि १८२९ हो
 ३२ एकस्मिन्मुहूर्ते ममति गह्वर्यत तामात् ततो राहुगगनस्यदेभ्य १८२९
 हो ३२ क्यस्यष्टानि १८३५ द्वादशद्विदिगिसटिसंदाधिकानि ३२ । एताव
 दधिकं कथं । राहुगगनस्यष्टानि १८२९ । ३२ नशयगगनस्यदेषु १८३५
 अथनीय न्येच ६ तस्येतेषु ३२ समस्येष्टीकृत्य ३२ अत्र तस्येते ३२ अप
 मीते मति अधिकस्यष्टस्य प्रमाणं ममति । ३२ एतदधिकं भुत्वा महियाहद
 ग्विगस्यष्टति द्वायेन राहोरेतात्रतां स्यष्टानां ३२ अपसरणे एकस्मिन्मुहूर्ते १
 एनावनामसिीनस्यष्टानां ६३० किमिति सभ्यात् ३३३ रास्य हरं १२
 राहोर्गुणकारं कृत्वा ३३३ तानेव मुहूर्तान् त्रिंशत्ता भागेन दिनानि कृत्वा
 ३३३ । ३३ पश्चात् द्वादशत्रिंशत्ता सम षडभिरपवत्या ३३ । ३३ नैव पुन
 त्रिंशदुत्तरस्यष्टानि पचमि समं पंचभिरपवत्यं ३३ इदं स्वगुणकारेण
 २ गुणयित्वा ३३३ मके षड्यदिनानि ५ भागे र्हा इदं राहोर्भिजिति-
 भुक्ति । एवमेव जपन्यमध्यमात्सृष्टन त्रेषु राहोर्भुक्तिराननस्या । ज दि ६
 भागे ३३ म दि १३ भा ३३ उदि १९ । माण ३३ ॥ ४०५ ॥

अथ प्रकाशरेण राणेर्न त्रमाह —

णकसत्तमूरजागजमुहुत्तरासिं दृषेहि समुणिय ।

एकद्विदिद दिवसा हयति णकसत्तराहुजोगस्त ॥४०६॥

स्थापयेत् । एव दक्षिणायने कर्त्तव्यम् । एव राहोरभिजिदादिपुनर्वस्वन्तान्
 मुक्तिमानीय तत्र तत्र नक्षत्रे स्थापयेत् । पुष्ये तु राहुमुक्तिं आदित्यस्यैता-
 वद्भक्तौ $\frac{६३}{६३}$ राहोर्यदेतावान्ति दिनानि $\frac{६०२}{६३}$ तदा पुष्ये आदित्यस्यैतावद्भक्तौ
 $\frac{३३}{६३}$ राहो कियद्भक्तिरिति सम्पात्यापवर्त्तनीय $\frac{३७६}{६३}$ उत्तरायणसमाप्तौ पुष्ये
 स्थापयेत् । श्रावणदक्षिणायने कर्त्तव्यम् । एवमानीतेषु चन्द्रस्य नक्षत्रमुक्ति-
 दिनेषु सर्वेषु समच्छेदाकृत्य मिलितेषु अयनदिनानि १३ मा २२ भवन्ति
 उमयायनमेलने वर्षदिनानि २७ मा २१ भवन्ति । एवमादित्यस्यायन
 दिनानि १८३ वयदिनानि च ३६६ आनेतव्यानि । एव राहोऽयायन-
 दिनानि १८० वर्ष ४ दिनानि च ३६० आनेतव्यानि ॥ ४०९ ॥

अथाधिकमासप्रकारप्रतिपादनायमाह,—

इगिमासे दिणवट्टी वस्से चारह दुवस्सगे सदले ।
 अहिओ मासो पचववासप्पजुगे दुमासहिया ॥ ४१० ॥

एकस्मिन् मासे दिनवृद्धि वषे द्वादश द्विवर्षके सदले ।

अधिको मास पचवर्षात्मकयुगे द्विमासौ अधिकौ ॥ ४१० ॥

इगिमासे । एकस्मिन् मासे दिनैकवृद्धि एकस्मिन् वर्षे द्वादशदिनवृद्धि
 दलसहिते द्विवर्षे एकमासोऽधिक पचवर्षात्मके युगे द्वौ मासौ अधिकौ एक १
 वर्षस्य द्वादश १२ दिनवृद्धौ सत्यां सदलद्विवर्षस्य ५ कियन्ति दिनानि
 वद्धन्ते इति सम्पान्वापवर्त्तिते लघदिनानि ३० । एव युगेऽपि द्रष्टव्यम् ।

श्रावणगाथार्थमेव गाथाष्टकेन विवृणोति,—

आसाढपुष्णमीए जुगणिप्पत्ती दु सावणे किहे ।
 अमिजिसि चदजोगे पाढिवदिवसत्ति पारमो ॥४११॥

आषाढपूर्णिमाया युगनिप्पत्ति तु श्रावणे वृष्णे ।

अभिजिति चन्द्रयोगे प्रतिपदिसे प्रारम ॥ ४११ ॥

आगादपुष्पे । श्यादमासि पूर्णिमापराद्धे उत्तरायणसमाप्तौ पञ्चम्या
सकृत्पुनर्विधासि तु पुन श्रावणमासकृष्णपक्षे अभिजिनि चन्द्रयोगे प्रति
परिषे दशिगायनप्रारम्भ स्यात् ॥ ४११ ॥

अथ कस्यां दीपो कस्यायनस्य प्रारम्भ इति चेत्,—

षट्मन्तिमवीर्हादौ दक्षिणउत्तरदिगयणपारंभो ।

आउष्टी एगादी दुगुत्तरा दक्षिणाउष्टी ॥ ४१२ ॥

प्रथमान्तिमवीर्थात् दक्षिणोत्तरदिगयनप्रारम्भ ।

आवृत्ति एवादि द्विषोत्तरा दक्षिणावृत्ति ॥ ४१२ ॥

षट्मन्तिम । प्रथमान्तिमवीर्थातो यथासत्यं दक्षिणोत्तरा दिक् अयन
प्रारम्भ स एव दक्षिणायनस्योत्तरायनस्य च प्रथमा आवृत्ति स्यात् ।
तत्र एकापुत्तरा दक्षिणावृत्ति स्यात् ॥ ४१२ ॥

उत्तराण्णावृत्ति इत्यमिति चेत्,—

उत्तरगा य दुआदी द्विचया उभयत्र पञ्चमं गच्छे ।

विदिआउष्टी दु हवे तेरसि किह्लेसु मियसीसे ॥४१३ ॥

उत्तरगा य द्विचया उभयत्र पञ्चमं गच्छे ।

द्वितीयावृत्ति तु भवेत् त्रयोदश्या कृष्णेषु मृगशीषायास ॥४१३॥

उत्तरगा । उत्तरणावृत्ति स्यादि द्विचया स्यात् उभयत्र पञ्चमं गच्छे
द्वितीयावृत्तिस्तु भवेत् । कृष्णपक्षे त्रयोदश्या मृगशीषायास ॥ ४१३ ॥

मृतीयाणावृत्ति इत्येति चेत्,—

सुकदसमीधिसाहे तदिया सधमिगकिह्लरेयदिष् ।

मुरिया दु पञ्चमी पुण सुकचउर्थाए पुट्टकग्गुणिये ४१४

व्यथिति चेत् —

षट्पदि विहरे पुरसे चोत्थी मूले प विहृतेरसिण ।
 कितिपरिकरै शुभे दसमीण पंचमी होदि ॥ ४१७ ॥

प्रतिपदि कृष्णे पुष्ये चतुर्थी मूले च कृष्णश्रयोदश्याम् ।
 शनिशयने गुरु दशम्या पंचमी भवति ॥ ४१७ ॥

षट्पदि । कृष्णवक्षे प्रतिपदि तिथौ पुष्यनक्षत्रे स्थाने चतुष्पावृत्तिः
 कृष्णश्रयोदश्या मूलनक्षत्रे स्थाने, शुक्रवरे दशम्या शनिशयने च पंचमी
 व्यथितिर्भवति ॥ ४१७ ॥

उक्तार्थं सूचयति,—

ताओ उत्तरअयणे पचसु वासेसु माघमासेसु ।
 व्याउहीओ भणिदा सूरसिंह पुष्यसूरीहिं ॥ ४१८ ॥

ता उत्तरायणे पचसु वर्षेषु माघमासेषु ।
 आवृत्तय भणिता सूर्यस्येह पूर्वसूरिभि ॥ ४१८ ॥

ताओ उत्तर । ता एव आवृत्तय उत्तरायणे पचसु वर्षेषु माघमासेषु
 पूर्वसूरिभिर्हि सूर्यस्य भणिता । उक्तमासानो रचनोद्धारविधानमुच्यते ।
 पचवर्षात्मकयुगप्रारम्भस्य दक्षिणाधनस्य पचसु भाषणमासेषु उक्ता एकरिं
 द्वात्रिंशत्तिथौ तत्र सस्याप्य प्रथमभाषणे कृष्ण १५ शु १५ कृ १ द्वि=प्रा=कृष्ण
 =३ शु १५ कृ १३ पु=आ=शु ६ कृ १५ पु १० । प=प्रा=कृ=९ शु
 १५ कृ ७ । प=आ=शु=१२ कृ=१५ पु=४ उत्तरायणस्य पचसु माघमासेषु
 एकरिंशत्तिथौ उक्तकर्मणस्तत्र तत्र सस्याप्य प्रथमभाषणमासे कृ=९ शु १५
 कृ ७ द्वि=मा=शु=१० कृ=१५ पु=४ । त=मा=कृ १५ शु=१५ कृ १ ।
 प=मा=कृ ३ पु=१५ कृ=१ प=मा=शु १० कृ=१५ शु=४ त=मा=

कृ=१५ शु=१५ कृ १ । च=मा=कृ ३ शु=१५ कृ=१३ । प=मा=शु=६
 कृ=१५ शु=१० दक्षिणायने मध्ये माद्रपदादिमासेषु उत्तरायण मध्यम-
 फाल्गुनादिमासेषु आदावेकहीनक्रमेण १४।१३।१२ अन्ते एकोत्तरक्रमेण
 २।३।४।५ एकत्रिंशत्तियु स्यापितासु तस्मिन्मासे तत्र तत्रायने चाधिकदि-
 नान्यागच्छन्ति । एव क्रमेण पचवयात्मके युगे द्वावधिकमासौ भवत ॥४१८॥

अथ दक्षिणोत्तरायणप्रारम्भेषु नक्षत्रानयनप्रकारमाह,—

रूऊणाउट्टिगुण इगिसीदिसद् तु सहिद् इगिबीस ।
 तिघणाहिदे अवसेसा अस्तिणिपहुटीणि रिक्खाणि४१९

रूपोनावृत्तिगुण एवार्शातिशन तु सहित एकविंशत्या ।

त्रिवनहते अवशेषाणि अश्विनीप्रभृतीनि ऋक्षाणि ॥ ४१९ ॥

रूऊणा । रूप १ न्यूनावृत्त्या गुणित यत्रेकाशत्युत्तरशन १८१ एक-
 स्मिन्नेकहने शून्यमवशिष्यत इति सेन गुणित स्तमिति शून्यमेव भवति ।
 एकविंशत्या सहित २१ एतस्मिन् त्रिघनेन २७ हते सति अवशेष अश्वि-
 नीप्रभृतिगुण्यमान दक्षिणायनप्रारम्भे भावणमासे नक्षत्र भवति । एव
 दक्षिणायने इतरचतुर्षु भावणेषु उत्तरायणे पचसु मासेषु तत्र तत्र नक्षत्रायनाने
 तन्यानि ॥ ४१९ ॥

अथ दक्षिणोत्तरायणाना पचतिष्यानयनसूत्रमाह,—

वेगाउट्टिगुण तेसीदिसद् सहिद् तिगुणगुणरूवे ।
 पण्णरभजिदे पद्या सेसा तिहिमाणमयणस्स ॥ ४२० ॥

व्येकावृत्तिगुण अश्विनीतिशन सहित त्रिगुणगुणरूपेण ।

पचदशमत्ते पचाणि शेष तिधिमान अयनम्य ॥ ४२० ॥

वेगावृत्ती । विगतैकावृत्त्या गुणित अश्विनीतिशन त्रिगुणगुणकारेण प्रथमे
 शून्येन द्वितीयादौ त्रिगुणितविगतैकावृत्त्या सहितमित्यथ रूपेण च सहितं

यत्तस्मिन् पञ्चदशभिर्मन्त्रे सति लब्धं पर्वाणि । अत्र भागाभावात्पर्वाभावात्
अवशेष १=तिथिप्रमाण दक्षिणोत्तरायणस्य ॥ ४२० ॥

अथ समानदिनरात्रिरक्षणे विपुले पवतिथिनक्षत्राणि गाथापट्टेन दश-
स्वयनेष्व्याह,—

छम्मासद्भ्रगयाण जोद्दसयाण समाणदिणरत्ती ।

तं इसुप पढम छसु पव्वसु तीदेसु तदियरोहिणिण ॥

पष्मासार्धगताना ज्योतिष्काणां समानदिनरात्री ।

तन् विपुलं प्रथमं षट्सु पवसु अनातेषु तृतीयारोहिण्याम् ॥ ४२१ ॥

छम्मासद्भ्र । अथनलभणपष्मासार्द्धगतानां ज्योतिष्काणां समान
दिनरात्री भवत । तदेव विपुलमित्युच्यते । तत्र प्रथमं विपुलं षट्सु पवस्व
सतिषु तृतीयार्यां त्रियो रोहिणीनक्षत्रे भवति ॥ ४२१ ॥

त्रिगुण णव पव्वडतीदे णवमीए विदियगं धणिट्ठाए ।

इगितीसगदे तदियं सादीये पण्णरसमद्धि ॥ ४२२ ॥

द्विगुणनवपर्वातीतेषु नवम्यां द्वितीयकं धनिष्ठायाम् ।

एकत्रिंशद्भ्रते तृतीय म्वात्तो पंचदश्याम् ॥ ४२२ ॥

त्रिगुण । द्विगुणनव १८ पर्वस्वतीतेषु नवम्यां द्वितीयं विपुलं धनि
ष्ठायां स्यात्, एकत्रिंशत्पर्वस्वतीतेषु तृतीयं विपुलं स्यात्तत्र त्रये पंचदशतिथौ
स्यात् । दृष्णपक्षत्वादर्थाद्भावास्यायामेवेत्यथ ॥ ४२२ ॥

तेदालगदे तुरिय छट्ठिपुणध्वसुगयं तु पचमयं ।

पणवण्णपध्वतीदे चारसिए उत्तराभदे ॥ ४२३ ॥

त्रिचत्वारिंशद्भ्रतु तुरिय षष्ठीपुनर्वसुगर्हं तु पंचमम् ।

पंचपंचाशत्पवर्वातीतेषु द्वादश्या उत्तराभाद् ॥ ४२३ ॥

पण्यपण्यमव्य । त्रिचत्वारिंशत्पर्वस्वतीतेषु तुर्य विषुप षष्ठ्यां त्रिथौ
पुनर्वसुनक्षत्रगत स्यात् । पचम विषुप पचोत्तरपचाशत्पर्वस्वतीतेषु इन्द्रया
मुत्तराभाद्रपदे नक्षत्रे स्यात् ॥ ४२३ ॥

अट्टसट्टिगदे तदिष् मिस्ते छट्ट असीदिपञ्चगदे ।
णवमिमघाए सत्तममिह तेणउदिगदे हु अट्टमय ॥ ४२४ ॥

अष्टषष्टिगतेषु तृतीयाया मैत्रे षष्ठ अशीतिपर्वगतेषु ।

नवमीमयाया सप्तम इह त्रिनवतिगतेषु तु अष्टमम् ॥ ४२४ ॥

अट्टसट्टि । अष्टषष्टिपर्वसु गतेषु तृतीयाया त्रिथौ मैत्रे अनुराधायां षष्ठ
विषुप स्यात् । अशीतिपर्वसु गतेषु नवम्यां त्रिथौ मघानक्षत्रे सप्तमं विषुपं
स्यात् । इह त्रिनवतिपर्वसु गतेषु अष्टमं विषुपम् ॥ ४२४ ॥

अस्तिणि पुण्णे पठ्वे णवम पुण पचजुदसए पठ्वे ।
तीते छट्टितिहीए णक्खत्ते उत्तरासाढे ॥ ४२५ ॥

अश्विनी पूर्णे पर्वणि नवम पुन पचयुनशतेषु पर्वेषु ।

अनीतेषु षष्ठीतिथौ नभत्रे उत्तराषाढे ॥ ४२५ ॥

अस्तिणि । अश्विनिनक्षत्रे अमावास्यायां पर्वणि स्यात् नवमं विषुपं
पुन पचयुनशतपर्वस्वतीतेषु षष्ठ्यां त्रिथौ उत्तराषाढे नक्षत्रे स्यात् ॥ ४२५ ॥

अरिम दसमं विषुप सत्तरसुत्तरसएसु पठ्वेसु ।
तीदेसु चारसीए जाइदि उत्तरगफग्गुणिए ॥ ४२६ ॥

अरिमं दशमं विषुप सत्तरसुत्तरसतेषु पर्वेषु ।

अनीतेषु द्वादश्यां आयते उत्तराफाल्गुन्याम् ॥ ४२६ ॥

अरिमं दशमं । अरिमं दशमं विषुपं सत्तरसुत्तरसतेषु द्वादश्यां
त्रिथौ उत्तराफाल्गुन्यां नक्षत्रे आयते ॥ ४२६ ॥

अथ विपुषे पर्वतिष्वानयनसूत्रमाह,—

त्रिगुणे सगिद्धिसुषे रूऊणे छग्गुणे ह्ये पध्व ।
तत्पध्वदल तु तिथी पयदृमाणस्त इसुपस्त ॥ ४२७ ॥

द्विगुणे न्येष्टविपुषे रूपोने षड्गुणे भवेत् पर्व ।
तत्पर्वदलं तु तिथि प्रवर्तमानस्य विपुषस्य ॥ ४२७ ॥

त्रिगुणे । द्विगुण स्वकीयेष्टविपुषे रूपाने षड्भिर्गुणिते सति पर्वसंख्या भवेत् । तत्पर्वदलप्रमाणं तु प्रवर्तमानस्य विपुषस्य तिथि स्यात् । तस्मिन् पर्वदले पंचदशभ्यः अधिके सति तैर्मकृत्वा तस्य पर्वणि मेळयेत् । अथ दिष्टं तिथिप्रमाणं स्यात् ॥ ४२७ ॥

अथाशुक्तेविपुषोस्तिथिसम्बन्धमाह,—

वेगपद् छग्गुणं इगितिजुद् आडद्विदसुपतिदिसस्ता ।
विसमतिहीए किण्हो समतिधिमाणा ह्ये सुको ॥ ४२८ ॥

वेगपद् षड्गुण एकत्रियुत् आशुक्तिविपुषनिधिर्माया ।
विपमतिगी कृष्ण समतिधिमानी भवेत् शुच ॥ ४२८ ॥

वेगपद् । एकहीनामाशुक्तिपद् षड्भिर्गुणधिरा उभयत्र सस्याप्य तत्रैक मिधेकपुते सति अपरस्मिन् त्रिपुषे सति यथासंख्यमाशुक्तिविपुषधे स्तिथिर्लक्ष्या स्यात् । तयोर्बन्धे विपमतिगी साया कृष्णस्य स्यात् । समतिधिप्रमाणे शूद्रपक्षो भवति ॥ ४२८ ॥

विपुषे मक्षणा पर्वतिथीनां जानयनसूत्रमाह —

आडद्विलद्धरिक्सं ददजुद् छददसमगेगुण ।
इषुषे रिक्ता पण्णरगुणपध्वाजुदतिही दिवसा ॥ ४२९ ॥

आवृत्तिऋक्ष दशयुत पष्ठाष्टशमके एकोन ।

विषुपे ऋशाणि पचदशगुणपर्वशुततियय त्रिसानि ॥ ४२९ ॥

आउट्टि । आवृत्तो लब्धनक्षत्र दशयुत कृत्वा तत्र पष्ठाष्टमदशमावृत्तौ एकेनोन चत् विषुपे नक्षत्र स्यात् । पचदशभिर्गुणितानि आवृत्तिविषुपयो पर्वाणि तत्तत्तियुतानि चेत् यथासरपमावृत्तिविषुपयो समस्तदिनानि भवन्ति ॥ ४२९ ॥

विषुपे नक्षत्रानयन प्रकारान्तरेण गाथाद्वयेनाह,—

आउट्टिरिक्खमस्सिणिपहुदीदो गणिय तत्थ अट्टजुदे ।
इसुपेसु होंति रिक्खा इह गणणा कित्तियादीदो ॥४३०

आवृत्तिऋक्ष अश्विनीप्रभृतित गणयित्वा तत्र अष्टयुते ।

विषुपेषु भवति ऋशाणि इह गणना कृत्तिकादित ॥ ४३० ॥

आउट्टि । आवृत्तिनक्षत्रमश्विनीप्रभृतित गणयित्वा तत्र अष्टयुते सति विषुपेषु नक्षत्राणि भवन्ति । इह लब्धे गणना कृत्तिकादित कुर्यात् अष्टयुतराशिरधिकश्चेत् ॥ ४३० ॥

अहियकादडधीस छडेज्जो चिदियपचमट्टाणे ।

एक णिक्खिव छडे दसमे विय एक्कमवणिज्जो ॥४३१॥

अधिकाकाष्टविंशत्याज्या द्वितीयपचमस्थाने ।

एक निश्विप षष्ठे दशमेपि च एकमपनेयम् ॥ ४३१ ॥

अहियं । अधिकाकाष्टविंशतिस्थाज्या । द्वितीयपचमावृत्तिस्थाने एकं निश्विप षष्ठे दशमेपि चावृत्तिस्थाने एकमपनेयं ॥ ४३१ ॥

गाथाद्वयेन मन्वन्तनामाह,—

कित्तिपराह्निमियसिर अह्णुणध्वस्युसपुस्तअसिलेस्ता
मह पुध्वुत्तर हत्था चित्ता सादी विसाह अनुराहा ॥

कित्तिपरा रोहिणी मृगशीर्षा आदा पुनर्वसु सपुष्य आश्लेषा ।
मया पूर्वा उत्तरा हस्त नित्रा स्याति विशाखा अनुराधा ४३२

कित्तिपरा । कृत्तिपरा रोहिणी मृगशीर्षा आदा पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा
मया पूर्वा उत्तरा हस्त नित्रा स्याति विशाखा अनुराधा ॥ ४३२ ॥

जेठ्ठा मूल पुषुत्तर आसादा अभिजिसवणसवणिट्ठा ।
तो सदभिसपुध्वुत्तरमहपदा रेवदस्सिणी मरणी ॥४३३॥

जेठ्ठा मूल पूर्वोत्तरी आपाणी अभिजित् भ्रवण सधनिट्ठा ।
सह सतभिसा पूर्वोत्तरभाद्रपदा रेवती अभिनी मरणी ॥ ४३३ ॥

जेठ्ठा मूल । जेठ्ठा मूल पूर्वोत्तरा उत्तराभाद्रपदा अभिजित् भ्रवण धनि
ट्ठा सह सतभिसा पूर्वोत्तरभाद्रपदा उत्तराभाद्रपदा रेवती अभिनी मरणी ४३३

मन्वन्तनामाधिदेवता गाथाद्वयेनाह,—

अग्नि पयावदि सोमोरुहो दिति देवमति सप्पो य ।
पिदुमगअरिपमदिणपरतोद्वणिलिंदग्गिमित्तिंदा ॥४३४॥

अग्नि प्रजापति सोम रुद्र अदिति देवमन्त्री सर्पध ।
वितामग अयमा दिनकर त्वष्टा अनिलेद्वामिमिन्नेद्रा ॥ ४३४ ॥

अग्नि । अग्नि प्रजापति सामो रुद्रोऽदिति देवमन्त्री सर्पध विता
मग । अयमा दिनकर त्वष्टा अनिल इद्वामि मिन्नेद्रा ॥ ४३४ ॥

तो णेरिदि जल विस्सो बह्मा विण्हू वसू य वरुणअजा ।
अहिवद्धि पूसण अस्सा जमो वि अहिदेवदा कमसो ४३५

तत नैर्ऋति नल विश्व ब्रह्मा विष्णु वसुश्च वरुण अन ।
अभिवृद्धि पूषा अश्व यमोऽपि अधिदेवता क्रमश ॥ ४३५ ॥
अहिवद्धि । ततो नैर्ऋति जलो विश्वो ब्रह्मा विष्णु वसुश्च वरुण
अज अभिवृद्धि पूषा अश्व यमोऽप्येते कृतिकादीना अधिदेवता
क्रमश ॥ ४३५ ॥

नक्षत्राणा स्थितिविशेषविधानमाह,—

किञ्चित्पढतिसमये अष्टम मघारिक्खमेदि मज्झण्ह ।
अणुराहारिक्खुदओ एव सेसे वि मासेज्जो ॥ ४३६ ॥

कृत्तिकापतनसमये अष्टम मघाऋतं एति मय्याहम् ।
अनुराधाऋतोर्य एव शेषेषु अपि भावणीयम् ॥ ४३६ ॥

किञ्चित् । कृत्तिकापतनसमयेऽस्तसमये इत्यर्थ । तस्याष्टमं मघाऋतं
मय्याहमेति तस्या मघाया सकाशात् अष्टममनुराधानक्षत्रमुदयमेति । एवं
शेषेषु रोहिण्यादिषु अस्तमितनक्षत्रादष्टमनक्षत्रं मय्याहमेति । तस्मादष्टम न
क्षत्रमुदयमेतीति भावणीयम् ॥ ४३६ ॥

चन्द्रस्य पचदशमागषु अस्मिन्नस्मिन्मार्ग एतान्येतानि नक्षत्राणि तिष्ठन्ती-
ति गाथात्रयेणाह,—

अभिजिणव सादिपुव्वुत्तरो य चदस्स पढममग्गाह्मि ।
तदीए मघापुणव्वसु सत्तमिए रोहिणी चित्ता ॥ ४३७ ॥

अभिजिज्ञव स्वाति पूर्वात्तरा च चद्रस्य प्रथममार्गं ।
तृतीय मघापुनवम् मममे रोहिणा चित्रा ॥ ४३७ ॥

अभिजिण । अभिजिदादि नव स्वाति पूर्वा उत्तराष्वन्द्रस्य प्रथममार्ग-
परित स्वदेशे चरन्ति । तृतीये मार्गे मघापुनर्वसू चरत । सप्तमे मार्गे रोहिणी
वित्रा च चरत ॥ ४३७ ॥

छट्टमदशमेवारसमे कित्तिय विसाह अनुराहा
जेढा क्रमेण सेसा पण्णारसमहि अडेव ॥ ४३८ ॥

षष्ठाष्टमदशमैकादशे वृत्तिका विशाखा अनुराधा ।

ज्येष्ठा क्रमेण शेषाणि पञ्चदशे अष्टैव ॥ ४३८ ॥

छट्टमदशमे । षष्ठाष्टमदशमैकादशे मार्गे वृत्तिका विशाखा अनुराधा
ज्येष्ठा क्रमेण चरन्ति । शेषाण्यष्टैव नक्षत्राणिवचदशे मार्गे चरन्ति ॥ ४३८ ॥

शेषनक्षत्राणि कानीति चेत्,—

हृत्प मूलतिर्यं विप मियत्तिरदुगपुस्सदोणिण अडेव ।

अहृपहे णक्खत्ता तिद्धंति हु चारसादीया ॥ ४३९ ॥

हस्त मूलत्रयं अवि मृगशीषाद्विक पुष्यद्वयं अष्टैव ।

अष्टपथे नक्षत्राणि तिष्ठन्ति हि द्वादशादीनि ॥ ४३९ ॥

हृत्पे मूल । हस्त मूलत्रयं मूलपूर्वाकटोत्तराषाढमित्यर्थ । मृगशीषाद्विक
मृगशीषाद्वित्यर्थ । पुष्यद्वयं पुष्याश्लेषेत्यर्थ । इत्यष्टैव एतानि नक्षत्राणि प्रथमा-
दिपथेषु द्वादशादीनि अष्टषु पथेषु तिष्ठन्ति ॥ ४३९ ॥

नक्षत्राणां तारासंख्यां गाथाद्वयेनाह,—

कित्तिय पधुविहु तारा छप्पण तियएक उत्ति छक चऊ ।

दोहो पथेकेव चउ उत्तियणवचउक चऊ ॥ ४४० ॥

वृत्तिकाप्रभृतिषु तारा १३ पंच त्रिय एका १२ त्रिय १४षु ।

दे दे १४ एवैवा षु १३ त्रियनवषु १४ चतस ॥ ४४० ॥

किन्तिय । कृत्तिङाप्रभतिषु तारा षट् पंच निग एका षट् निग षट्
चतस्र द्वे द्वे पंच एकेका चतस्र षट् निग नत्र चतुष्पाद्याय ॥ ४४० ॥

तिय तिय पंचेकाराहियसय दो द्वो क्रमेण चतीमा ।
पंच य तिणिण य तारा अट्टावीमाण रिन्नाणं ॥ ४४१ ॥

तिय तिय पंचैकादशधिकशत द्वे द्वे क्रमेण द्वाविंशत् ।

पच ष तिय च तारा अट्टाविंशाना ऋक्षाणाम् ॥ ४४१ ॥

तिय तिय । तिघ्नस्तिघ्न पंचैकादशधिकशत द्वे द्वे द्वाविंशत् पच तिस्र
ण्येतास्तारा क्रमेणाष्टाविंशतिनक्षत्राणां भवन्ति ॥ ४४१ ॥

तामां ताराणामाकारविशेष गाथात्रयेणाह,—

वीयणसयलुट्टीण मियसिरदीये य तोरणे छत्ते ।

चहियगोमुत्ते विय सरजुगहत्थुप्पले दीये ॥ ४४२ ॥

वीजनशकटोद्धिका मृगशिरदीपे च तोरणे छत्ते ।

वल्मीकगोमूत्रे अपि शरयुगहस्तोत्पले दीये ॥ ४४२ ॥

वीयण । वीजननिमा शकटोद्धिकानिमा मृगशिरोनिमा दीपनिमा
तोरणनिमा छत्रनिमा वल्मीकनिमा गोमूत्रनिमा शरयुगनिमे हस्तनिम
उत्पलनिमा दीपनिमा ॥ ४४२ ॥

अधियरणे वरहारे वीणासिगे य विच्छिण्ण सरिसा ।

दुक्कयवावीहरिगजकुभे मुरवे पततपक्खीए ॥ ४४३ ॥

अधिकरणे वरहारे वीणाशृगे च वृश्चिकेन सदशा ।

दुष्कृतवापीहरिगजकुभेन मुरनेन पतत्पभिणा ॥ ४४३ ॥

अधियरणे । आधिकरणनिभा बरहारनिभा, वीणागृह्णनिभा बुधिसदृशा
 इवृत्तवापीनिभा हरिकृम्भनिभा गजकुम्भनिभा मुरजनिभा पतत्पाक्षिनिभा
 ॥ ४४३ ॥

सेनागजपुष्पावरगत्ते णावा ह्यस्य शिरसरिसा ।
 चुडीपाषाणनिभा कित्तियआदीणि रिक्खाणि ॥ ४४४ ॥

सेनागजपूर्ववर्गात्र नावा ह्यस्य शिरसा सदृशा ।
 चुडीपाषाणनिभा कृत्तिकादीनि ऋणाणि ॥ ४४४ ॥

सेनोगय । सेनानिभा गजपूर्वगात्रनिभा गजापरगात्रनिभा नावानिभा
 ह्यस्य शिर सदृशा चुडीपाषाणनिभास्तारा कृत्तिकादीनि नक्षत्राणि
 मन्वति ॥ ४४४ ॥

कृत्तिकादीनां परिवारतारा आह,—

एकारसयमहस्स भगसगताराप्रमाणसगुणिद ।
 परिवारतारसखा कित्तियणक्खत्तपहुदीण ॥ ४४५ ॥

एकादशशतसहस्रं स्वस्वस्ताराप्रमाणसगुणितम् ।
 परिवारतारासख्या कृत्तिकानक्षत्रप्रभृतीनाम् ॥ ४४५ ॥

एकारसय । एकादशोत्तरशताधिकसहस्रं ११११ स्वकीयस्वकीयता-
 राप्रमाणसगुणितं चेत् कृत्तिकानक्षत्रप्रभृतीनां परिवारतारासख्याप्रमाणं
 स्यात् ॥ ४४५ ॥

पंचप्रकाराणां ज्योतिष्कदेवानामायुःप्रमाणमाह,—

इदिणसुक्कगुरिदरे लक्खसहस्सा सय च सहपल्ल ।
 पल्ल दल्ल तु तारे घराधर पादपादद्ध ॥ ४४६ ॥

नवानुदिशविमानानां पचानुत्तरविमानानां च नामानि गायत्र्येनाह-
 अर्चीय अर्चिमालिणि वइरे वइरोयणा अणुदिसगा ।
 सोमो य सामरूवे अके फलिके य आइचे ॥ ४५६ ॥

अर्चि अर्चिमालिनी वैरो वैरोचनानि अनुदिशकानि ।

सोमश्च सोमरूप अफ फफटिक च आदित्य ॥ ४५६ ॥

अर्चीय । अर्चिराचिमालिनी वैरा वैरोचनास्थानि चत्वारि श्रेणीबद्धानि
 दिग्गतानि । सोमसोमम्पाकफफटिकाग्यानि चत्वारि विदिग्गतानि प्रदीप-
 कानि । आदित्य मयेंद्रक एतानि नवानुदिशारयानि ॥ ४५६ ॥

विजयो हु वैजयतो जयत अपराजितो य पुवाइ ।
 सवद्यसिद्धिनामा मज्झमि अणुत्तरा पच ॥ ४५७ ॥

विजयस्तु वैजयत जयत अपराजितश्च पूर्वान्य ।

सर्वाथसिद्धिनामा मध्ये अनुत्तरा पच ॥ ४५७ ॥

विजयो हु । विजयो वैजयतो जयत अपराजितश्च पूर्वदिदिग्गतविमाना-
 स्थाना मध्ये सर्वाथसिद्धिनामेन्द्रक । एत पच अनुत्तरविमाना ॥ ४५७ ॥

अथोक्तकल्पकल्पार्तविमानानामवस्थानमाह,—

मेरुतलाद् द्विषद् द्विषद्दुदलच्छरफैकरज्जुत्ति ।
 कप्पाणमद्दुजुगला गेवेज्जादी य हाति कमे ॥ ४५८ ॥

मेरुतलाद् द्विषद् द्विषद्दुदलच्छरफैकरज्जुत्ति ।

कप्पाणमद्दुजुगला गेवेज्जादी य हाति कमे ॥ ४५८ ॥

मेरुतला । मेरुतला द्विषद् द्विषद्दुदलच्छरफैकरज्जुत्ति ।

कल्पानामष्टयुगलानि क्रमेण भवति । एकस्यां रज्जौ नवमैवेयकादीनि
क्रमेण भवति ॥ ४५८ ॥

साम्प्रत सौधमादिषु विमानसरयां माथात्रयेण कथयति -
चत्तीसद्वावीस चारस अष्टेय ह्येति लक्षणाणि ।
सोहम्मादिचतुष्के लक्षसचतुष्क तु ब्रह्मदुगे ॥ ४५९ ॥

द्वात्रिंशदष्टाविंशति द्वात्रिंश अष्टेय भवति लक्षणाणि ।
सौधमादिचतुष्के लक्षचतुष्क तु ब्रह्मदुगे ॥ ४५९ ॥

वर्त्तासद्वा । द्वात्रिंशद्भाष्टाविंशतिश्चत्वारिंशत्सहस्राष्टलभाण्यत्र यथा-
सरयं सौधमादिचतुष्क विमानानि भवन्ति । ब्रह्मदुगेनोत्तरे विहित्वा लक्ष-
चतुष्कप्रमितानि विमानानि भवन्ति ॥ ४५९ ॥

ततो जुम्माण तिए पण्णाम ताल छस्सहस्साण ।
सत्तसयाणि य आणदकप्पचउक्केसु पिट्ठेण ॥ ४६० ॥

ततो जुम्माना त्रय पचाशन् चत्वारिंशन् पत्सहस्याणा ।
सत्तशतानि च आनतादिचतुष्केषु पिट्ठेण ॥ ४६० ॥

ततो जुम्मा । ततो द्योतकादिषुगमत्रये यथासरय पचाशत्सहस्याणि
चत्वारिंशत्सहस्याणि पत्सहस्याणि विमानानि आनतादिचतुष्केषु पिट्ठेण
सत्तशतानि भवन्ति ॥ ४६० ॥

एकवारसत्तसमहियसपमेकाणउदी णव य पचेव ।
गेयजाण तित्तिसु अणुदिम्माणुत्तरे हाति ॥ ४६१ ॥

एकादशमस्रमधिश्चान एकत्रयानि नत्र च पचत्र ।

मत्रयाणा त्रिस्त्रिय अनत्तशतान्तरे भवान् ॥ ४६१ ॥

एकारसत्त । एकादशमधिकशत सप्तसमधिकशत एकनवति नव च
पचैत्र यथासंघ अघस्तनादिमैत्रेयकाणा त्रिस्त्रिषु अनुदिशायामनुत्तरे च
विमानानि भवन्ति ॥ ४६१ ॥

इदानीं प्रथमादिस्वर्गषु प्रतरसरन्याप्रातिपादनाथमिन्द्रकाणा प्रमा
निरूपयति,—

इगितीससत्त चत्वारि दोष्णि एकेक छक चटुकल्पे ।
तित्तिय एकेकिदियणामा उडुआदितेवट्टी ॥ ४६२ ॥

एकत्रिंशन्मस चत्वारि द्वे एमकेक पट्टु चतु कल्पे ।
शीणि त्रीणि एकमेक इद्रकनामानि ऋत्वान्त्रिपाठि ॥ ४६३ ॥

इगितीस । सौधर्मयुगे एकत्रिंशदिन्द्रकाणि सनत्कुमारयुगे सत्तेन्द्रका-
णि ब्रह्मयुगे चत्वारि द्रकाणि हातवयुगे द्वीन्द्रके गुणयुगे एकमिन्द्रक शता
रयुगे एकमिन्द्रक आनतादिचतुर्षु कल्पेषु षडिन्द्रकाणि । अघस्तनादिषु मैत्रेय
केषु प्रत्येकं त्रीणि त्रीणि द्रकाणि नवानुदिशायामेकमिन्द्रक पचानुत्तरे वैकमि-
न्द्रक । एतेषां तु विमानादीन्द्रकाणा नामानि च त्रिपष्टिर्भवन्ति ॥ ४६२ ॥

एतेषामिन्द्रकाणामूद्धान्तरं तथाभावतारं चाह,—

एकेकइदयस्य य विशालमससजोयणपमाणं ।
एदाण णामाणं घोच्छामो आणुपुण्डीओ ॥ ४६३ ॥

एकमिन्द्रकस्य च त्रिषात्र अमन्यातयौतनप्रमाणं ।
एतेषां नामानि चत्वार्य आणुपुण्डीओ ॥ ४६३ ॥

एकेक । एकेकमिन्द्रकस्य तालमससजोयणपमाणं । एतेषामिन्द्र-
काणा नामानि च चत्वारि चत्वारि ॥ ४६३ ॥

उने द्रकाणा नामानि गाथापट्टेनाह,—

उडुविमलचदवग्गू धीररुण णदण च णलिणं च ।
कचण रोहिद चच मरुद रिद्धिसय बेलुरिय ॥ ४६४ ॥

ऋतुविमलचद्रवल्गुर्वीरारणनदन च नलिन च ।

काचन रोहित चचन् मरुत् ऋद्धीश वैदूर्य ॥ ४६४ ॥

उडुविमल । मरुत् विमल चद्र वल्गु धीर अरुण नदनं च नलिनं
च काचनं रोहितं चचन् मरुत् ऋद्धीश वैदूर्य ॥ ४६४ ॥

रुचग रुचिरक फलिह तषणिय मेघमञ्जु हारिद्र ।

पडम लोहिद वज्ज णदावत्त पहकरय ॥ ४६५ ॥

रुचक रुचिर अक स्फटिक तषणीय मेघ अभ्र हारिद्र ।

पद्म लोहित वज्र नदावर्त प्रभकर ॥ ४६५ ॥

रुचग । रुचक रुचिर अक स्फटिक तषणीय मेघ अभ्र हारिद्र पद्मं
लोहितं वज्रं नदावर्तं प्रभंकर ॥ ४६५ ॥

पिट्टक गजमित्तपहा अजण वणमाल णाग गरुटं च ।

लगल बलभद्र च चक्र चरिम च अटतीसो ॥ ४६६ ॥

पृष्टकं गज मित्रं प्रभं अजन वनमालं नामं गरुटं च ।

लगलं बलभद्रं च चक्रं चरिमं च अटतीसो ॥ ४६६ ॥

पिट्टक । पृष्टकं गजं मित्रं प्रभं अजन वनमालं नामं गरुटं च लङ्गुलं
बलभद्रं च चरमेन्द्रकं चक्रं इति सौधर्मादिचतुष्टये विण्ढनाणादिशदि
न्द्रकनामानि ॥ ४६६ ॥

रिद्धिसुरसमिदिबह्व बधुत्तरषट्पहिदयलांतवयं ।

सुक्क खल्ल सुक्कदुग सदरविमाण तु सदरदुगे ॥ ४६७ ॥

एकारम्भः । एकारम्भमिन्द्रकाणि मयममिन्द्रकाणि एतानि नव य
 द्यैः यथासंख्यं अयमनादिद्वेषकाणां त्रिभिः अनुदिशाः प्रवृत्ते क
 विमानानि मयन्ति ॥ ४६१ ॥

इदानीं प्रथमादिभ्रमेषु प्रारम्भस्यप्रतीक इनायमिन्द्रकाणां प्रमा
 निरूपयति,—

इगितीमसत्त चत्तारि द्योष्णि एतेह छत्र चतुःकल्प ।
 तित्तिय एतदिदियणामा उदुआदितेयट्टी ॥ ४६० ॥

एकत्रिंशत्सत्त चत्तारि द्वे एकमेव पञ्च चतु रत्ये ।

श्रीणि श्रीणि एकमेव इद्रनामानि ऋवात्त्रिपाष्टि ॥ ४६२ ॥

इगितीस । सौधर्मयुग्मे एकत्रिंशदिन्द्रकाणि सनकुमारयुग्मे सतेन्द्रका
 णि ब्रह्मयुग्मे चत्तारिन्द्रकाणि एतवयुग्मे द्वीन्द्रके शुभयुग्मे एकमिन्द्रक गता
 रयुग्मे एकमिन्द्रकं आनतादिचतुषु कल्पेषु षडिन्द्रकाणि । अधस्तनादिषु प्रेषे
 षु प्रत्येकं श्रीणि श्रीणीन्द्रकाणि नवानुदिशायामेकमिन्द्रक पचानुत्तरे वैकमि
 न्द्रक । एतेषां तु विमानादीन्द्रकाणां नामानि च त्रिपष्टिर्भवन्ति ॥ ४६२ ॥

एतेषामिन्द्रकाणामुद्धान्तर तन्नामावतार चाह,—

एकेकाइदयस्य य विञ्चालमसरजोयणप्रमाण ।

एदाण णामाण बोच्छामो आणुपुव्वीओ ॥ ४६३ ॥

एकैकमिन्द्रकस्य च विञ्चाल असरयातयोजनप्रमाण ।

एतेषा नामानि वक्ष्याम आनुपूर्या ॥ ४६३ ॥

एकेका । एकैकमिन्द्रकस्या तरालमसरयातयोजन स्यात् । एतेषामिन्द्र
 काणां नामानि चानुपूर्या वक्ष्याम ॥ ४६३ ॥

नामिगिरिचूडिभोपरि चालाम्पारे स्थित हि प्रस्तिवद्रु ।
सिद्धित अथ द्वादशायोजनमाने सर्वार्थे ॥ ४७० ॥

नामिगिरि । नामिगिरिचूडिभोपरि चालाम्पान्तरे स्थित सलु कालि
न्द्रक सिद्धभेद्रादधो द्वादशयोजनप्रमाणेन सर्वार्थसिद्धिस्तिष्ठति ॥ ४७० ॥

कल्पानामितरंषां च विख्यातीनां सीमानमाह,—

सगसगचरिमिदयधयदृष्ट कप्पावणीणमत रु ।
कप्पादीद्वणिस्त य अत लोपतय होदि ॥ ४७१ ॥

स्वकम्बचरमेन्द्रकध्वजदृष्ट कल्पावनीना अत सटु ।
कल्पातीनावनेश्च अत लोवानक भवति ॥ ४७१ ॥

सगसग । स्वकीयस्वकीयचमेन्द्रकध्वजदृष्ट कल्पावनीनामन्त
सलु स्यात् । कल्पातीतावनेन्तो लोकस्यातो भवति ॥ ४७१ ॥

अथेन्द्रकानां विस्तारमाह,—

माणुसखितपमाण उट्टु सट्टवट्टं तु जषुदीपसम ।
उभयविसेसे रूऊणिदयभजिदे हु हाणिचय ॥४७२॥

मानुषभेदप्रमाणं फलु सर्वार्थे तु जषुदीपसम ।
उभयविशये रूयानेन्द्रकभक्ते तु हाणिचय ॥ ४७२ ॥

माणुसखित । मानुषभेदप्रमाणं ४५००००० कालिन्द्रकं सर्वार्थसिद्धी-
न्द्रकं तु जषुदीपसमं १ एव उभयोर्विशये शोधिने ४४ एवरूपयुनेन्द्रके-
६२ भक्ते ७०९६७ हो ३ । इन्द्रमिन्द्रकं प्रतिहाणित्वयस्यात् अस्य विवरणा
पंचाक्षरस्यारिण्डभेद्य अस्मिन् ७०९६७ हो ३ । अपनीते
४४२९०३२ । १ । द्वितीयद्रकप्रमाणं स्यात् । एव पावदेक-
सुभमवतिष्ठत नावदपनान तत्तदन्तरं त्रेन्द्रकप्रमाणं स्यात् ॥ ४७२ ॥

अरिष्टमुरसमिति ब्रह्म त्रयोत्तरत्रयमह्ययत्नवक ।

शुक खलु शुकद्विके शतारविमान तु शतारयुगे ॥ ४६७ ॥

रिद्धमुरस । अरिष्टमुरसमिति ब्रह्मब्रह्मोत्तनामानीन्द्रकाणि ब्रह्मयुगे
ब्रह्महृदय लान्तवकमिति द्वय लान्तवयुगे शुकयुगे खलु शुकैन्द्रक शतार-
द्विके शतारविमानेन्द्रकम् ॥ ४६७ ॥

आणद पाणदपुष्पक सातक तह आरण्युदवसाणे ।
तो गेवेज्ज सुदरिसण अमोह तह सुप्पबुद्ध च ॥ ४६८ ॥

आनतप्राणतपुष्पक शातक तथा आरणाच्युतावसाने ।

तत गेवेयके सुदशन अमोष तथा सुप्रबुद्ध च ॥ ४६८ ॥

आणद । आनत प्राणतपुष्पक शातक तथा आरणाच्युतमितीन्द्रक-
नामानि आनताच्युतावसाने स्युः । ततो गेवेयकेषु सुदशन अमोष तथा
सुप्रबुद्ध च ॥ ४६८ ॥

जसहर सुभद्रनामा सुविशाल सुमणस च सोमणस ।
पीढिकरमाइच्च चरिमे सन्नदसिद्धी दु ॥ ४६९ ॥

यशोधर सुभद्रनाम सुविशाल सुमनस च सोमनस ।

प्रीतिकर आदित्य चरमे सर्वार्थसिद्धिस्तु ॥ ४६९ ॥

जसहर । यशोधर सुभद्रनाम सुविशाल सुमनस च सोमनस प्रीतिकर
नवानुदिशायामादित्यद्रक चरमे सर्वार्थसिद्धीद्रकं ॥ ४६९ ॥

मेरुतलाद्दु दिवद्भूमित्यादिगाथोक्तार्थ सर्वत्र विमानानि तिष्ठन्ति किमिति
प्रश्न परिहारमाह,—

णामिगिरिचूलिगुवरिं बालगतर द्विपो हु उड्ड इदो ।
सिद्धीदो धो धारह जोयणमाणास्ति सन्धुं ॥ ४७० ॥

श मा १ । उपरि सर्वत्र चतस्र ४ उत्तरा । गच्छस्तु स्वस्वपटलप्रमाण स्यात्
सनत्कृमारादौ ७।४।२।१।१।६।३।३।३।३।३ इत्यमायुत्तरमच्छं ज्ञात्वा तत्तद्धर्म
उपर्युपरि दक्षिणोत्तरे द्राणाभेवमानेत-य ॥ ४७३ ॥

अथ तत्र प्रथमे द्रवस्य भेणावद्धानामवस्थितादेशकमुपदिशति,—

उद्दुसेद्वीचद्ददल स्वभुरमणुदाहिषाणिधिभागति ।
आह्लतिणिण दीवे तिणिण समुद्दे य ससा ह ॥ ४७४ ॥
प्रतुश्रेणीवद्दल स्वभुरमणोधिषाणिधिमगे ।

आदिमत्रिषु द्वापेषु त्रिषु समुद्रेषु च शप हि ॥ ४७४ ॥

- उद्दुसेद्वी । ऋत्विद्रवश्रेणीवद्दार्द्ध ३१ स्वभुरमणोधिषाणिधिमगे
तिष्ठति । शेपार्द्धं तु ३१ स्वभुरमणसमुद्राद्वाचीनषु स्वभुरमणादिषु
त्रिषु द्वापेषु त्रिषु समुद्रेषु च १५।८।४।२।१।१ तिष्ठति ॥ ४७४ ॥

अथ प्रकीर्णकानां स्वरूपं प्रमाणं चाह,—

सेद्वीण विद्याले पुष्कपद्दणम इय द्वियविमाणा ।
ज्ञाति पद्दणद्वणामा सदीदयहीणरासिममा ॥४७५॥
श्रेणाना विद्याले पुष्पप्ररीणकानि इव म्पिनविमानानि ।
भवति प्ररीणरनामानि श्रेणीद्रवहीनरासिमामानि ॥ ४७५ ॥

सेद्वीणं । श्रेणीवद्धानां विद्याले अन्तराले पुष्पाणि प्रकीर्णकानि इव
स्थितानि विमानानि प्रकाणकनामानि भवन्ति । तानि भ्रणा-द्रवहीनरा
क्षिणामानानि । तत्कथं ? बत्तीसहाबीसमित्यायुतसौभमादिरासिभ्य
श्रेणी-द्रवेष्वपनातषु यो राशिरवाप्यते तत्प्रमाणानि ॥ ४७५ ॥

अथ दक्षिणतरद्रव्यारि द्रवश्रेणीवद्दप्रकीर्णकविभागं प्रदर्शयति,—

उत्तरसेद्वीचद्दा वायुध्वीसाणकोणमपद्दण्णा ।
उत्तरद्वदणिवद्दा सेसा दक्षिणदिसिंदपटिषद्दा ४७६

इत श्रेणीचद्धानामवास्थितस्वरूप निरूपयति;—

वासुदेवा सेढिगया पढमिदि चउदिसामु पत्तेय ।

पढिदिसमेकेकोण अणुदिसाणुत्तरेकोत्ति ॥ ४७३ ॥

द्वापष्टि श्रेणिगतानि प्रथमेद्रे चतुर्दिशामु प्रत्येक ।

प्रतिदिशामेरेकोण अनुदिशानुत्तरे एकमिति ॥ ४७३ ॥

नामद्वी । प्रथमेद्रं चतुर्दिक्षु प्रत्येक श्रेणीचद्धानामानि द्वापष्टिभिर्
 न्ति । इत उपरि द्वितीयपत्रलादौ प्रतिदिशमेकेकोणं चतुर्दिशामु श्रेणीचद्धानां
 प्रमाणानि । यावद्नुदिशायामनुत्तरे चतुर्दिशामु श्रेणीचद्धानां
 विभागेन साङ्कलितधनानयनविधानमुच्यते । सौधर्मस्यैकदिक्श्रेणीचद्धानि
 ६२ दिक्प्रथम त्रिभिर्गुणितानि १८६ अयमादि उत्तर ३ गच्छ ३१ अत्र
 शानमङ्कलितमात्रि य धनमानावते । पत्र ३१ माण विर्हाण । ३० कृपा
 निई १५ उत्तम २ तामुणिद ४५ इदं कृण वभवजुई १८६ अमित
 प्रथम कृण ४५ अयनयत् १४१ पत्र ३१ गुणिद ४३७१ इदं सौधर्मश्रेणी
 चद्धानामानि स्यात् । अत्र द्रव ३१ प्रतिकृत एवं ४४०९ । एतमीशने मादि
 ६२ उत्तर १ गच्छ ३१ मात्वा साङ्कलितधनमानेनश्यत् १४५७ ईशाने द्वि-
 त्दकश्रेणी न कतय उत्तर द्वाणामिन्द्रकाभावात् । सौधर्मस्यैकदिक्श्रे-
 णीचद्धानां ६२ मा ३३ ३१ अयनीत कण ३१ एत कुमासमाह द्वापष्टिदि
 कुमश्रेणीचद्धानामानि स्यात् । अत्र ३१ सावगच्छ ७ अयनात् साणमुपितनेक
 दिक्श्रेणीचद्धानां स्यात् सौ ई ६२ ममा ३१ । म-म । २४ ६-६
 २० कृकामता । १८ मा । म १७ । मा ४ । १० अथशेषक १० ।
 म-म ७ । उपरि ४ । नव १ । एतदिशामु श्रेणीचद्धानां द्वितीय
 दिक्श्रेणीचद्धानां मदि ११ २५ १५ एतनुत्तरे मादि । म मादि १३
 मा ३१ । म-म ७ । मा ४ । १० अथशेषक १० ।
 ४ । म-म ७ । मा ४ । १० अथशेषक १० ।

एकस्वयमरययोना स्वस्वयराशय अस्य यासगता ।
अथवा पचमभाग चतुर्गुणिते भवति कल्पेषु ॥ ४७९ ॥

सगसग । स्वकीयस्वकीयसरयातयाजनविमानसख्यो ६४०००० ना-
स्वकीयस्वकीयवर्तीसादिशाशय २५६०००० । असरयातयोजनयास-
विमानानि । अथवा राशे ३२ लक्षपचमभागसख्या ६४००००
चतुर्भिर्गुणिना २५६०००० कल्पेष्वसरयातयोजनयासविमानसरया-
भवन्ति ॥ ४७९ ॥

अथ तेषां विमानानां बाहुयमाह,—

छज्जुगल सेसकल्पे तित्तिष्ठु सेसे विमाणतलबहल ।
इगिरीसेयारसय णवणउदिरिणकमा हाति ॥ ४८० ॥

षड्युगलेषु शेषकल्पेषु त्रिभिषु शेषे विमानतलबहल ।
एकविंशत्येकादशशत नवनवतिऋणकमा भवति ॥ ४८० ॥

छज्जुगल । सौधमादिषु षट्सु युगलेषु आनतादिषु कल्पेषु अधोर्भेद-
कादिषु त्रिभिष्वनुत्तरयाश्च मिलित्वैकादशशत स्थानेषु विमानतलबाहुल्य-
यथासंख्ये आदावेकविंशत्याधिकैकादशशत ११२१ उपरि सर्वत्र नवन-
वतिऋणकमा भवन्ति ॥ ४८० ॥

अथ तेषां विमानानां षणकम पावणयति,—

दोहो चउचउकल्पे पचयषण्णा हु किण्णवज्जा हु ।
णीलूणा रत्तूणा विमाणयण्णा तदो सुक्ता ॥ ४८१ ॥

द्वयो द्वयो चतुश्चतुश्चतुषु पचयषण्णा हि कृष्णकमा हि ।
नीलेना रत्तूना विमानवर्णा तत्र गुण ॥ ४८१ ॥

उत्तरश्रेणीबद्धा वायव्येशानकोणमप्रकीर्णानि ।

उत्तरेन्द्रनिबद्धानि शेषाणि दक्षिणदिगीन्द्रप्रतिबद्धानि ॥ ४७१ ॥

उत्तरसेढी । उत्तरश्रेणीबद्धा वायव्येशानकोणमतप्रकीर्णानि च उत्तरेन्द्रनिबद्धानि । शेषाणि सर्वविमानानि दक्षिणदिगीन्द्रप्रतिबद्धानि ४७१

इदानीमिन्द्रकादीनां व्यास निरूपयति,—

इंद्रयसेढीबद्धप्पइण्णयाण कमेण वित्थारा ।

सरयेज्जमसरयेज्ज उभय च योयणाण तु ॥ ४७७ ॥

इंद्रश्रेणीबद्धप्रकीर्णानां क्रमेण विस्तारा ।

सरयेय अमरयेय उभय च योजनाना तु ॥ ४७७ ॥

इंद्रयसे । इंद्रश्रेणीबद्धप्रकीर्णानां क्रमेण विस्तारा संश्लेषयानानि असंश्लेषयोजनानि सरयेयासंश्लेषयोजनानि भवेयु ॥ ४७७ ॥

अथ शौचमादिषु सङ्घातासंघातविस्तारविमानसरयो गद्यादयेनाह,—
कप्पेसु राशिपचमभागं सरयेज्जवित्थडा हांति ।

ततो तिण्णद्वारस सत्तरसेक्रेकय कमसो ॥ ४७८ ॥

कक्षेपु राशिपचमभाग संश्लेषविस्तारा भवन्ति ।

तत्र त्रीण्यष्टादश समदशैकमेकं क्रमश ॥ ४७८ ॥

कप्पेसु । कक्षेपु बर्तीसप्तार्धासमित्यादि उत्तराशीनां ३२ छ पंचम भागसमं ६६०००० संख्यातया जनविस्तारविमानादि भवन्ति । तत्र कक्षेपु पक्का नवमेरुकादिषु ऋषिणि अष्टादश समदशैकमेकं च क्रमश संख्यातया जनविस्तारानि भवन्ति ॥ ४७८ ॥

सगमगसंश्लेषेण सगमगरासी अगमयातगया ।

अहवा पचमभाग चउगुणिइ हांति कप्पेसु ॥ ४७९ ॥

अथ तेषां विमाननामानि गाथाद्वये कथयति,—

इदृष्टिय विमाण सगसगकम्प तु तस्स चउपासे ।
वेदुरियरजतसोक मिसक्कसार तु पुब्वादी ॥ ४८४ ॥

इद्रम्भित विमान स्वक्खम्भक्कल्पं तु तस्य चतु पार्श्वे ।

वेदूर्यरजताशोक मृषत्कमार तु पूर्वादिषु ॥ ४८४ ॥

इदृष्टियं । इद्रम्भित विमान स्वकीयस्वकीयकल्पान्वयक तु पुन तस्य
चतुःपार्श्वे वेदूर्यरजताशोकमृषत्कसारारयविमानानि पूवादिदिक्षु तिष्ठन्ति ।
अथ विधि सर्वेषां दक्षिणेन्द्राणां ॥ ४८४ ॥

रुचकं मदराशोक सत्तच्छदणामय विमाण तु ।
सम्बुत्तरइदाण विमाणपासेसु होंति क्रमे ॥ ४८५ ॥

रुचक मदराशोक सत्तच्छदनामक विमान तु ।

सर्वोत्तरेन्द्राणा विमानपादेषु भवन्ति क्रमेण ॥ ४८५ ॥

रुचक । रुचकमदराशोकसत्तच्छदनामानि विमानानि सर्वोत्तरेन्द्राणां
स्वस्वविमानचतुःपार्श्वे क्रमेण भवन्ति ॥ ४८५ ॥

अथ सौधर्मादिदेवानां मुकुटचिदानि गाथाद्वयनाह,—

सोहम्मार्दाचारस साणदआरणगजुगवि कमा ।
देवाण मउलचिह्न वराहमयमहिसमच्छावि ॥ ४८६ ॥

सौधर्मादिद्वादशमु आनतारणयुगेपि क्रमात् ।

देवाना मौलिकि ह वराहमगमहिषमत्स्या अवि ॥

सौधर्मादी । सौधर्मादिषु द्वादशकल्पे ।

क्रमात् देवानां मौलिकिचिदानि वराहमगमहिषमत्स्या ।

दोहो । सौषमादिषु द्वयोर्द्वयो कल्पयो ब्रह्मादिषु चतुर्षु चतुषु कल्पेषु
मिलिता चतुषु स्थानेषु यथासस्य पञ्चत्वा सत्त्वं कृष्णवर्जन्तुवर्ज-
नीन्नेनत्रिवर्णा रत्नोद्विवर्णा तत्र आनतादिषु सर्वेषु शुद्धैकवाविनातानि
स्यु ॥ ४८१ ॥

इदानीं विमानाधारस्थान निरूपयति,—

दुसु दुसु अद्वसु कल्पे जलवातुमये पद्मद्वियविमाणा ।
सेसविमाणा सत्त्वे आगासपद्मया ह्यति ॥ ४८२ ॥

द्वयो द्वयो अद्वसु कल्पेषु जलवातोमये प्रतिष्ठितविमाना ।
शेषविमाना सत्त्वे आकाशप्रतिष्ठिता भवति ॥ ४८२ ॥

दुसु दुसु । द्वयोर्द्वयो कल्पयो ब्रह्मादिष्वद्वसु कल्पेषु मिलिता त्रिस्थानेषु
यथासस्य जलप्रतिष्ठितविमाना वातप्रतिष्ठितविमाना उमयप्रतिष्ठितविमा-
ना शेषविमाना सर्वे आकाशप्रतिष्ठिता भवति ॥ ४८२ ॥

अधुनेन्द्रास्थित विमान कथयति,—

दृग्जुगलसेसकल्पे अहारसमह्नि सेदिरद्वह्नि ।
दोहीणकम दक्षिणउत्तरभागह्नि देविदा ॥ ४८३ ॥

पद्मयुगलशेषकल्पेषु अष्टादशमे श्रेणीवद्धे ।

द्विहीनकम दक्षिणोत्तरभागो देवेद्रा ॥ ४८३ ॥

दृग्जुगल । पद्मसु युगलसु शेषकल्पे च यथासस्य प्रथमयुगले स्वदादे
न्द्रकसम्बन्धे अष्टादशमे श्रेणीवद्धे द्विहीनकमेण द्विहीनकमेण
१८।१६।१८।१८।१८ । ८। दक्षिणभागे दक्षिणेन्द्रा उत्तरभागे उत्तरेन्द्रा

अथ तेषां विमाननामानि गायद्द्वये कथयति,—

इन्द्रिय विमाणं सगसगकम्प तु तस्स चउपासे ।
बेलुरियरजतसोक मिसक्कसार तु पुब्वादी ॥ ४८४ ॥

इन्द्रियत विमान स्वकम्बककल्प तु तस्य चतु पार्श्वे ।
वैदूर्यरजताशोक मृषत्कमार तु पूर्वादिषु ॥ ४८४ ॥

इन्द्रियं । इन्द्रियत विमान स्वकीयस्वकीयकल्याण्यक तु पुन तस्य
चतु पार्श्वे वैदूर्यरजताशोकमृषत्कसारारयविमानानि पूजादिदिशु तिष्ठति ।
अथ विधि सर्वेषां दक्षिणेन्द्राणां ॥ ४८४ ॥

रुचक मदरसोक सत्तच्छदणामय विमाण तु ।
सध्वुत्तरइद्राण विमाणपासेसु होंति क्रमे ॥ ४८५ ॥

रुचक मद्राशोक सत्तच्छदनामक विमान तु ।
सर्वात्तरेन्द्राणा विमानपार्श्वेषु भवति क्रमेण ॥ ४८५ ॥

रुचक । रुचकमद्राशोकसत्तच्छदनामानि विमानानि सर्वात्तरेन्द्राणां
स्वस्वविमानचतु पार्श्वे क्रमेण भवति ॥ ४८५ ॥

अथ सौधर्मादिदेवानां मुकुटचिद्धानि गायद्द्वयेनाह,—

सोहम्मार्दावारस साणदुआरणगजुगवि क्रमा ।
देवाण मडलचिह्न वराहमयमहिसमच्छावि ॥ ४८६ ॥

सौधर्मान्द्वादशसु आनवारणयुगेवि क्रमान् ।
देवाना मौलिनि ह वराहमयमहिसमत्स्या अपि ॥ ४८६ ॥

सौधर्मादी । सौधर्मादिषु द्वादशकल्पे आनवारणयुगे आरणयुगे च
क्रमान् देवानां मौलिचिद्धानि वराहमयमहिसमत्स्या अपि ॥ ४८६ ॥

कुम्भो ददुरतुरया तो कुजर चद्र सप्प रग्गी य ।
छगला बसहोततो चोद्दसमो होदि कप्पतरु ॥ ४८७ ॥

कुम्भो त्दुरस्तुरगस्तन कुजर चद्र सर्प सङ्गी च ।
छगलो वृषम तत चतुर्दशमो भवति कल्पतरु ॥ ४८७ ॥

कुम्भो । ज्ञायामात्रमेवार्थ ॥ ४८७ ॥

साम्प्रतमिन्द्राणा नगरस्थान विस्तार च गाथाद्वयेनाह,—
सोहम्मादिचउक्के जुम्मचउक्के य सेसकप्पे य ।
सगदेयिजुदिदाण णयरणि हवति णवयपदे ॥ ४८८ ॥
सोधर्मादिचतुक्के युम्मचतुक्के च शेपरत्ते च ।

स्वस्वदेवीयुतेद्राणा नगराणि भवति नवरूपदे ॥ ४८८ ॥

सोहम्मादि । सोधर्मादिचतुक्के ब्रह्मादियुगमचतुक्के आनतादीनां
नगरेषु प्रत्येकं विशतिसहस्रयोजनयाससाधारणात्कल्पचतुष्टयमेकं स्थलं कृतं
इति नवसु स्थानेषु स्वस्वदेवीयुतेद्राणा नगराणि भवन्ति ॥ ४८८ ॥

शुलसीदीय असीदी चिहत्तरी सत्तरीय जोयणगा ।
जावय यीससहसस समचउरम्माणि रम्माणि ॥ ४८९ ॥

चतुरशीति अशीति द्वासप्तति सप्ततिश्च योजनानि ।

यावद्विंशसहस्र समचतुरम्याणि रम्याणि ॥ ४८९ ॥

शुल्की । चतुरशीतिसहस्राणि अशीतिसहस्राणि द्वासप्ततिसहस्राणि
सप्ततिसहस्राणि योजनानि यावद्विंशतिसहस्रं तावद्दशसहस्रं कचर्षं
एतद्द्वयासयुक्तानि नगराणि समचतुरम्याणि रम्याणि ॥ ४८९ ॥

अथ उत्तमनगराणां साम्प्रतम्याह —

छज्जुगलमगरुप्पे तप्पायान्दय जोयण तिसद्द ।
पणामण परम नीमण उयरि धीमण ॥ ४९० ॥

षट्पुगलशेषकल्पे सत्प्राकारोऽयं योजन त्रिशत ।

पचाशद्दून पञ्चमे त्रिंशद्दून उपरि विशोनम् ॥ ४९० ॥

छज्जुगल । षट्पुगले शेषकल्पे चेति सप्तस्थाने तत्रगणप्राकारोदय आदौ योजनानां त्रिशत उपरि पचाशद्दून पञ्चमस्थाने त्रिंशद्दून तत उपरि विशस्यूर्णं शातय ॥ ४९० ॥

अथ सत्प्राकारगाधविस्ताराणां,—

गाढो त्रिधारा विय पण्णास दलकम तु पचमगे ।

चत्वारि तिय छट्टे चरिमे दुगमद्भसजुत्त ॥ ४९१ ॥

गाधो विस्तर अपि पचाशत् लक्षमस्तु पचमके ।

चत्वारि धीणि षष्टे चरम द्विकपर्धसयुत्तम् ॥ ४९१ ॥

गाढादि । सत्प्राकारगाधो भूगतेदय इत्यर्थः । तद्विस्तारोऽपि चादौ पचाशद्योजनानि उपर्युपरि अर्द्धद्विक्रमः । तु पुनः पचमस्थान चत्वारि योजनानि षष्ठस्थाने त्रिंशद्योजनानि चरमस्थाने अर्द्धयोजनसयुतं योजनद्वयं शातय ॥ ४९१ ॥

अथ सत्प्राकाराणां गोपुरस्वरूपं गाथाद्वयेनाह,—

पट्टिद्विस गोपुरसत्या तेषां उदयोऽपि चतुर्गिद्विशतानि ।

ततो दुगुणामीदी धीसिधिहीण तदो होदि ॥ ४९२ ॥

मनिन्दिश गोपुरसत्या तेषां उदयोऽपि चतुर्गिद्विशतानि ।

तत्र द्विगुणादा नि त्रिशतिविहान तत्र भवति ॥ ४९२ ॥

पट्टिद्विस गो । पट्टिदि । सत्प्राकाराणां गोपुरसत्या तेषामुदया वि पूर्व-
व सप्तसु स्थानेषु पचमस्तु चतुर्गणयोजनानि त्रिंशद्योजनानि तत पर-
ि गगा विद्विषा यनानि तत्र रर वि तस्या हानकमा भवति ॥ ४९२ ॥

गोडरवासो कमसो सयजोयणगाणि तिमु य दसहीण
बीसूण पचमगे ततो सब्बत्थ दसहीण ॥ ४९३ ॥

गोपुरव्यासः क्रमशः शतयोजनानि त्रिषु च दशहीन ।
विंशोन पचमके तत सर्वत्र दशहीनम् ॥ ४९३ ॥

गोडर । गोपुरव्यासः क्रमशः शतयोजनानि तत उपरि त्रिषु स्थानेषु
दशहीन योजनानि पचमस्थाने विंशत्यूनयोजनानि । तत पर सर्वत्र दश
नयोजनानि ॥ ४९३ ॥

अथ प्रागुक्तनवस्थानाश्रयेण सामानिकृतनुरक्षणीकदेवानां प्र
गाथाद्वयेनाह,—

णयरपदे तत्सखा समाणिया चउगुणा य तणुरकरा
बसहतुरगरथेभपदातीगधन्नणच्चणी चेदि ॥ ४९४ ॥

नगरपदे तत्सखा सामानिका चतुर्गुणाश्च तनुरक्षा ।
वृषभतुरगरथेभपदातिगधन्नर्चकी चेति ॥ ४९४ ॥

णयरपदे । सोहम्मादिचउके इति गाथोक्तेषु नगराणां नवसु स्थानेषु
खुलसीद्वियेति गाथोक्ततत्तन्नगरविस्तारसरयेव सामानिकसरयेति ज्ञातव्यं
चतुर्गुणिता तनुरक्षकसरया वृषभतुरगरथेभपदातिगधन्नर्चकी चेति ॥ ४९४ ॥

सत्तेय य आणीया पत्तेय सत्तसत्तरुकरजुदा ।
पट्टम ससमाणसम तद्गुण चरिमककरोत्ति ॥ ४९५ ॥

सप्तैव च आनीयानि प्रत्येक सप्तसप्तक्षयुतानि ।

प्रथम स्वममानमम तद्द्विगुण चरमश्चातम् ॥ ४९५ ॥

सप्तय य । सप्तैव न कानि तानि प्रत्येक सप्तसप्तक्षयुतानि ।

प्रथमकथं स्वस्य स्वस्य सामानिकसम तत उपरि तस्माद् दिगुण चरमक-
क्षपर्यन्तम् ॥ ४९५ ॥

अथ दक्षिणोत्तरेन्द्राणामानीकनायकान् गाथाद्वयनाह,—

दामेष्ट्री हरिदामा मादलि अहरावदा महत्तरया ।
वाउअरिष्टयशा नीलजणया दक्षिणदिवाण ॥ ४९६ ॥

दामयाष्टि हरिदामा मानलि ऐरावतो महत्तर ।

वायु अरिष्टयशा नीलामना दक्षिणेन्द्राणाम् ॥ ४९६ ॥

दामेष्ट्री । दामयाष्टिहरिदामा मातल्लिऐरावतो महत्तरश्च वायुअरिष्टयशा
इत्येते पुण्या नीलजनेति स्त्री एते दक्षिणेन्द्राणां सेनामुरया ॥ ४९६ ॥
महदामेष्ट्रि मिदमदी रहमथण पुष्कयत इदि कमसो ।
सलघु परक्कमगीदरदि महासुसेणा य उत्तरिदिवाण ॥ ४९७ ॥

महदामयाष्टि अमितगति रथमथन पुण्यदत्त इति कमश ।

सलघु पराक्कमो गीतरति महासुसेना उत्तरेन्द्राणाम् ॥ ४९७ ॥

महदामे । महदामयाष्टिरमितगति रथमथन पुण्यदत्त इति कमश स
लघो पराक्कमा गीतरतिरित्येते पुण्या महासेनेति स्त्री एते उत्तरेन्द्राणां
सेनामुरया ॥ ४९७ ॥

अथ परिपन्त्रयसंख्यामाह,—

चारस चोदस सोलस सहस्र अष्टमंतरादिपरिसाओ ।
तत्थ सहस्रदुउण्णा दुसहन्साओ ह् अद्धद्ध ॥ ४९८ ॥

द्वादश चतुर्दशषोडशसहस्राणि अष्टमन्तरादिपरिवश ।

तत्र सहस्रयूना द्विमहत्यात् हि अथ धम् ॥ ४९८ ॥

गोत्रग्यामो कमसो मयजोयणगाणि तिमू य दमहीर्ण ।
धीमूर्णं पामग ततो मययत्थ वसहीण ॥ ४९३ ॥

गोत्रग्याम कमस शोभोमनानि तिमू य शरीर्ण ।
विशोन पामगे ना मयय शहीनम ॥ ४९३ ॥

गोत्र । गोत्रग्याम कमस शोभोमनानि तत उपरि तिमू यनेतु
दमहीर्णे यानानि पत्रमस्थाने विरयूनयोजनानि । तत परं सर्वेद-
नयोजनानि ॥ ४९३ ॥

अथ प्रागुक्तनवग्यानाभेदेण सामानिस्तनुगक्षणीद्देवता प्र-
गायाद्वयेनाः,—

णयरपदे तत्सस्या समाणिया चतुगुणा य तनुरक्षा ।
वसहनुगरथेभपदातिगधवनचणी चेदि ॥ ४९४ ॥

नगपदे तत्सस्या सामानिका चतुर्गुणाश्च तनुरक्षा ।
वृषमतुरगरथेभपदातिगधवनचणी चेति ॥ ४९४ ॥

णयरपदे । सोहम्मादिचउके इति गायोक्तेषु नगराणा नवसु स्थानेषु
चुलसीदियेति गायोक्ततनगरविस्तारसख्येव सामानिकसग्येति ज्ञातर्यं सैव
चतुगुणिता तनुरक्षकसरया वृषमतुरगरथेभपदातिगधवनचणी चेति ॥ ४९४ ॥

सत्तेन य आणीया पत्तेय सत्तसत्तककस्वजुदा ।
पढम ससमाणसम तद्गुण चरिमककरोत्ति ॥ ४९५ ॥

सत्तेन च आनीयानि प्रत्येक समसप्तस्युनानि ।
प्रथम स्वममानसम तद्द्विगुण चरमकशातम ॥ ४९५ ॥

सत्तेन य । सत्तेवानीकानि तानि प्रत्येक सप्तसप्तकक्षयुतानि । तत्र

आरोहिकाभियोग्यकिल्बिषिकादयश्च योग्यप्रासादे ।

गत्वा तत स्तद्वल नदनमिति तद्विशेषनामानि ॥ ५०१ ॥

आरोहिया । आरोहिकाभियोग्यकिल्बिषिकादयश्च स्वस्वयोग्यप्रासादे
तिष्ठन्ति । तत परं स्तद्वलयोजनानि गत्वा नदनवनमस्तीति हेतोस्तद्विशेष-
नामानि धक्ष्यति ॥ ५०१ ॥

कथमिति चेत्,—

सुरपुरबहिं असोय सप्तच्छदचपचूदवनखण्डा ।

पद्महृदमप्रमाणा पत्तेय चेत्तुरुक्तरजुदा ॥ ५०२ ॥

सुरपुरबहि असोक सप्तच्छदचपचूदवनखण्डा ।

पद्महृदमप्रमाणा प्रत्येक चैत्यवृक्षयुता ॥ ५०२ ॥

सुरपुर । सुरपुराद्वहि पूर्वादिदिक्षु असोकवनखण्डा सप्तच्छदवनखण्डा
चपकवनखण्डाश्चूतवनखण्डा पद्महृदमप्रमाणा सहस्रयोजनायामास्तद्वर्द्ध-
व्यासा इत्यर्थ । प्रत्येकमेकैकचैत्यवृक्षयुता ॥ ५०२ ॥

अथ तदनमन्वस्यचैत्यवृक्षस्वरूप निरूपयन् तच्चैत्यनमस्कारमाह,—

चउचेत्तद्रुमा जवृमाणा कल्पेसु ताण चउपासे ।

चलकगजिनपट्टिमा पत्तेय ताणि वदामि ॥ ५०३ ॥

चतुर्भैत्यद्रुमा जवृमाणा कल्पेसु तेषा चतु पार्श्वेषु ।

पत्त्यकगजिनप्रतिमा प्रत्येक तानि वदामि ॥ ५०३ ॥

चउचेत्त । चत्वारिभैत्यद्रुमा जम्बूद्वीपप्रमाणा सौधमादिषु कल्पेसु तेषां
चतुषु पार्श्वेषु पत्त्यकजिनप्रतिमा प्रत्येक तानि वदामि ॥ ५०३ ॥

इदानीं लोकापालानां नगरस्वरूपमाह—

तत्तो बहुजोयणय गतूण दिसासु लोमवालाण ।

णायराणि अजुदसगुणपणघणवित्थारजुत्ताणि ॥ ५०४ ॥

धारण । यं गुणानामुत्थानेषु आदौ अथवागणितानिदानीं कृत्वा
 स्यात्सर्वं द्वात्रिंशत्सप्तमि चतुर्दशसप्तमि वा द्वात्रिंशत्सप्तमि
 उपरि तत्र पुनश्च पुनश्च मन्मद्वैकान्तमस्यां स्यात् । द्विसप्ततुरा
 अत्रात्रकर्मो ज्ञानाय ॥ ४९८ ॥

संशयनिवायाकारभेदयोः तद्वारं प्रमाणं शास्त्रम्—

णयराणं त्रिषष्टिषादीषायासा पंचमासि तरमय ।

तेसष्टि अष्टकृषी तुलसीकृषी लक्ष्मणाणि मन्वृण ॥ ४९९ ॥

नगराणां द्वितीयादिषाकारा पंचमास त्रयोदश ।

त्रिषष्टि अष्टकृषी चतुरशीति लक्ष्मणाणि मन्वृण ॥ ४९९ ॥

णयराण । नगराणां द्वितीयादिषाकारा पंचमासयन्तं यथासंख्यं त्रयोदश
 दशलक्ष्मणाणि त्रिषष्टिलक्ष्मणाणि अष्टकृषिलक्ष्मणाणि चतुरशीतिलक्ष्मणाणि योत्रनवि
 मत्वा मत्वा तिष्ठति ॥ ४९९ ॥

अथ तत्र नगराण्यदेशान् गायादयेनाह,—

सेषणापदितपुरकरा पदमे त्रिद्विपतेरे दु परिसतय ।

सामाणियदेवा पुन तद्विण णिवमति तुरिषदु ॥ ५०० ॥

सेनापतितनुरक्षा प्रथमे द्वितीयातरे तु पारिषत्त्रयम् ।

सामानिकदेवा पुन तृतीये निवसति तुरीये तु ॥ ५०० ॥

सेषणा । सेनापतयस्तनुरक्षाश्च प्रथमेऽन्तराले तिष्ठन्ति । द्वितीयान्तरे
 तु पारिषत्त्रयमस्ति । तृतीयान्तरे तु पुन सामानिकदेवा वसन्ति ।
 सुष्यन्तर तु ॥ ५० ॥

आरोहियाभियाग्गकिडिभिसियादी य जोग्गपासादे ।

गामिय तदा लक्ष्मदल णदणामिदि तद्विसेसणामाणि ॥

आरोहिकाभियोग्यककिल्हिनपिकादयश्च योग्यप्रासादे ।

गत्या तत लक्षदल नदनमिति तद्विशेषनामानि ॥ ५०१ ॥

आराटिया । आरोहिकाभियोग्यकिल्हिनपिकादयश्च स्वस्वयोग्यप्रासादे
तिष्ठन्ति । तत पर लक्षदलयोजनानि गत्या नदनवनमस्तीति हेतोस्तद्विशेष
नामानि वक्ष्यति ॥ ५०१ ॥

कथमिति चेत्,—

सुरपुरवहि असोय सत्तच्छदचपचूदवणरण्डा ।

पञ्चमद्वहसममाणा पत्तय चेत्तुरुक्कयजुदा ॥ ५०२ ॥

सुरपुरवहि असोक सत्तच्छदचपचूनवनतटा ।

पञ्चद्वहसममाणा प्रत्येक चैत्यवृक्षयुता ॥ ५०२ ॥

सुरपुर । सुरपुराद्वहि पूर्वादिदिशु अज्ञाकवनगण्डा सत्तच्छदवनरण्डा
चपकवनरण्डाश्चूनवनरण्डा पञ्चद्वहसममाणा सत्ययोजनायामास्तद्वर्द्ध
व्यासा इत्यथ । प्रत्येकमकैकचैत्यवृक्षयुता ॥ ५०२ ॥

अथ तदनमच्यत्यचैत्यवृक्षस्वरूपनिरूपयन् तच्चैत्यनमस्कारमाह,—

चउचेत्तदुमा अंचमाणा कप्येसु ताण चउपासे ।

पल्लकगजिणपडिमा पत्तय ताणि वदामि ॥ ५०३ ॥

चतुश्चैत्यदुमा भवमाना कल्पेषु तेषा चतु पार्श्वेषु ।

पश्यकगजिनप्रतिमा प्रत्येक तानि वदामि ॥ ५०३ ॥

चउवेन । चत्वारश्चैत्यदुमा जम्बूवृक्षप्रमाणा सीधमादिषु कल्पेषु तेषां
चतुष पार्श्वेषु पश्यकगजिनप्रतिमा प्रत्येक तानि वदामि ॥ ५०३ ॥

इदानीं लाकपालानीं नगरस्वरूपमाह—

तत्ता घट्टजायणय गतूण दिसासु लागवालाण ।

णयराणि अजुदसगुणपणघणवित्थारजुत्ताणि ॥ ५०४ ॥

ततो बहुयोजनार्क गत्या दिशामु लोकापालनाम् ।

नगराणि अगुनर्मगुगर्षणानविम्भारयुगानि ॥ ९०४ ॥

ततो बहु । ततो बहुयोजनानि गत्या दिशामु लोकापालनां नगराणि
अपुत १०००० सगुणितपचषनविम्भारयुगानि ॥ ९०४ ॥

तत्रैव गणिहामहत्तरीणां पुराणपाठः—

गणिकामहत्तरीण पुराणि तत्थेव अग्निपहुडीसु ।

विदिशामु लक्षयोजनविस्तारायामसहियाणि ॥ ५०५ ॥

गणिकामहत्तरीणां पुराणि तत्रैव अग्निमृनिषु ।

विदिशामु लक्षयोजनविम्भागयममहितानि ॥ ९०५ ॥

गणिका । गणिकामहत्तरीणां पुराणि तत्रैव स्थाने अग्निमृनिषु
विदिशु लक्षयोजनानि विस्तारायामसहितानि सन्ति ॥ ५०५ ॥

सासी नामान्याहः—

ताओ चउरो सग्गे कामा कामिणि य पउमगधा य ।

तो होदि अलबूसा साविंदपुराणमेस कमो ॥ ५०६ ॥

ता चतस्र स्वर्गे कामा कामिनी च पद्मगधा च ।

ततो भवति अलबूपा सर्वेद्रपुराणामेष क्रम ॥ ९०६ ॥

ताओ चउ । सौधर्मादिस्वर्गे कामा कामिनी च पद्मगधा ततोऽम्बु
वेति ताश्चतस्रो भवति सर्वेद्रपुराणामेष एव क्रमो ज्ञातव्य ॥ ५०६ ॥

अथ सौधमादिषु गृहोत्सेध प्रतिपादयति,—

छज्जुगलसेसकूपे तित्तिसु य अणुदिसे अणुत्तरगे ।

गेहुदओ छप्पणसय पण्णास रिण दल चरिमे ॥ ५०७ ॥

वत्सुगालेष्वस्त्रेषु त्रिभिषु च अनुदीशि अनुत्तरे ।

गोहादय वत्सुगालेषु पञ्चाशत्तु दत्तं वरमे ॥ ५०७ ॥

उत्सुगालः । वत्सु गालेषु शेषस्त्रेषु च त्रिभिषु वेदेषु अनुदिशायां अनुत्तरे तेषु द्वादशान्येषु गोहादय वत्सुगालयोर्जनानि पञ्चाशत्तु योजनानि तत् उपरि पञ्चाशत्तु दत्तं वरमे । वरमे स्थाने उपात्तार्द्धं नात्स्यम् ॥ ५०७ ॥

अथ देवीनां गोहासुधेन सप्तशतानां विस्तारायामौ वक्ष्यति—

सप्तपदे देवीण गोहादय पणसय तु पण्णरिण ।

सप्तमिहादिम्यथास उदयस्य च पचम दशम ॥ ५०८ ॥

सप्तपदे देवीनां गोहादय पञ्चशत तु पञ्चाशत्तु ।

सर्वगृहदैव्यामी उदयस्य च पचमो दशम ॥ ५०८ ॥

सप्तपदः । उत्सुगालेषु यानि सप्तपदे देवीनां गृहोदय आदौ पञ्चशत्तु योजनानि उत्तमार्धं दैव्याणां पञ्चाशत्तु दत्तं वरमे । सर्वेषां देवानां देवीनां अहोर्ध्वेषु यथासर्थं उदयस्य पचमभागा दशमभागा ॥ ५०८ ॥

वक्ष्यन्ते देवीनां सप्तशतदेवीनां च प्रमाणमाह,—

सप्तपदे अष्टशतहादेवीयो पुधादि मेक्रिस्ते ।

सप्तम सोलसहस्रा देवीओ उपरि अद्भुद्धो ॥ ५०९ ॥

सप्तपदेषु अष्टशतहादेव्यः पृथक् आदिमे एकस्य ।

सप्तम सोलसहस्रा दे व उपरि अर्षार्षा ॥ ५०९ ॥

सप्तपदे । सप्तसु पदेष्वष्टशतहादेव्यः । पृथक् मत्प्रेक्षादिमे प्रथमसुगले षडैकस्या देव्या स्वन सप्त सोलसहस्रपरिवारदेव्यः उपयद्दार्द्ध्यं धर्मिता ८ ॥ ५०९ ॥

अथ तासामग्रदेवीनां नामानि गाथाद्वयेनाह,—

सचिपउम सिवसियामा कालिंदीसुलसअज्जुकाणा
माणुत्ति जेद्वदेवी सज्जेसिं दक्सिणिदाण ॥ ५१० ॥

शचि पद्मा शिवा श्यामा कालिंदी सुलसा अज्जुकानामा ।
भानुरिति ज्येष्ठादेव्य सर्वेषा दक्षिणेन्द्राणाम् ॥ ५१० ॥

सचिपउम । शचि पद्मा शिवा श्यामा कालिंदी सुलसा अज्जु
नामा भानुरित्येता ज्येष्ठदेव्य सर्वेषा दक्षिणेन्द्राणां ॥ ५१० ॥

सिरिमत्ति रामसुसीमा प्रभावदि जयसेण णामय सुसेण
वसुमित्त वसुधर वरदेवीओ उत्तरिंदाण ॥ ५११ ॥

श्रीमती रामा सुसीमा प्रभावती जयसेना नामा सुषेणा ।
वसुमित्रा वसुधरा वरदेव्य उत्तरेन्द्राणाम् ॥ ५११ ॥

सिरिमत्ति । श्रीमती रामा सुसीमा प्रभावती जयसेनाख्या सुषेणा । वसु
मित्रा वसुधरेति वरदेव्य उत्तरेन्द्राणाम् ॥ ५११ ॥

अथ तत्रापमहादेवीनां त्रिक्रियाप्रमाणं निरूपयति,—

अद्वुह देवीणं पुधपुध सोलससहस्रविक्किरिया ।
मूलसरीरेण सम सेसे दुगुणा मुणेददश ॥ ५१२ ॥

अष्टाना देवाना एधर् एधर् षोडशमहस्रविक्रिया ।
मूलशरणेण सम शेसे द्विगुणा मनव्या ॥ ५१२ ॥

अद्वुह मसगु श्याम । मादाव्यानां देवीनां पुधकृपु म्म मूलशरीरेण सम
षोडशमहस्रविक्रिया दध्य । १२ दिग्गदिग्गजा दद्या शातव्या ॥ ५१२ ॥

तत्रैव वशिशाद्वर्षेषु वामिहासमाण निरूपयति;—

सप्तपद् पल्लमिषा वशीसद्वेय दो सहस्रताद ।

पपसय अद्भुद्भु तेमसद्वी ह्योति सप्तमग ॥ ५१३ ॥

मन्त्रेषु वामिहा द्वारिवद्वैव ही सहस्राणि ।

पपसयानि अधथ त्रिषष्टि प नि मसमके ॥ ५१३ ॥

सप्तपद् । सप्तपु पदेषु वामिहा द्वारिवसहस्राणि अष्टसहस्राणि
द्विसहस्राणि पपसयानि उपर्युपर्यु सप्तमे स्थाने त्रिषष्टिपदमिका
भवति ॥ ५१३ ॥

तातो वामिहानां प्रासादोत्सथ तन्प्रासादावस्थानदिग आह,—

देवीप्रासादादुदया पल्लमिषाण तु वीसअद्विय खु ।

इदत्थमगिहादो पल्लमिषावासया पुद्वे ॥ ५१४ ॥

देवीप्रासादोत्थान पल्लमिषाना तु विशाधिक तद् ।

इदमनमगृहान तद्मिषाशमका पपसया ॥ ५१४ ॥

देवीप्रासादोत्थान प्रासादात्पदाद्मिषाना प्रासादात्पदविगतियो
जनाधिक सप्तपदप्रासादात्पदा त्रिषष्टि वामिका प्रासादात्पदविगतियो ॥ ५१४ ॥

इदमनमगृहान नमाल्यावस्थानम् —

अमरावटिपुत्रमजय थमगिहासाणदा सुधम्मकव ।

अट्टाणमण्टव सयतल्लदाहदु नेदुमयदु उदय ॥ ५१५ ॥

अमरावटिपुत्रमजय थमगिहासाणदा सुधम्मकव ।

अट्टाणमण्टव सयतल्लदाहदु नेदुमयदु उदय ॥ ५१५ ॥

अमरावटि । अमरावटिपुत्रमजय थ इदमनमगृहान नमाल्यावस्थानम् सुधम्मकव

मास्थानमण्डप अस्ति । तस्य दीर्घन्यासो शतयोजनतदुलो तयोर्मितितोमय-
योर्दल उत्सेध स्यात् ॥ ५१५ ॥

अथ आस्थानमण्डपद्वार तदन्तस्थपदायान् गाथात्रयेणाह,—

पुव्वुत्तरदक्षिणादिम तद्वारा अट्टवास सोलुदया ।
मज्जे हरिसिंहासनमडदेवीणासण पुरतो ॥ ५१६ ॥

पूर्वोत्तरदक्षिणादिशि तद्वाराणि अष्टव्यास षोडशोऽप्या ।
मध्ये हरिसिंहासन अष्टदेवीनामासनानि पुरत ॥ ५१६ ॥

पुव्वुत्तर । तस्यास्थानमण्डपस्य पूर्वोत्तरदक्षिणादिशि द्वाराणि सन्ति ।
तस्य व्यास अष्टयोजनानि उत्सेधस्तु षोडशयोजनानि तन्मध्ये स्थाने हरि-
सिंहासन । तस्सिंहासनात्पुरत अष्टदेवीनामासनानि स्युः ॥ ५१६ ॥

तव्वाहिं पुव्वादिषु सलोयवालाण परिसातिदयस्म ।
अग्गिजमणेरिदीए तत्तीसाण तु णेरिदिए ॥ ५१७ ॥

तद्वहि पूर्वादिषु म्वलोऽपालाना परिषन्नितयस्य ।
अग्गियमनैऋत्या त्रयस्त्रिंशता तु नैऋत्याम् ॥ ५१७ ॥

तद्वार्हिं । तासा द्वावीनामामनाद्वहि पूर्वादिषु दिषु लोऽपालानां सोमय
मवष्णकुचेराणा आमनानि सन्ति पग्गिजमयस्यासनानि १२० ०।१४०००
१६००० इन्द्रासनस्य आग्गियमनऋत्या दिशि सन्ति त्रयस्त्रिंशद्द्वानामास-
नानि अपि ३२ नऋत्या दिरयव सन्ति ॥ ५१७ ॥

सेणावइणमउरे समाणियाण तु पवणइसाणे ।
तणुरक्खाण भद्दासणाणि चउदिसगयाण बहि ॥ ५१८ ॥

सेनापतीनामपरम्या मामानिहाना त पवनैशान ।
तनुरभाणा भद्रासनानि चतुर्दशागतानि बहि ॥ ५१८ ॥

सेनायर्षेण । सेनापतिना ७ मासनाल्पपरस्मां दिशि सन्ति । सामानिकानामासनानि षाययीं दिशि ४२००० ऐश्यानी दिशि ४९००० एतस्माद्दिशि तनुरक्षाणां मद्रासनानि चतुर्दिग्गतानि सन्ति ८४०००।८४००० ८४०००।८४००० ॥ ५१८ ॥

तमण्डपायस्थमानस्तम्भस्वरूपमाह,—

तस्सागा इगियासो षतीसुदओ सचीठ वज्जमओ ।
माणत्थमो गोरुदचित्थारय धारकोडिजुदो ॥ ५१९ ॥

तस्यामे एकव्यास द्वात्रिंशदुदय सपीठ वज्जमय ।

मानस्तम कोशविस्तार द्वादशकोटियुत ॥ ५१९ ॥

तस्सागा । तन्मण्डपस्यामे एकयोजनव्यास षट्त्रिंशद्योजनोदय पीठ सहितो वज्जमय कोशविस्तारा द्वादशधारायुक्तो मानस्तम्भो स्ति ॥ ५१९ ॥

अथ तमनस्तम्भकण्ठकस्वरूपं गणनायणाह,—

चिह्वति तत्थ गोरुदचउत्थवित्थार कोसदीहजुदा ।
रित्थयरामरणचिदा करण्डया रयणासिकाधिया ॥ ५२० ॥

तिष्ठति तत्र कोशचतुर्थाविस्तारा कोशदैर्घ्ययुता ।

सौधकरामरणचिदा करण्डकरशशिकयभुता ॥ ५२० ॥

चिह्वति । तत्र मानस्तम्भे कोशचतुर्थाविस्तारा कोशदैर्घ्ययुता सौधकरामरणचिदा रत्नशशिकयभुता करण्डकास्तिष्ठन्ति ॥ ५२० ॥

तुरियजुदविजुदछज्जोपणाणि उपरिं अबोपि ण करण्डा ।
सोहम्मदुगे भरदेरावदत्तिथयरपडिषन्हा ॥ ५२१ ॥

तुरीययुतविपुतपद्मोमनानां उपरि अबोपि ष षण्डा ।

सौधमदिके भरदेरावतसौधकरमातिवद्धी ॥ ५२१ ॥

सुरिय । तमानस्तम्भस्योपरि योजनचतुर्थाशयुक्त ३ षण्मयोजनेषु ३
 तस्यापश्च योजनचतुर्थाश ३ वियुक्तपद्मयोजनेषु ३ करण्डानसति । सीध
 मंदिके तो मानस्तम्भो भरतेरावततीर्थद्वरप्रतिषद्धो स्याताम् ॥ ५२१ ॥

साणक्यकुमारजुगले पुत्रवरविदेहतित्थयरभूसा ।
 ठयिदचिदा सुरेहि कोटीपरिणाह चारसो ॥ ५२२ ॥

सानत्कुमारयुगले पूर्वापरविदेहतीर्थरभूसा ।

स्थापयित्वा चिदा सुरे कोटिपरिणाह द्वादशाश ॥ ५२२ ॥

साणक्यकुमार । सानत्कुमारयुगले मानस्तम्भयो पूर्वापरविदेहतीर्थ
 करभूसा स्थापयित्वा सुरेचिता तमानस्तम्भपारान्तरं परिधिद्वयशो-
 शो भवति ॥ ५२२ ॥

अथ इन्द्रोत्पत्तिगुणस्वरूपमाह,-

पासे उग्रवादगिहं हरिस्त अटवास दीहरुदयपुद्गं ।
 दुगरपणसपण मज्झं वरजिनगेह बहुकूटं ॥ ५२३ ॥

पारं उग्रवादगहं हरे अटवासं यदययुनम् ।

द्विकरानशयन मयं वरजिनगेह बहुकूटम् ॥ ५२३ ॥

पाम् । तमानस्तम्भस्य पार्श्वं उग्रपातनयासद्वैरपं ययुनं माये द्विगुण
 शयनयुनं शान्तादगुमग्नि । इत्ययं च बहुकूटं वरजिनं मग्नि ॥ ५२३ ॥
 चान्दं इत्यर्थं गाम्भारिगुणं मायादयेन च,-

दक्षिणउत्तरद्वी सोहम्मीसाण एव जायते ।
 तर्हि सुन्दरविशाहिषा एषउलकं विमाणार्ण ॥ ५२४ ॥

एष उग्रपातनय मी । इत्ययं एव जायते ।

एष उग्रपातनय मी । इत्ययं एव जायते ॥ ५२४ ॥

इकिरण-इक्षिणोत्तरकल्पसवदेवानां देव्य सौधर्मेशान एव जायन्ते ।
तत्र सौधर्मदेवे शुद्धदेवीसहिता पट्टरभ्रचतुलभविमाना सन्ति ॥ ५२४ ॥

तद्देवीओ पच्छा उवरिमदेवा णयति सगठाण ।
सेमविमाणा छच्चदुयीसलकर देवदेविसम्मिस्सा ॥ ५२५ ॥

तद्देवी पश्चादुपरिमदेवा नयति म्वरस्थान ।

शेषविमाना पट्टचतुर्विंशत्स्था देवदेविसमिध्वा ॥ ५२६ ॥

तद्देवीओ । ताभ्य देवी पश्चादुपरिमदेवा नयति स्वकीयस्वकीयस्थान
शेषविमाना पट्टिंशत्तिरथा चतुर्विंशत्तिरथा देवदेवीसन्मिध्वा भवति ५२५

इदानीं कल्पवासिनां प्रविचार विचारयति,—

दुसु दुसु तिचउक्केसु य काये फास य रूप सहे य ।
चित्तेवि य पट्टिचारा अप्पट्टिचारा ह् अहमिंदा ॥ २६

द्वयोर्द्वयो त्रिचतुष्केषु च काये स्पर्श च रूपे शब्दे च ।

चित्तेषु च प्रवीचारा अप्रवीचारा हि अहमिन्द्रा ॥ ५२६ ॥

दुसु दुसु । सौधर्मादिद्वयो २ द्वयो २ त्रिचतुष्केषु च १२ देवदेवीनां
पचासरयं काये स्पर्श रूप शब्दे चित्तेषु च प्रवीचारा । तत उपरि अह-
मिन्द्रा अप्रवीचारा एव ॥ ५२६ ॥

अनन्तर धैमानिकदेवानो विजियाशक्तिज्ञानविषय च गाथाद्वयेनाह,—

दुसु दुसु तिचउक्केसु य णचचोहसमे भिणुणद्वयणा सत्ती ।
पट्टमसिद्धीदो सत्तमसिदिपेरतो सि अवही य ॥ ५२७ ॥

द्वयोर्द्वयो त्रिचतुष्केषु च नवचतुर्दशसु विकुर्वणा शक्ति ।

प्रथमभिनित सत्तमसिदिपर्वन इति अवधिष्य ॥ ५२७ ॥

दुसु दुसु । द्वयो २ द्वयो २ त्रिचतुष्केषु च १२ प्रवेयकादिषु नवसु
 अनुदिशादिषु चतुर्दशविमानेषु सप्तस्थानेषु विचूर्वणाशक्तियथासस्य प्रथम-
 मृथिवीत आरभ्य सप्तमाक्षितिपर्यन्तं ज्ञातया। अवधिज्ञानं च तथा ज्ञातव्यम् ।
 उपरि तदज्ञानं कथमिति चेत् । देवा स्वर्गीयस्वर्गीयकल्पविमानव्यनदण्डा
 दुपरि न पश्यन्ति । नवानुत्तरविमानवासिदेवा आत्मीयामीयविमान-
 शिसरादधो यावद्वायु वातवलय तावत्किञ्चिन्मूनचतुर्दशरज्ज्वायतामेकर
 ज्जुविस्तारा सर्वलोकनालि पश्यन्ति ॥ ५२७ ॥

सर्व्व च लोयणालि पस्यति अणुत्तरेषु जे देवा ।
 सगखेत्ते य सकम्मे रूवगदमणतभागो य ॥ ५२८ ॥

सर्वा च लोकनालि पश्यति अनुत्तरेषु ये देवा ।
 स्वर्भेत्रे च स्वर्कर्म रूपगतमनतभाग च ॥ ५२८ ॥

सद्य च । पचानुत्तरेषु ये देवास्ते सर्वा च लोकनालि पश्यन्ति । अवधेर्ज्ञेति
 प्रकार उच्यते । स्वक्षेत्रे एकप्रदेशोऽपनेतव्यः । स्वकर्मणि एको ध्रुवभागहा
 रो दातव्यः यावत्प्रदेशसमाप्ति । अनेनावधिविषयद्रव्यभेद सूचितः । एतदर्ध
 विशद करोति । कल्पसुराणां स्वस्वावाधिक्षेत्र विगतविघ्नसोपचयमवाधिज्ञानावर
 णद्रव्यचसस्थाप्य $\frac{3}{1\frac{1}{2}}$ स $\frac{3}{1\frac{1}{2}}$ एकप्रदेशमपनीय एकेन ध्रुवहारेण
 भजेत् यत्स्वस्वावधिविज्ञानविषयद्रव्यप्रमाणं भवति ॥ ५२८ ॥

अथ वैमानिकदेवानां जननमरणान्तरं निरूपयति,—

दुसुदुसु तिचउक्कसु य सेसे जणणतर तु चवणे य ।
 सत्तदिण पक्कव मास दुगचदुछम्मासग होदि ॥ ५२९ ॥

द्वयोद्वया त्रिचतुष्केषु च शेषे जननान्तरं तु च्यवने च ।
 सप्तदिनानि पञ्च मासं द्विकचतुष्मासकं भवति ॥ ५२९ ॥

दुस दुस। दयोर्दयोस्त्रिचतुष्टये शोषे वेति षट्सु स्थानेषु जननरहितान्तरका-
लो मरणरहितान्तरकालश्च यथासर्व्यसप्तदिनानि पक्ष मास दिमास चतुर्मासं
षण्मास च भवति ॥ ५९९ ॥

अथेन्द्रादीनामुत्कृष्टान्तरमाह,—

वरविरह छम्मास इद्रमहादेविलोकपालाण ।

चउ तेत्तीससुराण तपुरक्खसमाणपरिसाण ॥५३०॥

वरविरह षण्मास इद्रमहादेविलोकपालानाम् ।

चतु त्रयस्त्रिंशसुराणा तनुरक्षसमानपारिपदानाम् ॥ ५३० ॥

वरविरह। इन्द्राणो तमहादेवीनां लोकपालानां चोत्कृष्टेन विरहकालं ष-
ण्मास जानीहि । त्रयस्त्रिंशसुराणां तनुरक्षाणो सामानिकानो पारिपदानो च
चतुर्मासं विरहकालं जानीहि ॥ ५३ ॥

अथ दशविंशत्याणां भवस्थानं प्रतिपादयति,—

ईसाणलातवञ्चुदकप्पोत्ति कमेण होति कदप्पा ।

किट्ठिमसिय आभिजोगा सगकप्पजहण्णाठिदिसहिया ।

ईशानलातवाच्युनक्खपानं कमेण भवति कदर्पा ।

किट्ठिपिका आभियोग्या स्वक्खल्पनपयस्थितिसारिता ५३१

इसाण । अत्र विट्ठलभणकाद्वर्षाणिामयुक्ता स्वयोग्यगुभकर्मवशात्
ईशानकल्पपर्यन्तं कद्वर्षदेवा मूत्रा उत्पद्यन्ते न तत उपरि । अत्र गीतोपजीव
लभणकेत्तिपिकपरिणामयुक्ता स्वयोग्यगुभकर्मवशात् लातवद्वयपर्यन्तं तत्रा
दि किं विपिका एवोत्पद्यन्ते न तत उपरि । अत्र स वयाकयामु स्वहस्त्वव्यापा
इत्यपणाभियाग्धभावनायुक्ता स्वयं उच्युभवमन्तं तु अ य कल्पपर्यन्त
त यामियाग्धवशा भवता च उच्यं न न तत च । अत्र स वयाकयामु स्वहस्त्वव्यापा
भवति सातभन्तिता स त ॥ ५३१ ॥

अथ ध्यमादिषु शिगिरिशयमाह,—

सोहम्म पर पल थरमुचहिषि सत दम य चोद्दमय ।
घार्थीसोत्ति दुग्द्धी एकेक जाय तर्त्थीमं ॥ ५३० ॥

सौधर्म पर पश्य आरं उद्विष्टिक सम दश च चतुदशक ।
द्वाविंशतिशि दिष्टि एतत् यावत्प्रयत्नित् ॥ ५३१ ॥

सोहम्म । सौधर्मयुगल जययमायु पयमुद्दृष्टं तु प्रथक सागरोपनदय ।
इत उपरि सथाष्टमत्र कथयति—मनकुमारयुगले प्रथेकं सत सागरोपमणि
प्रथयुगले प्रत्येकं दशसागरोपमणि जन्मवयुगले प्रत्येकं चतुदशसागरोपमणि
इत उपरि युगलयुगल प्रति प्रथेकं द्वाविंशतिसागरोपमपर्यन्तं द्विसागरोपम
वृद्धिज्ञातव्या । इत अयुनादुपरि यावत्प्रयत्नित् सागरोपम तावदेकवृद्धि
ज्ञातव्या ॥ ५३० ॥

अथ घातायुक्कसम्पगृह्य पटल प्रति चोत्कृष्टायुष्यमाह,—

सम्मे घादेऊण सायरदलमहियमा सहस्रारा ।
जलहिदलमुद्दुवराऊ पडल पडि जाण हाणिचय ५३३
समीचि घातायुपि सागरदलमधिकमा सहस्रारात् ।

जलधिदल ऋतुवरायु पटल प्रति जानीहि हानिचयम् ॥ ५३१ ॥

सम्म घा । सम्पगृह्यौ घातायुपि सति तस्य स्वकीयकल्पोत्कृष्टायुष्य
सकाशादन्तमुहूर्तानि सागरदलमधिकं भवतिमा ५३१ एव सहस्रारपर्यन्तं ज्ञातं य
तत उपरि घातायुक्कस्यात्पनिनास्ति । सौधर्मयुगलस्य प्रथमपत्रले ऋत्विन्द्रके
अधसागरोपम उक्कृष्टायु इति प्रथमचरमपत्रलयोरायुधत्वा पटल प्रति हानि
चय जानीहि तत्कम । घातायुक्क तावत् साधमायष्टयुगले आदी
१ । १ । २१ । १ । ३ । १ । १ । अत ५ । १ । २१ । १ । १ । ३ । १ । २२
२ । १ । १ । २ । १ । १ । १ । १ । २ । १ । २ । १ । १ ।

५३ १११ १११११११११ रुडणद्धा १० सनत्कुमारादिषुगलप्रातनकल्पच
११ १ १११११११११
 रमपटलस्यवात्त्वात्त्र तत्र रूपयुने सपादिरव ७४।१।१।१।३ हिवमि
 णिचयमिति कुने सौधर्मयुगले हानिचयमेतत् । इत् अद्दसागरोपम-
 म्येपरि समानउदेन मेलयत् ३१ एतद्विमलद्रस्योत्पद्यु स्यात् । एवमुपरि
 सत्र परहं प्रत्यानतय । सनत्कुमारदिक हानिचय ११ बह्मयुगमे ३ लोत
 वदुगे २ शुक्रयुगत् २ शतारद्द २ आनतद्वय ३ आरणद्वय ३ । एवहानिचय
 तात्वा तत्तत्पटल प्रति आयुरानेतयम् । अघातायुष्के तु आदि ३ आन २
 विसेमे ३ रुडणद्धा १० हिदमि हानिचय ह्य विभिरपवतित एव ३१ एत
 दानिचय अद्दसागरोमस्योपरि स्वचरमपटलपयन्तं मेलयेत एव । सनत्कुमारा
 दारभ्याच्युतपयन्तं तत्तत्पटलायुहानिचय ज्ञातयम् ॥ ५२३ ॥

अथ लौकान्तिका नामस्थानमाह,—

णिवसति बह्मलोयससते लोयतिया सुरा अट्ट ।
 ईसाणादिसु अट्टसु वहेसु पइण्णएसु कमा ॥ ५२४ ॥

निवसति ब्रह्मलोकस्थाने लौकान्तिका सुरा अट्ट ।
 स्थानाणिसु अष्टम वत्तेषु प्रकीर्णकेषु जगत् ॥ ५२४ ॥

णिवसति । ब्रह्मलोकस्थान्त अष्टकला लौकान्तिका सुरा इशानादि-
 ध्वणदिष्टवत्तेषु प्रकीर्णकेषु यथाक्रम निवसन्ति ॥ ४ ॥

अथ तदष्टकलसंज्ञा समाप्ता च गाथाद्वयेनाह —

सारम्मढ आहञ्जा सत्तसया सगजुदा य वह्हरणा ।
 सगमगसहम्ममुवरि दुसु दुसु दादुगसहम्मपडिकिमा ॥

सारम्भता आदि या सत्तशतानि ममयुनानि च वह्हरणा ।
 सत्तसत्तसहम्ममुपरि द्वाद्दया द्वाद्दया द्विद्विमत्त्वयाद्धक्रम ॥ ५२५ ॥

उभित्त पञ्चार्थं मन्ने व्यतरद्विः क्रमेणविक ।

ममीति मिथ्ये घाने पञ्चामन्त्रं तु मन्त्र ॥ १३१ ॥

उपदिशते । घानायुक्ते सम्पन्नो मन्ने व्यन्तरघातिश्रयोश्च यथाक
मं तत्र तत्रोक्तानुष सद्घाशाद्दसागरोपमं पञ्चार्द्धं चाधिकं ज्ञातवम् ।
घानायुक्ते मिथ्यादृष्टो तु पञ्चासंन्यातमार्गं तथाधिकं ज्ञेयं । एवं सर्वत्र
कल्पेष्वपि ॥ ५४१ ॥

अथ कल्पस्त्रीणां स्थितिप्रमाणं कथयति,—

साहियपल्ल अवर कल्पदुग्धित्थीण पणम पट्टमवरं ।

एकारसे चतुके कल्पे दोसत्तपरिवृद्धी ॥ ५४२ ॥

साधियपल्ल अवर कल्पद्विके स्त्रीणां पचक प्रथमवर ।

एकादशे चतुके कल्पे द्विमत्तपरिवृद्धि ॥ ५४२ ॥

साहिय । सौधर्मकल्पद्विकस्त्रीणामवरमायुः साधिकपल्लं प्रथमे सौधर्मे
वरमायुः पचपल्लं । अथ ईशानाद्येकादशे कल्पे जानतादिचतुःकल्पे च
यथासरथ सौधर्मात्पचपल्ल्यात् द्विवृद्धिः सप्तपरिवृद्धिश्च ज्ञातव्या ॥ ५४२ ॥

इदानीं देवानां शरीरोत्सेधमाह,—

दुसु दुसु चदु दुसु दुसु चउ तित्तिसु सेसेसु देहउत्सेहो ।
रयणीण सत्त छप्पणचत्तारि दलेण हीणकमा ॥ ५४३ ॥

द्वयोर्द्वयो चतुर्षु द्वयोर्द्वयो चतुषु त्रिस्त्रिषु शेषेषु देहोत्सेध ।

रत्नीनां सप्त पट् पचचत्वार दलेन हीनक्रम ॥ ५४३ ॥

दुसु दुसु । द्वयोर्द्वयोश्चतुषु द्वयोर्द्वयोश्चतुर्षु त्रिस्त्रिषु शेषेष्विति दशसु
स्थानेषु देहोत्सेधो यथासरथ सप्त ७ पट् ६ पच ५ चत्वारो ४ रत्न्य तत
उपरि अर्द्धहस्तहीनक्रमो ज्ञातव्यः ॥ ५४३ ॥

अथ तेषामुच्छ्वासाहारकालो निरूपयति,—

पक्ष्वा वाससहस्रस्य सगसगसायरसलाहि सगुणितं ।

उस्सासाहाराण कमेण माण विमानेषु ॥ ५४४ ॥

पशो वर्षसहस्रं स्वकम्बकमागरशलाभिः सगुणितं ।

उच्छ्वासाहाराणां क्रमेण मान विमानेषु ॥ ५४४ ॥

पक्ष्वा वासः । पशो १५ वर्षसहस्रं १००० सोहम्मवर्षं पञ्च वारमुवदि
विसत्तेत्याप्तकम्बकीयस्वकीयसागरशलाकाभिः संगुणितं दिनं ३० वर्षं
२००० उच्छ्वासाहाराणां प्रमाणं विमानेषु क्रमेण ज्ञातव्यम् ॥ ५४४ ॥

अथ गुणस्यानमाश्रित्य देवगतावुत्पद्यमानानां स्वरूपं गाथात्रयेणाह,—
णरतिरियं देसअयदा उक्तास्सेणञ्चुदोत्ति णिग्गथा ।

ण य अयदं देसमिच्छां गेवेज्जतोत्ति गच्छति ॥ ५४५ ॥

नरतिर्यैव देशायता उत्कृष्टेनाच्युताव निर्मया ।

न च अयता देशमिध्यां शैवेयांतं इति गच्छति ॥ ५४५ ॥

णरतिरियं । असयता देशसयता वा नरास्तियसम्भोत्कृष्टेनाच्युतपर्यन्तं
गच्छन्ति । इत्यनिर्मया नरा भावेनासयता भावेन देशसयता भावेन
मिध्यादृष्टयो वा उपरिमशैवेयकपर्यन्तं गच्छन्ति ॥ ५४५ ॥

सध्वद्वोत्ति सुदिट्ठी महध्वद्वं भोगभूमिजा सम्मा ।

सोहम्मदुगं मिच्छां भवणतियं तावसा य वरं ॥ ५४६ ॥

मवार्थं सुदृष्टिं महावनीं भोगभूमिजां सम्यच ।

सौधमद्विकं मिध्यां भवनप्रयं तावसा च वरं ॥ ५४६ ॥

सध्वद्वं । सवार्थसिद्धिपयं न सुदृष्टिद्वं पभावरूपेण महावनीं गच्छति ।
भागभूमिजां सम्यग्दृष्ट्यं साधमां च गच्छति न ततः त्यजि । भागभ

उत्पिच्छ पर्यायं मन्ने व्यतरद्विके क्रमेणाविक ।

ममीचि मित्र्ये घाने पर्यामम्य तु मर्वत्र ॥ १०१ ॥

उच्यते इह । घानायुष्के सम्प्राप्तौ मन्ने यन्तर-घातिष्कयोश्च यथाक-
म तत्र तत्रोक्त्यायुष मन्नागादूर्ध्वसागरोपम पर्यायार्द्ध चाधिक जातस्यम् ।
घानायुष्के मित्र्यादृष्टौ तु पर्यामम्यातमाग तथाधिक ज्ञेय । एवं सर्वत्र
कल्पेष्वपि ॥ ५४१ ॥

अथ कल्पखीणा स्थितिप्रमाण कथयति,—

साहियपल्ल अत्र कप्पदुगित्थीण पणग पठमवर ।

एकारसे चउक्के कप्पे दासत्तपरिवृद्धी ॥ ५४२ ॥

साधिक्कपत्त्य अत्र कल्पद्विके खीणा पचक प्रथमवर ।

एकादशे चतुष्के कल्पे द्विमत्तपरिवृद्धि ॥ ५४२ ॥

साहिय । सौधमकल्पद्विकखीणामवरमायु साधिक्कपत्त्य प्रथमे सौधमे
वरमायु पचपत्त्य । अथ ईशानायेकादश कल्पे आननादिचतुःकल्पे च
यथासस्य सौधमाक्कपचपत्त्यात् द्विवृद्धि सत्तपरिवृद्धिश्च ज्ञातव्या ॥ ५४२ ॥

इदानीं देवानां शरीरोत्पत्तेषुमाह,—

दुसु दुसु चट्टु दुसु दुसु चउ तित्तिष्ठु सेसेसु देहउस्सेहो ।
रयणीण सत्त छप्पणचत्तारि दलेण हीणकमा ॥ ५४३ ॥

द्वयोदयो चतुर्षु द्वयोदयो चतुर्षु त्रिस्त्रिषु शेषेषु देहेत्सेव ।

रत्नीना सत्त १७ पचत्वार दलेन हानकम ॥ ५४३ ॥

दुसु दुसु । द्वयोदयोश्चतुर्षु द्वयोदयोश्चतुर्षु त्रिस्त्रिषु शेषेष्विति दशसु
स्थानेषु देहेत्सेवो यथासस्य सत्त ७ वट्ट ६ पव ५ चत्वारो ४ रत्नय तत्र
उपरि अर्द्धस्तरीनक्रमो ज्ञातव्यः ॥ ५४३ ॥

नरतिर्यग्गतिभ्या भवनत्रयाच्च निर्गता जीवा ।

न लभन्ते ते पदवीं त्रिषष्टिशलाकापुरुषाणाम् ॥ ५४९ ॥

नरतिरिच्य । नरतिर्यग्गतिभ्यां भवनत्रयाच्च निर्गता जीवास्ते त्रिषष्टिशलाकापुरुषाणां पदवीं न लभन्ते ॥ ५४९ ॥

अथ देवानामुत्पत्तिस्वरूपमाह,—

सुहस्रयणग्ने देवा जायते दिणयरोव्व पुव्वणगे ।

अंतोमुद्दत्त पुण्णा सुग्घिसुहफाससुचिदेहा ॥ ५५० ॥

सुस्रशयनामे देवा जायते दिनकर इव पूवन्गे ।

अतमुहूर्ते पूणा सुग्घिसुस्रम्पर्शाशुचिदेहा ॥ ५५० ॥

सुहस्रयण । पूर्वाचले दिनकर इवान्तमुहूर्त्तं षट्पयाप्त्या पूर्णां सुग्घिसुस्रम्पर्शाशुचिदेहास्ते देवासुस्रशयनामे जायन्ते ॥ ५५० ॥

अथ तत्रोत्पन्नानां तदनतरे कृत्यविशेषं गाथात्रयेणाह,—

आणदत्तरजयधुदिरवेण जम्मं विबुज्झ स पत्त ।

बहूण सपरिवार गयजम्म ओहिणा णट्वा ॥ ५५१ ॥

आनन्दतृणयस्तुतिरवेण जन्म विबुयस्व प्राप्त ।

हृदा सपरिवार गतजन्म अवधिना ज्ञात्वा ॥ ५५१ ॥

आनन्द । आनन्दतृणपरवण जपस्तुतिरवेण श्रेष्ठं देवजन्मेति विबुष्यस्व प्राप्तं स्वपरिवारं च हृदा अवधिज्ञानेन गतजन्म म च ज्ञात्वा ॥ ५५१ ॥

धम्म पससिदूण ण्हादूण दहे भिसेयलकारं ।

छद्धा जिणामिसेय पूजं कुट्ठति सद्दिट्ठी ॥ ५५२ ॥

धर्मं प्रशाम्य छात्वा हृदे अभिषेकालकार ।

छद्धा जिनाभिषेकं पूजा कुर्वति सद्दृष्टय ॥ ५५२ ॥

... १५ १
... १५ १
... १५ १

... १५ १
... १५ १
... १५ १

... १५ १

... १५ १
... १५ १
... १५ १

... १५ १
... १५ १
... १५ १

... १५ १

... १५ १
... १५ १
... १५ १

... १५ १

नरनियमनिम्न्या भवनत्रयाच्च निगता जीवा ।

न लभन्ते ते पदवीं त्रिषष्टिशल्यकापुरपाणाश्च ॥ ५४९ ॥

णरतिरिय । नरतिर्यगतिभ्यां भवनत्रयाच्च निर्मता जीवास्ते त्रिषष्टिश-
लाकापुरपाणां पदवीं न लभन्ते ॥ ५४९ ॥

अथ देवानामुत्पत्तिस्वरूपमाह,—

सुहसयणगमे देवा जायते दिणयरोध्व पुध्वणगे ।

अतोमुद्भुत्त पुण्णा सुगधिसुहफाससुचिदेहा ॥ ५५० ॥

सुलशयनाग्र देवा जायन्ते दिनकर इव पूवणगे ।

अतमुहूर्ते ण्णा सुगधिसुखम्पशशुचिदेहा ॥ ५५० ॥

सुहसयण । पूर्वाचले दिनकर इवान्मर्मुहूर्त्त षट्पय्यास्या पूर्णा सुगधि-
सुलस्यशशुचिदेहास्ते देवासुसुलशयनाग्र जायन्ते ॥ ५५० ॥

अथ तत्रोत्पन्नानां तदनंतर कृत्यविशेषं गाथात्रयेणाह,—

आणदतुरजयधुदिरयेण जम्म विसुज्झ म पत्त ।

वृहूण सपरिवार गयजम्म ओहिणा णट्ठा ॥ ५५१ ॥

आनन्दन्यमयस्तुतिरवेण जन्म विबुध्य म्ब प्राप्त ।

दृष्ट्वा सपरिवार गतजन्म अवधिना ज्ञात्वा ॥ ५५१ ॥

आनन्द । आनन्दनूयवेण जपस्तुतिरवेण चेद् देवजन्मति विबुध्य स्व
प्राप्तं स्वपरिवारं च दृष्ट्वा अवधिज्ञानेन गतजन्मं च ज्ञात्वा ॥ ५५१ ॥

धम्म पससिदृण ण्हादृण दहे भिसेयलकार ।

उद्धा जिणाभिसेयं पूजं कुर्वति सद्विद्वी ॥ ५५२ ॥

धर्मं प्रशंस्य छात्वा हृदे अपिपेशलकार ।

लब्ध्वा जिनाभिषेकं पूजां कुर्वति सदृष्टय ॥ ५५२ ॥

मिना मिथ्याश्रयो भवनवर्षं याति न तत्र उपरि । पंगवाद्यद्विशावकाश्च
पणा उन्मुच्यन् भवनवर्षं याति न तत्र उपरि ॥ ५४६ ॥

धरया य परिस्थिताया बभ्रोत्तरपदांति आनीया ।
अणुदिसअणुत्तरादो जुदा ण केमयपद जांति ॥ ५४७ ॥

धरयाश्च परिमाया बभ्रोत्तरपदात् आनीया ।

अनुदिशानुत्तरत्त च्युता न केशपद याति ॥ ५४७ ॥

धरणाय । नगनाडलक्षणाभरका एकदण्डिद्विद्विलक्षणा पग्निजका
ब्रह्मकल्पपर्यन्तं याति गच्छन्ति न तत्र उपरि । कनिकादिभोजिन आनीया
अच्युतकल्पपर्यन्तं याति न तत्र उपरि । साम्प्रतं द्ववर्षं च्युतानामुत्पत्ति
स्वरूपमाह—अनुदिशानुत्तरविमानभ्यश्च्युता केशपद वामुद्वप्रतिवर्षमेव
पद न याति ॥ ५४७ ॥

अथात्तश्च्युत्वा निवाण गच्छतां नामान्याह,—

साहम्मो वरदेवी सलोगवाला य दक्षिणमरिदा ।
लौयतिय सञ्जहा तदो चुदा णिञ्जुदि जांति ॥ ५४८ ॥

सौधर्मो वरदेवी सलोकपात्राश्च दक्षिणामरिदा ।

लौकतिका सर्वार्था ततश्च्युता निर्वृतिं याति ॥ ५४८ ॥

सोहम्मो । सौधर्मन्द्रस्तस्य पद्मेदेवी शची तस्य सोमादिलोकपाला
दक्षिणामरन्द्रा सर्व लौकान्तिका सर्व सवाथसिद्धिजा सर्वे ततो देव
गतेश्च्युता नियमन निर्वृतिं याति ॥ ५४८ ॥

अथ त्रिपद्मिशलाकापुष्पाणा पद्मीमप्रामुवतां नामान्याह,—

णरतिरियगदीहितो भवणतियादो य णिग्गया जीवा ।
ण लहते ते पदवि तेवद्विसलागपुरिसाण ॥ ५४९ ॥

नरतिर्यग्गतिभ्या भवनप्रयास निगता भीया ।

न लभन्ते ते पदवीं त्रिषष्टिशलाकापुरपाणास ॥ ५४९ ॥

नरतिरिय । नरतिर्यग्गतिभ्या भवनप्रयास निर्गता जीवास्ते त्रिषष्टिश-
लाकापुरपाणां पदवीं न लभन्त ॥ ५४९ ॥

अथ देवानामुत्पत्तिस्वरूपमाह,—

सुहसयणग्रे देवा जायन्ते दिणयराव्य पुव्वणगे ।

अतोमुद्भूत पुष्पा सुगधिसुहफाससुचिदेहा ॥ ५५० ॥

सुखशयनामे देवा जायते दिनकर इव पूव्वणगे ।

असमुहूर्ते पूणा सुगधिसुगम्पराशुचिदेहा ॥ ५५० ॥

सुहसयण । पूर्वाचले दिनकर इवान्तर्मुहूर्ते षट्पर्याप्त्या पूर्णा सुगधि-
सुसपराशुचिदेहास्ते देवास्तुभशयनामे जायन्ते ॥ ५५० ॥

अथ तत्रोत्पन्नानां तदनंतर कृत्यविशेषं गाथात्रयेणाह,—

आणदत्तरजयधुदिरवेण जम्म विबुज्झ स पत्त ।

बृहूण सपरिवार गयजम्म ओहिणा णट्था ॥ ५५१ ॥

आनन्दन्यप्रयत्ननिर्गवेण जन्म विबु य म्व प्राप्त ।

दृष्ट्वा सपरिवार गतजन्म अवधिना ज्ञात्वा ॥ ५५१ ॥

आनन्द । आनन्दन्यप्रयत्ननिर्गवेण जयस्तुतिवर्ण चद् दवज मति विबुय स्वं
प्राप्त स्वपरिवार च दृष्ट्वा अवधिजानन गतज म च ज्ञात्वा ॥ ५५१ ॥

धम्म पसमित्ठण ण्हाट्टण दहे भिसयलकार ।

उद्धा जिणाभिसय पुज रुव्वति महिद्धी ॥ ५५२ ॥

धर्म प्रशम्य छा वा ह्त् अभिषकाकार ।

उद्धवा जिनाभिषेक पजा क्वनि मदुदण्य ॥ ५५२ ॥

धम्म पसासि । धर्मं प्रशस्य हृदे स्नात्वा पद्माभिषेकमलङ्कारं च लब्ध्वा
सहृष्टयः स्वयमेव जिनाभिषेकपूजां च कुर्वति ॥ ५५२ ॥

सुरबोहियावि मिच्छा पच्छा जिणपूजणं पकुव्वति ।
सुहसायरमज्झगया देवाणं विदति गयकालं ॥ ५५३ ॥

सुरबोधिता अपि मिथ्या पश्चाज्जिनं नपूजनं प्रकुर्वति ।

सुखसागरमध्यगता देवा न विदति गतकालं ॥ ५५३ ॥

सुरबोहिया । मिथ्याहृष्टयः सुरबोधिता अपि पश्चाज्जिनपूजां प्रकुर्वन्ति ते सर्वे देवाः सुखसागरमध्यगताः सन्तो गतकालं न विदन्ति ॥ ५५३ ॥

अथ तेषां देवानां सत्कृत्यमाह,—

महापूजासु जिणाणं कल्याणेषु यः प्रयाति कल्पसुरा ।
अहमिन्द्रा तत्र तिष्ठति मणिमौलिघण्टिकरा

महापूजासु जिनाणां कल्याणेषु च प्रयाति कल्पसुरा ।

अहमिन्द्रा तत्र स्थिता नमति मणिमौलिघण्टिकरा ॥ ५५४ ॥

मह । जिनाणां महापूजासु तेषां पञ्चमहाकल्याणेषु च कल्पसुरा प्रयाति । अहमिन्द्रास्त तत्र स्थिता एव मणिमौलिघण्टिकरा संतो ममन्ति ॥ ५५४ ॥

अथ सुरादिसप्तकेषां भवतीत्युक्तं आह —

विविहतवरयणभूसाणाणसुचीं सीलउत्थसोम्मगा ।
ज तसिमेव वस्सा सुरलच्छी सिद्धिलच्छी य ॥ ५५५ ॥

विविधनगरभूषणं ज्ञानगुणं शीलवत्प्रसोम्यागा ।

य तेषामत्र वस्सा सुरलक्षणा सिद्धिलक्ष्मीश्च ॥ ५५५ ॥

वित्तिय । १ विविधव्याख्यायां न मनुष्यस्य हीनव्यभिचारिणां
 तत्त्वेषु तुल्यार्थं सिद्धिर्भवति ॥ ५५५ ॥

इदानीं व्याख्यानं कुर्यात् —

निदुषणमुद्गाहटा इतिपमारा परहृमी रंदा ।
 दिग्वा इगिसगरज्जु अहजायणयनिदुवाहता ॥ ५५६ ॥

शिशुवन्मूषु रूपं एव प्रमाणा धरादमी रंदा ।

६५६ इतिपमाराऽऽप्याजन्ममिवाहत्या ॥ ५५६ ॥

निदुषण । शिशुवन्मूषुहटा एव प्रमाणाया अहमी धरा ताया रंदा
 र्थेन च एवमन्वयः भवति । ताया वाहन्वमहटाऽनन्वयित्वा ॥ ५५६ ॥

अथ न मन्वयार्थं द्रुगेणवर्क्यं तस्य द्रुवेनाह —

तम्मज्जे कल्पमपं उसापार मणुस्समहिवासं ।
 सिद्धवसेत्तं मज्जाटवह कमहीण बहुलियं ॥ ५५७ ॥

तमध्ये कल्पमप उसापार मनुष्यमहायामे ।

सिद्धमपं मध्येष्टवेपं मदर्हान वाहृण्यम ॥ ५५७ ॥

तम्मज्जा । तमध्ये कल्पमपं उसापारं मनुष्येरेकस्यासिद्धिज्ञेवमभि ।
 तद्वाप्य मप्य अप्योमनवर्षं अपत्र सर्वत्र कमहीने ज्ञानमप्य ॥ ५५७ ॥

उसाणद्वियमंते एतं व तणु तदुपरि तणुवाद् ।
 अट्टगुणह्वा सिद्धा विद्वति अर्णतसुहृत्तिसा ॥ ५५८ ॥

उसान्धियमने पात्रमिवा तनु तदुपरि तनुवाते ।

अट्टगुणाद्या सिद्धा विद्वति अनन्तसुरगुणा ॥ ५५८ ॥

उसाण । अथ तन्मप्यनुत्तानन्धितपात्रमिवा कथकमिनेरपर्थं तस्य
 सिद्धिभ्रम्यपरिमननकाले अट्टगुणाद्या अनन्तसुरगुणा सिद्धा विद्वति
 । ५५८ ॥

अथ त्रिंशत्तमोऽङ्कः २१ ॥ १० ॥ १० ॥ —

तस्य सार्धं सार्धं सार्धं वा सप्तमसंध्यं जागर्तवः ।

तिष्ठन् सुप्तमतिं तत्रा किण्णं समसंध्यं च यथा ॥ ५१ ॥

एतन् इत्यं सप्त सार्धं वा सप्तमसंध्यं च यथा ।

तीर्थं सुप्तमतिं तत्रा कि न समसंध्यं च यथा ॥ ५२ ॥

एतन् । एतन् शब्दं तत्रै शब्दं वा सप्तमसंध्यं च यथा । समसंध्यं सुप्तमतिं
समसंध्यं सप्तमसंध्यं च यथा कि न सुप्तमतिं अति च सुप्तमतिं च यथा ॥ ५१ ॥

अथि कुरु कणिसुप्ते महमिदि जं सुहं तिकाळमर्थं ।

तथा अर्णतगुणित् मिद्धानं सप्तमसंध्यं च यथा ॥ ५२ ॥

यत्किं कुरु कणिसुप्ते अथि च यत् सुप्तं च यथा ॥

तन् अनंतगुणित् मिद्धानं सप्तमसंध्यं च यथा ॥ ५३ ॥

अथि । अथि कुरु कणिसुप्ते महमिदि च यत् सुप्तं च यथा
सप्तमसंध्यं सप्तमसंध्यं च यथा कि न सुप्तमतिं अति च सुप्तमतिं च यथा
सप्तमसंध्यं सप्तमसंध्यं च यथा कि न सुप्तमतिं अति च सुप्तमतिं च यथा
सप्तमसंध्यं सप्तमसंध्यं च यथा कि न सुप्तमतिं अति च सुप्तमतिं च यथा

इति भीममिचंद्राचार्यविरचिते त्रिलोकमहाराजस्य ध्यानिकलाका

धिकारे ॥ ५ ॥

अथ नरतिर्यग्लोकाधिकार ॥ ६ ॥

इत एव प्राणावगारं नरतिर्यग् ६ निरुपायिनुमनात्तावन्तोऽप्यपि तन्नि
 मभवन्नामुनिद्वय ६ तस्मात्प्रथमाह —

जमह पारलोपजिणपर चत्वारि सयाणि दोषिहीणाणि
 शायणी चउ चउरो णदीसर कुट्टे रुचम ॥ ५६१ ॥

नमन नरलो ३ जिनगहाणि चत्वारि शतानि द्विषिहीनानि ।

द्वापव शन् चत्वार चत्वारि नदीसरे कुट्टे रुचरे ॥ ५६१ ॥

जमह । नारो ६ चतु शतानि द्विविधानानि ३९८ जिनगहाणि नदीस
 रदीप कुट्टद्वाप रुचरे ६ च त्रिषाणां चत्वारिणि यथासंख्यं द्वार्यवाश
 जिनगहाणि चत्वारि जिनगहाणि चत्वारि जिनगहाणि नमन ॥ ५६१ ॥

अथ नारो ६ जिनगहाणि चत्वारि कुट्टे कुट्टे त्रिषीत्सुके आह,—

मदरकुलवक्खारिसुमणुसुत्तररुप्पजपुसामलिषु ।

मीदी तीस तु सयं चउ चउ सत्तरिसय दुपण ॥ ५६२ ॥

मं ३ कुलवभारेषु मानुषोत्तरग्यमं ३ शास्मलिषु ।

अर्शानि त्रिंशत् तु शत चत्वारि चत्वारि सप्ततेशत द्विषं ५६२

मदर । मदरेषु ५ कुट्टववतेषु ३० व. तारेषु १०० इष्वकारेषु ५ मानुषोत्तरे १
 विजयार्थेषु १७० जपुत्तरेषु ५ शास्मलीवृक्षेषु ५ यथासंख्यं जिनगहा
 ष्यर्शाति ८० त्रिंशत् ३० शतं १०० चत्वारि ४ चत्वारि ४ सप्तसुत्तरशतं
 १७० द्विवार्यच ५ भवति ॥ ५६२ ॥

अथ अथ वक्ष्यमाणानामर्थानां मदराभयत्वात्तानेव प्रथमं प्रतिपादयति —

जधुदीवे पक्का इत्तुकयपुप्पवधरधावदीवदुगे ।

दा हा मदरसला बहुमज्झगविजयबहुमज्झे ५६३

हेमाजुनतपनीया कमश वैदूर्यरजतहेममया ।

एकद्विकचतुश्चतुर्द्विकैकशतनुगा भवति हि क्रमेण ॥ १६६ ॥

हम । हिमवर्णा अर्जुनवर्णा श्वेतस्वर्ण । तपनीयवर्णा कुक्कुटचूडवि-
स्वर्ण वैदूर्यवर्णा मयूरकूटच्छाशिरस्वर्ण , रजतवर्णा हेममया एते कमश तेषां
पवनानां षणा एकशत द्विगत चतुशत चतु शत द्विशत एकगत
क्रमेण तेषामुत्सेधा भवति ॥ ५६६ ॥

इदानीं हिमवदादिकुलपर्वतानामुपरि स्थितहृदानां नामायाह,—

पउममहापउमा तिगिछा केसरि महादिपुण्डरिया ।

पुठरिया ए दहाआ उवरिं अणुपव्वदायामा ॥५६७॥

पशो महापद्म तिगिंउ केसरि महादिपुठरीक ।

पुंठीकश्च हृदा उपरि अनुपर्वनायामा ॥ १६७ ॥

पदम । पशो महापद्मस्तिगिंउ केसरि महापुंठीक पुंठीक इयेने
हृदान्तेषामुपरि पर्वतानुवर्णायामास्तिष्ठति ॥ ५६७ ॥

अथ तेषां हृदानां व्यासादिक प्रतिपादयन् तत्रार्थावुक्तानां
स्वरूप निरूपयति,—

वासायामोगाढ पणदसदसमहदपव्वदुदयं खु ।

कमलस्सुदओ वासो दोगविय गाहस्स दसभागो ॥५६८॥

व्यम्पायामागाथा पंचदशदशमहतपर्वतोदया खड्डु ।

कमलम्बोदय व्याम द्वावरि गावम्य दशभागौ ॥ १६८ ॥

वासा । तेषां हृदानां व्यासायामागाथा यथास्वरूपे पंचगुणिदशगुणित-
हृदामभागहनननन्वर्षत इया १०० २०० ४०० ४००।२००।१०० सत्तु ।
व्या ५०० आ १० ० वे १० तत्रस्थकमलस्यादयध्यासा तु द्वावरि
तत्रस्थदाना गाय त्रयभागं ज्ञानस्थो । ८

ननुद्वीपे एक इपुकृतपूर्वापरचापद्वीपद्विके ।

द्वौ द्वौ मद्रशैली बहुमन्यगविनयबहुमन्ये ॥ १६३ ॥

जबू । जबूद्वीपे एको मद्र इक्ष्वाकारपर्वतकृतपूर्वापरचापद्वीपद्विके द्वौ द्वौ मद्रशैली । तत्रापि ते मद्रा क तिष्ठति ? भरतादिदेशानामतिशयेन मव्यस्थितो विजय देश इत्यर्थं तस्यात्यतमध्यप्रदेशे तिष्ठति ॥ ५६३ ॥

अथ तेषां मद्राणां मुमयपाश्वस्थितक्षेत्राणां नामानि कथयति;—

दक्षिणदिशासु भरहो हेमवदो हरिविदेहरम्मो य ।

हहरणवदेरावदवस्ता कुलपन्वयतरिया ॥ ५६४ ॥

दक्षिणदिशासु भरतो हेमवत हरिविदेहरम्यश्च ।

हैरण्यवदेरावतवर्षा कुटपर्वतानरिता ॥ ५६४ ॥

दक्षिण । तेषां मद्राणां दक्षिणदिशाया आरभ्य भरत हेमवत हरिविदेह रम्यक हैरण्यवत ऐरावत इत्येते वर्षा हिमवदादिकुटपर्वतानरिता ॥ ५६४ ॥

अथ तेषां पर्वतानां नामादिकं गाथाद्वयेनाह,—

हिमव महादिहिमव णिसहो णीलो य रुम्मि सिहरी य
मूलोपरि समवासा मणिपासा जलणिहिं पुट्टा ॥ ५६५ ॥

हिमवान् महादिहिमवान् निषध नीलश्च रुक्मी शिखरी च ।

मूलोपरि समन्यासा मणिपार्श्वा जलनिधिं स्पृष्टा ॥ ५६५ ॥

हिमव । हिमवान् महाहिमवान् निषधो नीलश्च रुक्मी शिखरी च, एते सर्व मूलोपरि समानव्यासा मणिपार्श्वार्वा जलनिधिं स्पृष्टा ॥ ५६५ ॥

हेमज्जुणतपर्णीया कमसो वेलुरियरजद्हेममया ।

इगिदुगचउचउदुगइगिमयतुंगा हाति हु कमेण ॥ ५६६ ॥

हेमोर्जुनतपनीया क्रमश वैदूर्यरजतहेममया ।

एकद्विकचतुश्चतुर्द्विकैकशतनुगा भवति हि क्रमेण ॥ ५६६ ॥

एतम् । हिमवर्णं अर्जुनवर्णं श्वेत इत्यर्थम् । तपनीयवर्णं कुकटचूडतविरि-
त्यर्थं वैदूर्यवर्णं मयूरकठच्छविः इत्यर्थं, रजतवर्णं हेममय एते क्रमश तेषां
पर्वतानां षणा एकशतं द्विशतं चतुःशतं चतुःशतं द्विशतं एकशतं
क्रमेण तेषामुत्सेधा भवति ॥ ५६६ ॥

इदानीं हिमवदादिकुटपर्वतानामुपरि स्थितहृदानां नामायाह,—

पटममहापटमा तिगिंछा केसरि महादिपुण्डरिया ।

पुण्डरिया य दहाओ उवरिं अणुपवदायामा ॥५६७॥

पटो महापट्म तिगिंछ केसरि महादिपुण्डरीक ।

पुण्डरीकश्च हृदा उपरि अनुपर्वनायामा ॥ ५६७ ॥

पटम । पटो महापट्मस्तिगिंछ केसरि महापुंरीक पुण्डरीक इयेते
हृदास्तेषामुपरि पर्वतानुवत्यायामास्तिष्ठति ॥ ५६७ ॥

अथ तेषां हृदानां ध्यासादिकं प्रतिपादयन् तत्रस्थानुजानां
स्वरूपं निरूपयति,—

वासायामोगाढ पणदसदसमहदपञ्चदुदयं तु ।

कमलस्सुदओ वासो द्वाविंश गाहस्त दसभागो ॥५६८॥

व्यामायामागाथा पञ्चदशदशमहतपर्वतोदया खलु ।

कमलस्योदय व्याम द्वाविंश गाधस्य दशभागौ ॥ ५६८ ॥

वासा । तेषां हृदानां ध्यासायामागाथा यथासुर्यं पञ्चगुणितवृक्षगुणित-
दशमभागहनतत्तत्पर्वतोदया १००।२००।४००।८००।२००।१०० खलु ।
व्या ५००=आ १००० य १० तत्रस्यकमलस्योदयध्यासो तु द्वाविं-
शतदशानां गाधदशमभागौ ज्ञानव्यौ ॥ ५६८ ॥

कमल वीर कवच नरे वि म नरका म । प्रदीपक
मिथिले प्रवृत्ति इतिमे व दृष्टिगति, मयिमादसुगन्धप्रदुर्द ।
वृक्ष, समदृष्टमवृत्ते नाद्वि विप्रतिपत्ति नैव दृष्टम न ॥ ४३९ ॥

विना। साधिगतिं वेद मति। मयिपव । ॥ ॥
एव एवामव । वे नर वेदा । ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

मिथिले । वे प्रदीप वेनादुर्ध । ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
व्यदृष्टे नर वेद । ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
मयि । ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

दृष्टम इति मयि वेद । मयि । वेनादुर्ध । ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
इतिमे मी वाद । ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

कमलवृत् । मयि । वेनादुर्ध । मयि । वेनादुर्ध । मयि । वेनादुर्ध ।
मिथिले मयि । मयि । वेनादुर्ध । मयि । वेनादुर्ध । मयि । वेनादुर्ध ।

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

कमल । ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अथ तन्निवाहिनीनां दधीनां नामानि तासो स्थितिपूर्वकं तत्परिवारं
चाह —

सिरिहिरिधिदिक्किर्त्तवि ष बुद्धीलच्छी ष पद्मठिदिगाओ
लक्ष्म चत्तसहस्रस सयदहपण पञ्चमपरिवारा ॥ ५७२ ॥

श्री ह्रीं श्रुति कीर्त्त अपि ष बुद्धि लक्ष्मी ष पद्मस्थितिका ।

लक्ष्म चत्वारिंशत्सहस्राणि शतं दश पञ्चप्रमाणानि कमलस्य परिवारपद्मानि ॥ ५७२ ॥

सिरि । श्रीह्रींश्रुतिकीर्त्तबुद्धिलक्ष्म्याख्या दक्ष्यं पद्मस्थितिका एक
लक्षं चत्वारिंशत्सहस्राणि शतं दश पञ्चप्रमाणानि कमलस्य परिवारपद्मानि
१४०११५ ॥ ५७२ ॥

अथ परिवारकमलस्थितं श्रीदिवीनां परिवारं गार्धचतुष्टयनाह,—

आइच्चचदजदुपहुदीओ तिप्परीसमग्गिजमणिरुदी ।
बत्तीसताल अड्ढाल सहस्सा कमलममरसम ॥ ५७३ ॥

आन्तिपचद्रननुप्रभृत्तय त्रिपाविदा अमियमनैर्कत्त्या ।

द्वात्रिंशन् चत्वारिंशन् अष्टचत्वारिंशत्सहस्राणि कमलानि अमरसमानि ।

आइच्च । आदित्यचद्रजतुप्रभृत्तयस्य परिवर्द्धवा क्रमेणाप्रियमनैर्कत्त्या
दिशि तिष्ठति तेषां सख्या द्वात्रिंशत्सहस्राणि चत्वारिंशत्सहस्राणि अष्टचत्वा
रिंशत्सहस्राणि भवति कमलानि अमरसमानि ॥ ५७३ ॥

आणीयगेहकमला पच्छिमदिसि सग मयस्सरहवसहा ॥
गधवणञ्चपत्ती पत्तेय दुगुणसत्तककखजुवा ॥ ५७४ ॥

आनीकगल्कमलानि पश्चिमदिशि सप्त गजेश्वरपत्रपथा ।

गधवनत्यपत्तय प्रत्येक द्विगणममकक्षयता ॥ ५७४ ॥

आणीय । आनीकत्वाना गल्कम । त्रि सप्त पश्चिमाया ि नि सति ते

अथ तेषु सरस्वतेषु समुत्पन्नमहानदीनां संज्ञा गण्यादयेनाह,—

सरजा गगासिंधु रोहि तहा रोहिदास णाम णदी ।
हरि हरिकता सीदा सीदोदा णारि णरफता ॥ ५७८ ॥

सरोना गगाभिधु रोहितया रोहितास्या नाम नदी ।

हरिन् हरिराना सीता सीतोदा नारी नरकाता ॥ ५७८ ॥

सरजा । सरसि जाता गगासिंधु रोहितया रोहितास्या नामा नदी
हरिहरिकता सीता सातोदा नारी नरकाता ॥ ५७८ ॥

सरिदा सुवण्णरूप्यकूला रत्ता तथैव रत्तोदा ।

पुष्पावरेण कमसो णाभिगिरिपदक्षणेण गया ॥ ५७९ ॥

सरित सुवर्णरूप्यकूला रत्ता तथैव रत्तोदा ।

पूर्वापरेण कमसो णाभिगिरिप्रदक्षिणेन गता ॥ ५७९ ॥

सरिदा । सुवर्णकूला रूप्यकूला रत्ता तथैव रत्तोदा । एता सरित कमसा
पूषता पूर्वमुखेनापरोक्ता अपरमुखेन नाभिगिरिप्रदक्षिणेन गता ॥ ५७९ ॥

अथ तासां नदीनां उभयतटस्वरूपं कथयति,—

पुण्णागणागपूगीककेलितमालकेलितचूली ।

लवलीलवगमह्वीपहुदी सयलणदिदुतटेसु ॥ ५८० ॥

पुनागनागपूगीककेलितमालकदलीनाचूली ।

लवलीलवगमह्वीप्रभृतय सकलनदीद्वितयेषु ॥ ५८० ॥

पुण्णाग । पुनाग नागकेसर पूगी ककेलि तमाल कदली ताचूली
लवली लवग मह्वीप्रभृतयो वृथा सकलनदीद्वितयेषु संति ॥ ५८० ॥

अथ कस्मिन् कस्मिन् सरस्येता नद्य उत्पन्ना इति कथयति,—

गगाद् रोहिदस्ता पउमे रत्तद् सुवण्णमतद्दहे ।

सेसे दो हो जोषणदलमतदिदूण णामिगिरिं ॥ ५८१ ॥

आनीडा मत्राशास्त्रादुपमांभर्तुणागशास्य इति मन्त्रि प्रत्यङ्क दक्षप्रमाण
सामानिदमम १००० प्रथमानीडात् दिग्गुणगुणमसदक्षप्रमाण ॥ ५५४ ॥

उत्तरदिशि काणदुगे सामाणियकमल चद्रुमहम्ममदो ।
अम्भतर दिश पठि पुह तेत्तियमंगरफगपागाद् ॥ ५५५ ॥

उत्तरदिशि कोणदिशि सामानिदममनि चतु महगमन ।

अम्भतरे दिश प्रति पृषक् तावन्मात्रगम्भप्रामाण ॥ ५५६ ॥

उत्तर । उत्तरदिग्भागभित्तकोण द्वये सामानिदमद्वानां कमगनि चतु
सहस्राणि सन्ति अतो म्यंतरे प्रतिदिशि पृषक् पृषक् तावन्मात्रां १०००
गरक्षशसाश स्यु ॥ ५५५ ॥

अम्भतरदिशि विदिमे पठिहारमहत्तरदृमयकमल ।

मणिदलजलसमणाल परिवार पउममाणन्द ॥ ५५६ ॥

अम्भतरदिशि विदिशि प्रतिहारमहत्तराणामष्टशतकमलानि ।

मणिदलजलसमणाल परिवार पञ्चमानार्धम् ॥ ५५६ ॥

अम्भतर । तेभ्य अम्भतरदिशि १४ विदिशि च १३ प्रत्यङ्कमेव सन्ति
प्रतिहारमहत्तराणामष्टोत्तरशतकमलानि मणिमयदलानि जलोसघसमनानि
सन्ति परिवारपञ्चविशेषस्वरूप सर्व मुख्यपञ्चप्रमाणार्धं स्यात् ॥ ५५६ ॥

सिरिगिहदलमिदरगिहसोहाम्मिदम्स सिरिहिरिधिदीओ

किती बुद्धी लच्छी ईसाणहिवस्स देवीओ ॥ ५५७ ॥

श्रीमहदलमितरगृह सौधमेद्रम्य श्रीहीधृतय ।

कीर्तिबुद्धिलक्ष्म्य ईशानाधिपम्य देव्य ॥ ५५७ ॥

सिरि । श्रीगृहयासादिप्रमाणार्ध इतरगृहव्यासादिप्रमाण स्यात् ।

श्रीहीधृतय सौधमेद्रस्य देव्य कीर्तिबुद्धिलक्ष्म्य ईशानाधिपस्य
देव्य स्यु ॥ ५५७ ॥

अथ तेषु सरयोषु समुत्पन्नमतानर्दीनी संज्ञा गद्यादयनाह,—

सरजा गगासिंधू रोहि तद्वा रोहिदास णाम णदी ।

हरि हरिकता सीदा सीदोदा णारि णरकतर ॥ ५७८ ॥

सरोजा गंगामिधू रोहितया रोहितास्या नाम नदी ।

हरिर् हरिकाता सीता सीतोदा नारी नरकता ॥ ५७८ ॥

सरजा । सरसि जाता गगासिंधू रोहितया रोहितास्या नामा नदी
हरिद्विकता सीता सीतोदा नारी नरकता ॥ ५७८ ॥

सरिदा सुवण्णरूप्यकूला रत्ता तथैव रत्तोदा ।

पुष्यावरेण कमसो णाभिगिरिपदक्खणेण गया ॥ ५७९ ॥

सरित सुवण्णरूप्यकूला रत्ता तथैव रत्तोदा ।

पूर्वावरेण कमसो नाभिगिरिप्रदक्षिणेन गता ॥ ५७९ ॥

सरिदा । सुवण्णकूला रूप्यकूला रत्ता तथैव रत्तोदा । एता सरित कमसा
पूर्वात्ता पूर्वमुखेनापरोक्ता अपरमुखेन नाभिगिरिप्रदक्षिणेन गता ॥ ५७९ ॥

अथ तासां नदीनां उदयनगररूप कथयति,—

पुण्णागणागपूगीककेहितमालकेलितवूली ।

लवलीलवगमलीप्रभूनय सक्कनदादित्तणेषु ॥ ५८० ॥

पुनागनागपूगीककेहितमालकदलीतावूली ।

लवलीलवगमलीप्रभूनय सक्कनदादित्तणेषु ॥ ५८० ॥

पुण्णाग । पुनाग नामकेसरा पूगी ककेहि' तथा' कदली तावूली
लवली लवग' मलीप्रभूनयो वृथा सक्कनदीदित्तणेषु संति ॥ ५८० ॥

अथ कस्मिन् कस्मिन् सरस्येना नद्य उदयना इति कथयति,—

गगाद्दु राहिदस्ता पउमे रत्तद्दु सुवण्णमतदहे ।

सेसे दो द्दो जापणदलमतदिदूण णाभिगिरिं ॥ ५८१ ॥

उम्मगणनिमगणणी गुहमग्गणुं हता दू सुधयणे ।
जोषणदुग्गणीहाआ पुग्गणि उमपंतदा गमं ॥ ५१३ ॥

उमगणनिमगणणी गुहमग्गणुं जे तु पुग्गणग्गणप ।

गोतनदुग्गणी शृणा उमगण गगण ॥ ५१३ ॥

उम्मगण । उम्मगणनिमगणणी गुहमग्गणुं हता दू सुधयणे
गंता वाजनदुग्गणी मग्गी गणी शृणुण ॥ ५१३ ॥

णियजलपयाहपडिद् दय्य गुग्गमपि णडि उयणि तटं ।
जग्हा तग्हा मण्णदि उम्मगणा वाहिणी एसा ॥ ५१४ ॥

निजजउमगणवणि द्रय्य गुग्गमपि नयनि उयि तट् ।

यग्मा तग्मा मण्ण उमगणा वाहिणी एसा ॥ ५१४ ॥

णिय । निजजउमगणवणि गुग्गमपि द्रय्य यग्मादुपरि तटं नयनि
तग्माग्हा उमगणावाहिणीति मण्णन ॥ ५१४ ॥

णियजलमरउयरि गद् दय्य लहुगपि णेडि हिट्टमि ।
जेण्ण तण्ण मण्णदि एसा सरिया णिमग्गति ॥ ५१५ ॥

निजजउमगणवणि गत द्रय्य लपुकमपि नयनि भयमन ।

येन तन मण्णने एसा सरिन् निमग्गा इति ॥ ५१५ ॥

णिय । निजजलमरउयरि गत लपुकमाप द्रय्यमधस्त भयति येन
तनेषा मग्गिनिमग्गात् मण्णन । ५ ॥

तत्ता दग्गिणभरहम्मस्सु गतूण पुग्गदिसग्गणा ।
मागहदाग्गतरदा लणमग्गुद्द पविट्टा सा ॥ ५१६ ॥

तत्ता दग्गिणभरहम्मस्याग्ग गत्वा पुग्गदिसाग्गणा ।

मागहदाग्गतरदा लणमग्गुद्द पविट्टा सा ॥ ५१६ ॥

ततो । ततो गुहाया निर्गत्य दक्षिणभरतस्यार्धे ११९ भा ३६ गत्या ।
एतावत्कृष्या भरतप्रमाणे ५०६१५ विजयार्धध्यासं ५० स्वकृत्वा ४७६१५
दक्षिणभरतार्धे २३८११ एकभरतस्य प्रमाण । एकस्मिन् पुनरर्धे ११९३६
समुद्रं प्रविष्टा ॥ ५९६ ॥

इदानीं सिंधुनदीस्वरूपं निरूपयति,—

गंगासमा सिंधुणदी अवरमुहा सिंधुकूटविणिविषा ।
रतिमिसगुहादवरबुद्धिमिया प्रमासकसदारादो ॥ ५९७ ॥

गंगासमा सिंधुनदी अपरमुखा सिंधुकूटविणिवृत्ता ।
निमिस्त्रागुहादपरानुधिमिता प्रमासाल्यद्वारात् ॥ ५९७ ॥

गम । गंगाया या वर्जनीता तत्समा सिंधुनदी । अयं विशेष । इदं
स्वप्रादिगभिमुसा सिंधुकूटादिनिवृत्त्य तमिस्त्रगुहा प्रविश्य ततोवि निगत्य
प्रमासात्पश्चात् अपरानुधिमिता । शेषं सर्वं गंगावर्षगतव्यम् ॥ ५९७ ॥

अथ शेषनदीनां स्वरूपमाह,—

सेसा रूप्यता वहविश्वारुणचलरुंददलमुपरि ।
गतूण इक्षितपुत्तरमणुपुष्टा पुष्पवरजलहि ॥ ५९८ ॥
शेषा रूप्यता हृदविस्तारोनावलरुंददलमुपरि ।
गत्या दक्षिणोत्तरमनुष्टा प्रापरमलधिष ॥ ५९८ ॥

सेसा । शेषा रोहिदाया रूप्यकृतीता न० । षडीयावकीयवशी
५००।२०००।२ ००।१०००।१०००दि २ अष्ट ८ द्वाविंशत् ३२४
३२ अष्ट ८ दिक्षामि ९ हिमप्रवादिगलाकाभिर्भरतशेषप्रमाणे
मुजिते सति हिमप्रवादिपर्यतानां विस्तार इत्यात् । हिम १०५२३
५२१०२ । निय १९८४२११ नीह १९८४२११ रविम ४

शित्त १०५२१^३ एतस्मिन्नचलदंन्द्रे न्यूनयित्वा ५५२१^३।३२१०^३
 १४८४२^३।१४८४०^३।३२१०^३।५५२१^३ अर्थाङ्कतप्रमाण द्विम
 २७६१^३ महा १६०५^३ निय ७४२१^३ नील ७४२१^३ रुक्मि
 १६०५^३ शिसरि २७२१^३ तत्त्ववर्तस्योपरि दक्षिणोत्तरामिमुख गत्वा
 अनु पश्चात्पूर्वापरजलधिं स्पृष्टा ॥ ५९८ ॥

अथ रक्तारक्तोदादीना प्रणालिकादिप्रमाणमाह,—

गगादुग व रक्तारक्तोदा जिब्मियादिया सञ्चे ।

सैसाण पि य णेया तेवि विदेहोत्ति दुगुणक्रमा ॥५९९॥

गगाद्विक व रक्तारक्तोदा जिहिकादिका सर्वे ।

शेषाणामपि च ज्ञेया तेवि विदेहात द्विगुणक्रमा ॥ ५९९ ॥

गगा । गगाद्विकमिव रक्तारक्तोदयोर्जिहिकादिप्रमाणविशेषा सर्वे
 शेषनदीनामपि वातप्रणालिकादयः सर्वपि विदेहपर्यन्त द्विगुणक्रमा
 ज्ञेया ॥ ५९९ ॥

अथ तासा नदीना विस्तारमाह,—

गगदु रत्तदु वासा सपादछण्णिगगमे विदेहोत्ति ।

दुगुणा दसगुणमते गाहो वित्थार पण्णसो ॥ ६०० ॥

गगाद्वयो रक्ताद्वयो व्यासा सपादपद् निर्गमे विदेहातम् ।

द्विगुणा दशगुणा अने गाघ विस्तार पचाशदश ॥ ६०० ॥

गगदु । गगाद्विकरक्ताद्विकयोर्द्विनिर्गमव्यासा सपादपद्द्वयोरनानि
 ६३ अन्यासां नदीना निगमव्यासा विदेहपर्यन्त द्विगुणक्रमा स्युः । सर्वासां
 नदीनामते समुद्रप्रवेशे व्यासा दशगुणा सर्वासां गाघस्तत्तद्विस्तारपचाश-
 वश स्यात् ॥ ६०० ॥

अथ तासां नदीनां तोरणस्वरूप गाथाद्वयेनाह,—

णदिणिग्गमे पचेसे कुडे अण्णत्थ चावि तोरणय ।

विचजुद उवरिं तु दिक्कण्णावाससयुत्त ॥ ६०१ ॥

नदीनिर्गमे प्रवेशे कुडे अन्यत्र चापि तोरणम् ।

विचयुत उपरि तु दिक्कणावाससयुक्तम् ॥ ६०१ ॥

णदि । नदीनिर्गमे प्रवेशे कुडे अयत्रापि च उपरि त्रिनविचयुतं
दिक्कणावाससयुक्तं तोरणमस्ति ॥ ५०१ ॥

तत्तोराणावित्थारो सगसगणदिवाससरिसगो उदओ ।

घासाहु दिवहुगुणो सब्बत्थ दल हवे गाहो ॥ ६०२ ॥

तत्तोराणाविस्तार स्वस्वकनदी वाससत्तेश्च उदय ।

घासात् द्व्यङ्गुण्य सर्वत्र दल भवेत् गात्र ६०२ ॥

तत्तोराण । तत्तोराणां विस्तार स्वकीयस्वकीयनशाब्दात् ६३ सदृश,
उदयस्तु घासात् द्वितीयार्थे ३ गुण्य ९ ३ । सर्वत्र तोराणां गात्र अर्थ
योजनप्रमितं भवेत् ॥ ६०२ ॥

अथ पूर्वान्त्यपर्यधरपञ्चतानां विस्तारानयने करणसूत्रमाह,—

विजयकुलही दुगुणा उभयतादो विदेहवस्सोत्ति ।

गुणपिण्डीवसगगुणमारो हु पमाणफलइच्छा ॥ ६०३ ॥

विजयकुलाद्रय द्विगुणा उभयातत विदेहवर्षा १ ।

गुणपिण्डीवस्वङ्गुणमारो हि प्रमाणफलच्छा ॥ ६०३ ॥

विजय । विजया दशा ६ वर्षं कुलाद्रयश्च उभयातत विदेहवर्षत
द्विगुणाद्विगुणा भवति गुणकारपिण्डी १९० द्वीप १० ०० स्वकीयस्वकी
यगुणकारा मर १ हिम २ हेम ५ यथासत्य प्रमाणफलच्छा तदु ।
अनेन त्रैतारिकेन तत्र क्षेत्रपञ्चतानां विस्तार आनेतव्य ॥ ६०३ ॥

महाभारत विद्यासंग्रहः । पञ्चमस्कन्धः ।

महाभारत विद्यासंग्रहः । पञ्चमस्कन्धः । पञ्चमस्कन्धः ।

पञ्चमस्कन्धः । पञ्चमस्कन्धः । पञ्चमस्कन्धः ॥ ६०४ ॥

पञ्चमस्कन्धः । पञ्चमस्कन्धः । पञ्चमस्कन्धः ।

पञ्चमस्कन्धः । पञ्चमस्कन्धः । पञ्चमस्कन्धः ॥ ६०५ ॥

महाभारत विद्यासंग्रहः । पञ्चमस्कन्धः । पञ्चमस्कन्धः ।
महाभारत विद्यासंग्रहः । पञ्चमस्कन्धः । पञ्चमस्कन्धः ।
महाभारत विद्यासंग्रहः । पञ्चमस्कन्धः । पञ्चमस्कन्धः ।

महाभारत विद्यासंग्रहः । पञ्चमस्कन्धः । पञ्चमस्कन्धः ।
महाभारत विद्यासंग्रहः । पञ्चमस्कन्धः । पञ्चमस्कन्धः ।

शुद्धमीदि उत्तमगिा पचारि कला विद्वहयिस्ममा ।

णदिहीणदुल विद्याया यक्यारयिभंगयणदीहा ॥ ६०५ ॥

पञ्चमस्कन्धः । पञ्चमस्कन्धः । पञ्चमस्कन्धः ।

पञ्चमस्कन्धः । पञ्चमस्कन्धः । पञ्चमस्कन्धः ॥ ० ॥

महाभारत विद्यासंग्रहः । पञ्चमस्कन्धः । पञ्चमस्कन्धः ।
महाभारत विद्यासंग्रहः । पञ्चमस्कन्धः । पञ्चमस्कन्धः ।
महाभारत विद्यासंग्रहः । पञ्चमस्कन्धः । पञ्चमस्कन्धः ।

महाभारत विद्यासंग्रहः । पञ्चमस्कन्धः । पञ्चमस्कन्धः ।

मरु विद्वहमज्झ णवणउदिहकजायणसहस्सा ।

उदय भमुहयाम उवकुरग्गिगवणचउकजुडा ॥ ६०६ ॥

महाभारत विद्यासंग्रहः । पञ्चमस्कन्धः । पञ्चमस्कन्धः ।

महाभारत विद्यासंग्रहः । पञ्चमस्कन्धः । पञ्चमस्कन्धः ॥ ० ॥

नरतिथरलोकाधिकार ।

१४९

मेरु । विश्वेहस्य मध्यप्रदेशे मेरुरस्ति, तस्याद्यभूमुस-यासा यथासरय
नवनवतिसहस्र ९९००० दशसहस्र १०००० एकसहस्र १००० योजना
नि स्फु । स च पुनरपयुपरि कणयगतवनचतुष्कयुत ॥ ६०६ ॥

इदानीं वनचतुष्कस्य सज्ञा तदतराल च प्रतिपादयति;—

सु भद्रशाह साणुग णदणसोमणसपांडुक च वण ।
इगिपणघणयावत्तरिहृदपचसयाणि गतूण ॥ ६०७ ॥

मुवि भद्रशाह साणुग नदनसोमनमपांडुक च वनम् ।

एक पचघनद्वाससतिहृत्पचशतानि गत्वा ॥ ६०७ ॥

भूमद् । भूर्गत वन भद्रशाहाराव्य साणुवयगतानि यथासरय नदनसो
मनसपांडुकाख्यवनानि, तानि एक १ पचघन १२५ द्वाससति ७२ हत
पचशतयोजनानि ५००।६२५०।३६०००। गत्वा गत्वा तिष्ठति ॥ ६०७ ॥

अथ तदनस्यवस्थानात्,—

मदारचूदचपयचदणघणसारमोचचोचेहिं ।
तबूलिपूगजादीपहुदीसुरतराहि कयसोह ॥ ६०८ ॥

मदारचूतचपकचदनघनसारमाचचानै ।

ताबूलीपूगजातिप्रभनिसुरतराभि कृतशोभानि ॥ ६०८ ॥

मदार । मदारचूतचपकचदनघनसारमाचचोच ताबूलीपूगजातिप्रभ
तिभि सुरतराभिश्च कृतशोभानि तानि वनानि ॥ ६०८ ॥

साधनमिनरमन्त्राणां यवधाननिरूपण-याजना सध कथयति —

पणसय पणसयसहिय पणघणसहस्मय सहस्सार्ण ।
अदायीसिहराण सहस्मगाट न मरूण ॥ ६०९ ॥

सौमनसद्विके वज्र वज्रादिप्रम सुवर्णं तत्प्रम ।

लोहिताजनहारिद्रपाडुरा दलितलमाना ॥ ६२० ॥

सोमण । सौमनसपांडुक्योयथासत्य चवारि चत्वारि वृत्तमवना
मानि । तानि कानि ? वज्रवज्रप्रमसुवर्णसुवर्णप्रमनामानि लोहिताजनहारि
द्रपाडुरनामानि । ननोक्तोदययासादर्धतर्धप्रमाणानि ॥ ६२० ॥

अथ तद्भवनाधिपत्यं तद्वनिताश्वाह,—

तद्भवणवदा सोमो यमवरुणकुवेरलोपवालयसा ।

पुव्वादी तेसि पुह गिरिकण्णा सान्द्रकोडितिय ॥ ६२१ ॥

तद्भवनपतय सोम यमवरुणकुवेरा लोकपालन्या ।

पूर्वादिषु तेषा पृथक् गिरिकन्यका सार्धकोटिप्रयम् ॥ ६२१ ॥

तद्भवण । तद्भवनाधिपतय सोमयमवरुणकुवेरारया सौधर्मस्य लोक
पाला पूर्वादिदिशु तिष्ठति । तेषा पृथक् पृथक् सार्धकोटिप्रयगिरि
कन्यका भवति ॥ ६२१ ॥

अथ तेषामायुष्यादिहमाह,—

सोमदु वरुणदुगाऊ सदलदु पहत्तय च देसूण ।

ते रत्तकिण्हकचणसिदणेवत्थक्रिया कमसो ॥ ६२२ ॥

सोमद्वयो वरुणद्विकायु सदद्वि पत्यत्रय च देशोनम् ।

ते रत्तकृष्णकाचनमितनेपयथाकिता क्रमश ॥ ६२२ ॥

सोम । सोमयमयोवरुणकुवेरयोभ्रायुयथासत्य अर्षसाहितद्विपत्यं
देशोनपयत्रय च स्यात् । सोमाद्वयो रत्तकृष्णकाचनसितवर्णालंकारा
दिता क्रमश ॥ ६२२ ॥

अथ तेषां कल्पविमानमवधित्वमाह,—

ते य सयपहरिद्रजलप्पहयग्गुप्पहा विमाणीसा ।

कप्पे तु लोपवाला पहूणो पहूसययिमाणानं ॥ ६२३ ॥

ते च स्वर्गधीतुः प्रथमम्प्रथा विमानेण ।

वस्त्रेषु लाङ्घना प्रथमं दत्तानविमानानाम् ॥ ६२३ ॥

त य । त च लोभमाय ल कपाला इत्ये स्वयम्भारिष्टमहप्रथमं गुपथा विमानेण । पुनश्च दत्तान ६६६६६ विमानानामधितप ॥ ६२३ ॥

अथ न, नवनगरवर्तनं सशरिहरमाह,—

बलमद्वेषामकृष्टे णद्वेषो मेरुपट्वदीमाणे ।

उदयमहिषमयद्वेषो तपणामो वेंतरो यसई ॥ ६२४ ॥

बलभद्रनामकृष्टे मंदनगे मेरुवर्तनेणायह ।

उदयमहीकगतत्त्व हसामा यनरो वसति ॥ ६२४ ॥

बलमद्व । मेरुपट्वनेणान्वा दिशि नन्दनये दानोदयगतभूष्यासे तद्द टावद्वेषमद्वेषामकृष्टे बलभद्रनामा इवना वसति ॥ ६२४ ॥

अथ नन्दनवनम्यवसतीनामुभयपार्श्वस्थकृगादीन् गाथात्रयेणाह,—

णद्वेष मदर निषध हिमवान् रजतश्च रजयसायरया ।

वजा घटा कमसो णद्वेषवसईण पासदुगे ॥ ६२५ ॥

नदना मदर निषध हिमवान् रजतश्च रजयसायरया ।

वज्र कृग कमसा नदनवसतीना पार्श्वद्विके ॥ ६२५ ॥

णद्वेष । नदनो मदरो निषधो हिमवान् रजतश्च इत्यह सागरो वज्राख्या एते कृग कमसो नन्दनवसतीनामुभयपार्श्व निधति ॥ ६२५ ॥

हेममया तुगधरा पचसय तद्वल मुहस्स पमा ।

सिद्धिरगिह दिक्कण्णा वसति तासिं च णाममिण ॥ ६२६ ॥

हममया तुगधरा पचनर्त तद्वर्त मुहस्स प्रमा ।

निग्वरगृहे दिक्कया वसति तामा च नावानीमानि ॥ ६२६ ॥

हममया । ते हृता इममया । तेवामद्वयमूत्याना प्रथक पंचशब्द
जनानि तत्र २५० मुमय्यागप्रमाण तयो गिमगुम्पु दिङ्गया वमनि ।
तासां चमानि नामान्यथ वक्ष्यमाणानि ॥ ६२२ ॥

मेहकरमेहयदी सुमेहमहादिमालिणी ततो ।

तोयधरा विचित्रा पुष्पादिममालिणिदिङ्गया ॥ ६२३ ॥

मेघररा मेररती सुमेया मेयादिमाडिनी तत ।

तोयधरा विचित्रा पुष्पादिममाला अनिदिङ्गया ॥ ६२७ ॥

मेहकर । मेघररा मेघवती सुमया मेघमालिनी ततस्तोयधरा विचित्रा
पुष्पमाला अनिदिङ्गया स्यु ॥ ६२७ ॥

अथ नदनवापीस्वरूप गाथाप्रयेणाह,—

अग्निदिसादोचउचउउप्पलगुम्मायणलिणित्पलिया
वावीओ उप्पलुज्जल भिंगा छट्ठी दु भिंगणिमा ॥६२८॥

अग्निदिश चतस्र चतस्र उत्पल्लगुल्मा च नलिनी उत्पलिका ।

वाप्य उत्पल्लोज्जल भृगा षष्ठी तु भृगनिमा ॥ ६२८ ॥

अग्नि । अग्निदिश आरभ्य चतस्रश्चतस्रो वाप्य सति । तासां नामानि
उत्पल्लगुल्मा नलिनी उत्पल । उत्पल्लोज्जला भृगा षष्ठी तु भृगनिमा ॥ ६२८ ॥

कज्जल कज्जलपह सिरिभूदा सिरिकदसिरिजुदा महिदा ।
सिरिणिलयणलिणि णलिणादिमगुम्भिय कुमुदकुमुदपहा

कज्जल कज्जलप्रभा श्रीभूता श्रीकाता श्रायुता महिता ।

श्रानिडया नलिनी नलिनादिमगुल्मी कुमुदा कुमुदप्रमा ॥६२९ ॥

कज्जल । कज्जला कज्जलप्रभा श्रीभूता श्रीकाता श्रीमहिता श्रीनिलया
नलिनी नलिनगुम्भी कुमुदा कुमुदप्रभेति नामानि ॥ ६२९ ॥

मणितोरणरवणुम्मयसोवाणा हसमारजतजुदा ।

पण्णदलदीहयासो दसगाढो सोलवापीओ ॥ ६३० ॥

मणितोरणरवणोद्भवसन्धाना हसमयुग्मश्रयुता ।

पण्णदलदीहयासा दगागावा रोदशावाप्य ॥ ६३० ॥

मणि । ता रोदशावापो मणिपरणरवणोद्भवसोवाणा हसमयुरयंत्र

युता पण्णदलदीहयासा दगागाजनावगाथा म्पु ॥ ६३० ॥

अथ त-व्यायशासादावक्यं गथाद्द्वयेनाह,—

दक्षिणउत्तरवापीमज्जे सोहम्मजुगलपासादा ।

पणघणदलचरणुच्छयवामा दलगाढचउरस्ता ॥ ६३१ ॥

दक्षिणोत्तरवापीमध्ये सौधमयुगलप्रामादा ।

पचपनदलचरणोच्छ्रय-यासा दलगाढचतुरया ॥ ६३१ ॥

दक्षिण । उत्तरवे १ वा दक्षिणोत्तरवापीमध्ये सौधमैशानयो यासादा

पचपन १ ५ दल ६ १ पचपनचतुष्पाणी ३१; उच्छ्रय-यासा अर्धयो

जनगाथा चतुरया सति ॥ १ ॥

सोचिदहाणामिदपरिवारणिदा ठिणा मपासादे ।

सध्वमिण कहियच्च मामणमवणावि मविमस ॥ ६३२ ॥

स्वाचनम्य ना।मनपारवारण रद्द ।मन म्वप्रमा ।

मशाम् कवि य मामनमवनाय मवशाय ॥ ६३२ ॥

सोचिदः । मधममम य मव व चतुष्पाणी ३ ३१३ ण मर स्वया

मा ॥ अहात । सामनमवनाय मवाम ५ ३ ३ १ ५ १५ यम ॥ १ ॥

अनत मफाशभागमयाना । १ १५ ना म १ १५ चणयान —

पांडुकपाटुकचलरत्ता तह रत्तइधलकर मिला ।

इमाणादा कचणरुप्यतधणीयरुहिरणिहा ॥ ६३३ ॥

पादुकपादुकवदरक्ता तथा रक्तमवलास्या शिला ।

ईशानान् काचनरूप्यतपनीयरधिरनिमा ॥ ६३३ ॥

पादुक । ईशानादारम्य यथासत्य काचनरूप्यतपनीयरधिरनिमा
पादुकारयपादुकावलाभ्यरक्तारक्तकवलारया शिला पादुकावने
सति ॥ ६३३ ॥

अथ ता शिला कया सत्रधिन्य कथ तासा विद्यास इत्युक्त आह;—
भरहवरविदेहेरावदपुत्रविदेहाजिणानिबद्धाओ ।

पुत्रवरदक्षिणोत्तरदीहा अधिरथिरभूमिमुहा ॥ ६३४ ॥

भरतापरविदेहेरावनपूर्वविदेहनिनिबद्धा ।

पूर्वापरदक्षिणोत्तरदीर्घा अस्थिरस्थिरभूमिमुक्ता ॥ ६३४ ॥

भरह । ता शिला यथासत्य भरतापरविदेहेरावनपूर्वविदेहाजिननि
बद्धा स्यु । पूर्वापरदक्षिणोत्तरदीर्घा अस्थिरस्थिरभूमिमुक्ता ॥ ६३४ ॥

अथ दृष्टान्तेन तथा शिलातरानामाकृतिं प्रतिपादयन् देध्यमाचष्टे,—
अद्धिदुणिहा मन्त्र सयपण्णासद्वदीहवासुदया ।

आसणतिय तदुपरि जिणसाहम्मद्गुणपटिबद्ध ॥ ६३५ ॥

अत्र निमा मवा शतपचाशष्टदाप्यामोदया ।

भामनत्रय तदुपरि जनमावमद्वयप्रतिबद्ध ॥ ६३५ ॥

आह । ता सत्र अर्वाजना तनपात्रनदाघा पचाशपात्रनद्यासा
अष्टपात्रन ५ १०० तथासदा तिनस ५मद्वयप्रतिबद्धमात्रनत्रय
मन्त्र

अ १ १ १ १ ६५

मन्त्र मिहामण्डलानाम्मन्त्रिणामय नु माहम्म ।
उत्तरमानापाद मन्त्रामणामिह तय इष्ट ॥ ७६ ॥

नीलममीपे सीतापूर्वतटे मदराचलैशान्या ।

उत्तरकुरौ जवूस्यली सपचशततलन्यासा ॥ ६३९ ॥

णील । नीलगिरे समीपे सीतानद्या पूर्वतटे मदराचलस्यैशान्यां दिशि
उत्तरकुरौ पचशतयोजनयासा जवूस्यस्यत्यास्ति ॥ ६३९ ॥

अते दलबाहल्या मज्झे अट्टुदय वट्ट हेममया ।

मज्झे थलिस्स पीठीमुदयतिय अट्टुवारचऊ ॥ ६४० ॥

अने दलबाहल्या मध्ये अष्टोदया वृत्ता हेममया ।

मध्ये स्थल्या पीठमुदयत्रय अष्टद्वादशचतु ॥ ६४० ॥

अते । सा च पुनरते दल २ योजनबाहल्या मध्येऽयोजनोदया वृत्ता
कारा हेममयी स्यात् । तत्स्थलीमध्येऽष्टयोजनोदय द्वादशयोजनमूल्यासं
चतुर्षोऽयोजनमुल्लयास पीठमस्ति ॥ ६४० ॥

तत्थलिउवरिमभागे बाहिं बाहिं पवेठिऊण ठिया ।

कचणवलयसमाणा धारबुजवेदिया णेया ॥ ६४१ ॥

तत्स्थल्युपरिमभागे बहिर्बहि प्रवेष्ट्य स्थिता ।

काचनवट्टयसमाना द्वादशानुजवेदिका ज्ञेया ॥ ६४१ ॥

तत्स्थलि । तत्स्थल्युपरिमभाग बहिर्बहि प्रवेष्ट्य काचनवट्टयसमाना
अधयोजनोत्सधा उत्सधाऽम्नयासा नानारत्नमंकीणा अपुत्रवेदिका
द्वादश ज्ञेया ॥ ६४१ ॥

षडगाउरय वदीबाहिरदा पठमधिदियग सुण्णं ।

तदिए मुरुत्तमाण अट्टुदिमे अट्टुसयरुक्कया ॥ ६४२ ॥

षट्कर्गापुरका वदीबाह्येन प्रथमद्वितीयके शूय ।

तृतीय मुगत्तमाना अष्टदिश मु अष्टशतवृत्ता ॥ ६४२ ॥

सन्तः सन्तः परां पारवाम यावत्परिदु मन्तव ।

मुक्तान्पुत्राणां पारवामां पारवामां पारवामां पारवामां ॥ ३३३ ॥

येन सन्तः परां पारवामां पारवामां पारवामां ॥ ३३३ ॥

पारवामां पारवामां पारवामां पारवामां ॥ ३३३ ॥

सन्तः सन्तः परां पारवामां पारवामां पारवामां पारवामां ॥ ३३३ ॥
 सन्तः सन्तः परां पारवामां पारवामां पारवामां पारवामां ॥ ३३३ ॥
 सन्तः सन्तः परां पारवामां पारवामां पारवामां पारवामां ॥ ३३३ ॥
 सन्तः सन्तः परां पारवामां पारवामां पारवामां पारवामां ॥ ३३३ ॥

द्वलमात्रासमस्यैव जायन्तुगर्भं मुनिविक्रमार्थं ।

पतिष्ये उच्यते तेषु ब्रह्मद्वयमासीत् शत्रुमाहा ॥ ३३४ ॥

द्वलमात्रासमस्यैव जायन्तुगर्भं मुनिविक्रमार्थं ।

पतिष्ये उच्यते तेषु ब्रह्मद्वयमासीत् शत्रुमाहा ॥ ३३४ ॥

द्वलमात्रासमस्यैव जायन्तुगर्भं मुनिविक्रमार्थं ।
 पतिष्ये उच्यते तेषु ब्रह्मद्वयमासीत् शत्रुमाहा ॥ ३३४ ॥
 द्वलमात्रासमस्यैव जायन्तुगर्भं मुनिविक्रमार्थं ।
 पतिष्ये उच्यते तेषु ब्रह्मद्वयमासीत् शत्रुमाहा ॥ ३३४ ॥

पाणास्येषुवमाहा पवात्सुमणा मित्रिमसरिमफला ।

पुत्रविमया त्वनुगा मज्झाग्ग उच्यदुच्यमा ॥ ३३५ ॥

पाणास्येषुवमाहा पवात्सुमणा मित्रिमसरिमफला ।

पुत्रविमया त्वनुगा मज्झाग्ग उच्यदुच्यमा ॥ ३३५ ॥

पाणास्येषुवमाहा पवात्सुमणा मित्रिमसरिमफला ।
 पुत्रविमया त्वनुगा मज्झाग्ग उच्यदुच्यमा ॥ ३३५ ॥
 पाणास्येषुवमाहा पवात्सुमणा मित्रिमसरिमफला ।
 पुत्रविमया त्वनुगा मज्झाग्ग उच्यदुच्यमा ॥ ३३५ ॥

भाग्यमदमगार्थं वासुदेव वासुदेवः ॥ ५३३ ॥
 सुततुगा वासुदेव वासुदेवः ॥ ५३३ ॥
 वेदमदमगार्थं ॥ ५३३ ॥
 सुततुगा वासुदेव ॥ ५३३ ॥

भाग्यमदमगार्थं वासुदेव वासुदेवः ॥ ५३३ ॥
 सुततुगा वासुदेव वासुदेवः ॥ ५३३ ॥
 वेदमदमगार्थं ॥ ५३३ ॥

दृष्टमादयाममगाय जायणदुगतुंग मुनिविक्रमाया ॥
 पीठिय उवाच ॥ ५३३ ॥
 दृष्टमादयाममगाय जायणदुगतुंग मुनिविक्रमाया ॥ ५३३ ॥
 पीठिय उवाच ॥ ५३३ ॥

दृष्टमादयाममगाय जायणदुगतुंग मुनिविक्रमाया ॥ ५३३ ॥
 पीठिय उवाच ॥ ५३३ ॥

णाणारयणवमाहा पथात्सुमणा मित्रिगसरिसकटा ॥
 पूटविमया दमतुगा मज्झग्ग छयदुदयामा ॥ ५३८ ॥
 नानात्तनावणाव प्रवात्सुमना मुदगमदशकल ॥
 पश्चामय त्तनग म यम पत्वन याम ॥ ५३८ ॥

णाणा । म च वया नानात्तनावणाव प्रवात्सुमना मुदग-
 मदशकल पश्चामय दशधाजनतुगा मज्झग्ग यथामरुय षट् ६ चतु ६
 याजन य म स्थात् ॥ ५३८ ॥

उत्तरकुलमिदिवाह त्रिणागटा मममाहनिदपदिह ।

आदाअणादराणां नकारकुलुधाणमावामा ॥ ६४० ॥

उत्तरकुलमिदिवाह त्रिणागटा मममाहनिदपदिह ।

आदाअणादराणां नकारकुलुधाणमावामा ॥ ६४० ॥

उत्तरकुलमिदिवाह त्रिणागटा मममाहनिदपदिह ।
आदाअणादराणां नकारकुलुधाणमावामा ॥ ६४० ॥

अथ परिवारः पुराणस्य चतुर्विंशत्यधिकः ॥

अष्टकुलदत्तमाणा जपनशरभस कदिदपरिवारा ।

आदाअणादराणां पारवारावाममदा तं ॥ ६४० ॥

अष्टकुलदत्तमाणा जपनशरभस कदिदपरिवारा ।

आदाअणादराणां पारवारावाममदा तं ॥ ६४० ॥

अष्टकुलदत्तमाणा जपनशरभस कदिदपरिवारा ।
आदाअणादराणां पारवारावाममदा तं ॥ ६४० ॥

अथ ह्यन्मन्त्रान्तरं चतुर्विंशत्यधिकः ॥

सीतादायवर्तीर जिमहसमाव मुगदिणरिदिह ।

दवकुलुदिह मणाहवरप्पधल सामर्ती सपरिवारा ॥६५१॥

सीतादायवर्तीर जिमहसमाव मुगदिणरिदिह ।

दवकुलुदिह मणाहवरप्पधल सामर्ती सपरिवारा ॥६५१॥

सीतादायवर्तीर जिमहसमाव मुगदिणरिदिह ।
दवकुलुदिह मणाहवरप्पधल सामर्ती सपरिवारा ॥६५१॥

जजुसमवण्णणो सो दक्खिणसाहम्मि जिणगिह सेसे ।
दिससाहत्तिग्गरुडवड्डवेणूवेणादिधारिगिह ॥ ६५२ ॥

जजुसमवर्णन स दक्षिणशास्त्राया जिनगृह शेषे ।

दिशाशास्त्रात्रये गरुडपतिवैणुवेष्यादिधारिगृहम् ॥ ६५२ ॥

जजु । असौ जजुसमवर्णन, तस्य दक्षिणशास्त्राया जिनगृहमस्ति ।
शेषे दिग्गतशास्त्रात्रय गरुटपयार्वणेषुधारिणो गृहा सति ॥ ६५२ ॥

अथ भोगभूमिकर्मभूम्योर्विभागमाह,—

कुरुओ हरिरम्मगभू हेमवदेरणवदरिदी कमसो ।
भागधरा वरमज्झिमवराय कम्मावणी सेसा ॥ ६५३ ॥

कुरु हरिरम्यकभुवी हैमवनैरण्यवतक्षिनी कमस ।

भोगधरा वरमध्यमावरा कर्मावनय शेषा ॥ ६५३ ॥

कुरुओ । देवकुरुत्तरकुरुक्षेत्रे द्वे उत्तमभोगभूमी हरिरम्यकक्षेत्रे द्वे मध्यम-
भोगभूमी हैमवतहैरण्यवतक्षेत्रे द्वे जघन्यभोगभूमी स्यातां । शेषा सर्वा
कर्मभूमय ॥ ६५३ ॥

अथ यमकगिरे स्वरूप गाथाद्वयेनाह,—

णीलणिसहादु गत्ता सहस्समुमए तडे वरणइण ।
दुगदुगसेला पुड्वो चित्तो अषरो विचित्तक्खो ॥ ६५४ ॥

नीलनिषघतो गत्वा सहस्रमुभये तटे वरनद्यो ।

द्विकद्विकशैलौ पूव चित्र अपर विचित्राख्य ॥ ६५४ ॥

णील । नीलनिषघाभ्या पुरस्तात् सहस्रयोजन गत्वा वरनद्यो सीता
सीतोदयोऽभयतटे द्वौ द्वौ शैलौ भवत । तयोभये पूवतटगनध्वित्रोऽपरतट-
गतौ विचित्राख्य ॥ ६५४ ॥

णीलु । णीगोत्तरकुचबंदैरावनमान्यवन इत्येता पच निवग्देवकु
सुमुलसविगुत इत्येता पच सीतासीताइयो रदनामनि ॥ ६५७ ॥

णइणिग्गम्मदारजुदा ते तप्परिवारवण्णण चेसिं ।
पउमव्य कमलगेहे णागकुमारीउ णिवसति ॥ ६५८ ॥

नदानिर्गमद्वारयुतानि तानि तत्परिवारवर्णन वैशं ।

पद्ममित्र कमजोहेषु नागकुमार्यो निवमनि ॥ ६५८ ॥

णइ । तानि सरांसि नदीप्रवेशनिर्गमद्वारयुतानि । एतेषां तत्परिवार
वर्णनं च पद्मसर इव तत्रस्थकमलोपरिमृहेषु सपरिवारा नागकुमार्यो
निवर्षति ॥ ६५८ ॥

दुतडे पण पण कचणसेला सयसयतद्वद्धमुदयतिर्यं ।
ते दहमुहा णगरसा सुरा वसतीह सुगवण्णा ॥ ६५९ ॥

द्वितरे पच पंच कांचनरीण शतशतनदर्षमुदयप्रयम् ।

ते दहमुहा नगाण्या सुरा वमनि इह सुवर्णा ॥ ६५९ ॥

दुतड । तयो सरांसी द्वितरे पंच पंच कांचनरीण तेषामुदयप्रयम्
ध्यासा यथासंख्यं शत १०० शत १०० पंचाश ५० यात्रनानि च
तेषां इदममुहा । कथमेतद् । तदुपरिस्थितनगराणां इदामिमुहाणां ।
गुह्यगम्यतत्रगाण्या सुरासनयामुदयि वर्षति ॥ ६५९ ॥

अथ तत्र उत्तरे नद गमनस्यप्रमाणं,—

दहदा गतूणगा महम्मदुगणउदिदोणि धे च कला ।
णदिदारजुदा वदी द्दिस्वणउत्तरगमदुनात्तम् ॥ ६६० ॥

इत्तं गन्तव्यं सप्तद्विजनादि द्वे च वशि ।

सप्तद्विजनादि द्वे च वशि सप्तद्विजनादि द्वे च वशि ॥ ६६० ॥

4

4

णीलु । णीगेरकुहधरेरागम ल्यरा इयेरा वंघ निरपरेरक
 मूमुकमरेवु इयेरा वंघ सीतासीगोयो ज्ञानामानि ॥ ६५३ ॥
 णइणिगगम्मदारजुदा त तप्परियारवण्णणं चेसिं ।
 पउमअ कमउमेहे णाकुमारीउ णियसंति ॥ ६५८ ॥

नसभिषयसरयुगानि ताणि सरारिशरणं । वैरा ।

वमभिर वमग्गेहेषु नागकुमार्या निगमे ॥ ६५८ ॥

णइ । ताणि सतीनि नरिपवेशनिर्गमद्वारयुगानि । एतेषां तपरिप
 वरं । न पउसा इव तवराकमलावगिणमृतेव सपरिपारा नागकुम
 रियसंति ॥ ६५८ ॥

दुवड पण पण कं चणसला सयमपतद्व्यमुदपतिपं ।
 न इवमुहा णामरगा गुरा वमतीक गुमवण्णा ॥ ६५९ ॥

द्विपुत्रे विपुत्रे कायनरीया शाशनादामुदपतपप ।

। इयमया मगाग्या मुग वमति इव गुमरगा ॥ ६५९ ॥

दुवड । णी मरमा द्विपुत्रे वंघ । इ कायनरीया तेवामुदपमम
 म सा गी ममा इव १०० इव १०० वंघरा १० चीमनानि च
 लेरा इव म सा । कपमप । ननुपरिमनगागुरागो इवनिममयाव ।
 इव । नवमम ॥ म । मग मग । का । १ । १०० ॥

मग १०० । म । मगमममम ॥

इवइव मनुगगा मनुममदुगगा इविद्विगि च च कला ।
 मरिद्वारजुदा वदी इविद्विगि इवममदुगा ॥ ६६० ॥

इ । मग ॥ मग ॥ इव । इ । च । १०० ।

मग ॥ १०० । इव । मगममदुगा ॥ ६६० ॥

वृत्ताः । तस्मात् ३०००० दिवसवित्तिं ज्ञायति ३०९७ घात्रिंशो
 इति तस्मात् ३०००० दिवसवित्तिं ज्ञायति ३०९७ घात्रिंशो
 ३०००० दिवसवित्तिं ज्ञायति ३०९७ घात्रिंशो
 ३०००० दिवसवित्तिं ज्ञायति ३०९७ घात्रिंशो
 ३०००० दिवसवित्तिं ज्ञायति ३०९७ घात्रिंशो
 ३०००० दिवसवित्तिं ज्ञायति ३०९७ घात्रिंशो

अथ । द्वाव्ययवसानो वसवर्षे ३०९७ घात्रिंशो

बुधमहामालमजस मद्राणदीण च दोषु पासयु ।
 दा हा तिसागद्दा मयतलियतदद्दयतिया ॥ ६६१ ॥

बुधमहामालमये मद्राणदीण च दोषु पासयु ।

दा हा तिसागद्दा मयतलियतदद्दयतिया ॥ ६६१ ॥

बुध । अथ । बुधमहामालया च वदतसामालयाश्च मध्य महानघोहमय
 वाचयद्दा हा तिसागद्दयवना निपत तयामहदिग्माजपदतानागुद्वयभूनुत
 का का यथाहाय हात १०० हात १०० यथा । ५० वासनादि
 १५ ॥ ६६१ ॥

तण्णामा पुष्ट्यादी पद्मुत्तरणीलसात्थियजणया ।
 बुधमदपलामवतसयराधणमिह दिग्माजिदसुरा ॥ ६६२ ॥

तण्णामानि पुष्ट्यादी यथाहायनेलसात्थियजणया ।

बुधमदपलाहायनसगावनमिहदिग्माजिदसुरा ॥ ६६२ ॥

तण्णामा । पुष्ट्यादिविद्विहा आभ्यवसावने हावदित्तजिनकुमुदपटाहा-
 वान्तोवनमिति तेथी नामानि । इह दिग्माजिदसुरागतिश्रुति ॥ ६६२ ॥

अथ गजदत्तवतानां नामादिक गाथाद्वयेनाह,—

मल्लव महसोमणसो विज्जुप्पह गधमादणिमदता ।

ईसाणादो वेडूर्यरूप्यतपनीयहेममया ॥ ६६३ ॥

माल्यवान् महासोमनस विजुत्प्रभ गंधमादन इमदता ।

ईशानिन वैडूर्यरूप्यतपनीयहेममया ॥ ६६३ ॥

मल्लव । माल्यवान् महासोमनसो विजुत्प्रभो गंधमादन इतीमंरुत
वैडूर्यरूप्यतपनीयहेममया मेरीशानदिश आरभ्य तिष्ठति ॥ ६६३ ॥

णीलणिसहे सुरद्धिं पुट्टा मल्लवगुहाडु सीता सा ।

विज्जुप्पहगिरिगुहदो सीतोदाणिस्सरित्तु गया ॥ ६६४ ॥

नीलनिषधौ सुराद्रिं शृष्टा माण्यवदुहाया सीता सा ।

विजुत्प्रभोरिगहान सातोदा निमृत्य गता ॥ ६६४ ॥

नील । ते च नीलनिषधौ सुराद्रिं च शृष्टा । तत्र माण्यवदो गुहाय
निमृत्य सा सीता गता विजुत्प्रभगिरिगहायाश्च निमृत्य सीतादा गता ॥ ६६४ ॥

इदानीं विद्वद्दशानो विभागे निवक्ष्यन्ति,—

उमपतगवणयदिपमज्जागवभंगणदितियाण च ।

मज्जागवक्खारचऊ पुण्यवरविद्वहियजयद्धा ॥ ६६५ ॥

उमपतगवणयदिपमज्जागवभंगणदितियाणा च ।

मज्जागवक्खारचऊ पुण्यवरविद्वहियजयद्धा ॥ ६६५ ॥

उमपत । उमपतगवणयदिपमज्जागवभंगणदितियाणा च
मज्जागवक्खारचऊ पुण्यवरविद्वहियजयद्धा ॥ ६६५ ॥

अथ ३२० च वनीनईनो च नाम दिङ् गधपुत्रक,—

तण्णामा सीदुभरतीगदा पडमदा पद्धिण्णदा ।

चण्णत्तिदुट्टपउमादिमदुट्टा णत्तिण पुणमत्तगगा ६६६

मरुतस्य च । तस्यैव च प्रथमं प्रकृतम् ।

विष्णुं कथयन्तं तस्यैव । मरुतिं तत्रैव । ६६६ ॥

मरुतामा । वीणातन्त्रादीनां प्रथमं कृत्वा । प्रथममन्त्राणां वधाराणां
विशेषादिनां च आशयः । अथ विष्णुवत्प्रकृतमन्त्रैर्देहेनाद्यध्याहारो
व्याप्यते ॥ ६६६ ॥

गाहदृष्टवपदिणदी तिकृष्टवमवणअंरणत्पादि ।

अंजयगा तवजला मत्तजलुम्मत्तजल सिंधु ॥ ६६७ ॥

गाधत्तवत्तवत्तव त्रिकृष्टवधेयणत्तनामदि ।

अममवा तममला मत्तजला त्रिमत्तजला सिंधु ॥ ६६७ ॥

गाह । गाहवती तद्वती वदवाया वरिन्धा विमंगनय । त्रिकृष्टवध
वत्तजलमत्तजला पाध्याः । वीणाद्विणद्विबन्धवत्तनामद्वारा । तममला-
मत्तजला-मत्तजलनि निय तमममवय ॥ ६६७ ॥

महाव विजटाव आसीविम सुहवहा प चकखारा ।

खारादा सीतादा सोदोपादिणि णदी मज्जा ॥ ६६८ ॥

अडावान् विजगवान् आसीविष सुसावहस्य वनारा ।

खारोण सीतादा धानोवादिनी नद्य मध्ये ॥ ६६८ ॥

महाव । अडावान् विजगवान् आसीविष सुसावहस्येति खारो पर
विदेहसीतादाद्विणद्विबन्धवत्तनामद्वारा । खारादासीतादाग्यातोवादिनी चेति तिस्रा
नद्या वधाराणां मध्यं सति ॥ ६६८ ॥

ता चद्रसूरणागादिममाला देवमाल चकखारा ।

गर्भारिमालिणी केणमालिणी उर्मिमालिणी सरिदा

तन चद्रसूरणागादिममाला देवमाला वनारा ।

गर्भारिमालिनी केणमालिनी उर्मिमालिनी सरित ॥ ६६९ ॥

तो । ततश्चद्रमात् सूर्यमालो नागमालो देवमाल इति चत्वारोऽपरि-
 वेहसीतोऽक्षरद्विक्रस्ययक्षारा । गभीरमालिनी फेनभातिनी ऊर्मिमातिनी
 तिस्रस्तत्रस्यसरित ॥ ६६९ ॥

हेममया यद्वरदारा येभगा रोहिसरिसवण्णणा ।
 तासि पयेसतोरणगेहे णियसति दिक्कण्णा ॥ ६७० ॥
 हेममया यथा ग विभगा रोहितमन्दावणनरा ।
 ताभा यथा यथा गणमह निरामि विद्या ॥ ६७० ॥

हेममया यथा गणमह निरामि विद्या ॥ ६७० ॥
 हेममया यथा गणमह निरामि विद्या ॥ ६७० ॥
 हेममया यथा गणमह निरामि विद्या ॥ ६७० ॥
 हेममया यथा गणमह निरामि विद्या ॥ ६७० ॥

श्रीमद्विद्ये इत्याद्याण मिह्र नचान्विमगणाससुरा ।
 विद्यात नणगागाण गृह क यणया न पावणाहि जदा ॥ ६७१ ॥

श्रीमद्विद्ये इत्याद्याण मिह्र नचान्विमगणाससुरा ।
 विद्यात नणगागाण गृह क यणया न पावणाहि जदा ॥ ६७१ ॥
 श्रीमद्विद्ये इत्याद्याण मिह्र नचान्विमगणाससुरा ।
 विद्यात नणगागाण गृह क यणया न पावणाहि जदा ॥ ६७१ ॥

य वरद यन्त्रन मातदु दूनमम दयवण्णणाणि ।
 यथा यथा यथा यथा यथा यथा यथा यथा ॥ ६७२ ॥

छव्वीस । नगरादीना सख्या यथाक्रम षड्विंशतिसहस्राणि २२०००
 षोडशसहस्राणि १६००० चतुर्विंशतिसहस्राणि २४००० चत्वारिसं
 स्राणि ४००० अष्टचत्वारिंशत्सहस्राणि ४८००० नवनवतिसहस्राणि
 ९९००० चतुर्दशसहस्राणि १४००० अष्टाविंशतिसहस्राणि २८०००
 भवति ॥ ६७५ ॥

बह चउगोउरसाल णदिगिरिणगवेढि सपणसयगाम ।
 रयणपदसिंधुवेलावलइय णगुवरिद्विय कमसो ॥ ६७६ ॥

वृत चतुगोपुरशाल नदीगिरिनगवेष्ट्य सपचशनग्राम ।

रत्नपदसिंधुवेलावलयित नगोपरि स्थित क्रमश ॥ ६७६ ॥

यद् । वृत्त्या वृतो ग्राम चतुर्गोपुरशालयुत नगर नद्यद्विवेष्ट्य सेट नग-
 वेष्टित सर्वद पञ्चशतग्रामयुत महश्च रत्नानां स्थान पत्तनं नदीवेष्टिनो द्रोण
 जलधिवेलावलयित सवाह नगोपरि स्थिता दुर्गाटवी क्रमश ॥ ६७६ ॥

अथ विदेहदशस्थोपसमुद्राभ्यतरद्वीपस्वरूपमाह,—

छप्पण्णतरदीवा छव्वीससहस्स रयणआयरया ।

रयणाण कुक्खिखासा सत्तसय उयसमुद्दम्हि ॥ ६७७ ॥

पट्पचाशदतरद्वीपा षड्विंशसहस्र रत्नाकरा ।

रत्नाना मुनिवामा ममशतानि उपसमुद्रे ॥ ६७७ ॥

छप्पण्ण । विदेहदशस्थोपसमुद्रपट्पचाण ५६ दश द्वा षड्विंशति
 सहस्र २ ००० रत्नाकरा रत्नानां क्रयविक्रयस्थानभूतकुक्षिवासां सप्त
 शतानि ३०० भवति ॥ ६७७ ॥

अथ माग्धादिउयाणां स्थानमाह —

सीतामीतादाणदितीरममीय जलम्हि णीयतिर्यं ।

पुंवादी मागहयरतणुप्पमामामराण हो ॥ ६७८ ॥

गत्य सीतासीतोदयो प्रविष्टे । रक्तारक्तोदे द्वे निवस्यवतमूळस्थितकुडानि
सृत्य सीतासीतोदयो प्रविष्टे ॥ ६९२ ॥

दसदसपणोत्ति पण्ण तीस दसय च रूपगिरियासा ।
रयराभिजोग सठी सिहरे सिद्धादिकूल तु ॥ ६९३ ॥

दश दश पचात पचाशन् त्रिंशन् दशक च रूपगिरिन्यासा ।
खचराभियोम्या श्रेणी शिखरे मिद्धात्किट तु ॥ ६९३ ॥

दस । तस्य विजयावस्य दश याजन-सेधा प्रथमा श्रेणी पचाशयो-
जनसम-यासा । तत उपरि दशयोजनात्सेधा द्वितीया श्रेणिश्चिदायोजन-
सम-यासा, तत उपरि पचयोजनात्सेध उपरिमशिसरो दशयोजनव्यस ।
तत्र प्रथमोभयतटगतश्रेण्या तररा निवसति, द्वितीयायामाभियोग्या शितो
तु सिद्धादिनवकुटानि सति ॥ ६९३ ॥

अथ तत्रैव द्वितीयादिश्रेणौ विशयमाह,—

सोहम्मआमिजोगगमणिचित्तपुराणि चिदिपसेटिग्हि ।
वेयडुकुमारवइ सिहरतले पुण्णमद्वरुते ॥ ६९४ ॥

सौधमाभियोभ्यगमणिचित्रपुराणि द्वितीयश्रेण्याम् ।

विनयाधंकुमारपनि शिखरतले पुणमद्राम्ये ॥ ६९४ ॥

साहम्म । तत्रैव द्वितीयायां श्रेण्यां सौधमसुव्याभियाग्यनां मणि
मयानि विचित्रपुराणि सति । तस्य शिखरतले पुणमद्राम्ये कूटे विन-
याधंकुमारपनिगति ॥ ६९४ ॥

अथ तत्र प्रथम श्रेण्यो स्थितविद्यधरनगराणां सप्तयो तत्राणानि च दश
दशदिगायमिगा,—

पणवण्ण पणवण्ण विदेहवेपडुपटममूमिग्हि ।
णयराणि पण्ण सठी जपुउमयतयेपडु ॥ ६०५ ॥

पचपचाशत् पचपचाशत् विदेहविजयार्धप्रथमभूमौ ।

नगराणि पचाशत् षष्टि जन्भयातविजयार्ध ॥ ६९५ ॥

पण । विदेहविजयाधप्रथमोभयश्रेण्योर्यथासुरय पचाधिकपचाशत् ५५
पचाधिकपचाशत् ५५ नगराणि सति । जन्भूयोभयातमर्तेरावतस्थविज-
यार्धे प्रथमोभयश्रेणौ च पचाशत् ५० षष्टि ६० नगराणि सति ॥ ६९५ ॥

सेलायामे दक्षिणसेटीए पणमुचरे सट्टी ।

तण्णामा पुब्बादी किंणामिद किंणरगीद ॥ ६९६ ॥

शैलायामे दक्षिणश्रेण्या पचाशदुत्तरस्या षष्टि ।

तन्नामानि पूर्वदित किंणामिन किन्नरगात् ॥ ६९६ ॥

सेला । मत्तैरावतविजयाधशैलायामे दक्षिणश्रेण्यां पचाश ५० नग-
राणि, उत्तरश्रेणौ तु षष्टि ६० नगराणि । तेषां नगराणां नामानि पूर्वदिश
आरभ्य कथ्यन्ते—किंणामिन किन्नरगात् ॥ ६९६ ॥

णरगीद बहुकेदू पुडरिय सीहसेदगरुडधज ।

सिरिपहधरलोहगलमरिंजय वज्जअगगलद्वपुर ॥ ६९७ ॥

नरगीत बहुकेतु पुडरीके सिहश्रेणगरुडधज ।

श्रीप्रमधर लाहागलमरिंजय वज्जार्गलाद्वपुर ॥ ६९७ ॥

णरणीद । नरगीत बहुकेतु पुडराक सिहश्चज वतधज गरुडधज
श्रीप्रम श्रीधर लाहागलमरिंजय वज्जागल वज्जाद्वपुर ॥ ६९७ ॥

होइ विमाइ पुरजय सयडचट्टुव्यट्टुमुही य अरजवत्ता ।

विरजकवा रहणपुर महलअगगपुर खमचरी ॥ ६९८ ॥

भवति विमाचि पुरजय पाकपनुरहमुग्वा च अरजवत्ता ।

विरजका रपनपुर मरालापुर खमचरा ॥ ६९८ ॥

मुन्नागा नैमिषमण्डितायाः । शनिपुरम् ।

नगरं श्रीराध मण्डितायाः पद्मा शर्मा । अंतर्ग ॥ ७०१ ॥

मुन्नागा । मुन्नागा नैमिष मण्डितायाः पद्मा शर्मा । अंतर्ग ॥ ७०१ ॥
श्रीराध मण्डितायाः पद्मा शर्मा । अंतर्ग ॥ ७०१ ॥

गोगरीरफणमङ्गाय गिरिमिहूरं च धरणि धारिणियं ।
दुर्ग बुद्धरणपर मुद्गमणं ता महेंद्रविजयपुरं ॥ ७०३ ॥

गोगरीरफणमङ्गाय गिरिमिहूरं च धरणि धारिणियं ।

दुर्ग बुद्धरणपर मुद्गमणं ता महेंद्रविजयपुरं ॥ ७०३ ॥

गोगरीर । गोगरीरफेन अतोर्ध गिरिमिहूरं धरणिधरिणियं ।
दुर्ग बुद्धरणपर मुद्गमणं ता महेंद्रविजयपुरं ॥ ७०३ ॥

णगरी सुगधिणी वज्रधर रयणपुराजयपुर ।
रयणपुर चरिभते रयणमया राजगणीओ ॥ ७०८ ॥

णगरी सुगधिनी वज्रधर रयणपुराजयपुर ।

रयणपुर चरिभते रयणमया राजगणीओ ॥ ७०८ ॥

णगरी । सुगधिनी नगरी वज्रधर रत्नाकर रत्नपुर चरम ६० ता
रत्नमया राजगणीओ म्य ॥ ७०८ ॥

पायारगाडरट्टलचारियासरवण विराजिया तत्थ ।
त्रिजाहरा त्रिविजा वसति छक्कम्मसयुत्ता ॥ ७०९ ॥

पायारगोपुराट्टलचार्यासरोवने विराजिता तत्र ।

त्रिजाधरा त्रिविधा वसति पट्टकमसयुत्ता ॥ ७०९ ॥

पायार । ताश्च पुन पायारगापुराट्टलचार्यासरोवने विराजिता । तत्र
साधितकुठजातिविद्याभि त्रिविधा पट्टकमसयुक्ता इत्या असिमण्यादि-

जीवनोपायव्यापारा वाता दन्तिश्च स्वाध्याय सयमस्तप इत्यतानि षट्
माणि एतेषुका विद्याधरा वसति ॥ ७०९ ॥

अथ विजयाभक्तपट्टसदृशम्लेच्छसदृशमध्यस्थितवृषभार्द्रिणां स्वरूपं
निरूपयति,—

सत्तरिसयसहस्रगिरी मज्झगयमिलेच्छसदृशमज्झे ।
कणयमणिकचणुदयति भरिया गयचक्रिणामेहि ॥ ७१० ॥

सप्ततिशत वषभगिरय मध्यगतम्लेच्छसदृशमये ।

कनरमणिकचनेदयत्रिंश भवा गतचक्रिणामभि ॥ ७१० ॥

सत्तरि । कनकवर्णा मणिमया काचनपवताद्य १०० भ १००
मुत्र ५० यामा गतचक्रिणा नामभिभवा सप्तदशैर्गत १७० वषभ
गिरय मध्यगतम्लेच्छसदृशमये निवति ॥ ७१ ॥

अथ न सत्सयसहस्रगिरयस्य सायामा कस्यगत —

सत्तरिसयणयराणि य उयचत्तधिगअज्जसदृशसत्ति ।
चर्वाण णव्वर वारम च्चमायामण हाति कम ॥ ७११ ॥

सप्ततीससहस्रगिरयस्य सायामा कस्यगत —

चक्रिणामभिभवा गतचक्रिणामभिभवा सप्तदशैर्गत १७० वषभ

गिरय मध्यगतम्लेच्छसदृशमये निवति ॥ ७१ ॥

दाशसहस्रगिरयस्य सायामा कस्यगत —

अथ न सत्सयसहस्रगिरयस्य सायामा कस्यगत —

सप्ततीससहस्रगिरयस्य सायामा कस्यगत —

सप्ततीससहस्रगिरयस्य सायामा कस्यगत —

अथ न सत्सयसहस्रगिरयस्य सायामा कस्यगत —

अथ न सत्सयसहस्रगिरयस्य सायामा कस्यगत —

दिशेषु सोमैर्जातयोस्तु तानि नामानि सांप्रदायिकानि स्यान्ति ॥ ७१० ॥

इदानीं शिवादिभूतगणैर्विन्यासात् तेषु दिग्भूतानां संख्या-
दिहमाचष्ट,—

एकान्सप्तशतान्यत्र अष्टेकारम हिमादिकूलाणि ।
येषुद्वाण णयणय पुत्र्यगकूलाग्नि जिणमयण ॥ ७१० ॥

एकान्सप्त नव नव अष्टेकारं हिमादिकूलाणि ।
विन्यासानां नव नव पूर्वांगूटं विनयानानि ॥ ७२० ॥

एका । एकान्सप्त १० अत्र ८ नव ९ नव ० अत्र ८ एकान्सप्त ११
प्रमितानि येषुभूयं शिवादिभूतगणैर्विन्यासात् दिग्भूतानि विनयानां
तुषुर्नव ९ नव ९ भूतानि । नत्र पूर्वदिग्भूतैर्विनयानानि
सन्ति ॥ ७२० ॥

अथ उक्तकृतानां नामान्तिकं गाथादशकं निगदति —

कमसो मिद्धायत्रण हिमवत् भग्द इला च गगा च ।
सिरिकूडरोहिदग्ना सिधु सुग हम्बुदय उमयण ॥ ७२१ ॥

कमस मिद्धायत्रण हिमवत् भग्द इला च गगा च ।
श्राकूट राहिन्यास्या मर मर हम्बुदय उमयण ॥ ७२१ ॥

कमसा । कमसवत्तना नाम नि मिद्धायत्रण हिमवत् भग्द इला च
गगा च श्राकूट राहिन्यास्या मर मर हम्बुदय उमयण ॥ ७२१ ॥

षट्भे जिणिदगह द्याया त्रयदिणामकूटेषु ।
सेसेषु कूडणामा वेंतरदवाधि णियमति ॥ ७२२ ॥

प्रथमे जिनेद्रगेह देवो युवतिनामकूटेषु ।

शेषेषु कूटनामान व्यतरदेशा अपि निवसति ॥ ७२२ ॥

पदम् । तत्र प्रथमकूटे जिनेद्रगेह श्रीहिंगारणकूटेषु व्यतरदेशो निवसति । शेषेषु तत्र कूटनाम व्यतरदेशा निवसति ॥ ७२२ ॥

षट्ठा सन्धे कूडा रथणमया सगणगस्त तुरियुदया ।

तत्तिषभूषित्यारा तदद्भुतदणा हु सद्यत्थ ॥ ७२३ ॥

वृत्ता सर्वे कूटा रत्नमया स्वर्णगम्य तुर्योदया ।

तावद्भूषित्यारा तदर्धवदना हि सद्यत्र ॥ ७२३ ॥

षट्ठा । ते सर्वे कूटा वृत्ता रत्नमया स्वर्णगम्य चतुर्थाशोदया तावन्मात्रभूषित्यारास्तदर्धवदना सद्य भवति ॥ ७२३ ॥

तो सिद्ध महाहिमय हेमवद् रोहिदा हिरीकूट ।

हरिकता हरिवरिस वेलुरिय पच्छिम कूट ॥ ७२४ ॥

तत्र सिद्ध महाहिमवान् हेमवत् रोहिता हीकूट ।

हरिकाना हरिवर्ष वरुण पश्चिम कूट ॥ ७२४ ॥

तो । पश्चिम चरम इत्यर्थ । शेष छायामात्रमवार्थ ॥ ७२४ ॥

सिद्ध गिसह च हरिवरिस पुत्रविदेह हरिधिदीकूट ।

सीतादा णाममदो अवरविदह च रुजगत ॥ ७२५ ॥

सिद्ध निषध च हरिवर्ष पूर्वविदेह हरिधितकूट ।

सीतादा नाम अत्र अवरविदेह च रुजगत ॥ ७२५ ॥

सिद्ध । सिद्ध निषध च हरिवर्ष पूर्वविदेह हरिकूट धितकूट सीतोदा नाम अतोऽवरविदेह चान् रुजगत ॥ ७२५ ॥

सिद्ध णील पुत्रविदेह सीदा य किति णरुंता ।
अवरविदेहं रम्मगमपदमणमतिम णीले ॥ ७२६ ॥

सिद्ध नात्र पूर्णविदेह सीता च कीर्तनं नरकता ।

अवरविदेह रम्यर अपदर्शन अनिम नीते ॥ ७२६ ॥

सिद्ध । छायामात्रमेवाथ ॥ ७२६ ॥

सिद्ध रूमी रम्मग णारी बुद्धी य रूप्यकूलम्बा ।
हेरण्ण कूडमदो मणिकचणमट्टम होदि ॥ ७२७ ॥

सिद्ध रूमी रम्यर नारी बुद्धिश्च रूप्यकूलम्बा ।

हैरण्य कूटमतो मणिकाचनमष्टम भवति ॥ ७२७ ॥

सिद्ध । छायामात्रमेवाथ ॥ ७२७ ॥

सिद्ध सिहरि य हेरण्ण रसदेवी तदो य रत्तकत्ता ।
लच्छी सुवण्ण रत्तवदी गधवदीय कूडमदो ॥ ७२८ ॥

सिद्ध शिवरी च हैरण्यं रसदेवी ततश्च रत्ताख्या ।

लक्ष्मी सुवर्णं रत्तवती गधवती कूटमत ॥ ७२८ ॥

सिद्ध । छायामात्रमेवार्थ ॥ ७२८ ॥

एरावदमणिकचणकूड सिहरिन्दिह सत्त्वसेलाण ।
मूले सिहरोवि हवे दहेवि वणसडमेदस्स ॥ ७२९ ॥

एरावतमणिकाचनकूट शिखरे सर्वशैलानाम् ।

मूले शिखरोपि भवेत् ह्रदेपि वनखडमेतस्य ॥ ७२९ ॥

एरावद् । एरावत मणिकाचनकूट ११ शिखरे पर्वते सर्वेषां शैलानाम्
मूले शिखरोपि ह्रदेपि वनखड भवेत् । एतस्य वनखडस्य ॥ ७२९ ॥

अथ एतद्वाक्यानां चत्वारिंशोऽध्यायः न कूर्मसंज्ञायाश्चरिते
शास्त्रात्कृतम् -

णयस्तय णयस्तय इमाणदिमा दृढतमलार्ण ।

धरुसाराण चउगउकूड तण्णाममणुममो ॥ ७३७ ॥

नय मय न नय मय न इशानदिश द्विउशयना ।

वपारणां वपारि वपारि कूरुनि नयामनि भनूकमश ॥ ७३८ ॥

णय । इ शानदिश प्राण्य गतदीयेगाने कसण कूरुमया नय ९
मय ७ नय मय १ मय इतयम गणा इयारि १ नयारि १ कूरुनि
तथा न मा यनकम । कथयान । ७३७ ।

सिद्ध मल्लवमुनरकउर्य कउरु च सागर रजद् ।

पुण्णादिमद्र सीता हरिमलकूड नय णयम ॥ ७३८ ॥

सिद्ध न नयान च सागरेय कूरु च सागर रजत ।

पुण्णादिमद्र माना १ रजतकूरु नयन् नयम ॥ १८ ॥

सिद्ध । मल्लकूरु न यवान उभरकाय कूरु च सागर रजत
पुण्णादिमद्र माना १ रजतकूरु नयम भवत । ७३८ ।

ता सिद्ध सामणम कूड इयकूरु मगल विमल ।

कचण वसिद्धमत सिद्ध विजुप्पह नत्ता ॥ ७३९ ॥

तत सिद्ध सोमनम कूरु इयकूरु मगल विमल ।

काचन भवशिष्टमत सिद्ध विजुप्पमत तत ॥ ७३९ ॥

ता । तत सिद्धकूरु सामनमकूरु इयकूरु मगल विमल काचन
अत अवशिष्ट ७ तत सिद्धकूरु विजुप्पमत । ७३९ ॥

देवकूरु पउम तवण सस्थियकूड सदल्लल तत्तो ।

सीतादा हरि चरिमता सिद्ध गधमादणय ॥ ७४० ॥

वभारशनानामुदय कुलगिरिपार्श्वे चतु शत वृद्ध्या ।

नदामेरोश्च पार्श्वे पचशतानि तत्र जिनगेहा ॥ ७४१ ॥

यद्यन्वार । गनवभारपचतानामुदय कुलगिरिपार्श्वे चतु शत ४००
योजनानि, तत परमनुक्रमण वृद्ध्या विदेहगतानां नदीपार्श्वे गनईतानां
मेरुपार्श्वे पचशत ५०० योजनान्युत्सेध तत्र पचशतयोजनोत्सेधस्यकूटे
जिनगेहा सति ॥ ७४५ ॥

अथ नवादिक्कूटानामुत्सेधानयने करणसूत्रमाह; —

गिरितुरिय पटमतिमकूडुदओ उमयसेसमवहरिदि ।

येगपदेण चयो सो इष्टगुणो मुहजुदो इष्ट ॥ ७४६ ॥

गिरितुरीय प्रथमानिमकूटोदय उभयशेषवपहत ।

येकपदेन चय म इष्टगुण मुत्तयुन इष्ट ॥ ७४९ ॥

गिरि । वभारगिरीणामुत्सेध ४००।५०० चतुर्षांश एव तदुपरिमथ
थमातिमकूटोदय १००।१२५ एतदुभय विशयदित्वा २५ प्रथमस्य हानि
वृद्धयोरभावान् विगतैकपदेन ८।२।३ अपहत सति ३ भा है। ४ भा है
८ है हानिचयो भवति । स एव रूपानेप्य-उगुणित ३ है। ५ है। ६ है।
७ है। ८ है। ९ है। १० है। ११ है। १२ है। १३ है। १४ है। १५ मुत्त १०० युतधेत् १०३
६ है। ७ है। ८ है। ९ है। १० है। ११ है। १२ है। १३ है। १४ है। १५ द्वितीयादी
ष्टकूटस्योत्सेधो ज्ञातव्य । एव सप्तकूटचतु कूटानामानेत-यम् ॥ ७४९ ॥

इदानीं भरतादिश्रेत्राभयेण परिवारनदीप्रमाण गाथाचतुष्टयेणाह,—

मरहहरावदसरिदा विदेहजुगले च घोइससहस्रा ।

णइपरिवारा ततो दुगुणा हरिरम्मगसिदिति ॥ ७४७ ॥

मरतैरावतसरित विदेहयुगले च चतुर्दशसहस्राणि ।

नदीपरिवारा तत द्विगुणा हरिरम्यकशेषान ॥ ७४७ ॥

पुस्तक १ - १०० पृष्ठ १०० - १००
१०० - १०० पृष्ठ १०० - १००
१०० - १०० पृष्ठ १०० - १००

१०० - १०० पृष्ठ १०० - १००
१०० - १०० पृष्ठ १०० - १००
१०० - १०० पृष्ठ १०० - १००

१०० - १०० पृष्ठ १०० - १००
१०० - १०० पृष्ठ १०० - १००
१०० - १०० पृष्ठ १०० - १००

१०० - १०० पृष्ठ १०० - १००
१०० - १०० पृष्ठ १०० - १००
१०० - १०० पृष्ठ १०० - १००

१०० - १०० पृष्ठ १०० - १००
१०० - १०० पृष्ठ १०० - १००
१०० - १०० पृष्ठ १०० - १००

गिरि । ज्ञातयेष्टमदराद्ययनमयाम परित्यज्य इतरेषा गिरिप्रमूर्तिना
 चक्ष्यमाणयास भद्र २२००० देश २२१२ ॥ वक्षार ५०० विमग १२५
 देवारण्य २९२२ स्वकीयस्वकीयगुणकारेण २।१६।८।२।२ गुणयिन्ना
 ४४००० ३५४०६ ४००० ७५० ५८४४ इद सर्वं मेलयिन्ना ९००००
 एतज्जबुद्धीपत्यासे १००००० अपनीय शेषे १०००० इगुणकारेणापइते
 सति ज्ञातयेष्टयास आयाति १०००० ॥ ७५२ ॥

एवमानीतव्यासप्रमाणसिद्धाकमुच्चारयति,—

दसधावीससहस्रा चारसचावीस सत्तअट्टकला ।
 कमसो पणसय पणघण बावीसुगुतीसमककमो ॥७५३॥

दशद्वाविंशसहस्राणि द्वादशद्वाविंशति सप्ताष्टकला ।

क्रमश पचशतानि पचघन द्वाविंशैकोनत्रिंशदक्रम ॥ ७५३ ॥

वस्त । दशसहस्राणि १०००० द्वाविंशतिसहस्राणि २२००० द्वादशो-
 त्तरद्वाविंशतिसप्ताष्टकला २२१२ ॥ क्रमश पचशतानि ५०० पचघन
 १२५ द्वाविंशत्युत्तरैकोनत्रिंशत् २९२२ इति मद्रादि-यासाकक्रमो
 ज्ञातध्य ॥ ७५३ ॥

इदानीं धानकीसडपुष्कराधस्थितमेरुणा तद्दशालवनद्वयस्य च यास
 निरूपयति,—

चउणउदिसय णवसत्तडसत्तिगिलक्खमट्टपणसत्त ।
 पण्णरस बेलक्खा खुल्ले त मइसालदुगे ॥ ७५४ ॥

चतुर्नवतिशतानि नवसप्ताष्टसप्तैकलक्षमष्टपच सम ।

पचदशे द्वे लक्षे सुल्लेके ते भद्रशालद्वये ॥ ७५४ ॥

चउ । चतुर्नवतिशतानि ९४०० नवसप्ताष्टसप्ताकोत्तैकलक्षे
 २०७८७९ अष्टपच सप्तपचदशाकोत्तरे द्वे लक्षे २१५७५८ यथासत्यं

कुल्लुङ्गमदारघातकीसङ्घपूर्वापरभद्रशाहद्वये पुष्करार्धे पूषापरभद्रशाहद्वये च
 ध्यासांककर्मो ज्ञातव्यः । घातकासङ्घपूर्वापरभद्रशाहार्क १०७८७९ पुष्करा-
 र्धपूर्वापरभद्रशाहार्क २१५७५८ । 'पञ्चमवर्णदसिदिसो दक्षिण उन्तर-
 गमदशाह सेत्युक्तत्वादष्टाशतिया ८८ भागे कृते तयार्द्धक्षिणोत्तरभद्रशाहव
 नव्यासो भवति १२२५६६ । २४५१ मा ३३ ॥ ७५४ ॥

अथ द्वीपद्वयावस्थितविजयानां यामसरयामाह,—

तियणमछणव तिण्णट्टम तु चउणउदिसत्तणउवेक्क ।
 जोयणचउत्थभाग दुदीपविजयाण विकसमा ॥७५५॥

त्रिनम वण्णव ज्यष्टम तु चतुणवति ससनवत्येक् ।

योजन चतुर्थभाग द्विद्वीपविजयानां विकसमा ॥ ७५६ ॥

तिय । त्रिनम वण्णवयोजनानि ज्यष्टमांशानि ९६०३ मा ३ चतुर्णव
 तिससनवत्येकयोजनानि योजनचतुर्थभागाधिकानि १९७९४ ३ यथासरय
 घातकीसङ्घपुष्करार्धद्वीपद्वयविजयानां विकसमा स्यात् ॥ ७५५ ॥

साप्रत द्वीपत्रयावस्थितगजइतानामाशाम गाथाइयेनाह,—

सरिसायदगजइता णवणमइगसुण्णतिण्णि छच्चकला ।
 तिघणइगउक्कपणतिय णवणकदिणवयछप्पण ७५६

सहशायतगजइता नवनभेद्विकशायत्राणि षट्कला ।

त्रिघनाद्विकषट्पत्राणि नवनवकृतिनवषट्पचारान् ॥ ७५६ ॥

सरिसा । अत्रद्वीपसहशायतगजइतानां नवनभेद्विकशायत्राण्योत्तरविद्यो-
 नानि षट्कलाधिकानि ३०२०९५ आशाम स्यात् । घातकीसङ्घान्य
 महागजइतानामाशामो यथासरय त्रिघनाद्विकषट्पत्राण्योत्तरविद्यो-
 नानि ३५६२२७ नवनवकृतिनवनवषट्कोत्तरषट्पयोजनानि स्यु ५६९९५५

सोलेकट्टिचिसाट्टिगि णवेरुदुगदोणिण्डुरुदिणमदोणि ।
 देउत्तरकुरुचार जीवा थाण च जाणेज्जो ॥ ७५७ ॥

पोडरोरुपठिद्विषयके नौद्विरुपद्विकृतिनमो द्वे ।

देवोत्तरकुरुचारं जीवा थाणं च ज्ञातव्या ॥ ७५७ ॥

सोले । पुष्करार्वाल्पमहागजतानामायामो यथार्थं बोद्धरोरु
 त्रिद्विषयकोत्तरकपोजनानि १९२६११६ नवैकद्विकृपविद्विद्विद्विद्वि-
 सत्रिविषयजनानि स्यु २०४२२१९ देवोत्तरकुरुचारं जीवा थाणं च
 वश्यमाणवकारेण ज्ञातव्या ॥ ७५७ ॥

अथ वाचायानयनप्रकारं वाचानयनेनाह,—

वक्त्रात्वास त्रिरद्विष पदमे कुगुणिद्वे जुधे मेरु ।

जीवा कुरुम्म चाव गजद्वतायाममंलिद्वे होद्वि ॥७५८॥

वाचात्स्याधे त्रिरद्विष प्रथमे त्रिगुणिने गुणे मेरौ ।

जीवा कुरुं वाचा गजद्वतायाममंलिने मयि ॥ ७५८ ॥

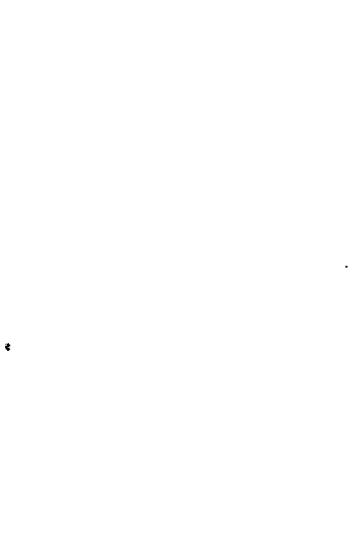
वक्त्रात् । वक्त्रात्स्याधे ५०० मद्रुतात्स्याधे ७२००० सि
 द्विने कुरुम् २५० पतद्विगणीद्वय ४३००० तत्र मेरुस्याधे १००००
 कुगु मयि कुरुम् २५० जीवा प्रथमं स्यात् । ५३००० उभयगजद्वतायामे
 ३०२०० १/११३००० १/११ मिद्विने सति कुरुम् २५० वाचो मयि
 ५०४२२१९ ॥ ७५८ ॥

मन्त्रिगिरिमुमिषामं अत्रगिष विद्वद्वयमवासादो ।

द्विद्वि कुद्विद्वयं मा सा अथ कुरुम्म वाचं च ॥७५९॥

मेरुद्विद्विद्वयं अत्रगिष विद्वद्वयं १/११३००० ॥

द्विद्वि कुद्विद्वयं मा सा अथ कुरुम्म वाचं च ॥ ७५९ ॥



अथ प्रकारांतरेण वृत्तविष्कम्भबाणयोरानयने कारणसूत्रमाह,—

दुग्गुणिसु कदिजुद् जीवावग्ग चउवाणभाजिए वट्ट ।
जीवा धणुकदिसेसो उप्पमचो तप्पद् घाण ॥ ७६३ ॥

द्विगुण्येषु कृत्तियुन जीवावर्गं चतुर्बाणभक्ते वृत्त ।

जीवा धनु कृत्तिशेष पद्भक्त तत्तद् बाणम् ॥ ७६३ ॥

दुग्गु । एषु $\frac{1}{2}$ द्विगुणाकृत्य $\frac{1}{2}$ — वर्गं गृहीत्वा $\frac{1}{2}$ ।
अत्र जावा ५३००० वर्ग २८००, समच्छेदीकृतं $\frac{1}{2}$ संयोग्य
 $\frac{1}{2}$ अस्मिन्नुगुणितवर्णनं १ मासवद्वर्तनविधिना
भक्ते कुम्भेनय वृत्तविष्कम्भ स्यात् । $\frac{1}{2}$ समच्छेदीकृते जीवा
वर्गे $\frac{1}{2}$ धनुकृतो $\frac{1}{2}$ अयनीय $\frac{1}{2}$ ।
पद्भक्तिभक्त्वा $\frac{1}{2}$ मल गृहीते $\frac{1}{2}$ कुम्भेनय बाण
स्यात् ॥ ७६३ ॥

अथ प्रकारांतरेण बाणानयने कारणसूत्रमाह,—

जीवाविकल्पमाण वग्गयिसेमस्स होदि जम्मूल ।
त विकल्पमा सोहय सेसद्धमिसु विजाणाहि ॥ ७६४ ॥

जीवाविष्कम्भयो वगविशेषस्य भवानि यामूळ ।

तन् वि कल्पान् गणय गणयमिषु विजानीहि ॥ ७६४ ॥

जीवा । जीवा वग १०, विष्कम्भ $\frac{1}{2}$ ।
वगण मध सम-उत् कृत्वा $\frac{1}{2}$ ।
पद्भयो गणयय वा मल सहाय — $\frac{1}{2}$ ।
तद्विष्कम्भान् १ धय १००० ।
१००० अस्म्य १ ३० एकं नात्र ॥ नवन २००० १५५ नजयन

वाङ्मेन ० तस्मिन्ना ००० ००० मन् मी कुरो^१ ॥ ७६५ ॥

अथ प्रकाशतो ग वृत्तिरिच्छमपयोगानयन कारणसूत्रमाह,—
 दुग्गुणिमुद्दिदधणुवर्गो वाणोणो अदिदो हवे यामो ।
 यासकदिसहिदधणुकदिवलम् मूलैधि वासमिमुमम ॥
 द्विगुणेपुहितानुर्गा वाणान आधनो मोन् व्याम ।

याममृनिमहितानु^१निदल्य मूत्रेणि व्याममिपुशेप ७६५
 दुग् १ ३५ २२५ ० द्विगुणाकृत्य ४५०० अनेन धनुर्व
 १३३००१ ॥ मावदपवर्तनविधिना मक्त्वा १७४१२८ शेषे २६०
 अथ उपरि पंच भिरपवर्तिते एवं ३३३ अत्र स्वांश समच्छेदेन मेरुदिना
 २६३५५९८ अस्मिन् समच्छिप्रत्राण २-३५ ऊनयित्वा २४३३०९८
 अर्धाकृत्य १३१६५४९ मने सति २११३३३० कुरो वृत्त्याम स्यत् ।
 समच्छेदेन स्वांश ३३३ युक्त त वृत्त्यास १३१६५४९ वर्ग गृहीत्वा
 १४७९९९९९९९९९ अत्र धनु कृते १३१७०९९००० ० र्व
 ६५८८९९५ ३६५ एकाशीत्या ८१ समच्छेद कृत्वा ५३३७०८५५५ ०
 सयोज्य २ १३७ ००६४४०१ मूल गृहीत्वा १४१९ ४९ अत्र
 व्यास १३१६५४९ हीन कृत्वा २-३५ अस्य हारमेकोनविंशतिर्न-
 वेति द्विधा १९१९ अत्रस्थनवाङ्केन ९ मने कुक्षेत्रस्य बाण स्था
 २३५ ३९ ॥ ७६५ ॥

अथ प्रकाशतरणे धनु कृतिजीवाकृत्योरानयने कारणसूत्रमाह,—
 इमुदलजुदविक्रमो चउगुणिदिसुणा हवे दु धणुकरणी ।
 वाणकदिं छहिं गुणिद् तत्थूणे होदि जीवकदी । ७६६ ॥
 इषुलपुतविष्कम चतुगुणितेपुग हते तु धनु करणी ।
 वणकृति पद्भि गुणित तत्रोने भवति जीवकृति ॥ ७६६ ॥

रस । १५ $\frac{१५००}{१११}$ दम्बित्वा $\frac{११३५}{१११}$ समानछेदेन $\frac{११३५}{१११}$
वृत्तविष्कम्भे $\frac{१३१५५४९०}{१७५१}$ योजयित्वा $\frac{१३१५७५५५०}{१७५१}$ एतच्चतुर्गुणितपुणा
 $\frac{१११००}{१११}$ गुणन गुण्यराशे $\frac{१३१५७५५५०}{१७५१}$ हार एकोनविंशतिनवेति १९।९
द्विधाइत्य गुणकारस्यैवचगुन्यानि ९००००० गुण्यराशेरमे सस्याप्य
१३१५७५९०००० गुणकारनवाक्रेन गुण्यहारनवाक्रेनपवस्यै शेषहारे
१९।९ परस्परगुणिते ३६१ कुरोधनुकृति स्यात् । $\frac{१३१७५५५०}{१७५१}$
बाणकृतिं $\frac{५९२५५५}{१११}$ बहभिर्गुणयित्वा $\frac{३१७५५५५०}{१११}$ एत
स्मिन् घनुकृतौ उचिते $\frac{११२५५५}{१११}$ कुष्प्रेत्रस्य जीवाकृति
भवति । एव इमुद्गीण विवरम इत्यादिसप्तगाथोक्तविधान भरतादिक्षेत्रेषु
हिमवदादिपर्वतेषु च कर्तव्य ॥ ७६६ ॥

अथ दक्षिणभरतविजयार्धभरतभेदवाणां बाणानयने करणसूत्रमाह,—
रूप्यगिरिहीणभरहृद्वासदल दक्षिणहृद्भरहृद्सू ।
णगजुद् णगसरमुत्तरभरहृद्भरहृदिसिदिषाणो ॥७६७॥

रूप्यगिरिहीणभरतयासदल दक्षिणार्धभरतेषु ।

नगयुते नगदा उत्तरभरतयुते भरतभेदवाण ॥ ७६७ ॥

रूप्य । रूप्यगिरिध्यास ५० भरतध्यासे ५२६।१ हीनयित्वा ४७६।१
अधीकृते २३८।१ दक्षिणार्धभरतेषु स्यात् । अत्र विजयार्धध्यासे ५० युते
सति विजयार्धबाण स्यात् ९८८।१ अत्रोत्तरभरतध्यास २३८।१ युन
५२६।१ सपूणभरतभेदवाण स्यात् । उत्तानां बाणत्रयाणां समानछेदेन
स्वकीयस्वकीयांश मलयेत् ५१ । १-१-१ ॥ ७६७ ॥

अथ हिमवदादिपर्वतानां हिमवदादिभेदवाणां च बाणानयने करण
सूत्रमाह —

हिमणगपट्टीवासामा दुगुणा भरहृदिदा य णिमहात्ति ।
ससबाणा णिमहमग मधिदहदत्ता विहृस्म ॥ ७६८ ॥

हिमनगप्रभृति-यास द्विगुण भरतो नितश्च निषघानम् ।

स्वम्बराणां निषघशर सविदेहदल विदेहम्य ॥ ७६८ ॥

हिम । एतावता शलाकानां १९० एतावति १००००० क्षेत्रे हिम
वदादिशलाकानां २१४।८।१६।३२ किमिति सपात्यापवर्तिते हिमवन्नम
प्रभृतीनां यास स्यात् । हिमवतो व्यास $\frac{२००००}{१९}$ - हिमवतक्षेत्रे
 $\frac{५०००}{१९}$ महाहिमवद्विरी $\frac{८०००}{१९}$ हरिक्षेत्रे $\frac{१६००००}{१९}$ निषघगिरौ
 $\frac{३२०००}{१९}$ तद्द्विगुण कृत्वा $\frac{५०००}{१९}$ । $\frac{८०००}{१९}$ । $\frac{१६०००}{१९}$ ।
 $\frac{३२००}{१९}$ । $\frac{६४०००}{१९}$ सर्वत्र भरतवाणप्रमाणे $\frac{१००००}{१९}$ अपनीते
सति हिमवदादीनां निषघपर्यत स्वस्ववाणां स्यु $\frac{३०००}{१९}$ ।
 $\frac{५०००}{१९}$ । $\frac{१५०००}{१९}$ । $\frac{१००००}{१९}$ । $\frac{६३००००}{१९}$ निषघवाण एव $\frac{६३००००}{१९}$
विदेह-यासां $\frac{६४००००}{१९}$ र्धन $\frac{३२००००}{१९}$ युक्तश्चेत् $\frac{१५००००}{१९}$ विदेहार्थम्य
वाणो भवति । एतान् वाणान् धृत्वा तत्क्षेत्रपर्वतानां जीवाकृति धनु
कृति इमुहीण विभक्तमामियादिना आनेत-या । तत्र दक्षिणभरते तावत्
समच्छिन्नेषु $\frac{५५३५}{१९}$ वृत्तविच्छेभे समच्छिन्ने $\frac{१९००००}{१९}$ हीनयित्वा
 $\frac{१८९५४५५}{१९}$ एतस्मिन्धनुर्गणितेषुणा $\frac{१८९५००}{१९}$ हते सति $\frac{३२७०८०९७५००}{१९}$
जीवाकृति स्यात् । तस्या मूलं गृहीत्वा $\frac{१८५३३४}{१९}$ स्वरारेण मने ९७४८
 $\frac{३३}{१९}$ दक्षिणभरतस्य शुद्ध-जीवा स्यात् । वाण $\frac{५५३५}{१९}$ कृति $\frac{३५५५३५}{१९}$
षडभिगुणयित्वा $\frac{१२३८५३७५०}{१९}$ एतस्मिन्धनुर्गणितेषु जीवाकृतौ योजिते
 $\frac{३२२३५५१३५}{१९}$ दक्षिणभरतस्य धनु कृति स्यात् । एत-मूलं गृहीत्वा
 $\frac{१८५५५५५}{१९}$ स्वरारेण मने दक्षिणभरतस्य धनु स्यात् ९७५६ । $\frac{३३}{१९}$ विज-
यार्थं तावत् समच्छिन्नेषु $\frac{५५३५}{१९}$ समच्छिन्नविच्छेभे $\frac{१५०००००}{१९}$ हीनयित्वा
 $\frac{१८९५४५२५}{१९}$ एतस्मिन्धनुर्गणितेषुणा $\frac{३३९५००}{१९}$ हते सति $\frac{५१२५३५५००}{१९}$
विजया-जीवाकृति स्यात् । अस्या मूलं गृहीत्वा $\frac{३०३६९१}{१९}$
स्वरारेण मने १०३९०३३ विजयार्थनगम्य जीवा स्यात् । वाण
 $\frac{५५३५}{१९}$ कृति $\frac{३५५५३५}{१९}$ षडभिर्गुणयित्वा $\frac{१२०९५३७५०}{१९}$ तत्र जीवा

कृतौ योजिते $\frac{२२६६५५१२५}{१५१२५}$ धनु कृति स्यात् तन्मूलं गहीत्वा
 $\frac{३०५१३३}{५१३३}$ स्वहारेण भक्ते $\frac{१-५५३१५}{५१३३}$ विजयार्धनगस्य धनु स्यात् ।
 उत्तरभरते समष्टिसेषु $\frac{१-५१}{५१}$ विष्कमे $\frac{११}{५१}$ हीनयित्वा
 $\frac{१६५}{५१}$ एतस्मिन्धनुर्गुणितेषुणा $\frac{५५५}{५१}$ हते सति $\frac{५५६०}{५१}$ जी
 वाकृति स्यात् । अस्या मूल $\frac{५१५५}{५१}$ स्वहारेण भक्त लब्ध $\frac{१४४७१५१}{५१}$
 उत्तरभरतजीवा स्यात् । बाण $\frac{१-५१}{५१}$ कृतिं $\frac{१-५१}{५१}$ षडभिर्गुण
 यित्वा $\frac{१-५१}{५१}$ एतस्मिन् जीवाकृतौ योजिते सति $\frac{५५}{५१}$ धनु
 कृति स्यात् । अस्या मूल $\frac{५१५५}{५१}$ स्वहारेण भक्ते $\frac{१४५०८१५}{५१}$
 उत्तरभरतस्य धनु स्यात् । हिमवत्पर्यवते इषु $\frac{१-५१}{५१}$ विष्कमे $\frac{११}{५१}$
 हीनयित्वा $\frac{१६५}{५१}$ एतस्मिन्धनुर्गुणितेषुणा $\frac{५५५}{५१}$ हत सति
 $\frac{३३५५००००००}{५१}$ जीवाकृति । अस्या मूल गहीत्वा $\frac{५१५५}{५१}$ स्वहारेण
 भक्ते लब्ध $\frac{१४५१३२}{५१}$ हिमवता जीवा स्यात् । बाणकृतिं $\frac{१-५१}{५१}$
 षडभिर्गुणयित्वा $\frac{५५}{५१}$ तत्र जीवाकृतौ युक्तं $\frac{११३}{५१}$ धनु
 कृति स्यात् । तस्या मूलं गहीत्वा $\frac{५५१५५}{५१}$ स्वहारेण भक्ते
 $\frac{२५२१०५१}{५१}$ हिमवत्त्रिरेधनु स्यात् । हिमवतभेदे इषु $\frac{१-५१}{५१}$ विष्कमे
 $\frac{११}{५१}$ अपनीय $\frac{१६५५}{५१}$ तस्मिन्धनुर्गुणितेषुणा $\frac{५५५}{५१}$ हते
 $\frac{५५५५००००}{५१}$ जीवाकृति स्यात् । अस्या मूलं गहीत्वा $\frac{५१५५}{५१}$
 स्वहारेण भक्ते $\frac{६७६७४१५}{५१}$ हिमवतत्रेयस्य जीवा स्यात् । बाणकृतिं
 $\frac{५५}{५१}$ षडभिर्गुणयित्वा $\frac{५५५}{५१}$ एतस्मिन्धनु जीवा-
 कृतौ युक्तं $\frac{५५५}{५१}$ धनु कृति स्यात् । अस्या मूलं गहीत्वा
 $\frac{५५५५}{५१}$ स्वहारेण भक्ते $\frac{१८७४०१५}{५१}$ हिमवतत्रेयस्य धनु स्यात् ।
 महाहिमवत्त्रिरेधनु $\frac{११}{५१}$ विष्कमे $\frac{११}{५१}$ हीनयित्वा $\frac{१६५५}{५१}$
 तस्मिन्धनुर्गुणितेषुणा $\frac{५५५}{५१}$ हते तु $\frac{५५५५००००}{५१}$ जीवा
 कृति स्यात् । अस्या मूलं गहीत्वा $\frac{५५५५००००}{५१}$ स्वहारेण भक्ते
 $\frac{५५५५००००}{५१}$ महाहिमवतो जीवा स्यात् । बाणकृतिं $\frac{५५५५००००}{५१}$

षडभिर्गुणित्वा ११० १११ - ११२ त्रिगुणित्वा जीवाकृतौ षडभि
 ११३ षडभिर्गुणित्वा ११४ अस्या मूले गृहीत्वा ११५
 स्वहारेण मन्त्रे ५७०० ३११ मन्त्रादिमन्त्रित्वा तु स्यात् ॥ ११६ ॥
 ११७ विष्कम्भे ११८ ११९ हीनयित्वा १२० अग्निधनुर्गुणित्वा
 तेषुणा १२१ १२२ हते तु १२३ जीवाकृति स्यात् ॥ अस्या मूले
 गृहीत्वा १२४ स्वहारेण मन्त्रे ७३० ०१ ३११ त्रिगुणित्वा जीवाकृतौ
 षडभिर्गुणित्वा १२५ षडभिर्गुणित्वा १२६ तस्मिन् तत्र जीवाकृतौ
 याजिते १२७ षडभिर्गुणित्वा १२८ अस्या मूले गृहीत्वा
 १२९ स्वहारेण मन्त्रे ४०० १११ त्रिगुणित्वा षडभिर्गुणित्वा
 निषधगिरौ इत्थं १३० विष्कम्भे १३१ हीनयित्वा १३२ अग्निधनु
 र्गुणितेषुणा १३३ १३४ हते तु १३५ जीवाकृति स्यात् ॥ अस्या
 मूले गृहीत्वा १३६ स्वहारेण मन्त्रे ९४१ ५६३ निषधगिरौ
 जीवा स्यात् ॥ षडभिर्गुणित्वा १३७ षडभिर्गुणित्वा १३८ तत्र
 जीवाकृतौ याजिते १३९ षडभिर्गुणित्वा १४० अस्या मूले गृहीत्वा
 १४१ स्वहारेण मन्त्रे १२४ ३४६ निषधगिरौ षडभिर्गुणित्वा
 विदेहार्धे इत्थं १४२ विष्कम्भे १४३ हीनयित्वा १४४ अग्निधनुर्गुणित्वा
 तेषुणा १४५ हते तु १४६ जीवाकृति स्यात् ॥ अस्या मूले गृहीत्वा
 १४७ स्वहारेण मन्त्रे १४८ विदेहार्धजीवा स्यात् ॥ षडभिर्गुणित्वा
 षडभिर्गुणित्वा १४९ तत्र जीवाकृतौ याजिते १५० षडभिर्गुणित्वा
 स्यात् ॥ अस्या मूले गृहीत्वा १५१ स्वहारेण मन्त्रे ल १५२ ११४
 विदेहार्धेषु स्यात् ॥ ७२८ ॥

अथ दक्षिणभारतादिश्वेत्तपत्ताना जीवाधनुषो प्रागानीतांक गायान-
 वकेनाह —

दक्षिणभरतु जीवा अडचउसगणवय हाति बारकला ।
 चाप छछकसगसयणवयसहम्म च एककला ॥ ७६९ ॥

दक्षिणभरते जीवा अष्टचतु मसनव भवति द्वादशकला ।

चाप षट्षट्टमससननवपहरं च एककला ॥ ७६९ ॥

दक्षिण । दक्षिणभरत जीवा अष्टचत्वार ससनवषोडशानि द्वादश-
कलाश्च १७४८३३ भवति । तच्चाप च षट्षट्टुनरससनसहितनवसहस्राणि
एककला च १७६६३३ स्यात् ॥ ७७९ ॥

षेपट्टे जीवा णमदुगसगदहसहस्सेगारकला ।

तेदालसगणमेव षण्णरसकला य तच्चाप ॥ ७७० ॥

विजयार्धान जीवा नभोद्विकससदशसहस्रैकादशकला ।

त्रिचत्वारिंशत् सप्त नभ एक पचदशरत्नश्च तच्चाप ॥ ७७० ॥

षेय । विजयार्धाने जीवा नभोद्विकससहितदशसहस्राणि एकादश-
कला च स्यात् १०७२०३३ तच्चाप त्रिचत्वारिंशत् सप्तनभ एक पचदश-
कलाश्च स्यात् १०७४३३३ ॥ ७७० ॥

मरहस्सते जीवा इगिसगचउचोदस च पचकला ।

चाप अष्टदुगपणचउरेक एकसरसकला य ॥ ७७१ ॥

भरतस्याते जीवा एक सप्त चतुश्चतुदश च पचकला ।

चाप अष्टद्विकर्षचतुरेक एकादशकला च ॥ ७७१ ॥

मरह । भरतस्याते जीवा एक सप्त चतुश्चतुदश पचकलाश्च
१४४७३३३ स्यात् । तच्चाप अष्टद्विकर्षचतुरेक एकादशकलाश्च
स्यात् । १४५२८३३ ॥ ७७१ ॥

हिमवत्तगत जीवा दुगतिगणचउदुग कला चूणा ।

चाप णभतियदुगपणवीससहस्र च चारिकला ॥ ७७२ ॥

हिमवत्तगत जीवा द्विकर्षचतुश्चतुदश च कला चाना ।

चाप नभत्रिद्विपचाव तिमहस्य च चतु कला ॥ ७७२ ॥

हिम । त्रिमात्रगणे ३११ द्विविनयनान्तर्गते द्विगुण्युत्प्रेक्षणात्
 स्यात् २१० ३२११ तत्रापि नम निर्विनागीहानि विनयगामि यत्र
 कृत्वाध स्यात् ० २३०१ ॥ ७७२ ॥

हेमवद्विमजीया तत्रमात्रमगति ऊणमोलकला ।
 धनुह णमात्रमग अटतिणिण विमसहियदशयकला ७७३
 हेमवतानिमजीया चा मात्रममय ऊणोदशय ।
 धनु नमधनु ममाष्ट्रीणि विशेषादिदशय ॥ ७७३ ॥

हम । हेमवतानिमजीया धनु सप्तसप्तत्रय द्विगुण्युत्प्रेक्षणात्
 स्यात् । ३७० ७४११ तदनु नमधनु सप्तत्रयाणि साधिवदशय
 स्यात् ३८७४०१ ॥ ७७३ ॥

महाहिमवचरिमजीया इगतिणवत्तिद्वयपच छककला ।
 तत्राय तियणवदुगसगवणसहम्म दसयकला ॥ ७७४ ॥
 महाहिमवचरमजीवा एकत्रिनत्रिनयपच षट्कला ।
 तत्राप त्रिनवद्विसप्तपचाश सहस्र दशकला ॥ ७७४ ॥

मह । महाहिमवतधरमजीवा एकत्रिनत्रिनयपचयोजना षट्कला
 स्यात् ५३९३११५ तत्राप त्रिनवद्विसप्तपचाश सहस्रयोजनानि
 दशकलाश्च स्यात् ५७२९३११ ॥ ७७४ ॥

हरिजीवा इगिणमणवतियसत्तयमिह कलाविसत्तरसा ।
 चाव सोलसणमचउसीदिसहस्र च चारिकला ७७५
 हरिजीवा एकनभोनत्रिसप्तक इह कला अपि सप्तदश ।
 चाप पौडशनमध्वतुरशीतिसहस्र च चतस्र कला ॥ ७७५ ॥

हरि । हरिवष जीवा एकनभोनत्रिसप्तयोजनानि इह सप्तदशकलाश्च

स्यात् ७३९० १२१ तद्यथा षोडशमधत्तुगशीतिसहस्रयोजनानि चतस्र
कलाभ स्यात् ॥ ८४०१६१५ ॥ ७७५ ॥

णिसहास्रसाणजीवा छप्पणइगिचारिणवयदोष्णिणकला
धणुपुष्ट छादालतिचउवीसेक्तं च णवयकला ॥ ७७६ ॥

निषधावसानमीवा षट्पंचैकधनुनवर्कं द्वे कते ।

धनु षष्ठ षट्चत्वारिंशत् त्रिचतुर्विंशत्येक च नव कला ॥७७९॥

णिसहा । निषधावसानमीवा षट्पंचैकधनुर्नवयोजनानि द्विकलाभ
स्यात् ९४१५६१२ धनु षष्ठ च षट्चत्वारिंशत् त्रिचतुर्विंशत्येकयोजनानि
चवकलाभ स्यात् ७२४३४६१२ ॥ ७७६ ॥

जीवदु विदेहमज्ज्ञे लकटा परिहदलमेधमवरद्धे ।

माहवचदृद्धरिया गुणधर्मप्रसिद्ध सध्वकला ॥ ७७७ ॥

जीवाद्द्वय विदेहमध्ये लभं परिधिदल एवमपरार्धे ।

माधवचद्वोद्धता गुणधर्मप्रसिद्धा सर्वकला ॥ ७७७ ॥

जीव । विदेहमध्ये जीवा धनुरित्येतद्वयं यथासंख्यं लक्षयोजनानि १ ल
जंबूद्वीपपरिधे ३१६२२७ को इद् १२८ अं १३ भा २ र्थयमाणं च
स्यात् १५८११४ एवमवैरावतावपरार्धेऽपि गुणो ज्या धर्मा धनु तयो
प्रसिद्धा पृथक्त्वा सर्वा कला योजनानां अंकात्तज्जया माधवचंद्रादिना १९
उद्युताभक्ता पमे गुणेषु धर्मं च प्रसिद्धा सर्वा कला माधवचंद्रेविद्येति
नोक्तता मन्वादिता ॥ ७७७ ॥

अथ जीवानां धनुषां च श्रुतिर्वा पार्वभुजं वाह,—

पुष्यपरजीवसेसे दलिद इद श्रुतिपात्ति नाम हवे ।

धणुदुगसेसे दलिदे पासभुजा दक्षिणपुतरदो ॥ ७७८ ॥

पूर्वापरजीवाशेषे दलिते इह चूलिका इति नाम भवेत् ।

धनुर्द्विकशेषे दलिते पार्श्वभुज दक्षिणोत्तरत ॥ ७७८ ॥

पुञ्ज । दक्षिणे मरतादौ उत्तरस्मिन्नेरावतादौ च पूर्वापरजीवयोराधिके
हीन शेषयित्वा दलिते शेषस्य चूलिकेति नाम भवेत् । पूर्वापरधनुषोर्द्वे
प्राग्वच्छेषयित्वा अर्धिते पार्श्वभुज स्यात् । एतदेव विवरयति—दक्षिणम-
तर्जावा ९७४८३३ विजयार्धजीवयो १०७२०३३, रविके, हीन शेष-
यित्वा ९७२ तदशे ३३ इतरांशस्य ३३ शोचनामावात् अंशानि
९७२ एक गृहीत्वा ९७१ समच्छेद कृत्वा ३३ अत्रेतराश ३३
मपनीय ७ स्वाशे ३३ मेलयेत् ३३ राशे ९७१ विपमत्वादेकमपनीय ९७०
अर्धयित्वा ४८५ अश ३३ चार्धयित्वा ३३ अपनीतेकमर्धितराश्यशत्वा-
इलयित्वा ३ इदमर्धितांश च ३३ परस्परहारगुणणेन समच्छेद कृत्वा ३३
३३ मेलयेत् ३३ एतावता विजयार्धचूलिका स्यात्, दक्षिणमरतचाप
९७६६३३ विजयार्धचापयो १०७४३३३ न्योन्य शेषयित्वा ९७७३३
प्राग्वदर्धाकृत्य ४८८३३ अशयो ३३३ प्राग्व-मेलने ३३ विजयार्धस्य
पार्श्वभुज स्यात् । एवमितरत्र चूलिका पार्श्वभुज चानेतव्या ॥ ७७८ ॥

अथ मरतेरावतक्षेत्रेषु कालवर्तनक्रम प्रतिपादयति,—

मरहेसुरेवदेसु य ओसप्पुस्सप्पिणित्ति कालदुगा ।

उस्सेधाउबलाण हाणीवद्धी य होंत्तिचि ॥ ७७९ ॥

मरतेषु ऐरावनेषु च अवसर्पिण्युत्सर्पिणीति कालद्वय ।

उत्सेधायुर्बलाना हानिवृद्धी च भवत इति ॥ ७७९ ॥

मरहे । पवमरतपु पचेरावनेषु चावसर्पिण्युत्सर्पिणीति कालद्वय
वर्तत । तत्रस्पर्जावानामुत्सेधायुर्बलाना यथासरयं हानिवृद्धी भवत इति
ज्ञातव्य ॥ ७७९ ॥

अथ कालद्वयमेदानां सज्ञा कथयति,—

सुसमसुसम च सुसम सुसमादी अतदुस्सम कमसो ।
दुस्सममतिदुस्सममिदि पढमो विदिपो दु विवरीया ७८०

सुपमसुपम च सुपम सुपमादि अतदुपम कमसो ।

दुपम अतिदुपम इति प्रथम द्वितीयम्बु विपरीत ॥ ७८० ॥

सुसम । सुपमसुपम सुपम सुपमदुपम सुपमसुपम दुपम अति
दुपम ६ इति क्रमेण प्रथमोऽवसर्दिणाकाल षड्भेद, द्वितीय उःसर्दिणी
काल एतद्वैपरीत्येन षड्भेद ॥ ७८० ॥

अथ षयमादिकालानां स्थितिप्रमाणमाह —

चदुतिदुगकोठकोठी चादालसहस्सवासहीणिकः ।
उदधीण हीणदल तत्तियमेत्तद्विदी ताण ॥ ७८१ ॥

चतुस्त्रिद्विकोटीकोटि द्वाचत्वारिंशत्सहस्रवर्षरानैक्यम् ।

उदधीना हीनदलं तावन्मात्रा स्थिति तेषा ॥ ७८१ ॥

चदु । तेषां षट्कालानां क्रमेण स्थिति चतुकोटीकोटिसागरापमा
त्रिकोटीकोटिसागरापमा द्विकोटीकोटिसागरापमा द्वाचत्वारिंशत्सहस्रवर्ष
रानैक्यकोटीकोटिसागरापमा । हीनस्य ४२००० दल उभयत्र सत्येकं
२१००० तावन्मात्रा च ज्ञानध्या ॥ ७८१ ॥

अथ षट्कालजीवानामायु प्रमाण निरूपयति,—

तस्थादि अत आऊ तिदुगेक्क पलपुध्यकोटी य ।
पीसहियसयं पीस पण्णरसा हाति पासाणं ॥ ७८२ ॥

सप्त दौ अने आयु विद्विक्कं पल्य प्पुक्कति ।

विशाधिकशनं विश प्पद्दश भवति ११णा ॥ ७८२ ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३८७ ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३८८ ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३८९ ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३९० ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३९१ ॥

इत्युक्तं श्रीमद्भागवतस्य ॥ १० ॥ ३८७ ॥

श्रीकृष्णस्य चतुर्भुजाय नमः ॥ ३८८ ॥

इत्युक्तं श्रीमद्भागवतस्य ॥ १० ॥ ३८९ ॥

श्रीकृष्णस्य चतुर्भुजाय नमः ॥ ३९० ॥

इत्युक्तं श्रीमद्भागवतस्य ॥ १० ॥ ३९१ ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३९२ ॥

जादुगुणेषु द्विजना मगमग अगुष्टहृग्मिदम् ।

अधिरधिरगदि कलागुणत्रायणर्दमणगद्वे तानि ॥ ३९३ ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३९४ ॥

अधिरधिरगतो जगुगुणयौवनदशनगद्वे यति ॥ ३९५ ॥

जादु । उक्तं श्रीमद्भागवतस्य ॥ १० ॥ ३९६ ॥

कलागुणवह्ने यौवनमगुण दशनगद्वे च प्रत्यङ् सप्त सप्त दिवस

तद्वपदीणमादिमसहृदिसठाणमनणाम बुडा ।

सुलहेसुपि णो तिक्ती तेसि पचकमयिमत्सु ॥ ३९७ ॥

तद्वपदीणमादिमसहृदिसठाणमनणाम बुडा ।

सुलहेसुपि णो तिक्ती तेसि पचकमयिमत्सु ॥ ३९८ ॥

तद्वप । तद्वपतीनामादिमसहननसस्थाने स्याता वद्ववपमनाराचहनन
समचतुरस्रस्थाने इत्यदे । ते चार्यनामयुता , तेषा सुलमेवपि ९चाश
विषयेषु न तृप्ति ॥ ७१० ॥

चरमे खुदजभवसा णरणारि विलीय सरदमेघ वा ।
मघणतिगामी मिच्छा सोहम्मदुजाइणो सम्मा ॥७११॥

चरमे सुतनूमशरान् नरनार्या विलीय शरमेष वा ।

भवनत्रिगामिन मिथ्या सौधमद्विधायिन सम्यच ॥७११॥

चरमे । आपुष्यावसाने सुतजुभयोवशापयासम्य नरनार्य शरकाह
मेघवद्वितीय तत्र मिथ्यादृष्टयो भवनत्रयगामिन सम्यग्दृष्टय सौधर्मद्वि
कयायिन स्यु ॥ ७११ ॥

अथ कर्मभूमिप्रवेशकम तत्रस्थमनूनां च स्वरूपं गाथात्रयेण प्रति
पादयति;—

पल्लट्टम तु सिद्धे तदिए कुलकरणरा पटिस्सुदिओ ।
सम्मद्विखेमकरधर सीमकरधर विमलादिवाहणवो ७१२

पल्याएमे तु सिष्टे तृतीये कुलकरनरा प्रतिधुति ।

सम्मति खेमकरधर सीमकरधर विमलदिवाहन ॥७११॥

पल्ल । तृतीयकाळे पयाहमभागेश्वरशिष्टे कुलकरा उचर्यते । ते के । मनि-
श्रुति सामनि खेमकर खेमधर सीमकर सीमधर विमलवाहन ॥ ७१२ ॥

चक्षरुम्मजसम्सी अद्विषदो चदाहओ मरुदेओ ।
होदि पसेणजिदको णाभी तण्णदणो वसहो ॥ ७१३ ॥

चक्षुष्यान् चक्षुषी अभिचद्र वंदाभ मरुदेव ।

वापि प्रमेनमिताह नाभिस्तसदनो वृषभ ॥ ७१३ ॥

हा हामा हामाधिशारा पंच पच पच श्यामलौ ।

चभुष्मद्विक प्रमेनचदाभी धवगे शेषा कनकनिमा ॥ ७९८ ॥

हा हा । प्रथमपंचमनव अरणाधिनो हाकारेण दृश्यति, तत परं पंच मनव हामाकारेण दृश्यंति, तदुपरिमपचमनव हामाधिकारेण दृश्यति । चभुष्मान् पचातीति द्वौ श्यामलौ प्रमेनचदाभी धवगे, शेषा सर्व कनक निमा ॥ ७९८ ॥

अथ तत्तन्काळे ते शिद्यमाणकृत्य गायाचतुष्येनाह,—

इणसासितारासायदविमय दडादिसीमचिण्हकर्वि ।

सुरगादिवाहण मिहमुहदसणणिम्भय घेंचि ॥ ७९९ ॥

इनशाशिताराध्यापदविमय दडादिमीमाविष्कृति ।

सुरगादिवाहन शिशुमुसदशाननिर्भय ब्रुवन्ति ॥ ७९९ ॥

इण । प्रथमो मनु प्रजानामिनशाशिशिदशानाज्जातमयं निवारयति, द्विती यस्तारादर्शनमय, तृतीय सुरमुगाद्भय सर्गेनेन, चतुसस्तावद्भय पुनर्दण्डा दिना निवारति, पंचमोल्मफलदायिनि कल्पद्रुमे कृष्ण दृष्टा सीमां करोति तथापि ब्रह्मते जाते षष्ठः सीमाचिह्नं करोति, सप्तमो गमनं सुरगादिवाहन करोति अष्टमं शिशुमुसदर्शनाभिभयं भवीति ॥ ७९९ ॥

आसीवादादिं ससिपहुदिहिंकेलिं च कदिचिदिणओचि पुत्तेहिं चिरजीवण सेदुवहितादि तरणविहिं ॥८००॥

आसीवादादिं शशिप्रभृतिभि केलिं च कतिचिदिनातम् ।

पुत्रै चिर जीवन सेतुवहिप्रादिभि तरणाविधिं ॥ ८०० ॥

आसी । नवमं शिशुनामागीर्वादादिकं शिक्षयति, दशमं कतिचिदि नपर्यंतं शशिप्रभृतिभि केलिं च शिक्षयति, एकादशं पुत्रैश्चिरजीवनमयं निवारयति द्वादशं जेनवतिप्रापित्तरणविधिं शिक्षयति ॥ ८०० ॥

सिम्पति जरायुतिदि णाभिविणासिद्रचायतठिदादि ।
चरिमो फलअरुदोमहिमुक्ति कम्मावणी तत्ता ॥८०१॥

शिक्षयति जरायुतिदि नाभिविनाश इद्रनापतठिदादि ।

चरम फलकृतोपविमुक्ति कर्मनिम्नत ॥ ८०१ ॥

सिक्क्य । त्रयोदशो जरायुतिदि शिक्षयति, चग्मा नाभितिदि शिक्ष-
यति इद्रनापतठिदादिदानमय निवारयति फलकृतोपविमुक्ति च शिक्ष-
यति, तत पर कर्मभूमिवन्ते ॥ ८०१ ॥

पुरगामपट्टणादी लाहियसत्थ च लोपयवहारो ।

धम्मो वि दयामूलो विणिम्मियो आदित्रह्णेण ॥८०२॥

पुरग्रामपट्टनादि लौकिकशास्त्र च लोकव्यवहार ।

धर्मोपि दयामूल विनिर्मित आदिब्रह्मणा ॥ ८०२ ॥

पुर । पुरग्रामपट्टनादिलौकिकशास्त्र च लोकव्यवहारो दयामूलो धर्मोपि
आदिब्रह्मणा विनिर्मित ॥ ८०२ ॥

अय चतुर्थकालसमुत्पन्नशलाकापुरुषानिरूपयति,—

चउवीसधारतिघण तित्थयरा छत्तिसडभरहवई ।

तुरिण काले हांति हु तेवठिसलागपुरिसा ते ॥ ८०३ ॥

चतुर्विंशति द्वादश त्रिघन तीर्थकरा षट्सडभरतपतय ।

तुर्य काले भवति हि त्रिषष्टिशलाकापुरुषान्ते ॥ ८०३ ॥

चउवीस । चतुर्विंशतितीर्थकरा द्वादश षट्सडभरतपतय सप्तविंश-
तिषष्टिसडभरतपतय इत्येते त्रिषष्टि ६३ शलाकापुरुषाश्चतुर्थकाले
भवति ॥ ८०३ ॥

अथ तीर्थहरशरीरो वेधनाह,—

धनु तणुतुगो तित्थे पचसय पण्ण दसपण्णकम ।

अट्टसु पचसु अट्टसु पासदुगे णवयसचकरा ॥ ८०४ ॥

धनुंवि तनुतुंग तीर्थे पचशत पचारादशर्षोचोकम ।

अट्टसु पचसु अट्टसु पार्श्वद्विकयो नव सप्तकरा ॥ ८०४ ॥

धनु । प्रथमतीर्थकरे तनुतुंग पंचगत ५०० धनुंवि, तत उपर्यट्टसु तीर्थकरेषु पंचाशत्यथागतान् ४५०।४००।३५०।३००।२५०।२००।१५०। १०० धनुंवि । तत पचसु तीर्थकरषु दशदशोतधनुंवि ९०।८०।७०।६०। ५० तनाट्टसु तायकरषु पचर्षवानधनुंवि तनुतुंग स्यात् ४५।४०।३५।३०। २५।२०।१५।१० पाद्वजिनो वर्द्धमानजिन इति दद्यात् तनुत्सेधो नव ९ सप्त ७ इति भवत ॥ ८०४ ॥

अथ तीर्थकराण्युप्य गाथादयेनाह,—

तित्थाऊ जुलसीदीधिहत्तरीसट्टि पणसु दसहीणं ।

धिगि पुध्वलकसमेत्तो जुलसीदि मिहत्तरी सही ॥८०५॥

तीर्थाय चतुरशीतिद्वाससतिषष्टि पंचसु दशहीन ।

द्व्येक पूर्वमात्र चतुरशीति द्वाससति षष्टि ॥ ८०५ ॥

तिथ्या । तीर्थकराणां क्रमेणायु चतुरशीतित्थपूवाणि ८४ द्वाससति न त्थपूवाणि ७२ षष्टित्थपूवाणि ६० । इत उपरि पंचसु तीर्थकरेषु पूर्वमादृश दश हीनत्थपूवाणि ५० त्थु । ४० त्थु । ३० त्थु । २० त्थु १० त्थु । ततो द्वित्थपूव २ मेकत्थपूर्व च स्यात् । इत उपरि चतुरशीति त्थपूवाणि ८४ द्वाससतित्थपूवाणि ७२ षष्टित्थपूवाणि ६० च ॥ ८०५ ॥

तीसदसएकलकरा पण्णयदीचदुगसीदिपणवण्ण ।

तीस दसिगिसहसस सय वावत्तरिसमा कमसो ॥८०६॥

त्रिंशद्दशैकलक्षानि पंचनवतिचतुरशीनिपचपचाशन् ।

त्रिंशत् दशैकसहस्र शत द्वासप्ततिमया क्रमश ॥ ८०१ ॥

तीस । त्रिंशत्क्षानि ३० दशलक्षानि १० एकलक्षानि । तत्र
उपरि पचनवतिसहस्राणि ९५००० चतुरशीतिसहस्राणि ८४०००
पचपचाशत् सहस्राणि ५५००० त्रिंशत्सहस्राणि ३०००० दशसहस्रत्रि
१०००० एकसहस्राणि १००० शत १०० द्वासप्तति ८२ एतानि क्रमशो
वर्षाणि स्यु ॥ ८०६ ॥

इदानीं तीर्थकराणामतराणि माथासप्तकेनाह —

उवहीण पण्णकोडी सतिवासडमासपक्खया पढम ।

अतरमेत्तो तीस दस णव कोडी य लक्खगुणा ॥ ८०७ ॥

उदधीना पचाशत्कोटि सत्रिवर्षाष्टमासपक्षक प्रथम ।

अतरमित त्रिंशत् दश नव कोटिश्च लक्षगुणा ॥ ८०७ ॥

उच । प्रथममतर पचाशत्कोटिलक्षसागरोपमाणि ५० को ल सा
त्रिवर्षा ३ अष्ट मासो ८ एकपक्ष १५ सहितानि, इत उपरि क्रमेण त्रिंशत्कोटि
लक्षसागरोपमाणि ३० दशकोटिलक्षसागरोपमाणि १० नवकोटिलक्षसाग-
रोपमाणि ९ को ल सा ॥ ८०७ ॥

दसदसमजिदा पचसु तो कोडी सायराण सदहीणा ।

छवधीससहस्ससमा छावहीलक्खएणावि ॥ ८०८ ॥

दश दश भक्तानि पचमु तत कोटि सागराणा शतहीना ।

पत्रिंशत्सहस्रमया पत्र्यष्टिभक्तेनापि ॥ ८०८ ॥

इदं । तत्र उपरि पचस्वतन्म्यु प्रमाणानि प्राक्तननवकोटिलक्षसागरोपमा-
ण्येव दश दश भक्तानि ९००० का सा ९००० को सा ९०० को

सा १० को सा १ को सा तत उपरि शत १०० सागरोपमे बहवि
शतिसहस्रोत्तर षट्षिंशतिसहस्रोत्तर षट्षष्टिलक्षवर्षेध हीनायेककोटि
सागरोपमाणि अतरं ज्ञातव्य १९९१९०० ॥ ८०८ ॥

चउवण्णतीसणवचउजलहितिप पहतिण्णिपाट्टण ।

पहम्म दल पादो सहस्सकाडिसमाहीणो ॥ ८०९ ॥

चतु पचाशत् त्रिंशत्तवचनुजलधिप्रय पल्पप्रयपादोन ।

पल्पम्य दल पाद सहस्रकोटिसमाहीन ॥ ८०९ ॥

चउ । तत उपरि चतु पचाश ५४ सागरोपमाणि त्रिंशत्सागरोपमाणि
नव ९ सागरोपमाणि चत्वारि ४ सागरोपमाणि पचत्रिंशदोनानि त्रीणि
सागरोपमाणि सा ३-५३ पल्पम्याध वः सहस्रकोटीवर्षहीन पल्पचतु-
र्धात् १-१००० को अंतरं स्यात् ॥ ८०९ ॥

यस्सा कोटिसहस्सा चउवण्णलपचलवरयस्साणि ।

तेसीदिसहस्समदो सगसयपण्णाससजुत्त ॥ ८१० ॥

वर्षाणि के तिसहस्राणि चतुष्पचाशत् षट् पचत्तवर्षाणि ।

ध्यशीतिसहस्रमत्त सप्तशतपचाशत्सयुत्त ॥ ८१० ॥

यस्सा । तत उपरि सहस्रकोटिवर्षाणि १००० को चतु पचाशलक्ष
वर्षाणि ५४ ल बहलभवपाणि ६ पचत्तवर्षाणि ५ सप्तशतपचाशत्सहि-
तानि ष्वशीतिसहस्राण्यत् उपरि अतरं ज्ञातं य ॥ ८१० ॥

सदलविसद् समातिप पक्खलमासूणमत्तिम त्तु ।

मोक्खतर सगाउगहीण तमिण जिणतरय ॥ ८११ ॥

सदन्त्विंशत् समाश्रय पथाष्टमासोनमत्तिम त्तु ।

माभातर म्बकायव्वहान तदिदं भिनानरं ॥ ८११ ॥

पश्यन्तुर्थादि षय पश्यमत वनुर्धोने पादपरकाञ्च ।

न हि सद्धर्म सुविधिन शार्यते समातरे ॥ ८१४ ॥

वृत् । पश्यन्तुर्थादि आदि ५ तावानेव षय एकपश्यमंतं तत पर
पश्यन्तुर्थाशोन यावत्पश्यपादावसानकालं, प ११२ १२ १३ १४ १५ १६ एतेषु
सुविधित पुष्पदंताक्षरभ्य शांतिनाथावसानेऽ समाप्त्यतरेषु वनश्रोतुचरिष्णु
नाममावात् सद्धर्मा नास्ति ॥ ८१४ ॥

अथ चक्रिणी नामान्याह,—

चकी भरहो सगरा मघव सणकुमार सतिकुथुजिणा ।

अरजिण सुभोममहापद्मा हरिवेणजयव्रह्मदत्तारवा ॥

चक्रिण भरत सगर मघवा सनत्कुमार शातिकुथुजिनी ।

अग्निन सुभोममहापद्मो हरिवेणजयव्रह्मदत्तारवा ॥ ८१५ ॥

चकी । भरत सगरो मघवान् सनत्कुमार शातिकुथुजिनः
अग्निन सुभोमा महापद्मो हरिवेणो जयो ब्रह्मदत्तारव । एते द्वादश
१० चक्रिण ॥ ८१५ ॥

एतेषां वर्तनाकाल गाथादयेनाह,—

भरहदु षसहदुकाले मघवदु धम्मदुगभतरे जादा ।

तिजिणा सुभामचकी अरमह्मिणतरे होदि ॥ ८१६ ॥

भरतद्वय षषभद्वयकाले मघवद्वो धम्मद्वयानरं जानी ।

तिजिना सुभोमचकी अरमः पारतरं भवति ॥ ८१६ ॥

भरह । भरतसगरा द्वौ वृषभाजनयो काले जाना मघवमनस्कमाग
नो धम्मशान्तिजिनयान्तं जाना इत पर शान्तिकुम्भराज्या जिना
अत्र स्वयमव । जनने वा । जनो । । म । अरमः शान्तिजनयान्त
भवति ॥ ८१६ ॥

महिदुमज्जे णयमा मुणिसुरइयणमिणित्तं नर इयमा ।
णमिदुयिहुर जयफ्फो घम्हो णमिदुगभात्तगा ॥८१॥

महिरयमज्जे नयमा मुनिदुयानमिणित्तं नर इयमा ।

नमिदुयिहुरे ययात्तया मसो नमिरयत्तरग ॥ ८१७ ॥

महि । मन्दिमुनिमुत्तमार्थं य नयमा मयात्तया जात मुनिमुत्तममिदि-
नयोरेतरे इशमा हरिणा जात, नमिनमिजिनयोरेतरे ययात्तया जय
नेमिपार्श्वमिनयोरेतरे मन्दिदुनात्तया जात ॥ ८१७ ॥

अथ शक्यगणो शरीरस्य यगमुत्तमे तदात्तमे न गयात्तदत्तः—

सन्ध सुयण्णयण्णा तद्धहुदओ धणूण पचमय ।

पण्णामूण सदल चादालिगिदालय ताल ॥ ८१८ ॥

मई सुयण्णया तद्देहोदया धनुषा पचशत ।

पंचाशदून सदल द्वाचत्वारिंशदेकचत्वारिंशत् चत्वारिंशत् ॥ ८१८ ॥

सन्धे । सर्व चक्रिण सुयण्णया तेषां देहोत्सेध क्रमेण धनुषा पचशत
५०० पचाशदून तदव ४५० इल ३ सहिता द्वाचत्वारिंशत् $\frac{१}{३}$ वल्ल-
हितेचत्वारिंशत् $\frac{२}{३}$ चत्वारिंशच्च ४० ॥ ८१८ ॥

पणतीस तीस अलदुसवीस पण्णरसगाउ चुलसीदि ।

चावत्तरिपुट्ठवाण पणतिगिवासाणमिह लक्खा ॥ ८१९ ॥

पचत्रिंशत् त्रिंशदष्ट द्वि ख्विंशति पचदशकमायु चतुरशीति ।

द्वासप्ततिपूर्वाणा पचत्रिकैक्वर्षाणामिह लपाणि ॥ ८१९ ॥

पण । पचत्रिंशत् ३५ त्रिंशत् ३० अष्टाविंशति २८ द्वाविंशति २२
विंशति २० पचदश १५ सप्त धनुषि भवति । इत पर तेषामायुष्यया
संरय चतुरशीतिपूर्वलक्षवर्षाणि ८४ पूल द्वासप्तति पूर्वलक्षवर्षाणि ७२
पचलक्षवर्षाणि ५ ल त्रिलक्षवर्षाणि ३ इल एकलक्षवर्षाणि १ ल ॥ ८१९ ॥

मघच्छरा सहस्रा पणणउदी घउरसीदि सष्टी य ।
तीस दसयं तिदयं सत्तसया बम्हदत्तस्य ॥ ८२० ॥

सप्तसरा सहस्रा पंचनवति चतुरशीनि षष्ठिश्च ।

त्रिंशन् दशक त्रिनय सत्तशतानि ब्रह्मदत्तस्य ॥ ८२० ॥

संख । पंचनवतिसहस्रवर्षाणि ९५००० चतुरशीतिसहस्रवर्षाणि
८५००० षष्टिसहस्रवर्षाणि ६०००० त्रिंशत्सहस्रवर्षाणि ३०००० दशसह
स्रवर्षाणि १०००० त्रिसहस्रवर्षाणि ब्रह्मदत्तस्य सत्तशतवर्षाणि ७००॥ ८२०७
अथ तेषां नवनिधिसंज्ञामाह —

कालमहाकालमाणवपिगलणसप्पपउमपांडु तदो ।
संसो णाणारयण णवणिहिआ देति फलमेद ॥ ८२१ ॥

कालमहाकालमाणवक विंगल नैसर्पपन्नपांडुस्तत ।

शम्भ नानारक्त नवनिधय ददति फलमेतन् ॥ ८२१ ॥

काल । कालमहाकालो माणवक विंगलो नैसप पन्न पांडुस्तत शसो
नानारक्तारय इति नवनिधय एतद्गमे बहयमाणं फल ददति ॥ ८२१ ॥

अथ नवनिधिभिर्दीयमानफलमाह,—

उडुजोग्गकुसुमदामप्पहुदिं भाजणयमाउहाभरण ।
गेह वत्थं धण्ण तूर बहुरयणमणुकमसो ॥ ८२२ ॥

ऋतुयाभ्यकुसुमदामप्रभृति भाजनायुधाभरण ।

गेह वस्त्र धान्य तूर बहुरत्नमनुक्रमश ॥ ८२२ ॥

उडु । ते निधयोनक्रमण ऋतुयाभ्यकुसुमदामप्रभृतिभाजनायुधमाभरणं
गेह वस्त्र धान्य तूर्य बहुरत्न च दधत ॥ ८२२ ॥

नय ननुं गणनां संनयनीकगनीय गताव

मणिगिहययदि पुनहो मयहयनुवई हर्षति ययहुं ।

मिगिगहे कामिगिमणिनम्माउहमेगिईउउतमता ॥ ८२३ ॥

मेव गृहणयति पुनः गतां हर्षे. गुती मर्षी गित्ता ।

भोगेत् शक्तिर्गमिगिनमापुवत् अभिर्दरुतमता ॥ ८२३ ॥

गोणि । मयनयि ययति इयति पुनया गतो यगो गुती ।
 गिगयार्थ मर्षी श्रीगते कादिगी नृत्त मणिधनानमि गतानि मर्षी ।
 मापुधमत् अभिर्दरुत् इयं ययत्तमि गतानि मर्षी ॥ ८२३ ॥

अप तेवां गतिगिशयमह,—

मधयं मणकुमारा मणरुमार सुभोम यम्हा य ।

मत्तमपुठयि पत्ता माकर मेमद्वरुजहरा ॥ ८२४ ॥

मयवान मनः कुमार मन कुमार सुधीय. ययय ।

मयमपुठयि पत्ता माकर मेमद्वरुजहरा ॥ ८२४ ॥

मधय । मयव न म । कुमारय मन कुमार स्वगमयत्त सुधीयो यम्हा
 तय सपमा उ वी प्रयत्त यया अयचक्रधरा मानमार ॥ ८२४ ॥

सायनमववादिणी नामान्याह —

तिविद्वदुविद्वसयम् पुनिसुत्तमपुरिससिंहपुरिसादी ।

पुडरियदत्त नारायण मि हा अउचक्रहरा ॥ ८२५ ॥

त्रिपुणद्विपुणस्वयम् पुनयात्तम पम्भामह पम्भादि ।

पडरीकत्त नारायण कृष्ण अभनक्रधरा ॥ ८२५ ॥

तिविद्व । त्रिपुण द्विपुण स्वयम् पम्भोत्तम पडरिसिंह पुरुषपुडरीक
 पम्भदन्तो नारायण कृष्णअनि नवाधचक्रधरा म्य ॥ प्रमगेन वरुशाहुदेव

वाच्यं च यथाप्युक्तं च— " अस्मिन् शोभो धनुष्यं मणि इतिगदा
 ११ । शनयात्वा इत् भावद्वयस्य सुदात्तं गदा ॥ " ८२५ ॥

अथ तेषां बलद्वयशुद्धयतिशुद्धयानां वचनं वाच्यम्,—

मेघादिपणसु हरिपण उद्वरदुगविरह मलिदुगमज्ज्ञे ।
 दत्तो अट्टम सुव्ययदुगविरहे णमिवालयो किण्ठो ८२६
 धेयोभ देवसु हरिपण पठ अरद्विकविरहे मलिद्विकमप्ये ।
 दत्ता अट्टम सुव्ययदुगविरहे नेमिकालम वृष्ण ॥ ८२६ ॥

नया । रूपे िनादिपणनायकरकात्रेषु त्रिपुहाद्य वंश भवति । पठ
 दुग्धपुट्टीकोऽप्रमानितायकरकारणे भवति, सुव्ययसो मन्मिमुनिमुत्तपामप्ये
 भवति, आभा नारायणे मुनिमुत्तनमिजिनयोर्विरहकात्रे स्यात् वृष्णात्
 नर्माऽवकात्र उच्यते ॥ ८२६ ॥

अथ बल, वचतिशुद्धयानां नामानि गायत्र्यदन ह,—

बलद्वया विजयाचलमुधम्मसुव्यहसुदसणा णदी ।
 तो णदिमित्त रामा पडमा उपरिं तु पटिसचू ॥ ८२७ ॥
 बलद्वया विजयाचलमुधममुपममुदशना नदी ।
 ततो नदिमित्त राम पड उपरि तु प्रतिशप्रव ॥ ८२७ ॥

बल । विजयोऽचलं मुधम मुपम सुदर्शनो नदी ततो नदिमित्तो राम
 पड इत्येते नव बलद्वया स्यु । इत उपरि तेषां प्रतिशप्रव कथ्यन्ते ॥ ८२७ ॥

अम्सग्रीआ तारय मेरयय णिशुभ कइडहत मट्ट ।
 बलि पहरण रावणया खचरा भूचर जरासधो ॥ ८२८ ॥
 अम्सग्रीव तारक मेरकथ निशुभ कम्पाता मधु ।
 बलि प्रहरण रावण खचरा भूचरा जरासध ॥ ८२८ ॥



अस्स । अश्वर्मावस्तारद्धो मेरुक्ख निशमो मनुक्केट्ठमो वड्ढि ग्हराणे
रावणध्देति सचरा मूचरो जरासध । इत्येते नव प्रतिवासुदेवा ॥८२८॥

अथ बलदेवादिनयाणामुन्नेषमाह,—

देहुदओ चापाण सीदी तिसु दसयहीण पणदाळ ।

णवदुगवीस सोळ दस बलकेसव ससत्तूण ॥ ८२९ ॥

देहोदय चापाना अशीति त्रिषु दशहीन पचचत्वारिंशत् ।

नवद्विक्विंशति षोडश दश बलकेशवाना सशनूणा ॥८२९॥

देहु । सशनूणा बलकेशवाना शरीरोत्सेधो यथामन्य अशीति ८०
चापानि, ततस्त्रिषु दशदशहीनानि ७०।६०।५० तत पचचत्वारिंशत्
४५ नवविंशति २९ द्वाविंशति २२ षोडश १६ दश १० धनूषि
भवति ॥ ८२९ ॥

अथ वासुदेवप्रतिवासुदेवानामायुष्यमाह,—

सम चुलसीदि बहत्तरि सट्ठी तीस दस लक्ख पणसट्ठी

वत्तीस बारेक सहस्समाउस्समन्द्वचकीण ॥ ८३० ॥

समा चतुरशीति द्वासप्तति षष्ठि त्रिंशत् दश लभाणि पचषष्ठि ।

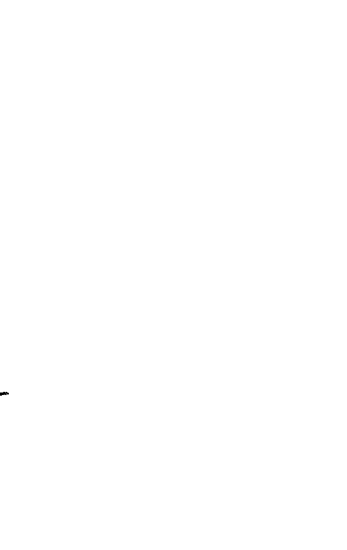
द्वात्रिंशत् द्वादशक सहस्र आयुष्यमर्धचक्रिणाम् ॥ ८३० ॥

सम । अर्धचक्रिणा वासुदेवानायुष्य चतुरशीतिलक्षवपाणि ८४ ल
द्वासप्ततिलक्षवपाणि ७२ षष्ठिन्धवपाणि ६० त्रिंशत्क्षवपाणि ३० दश
लक्षवपाणि १० पचषष्टिसहस्र ६५००० वपाणि द्वात्रिंशत्सहस्रवपाणि
३२००० द्वादशसहस्रवपाणि १२००० एकसहस्रवपाणि १०००
भवति ॥ ८३० ॥

इतो बलानामायुष्यमाह,—

सगसीदि दुसु दसूण सगतीस सत्तरससमा लक्खा ।

सगसट्ठीतीस सत्तर सहस्स बारसयमाउ घळे ॥ ८३१ ॥



अथ मन्त्रो ज्ञान विज्ञान इति ॥ —

मीम मङ्गमीम कदा महकरो कालो महाकाया ।
ता पुष्पुड गिरपमुहा अहामुहो णारदा एहे ॥ ८३६ ॥

मीमो मङ्गमीम हरे मङ्गुहो क नो मङ्गुहो ।

मीमो पुष्पुड गिरपमुहा अहामुहो णारदा एहे ॥ ८३७ ॥

मीमो मङ्गमीम कदा महकरो कालो महाकाया ।
ता पुष्पुड गिरपमुहा अहामुहो णारदा एहे ॥ ८३८ ॥

कालद्विषा कदाइ धम्मरदा वासुदेवगमकाया ।
मन्त्र गिरपगदि म त्रिगारागण गच्छति ॥ ८३९ ॥

कालद्विषा कदाइ धम्मरदा वासुदेवगमकाया ।

मन्त्र गिरपगदि म त्रिगारागण गच्छति ॥ ८४० ॥

कालद्विषा कदाइ धम्मरदा वासुदेवगमकाया ।
मन्त्र गिरपगदि म त्रिगारागण गच्छति ॥ ८४१ ॥

कालद्विषा कदाइ धम्मरदा वासुदेवगमकाया ।

मन्त्र गिरपगदि म त्रिगारागण गच्छति ॥ ८४२ ॥

कालद्विषा कदाइ धम्मरदा वासुदेवगमकाया ।

मन्त्र गिरपगदि म त्रिगारागण गच्छति ॥ ८४३ ॥

कालद्विषा कदाइ धम्मरदा वासुदेवगमकाया ।

मन्त्र गिरपगदि म त्रिगारागण गच्छति ॥ ८४४ ॥

कालद्विषा कदाइ धम्मरदा वासुदेवगमकाया ।

मन्त्र गिरपगदि म त्रिगारागण गच्छति ॥ ८४५ ॥

स्ततो गगनत्रय, ततश्चक्री ततः स्व ततश्चक्री ततो नमोद्विक्र ततश्चक्री तं
गगन ततश्चक्रधर ततः शून्यद्वयमित्येव स्थापनीय ॥ ८४४ ॥

दशगणपचकेसवच्छस्सुष्णणा पडमणामणमविष्णु ।
गयणाति केसव सुष्णणदु मुरारि सुष्णणत्तिय कमसो ॥

दशगगन पचकेशवा षट्शून्यानि पञ्चनामनमोविष्णु ।

गगनत्रय केशव शून्यद्वय मुरारि शून्यत्रय कमस ॥ ८४५ ॥

दस । तृतीयपक्तौ तु दशशून्यानि ततः पुरस्तात् पचकेशवा ततः
षट्शून्यानि ततः केशवस्ततो नमस्ततो विष्णुस्ततो गगनत्रय ततः केशव
स्ततः शून्यद्वय ततो मुरारिस्ततः शून्यत्रय इत्येव क्रमेण स्थापनीय ॥ ८४५ ॥

रुद्रदुग छस्सुष्णणा सत्त हरा गयणजुगलमीसाणो ।

पण्णर णभाणि तत्तो सच्चइतणओ महावीरे ॥ ८४६ ॥

रुद्रद्विक षट्शून्यानि सप्तहरा गगनयुगलमीशान ।

पचदशनभासि ततः सत्यनीतनय महावीरे ॥ ८४६ ॥

रुद्र । चतुर्थपक्तौ पुनः रुद्रो द्वौ ततः षट्शून्यानि ततः सप्त रुद्रास्ततो
गगनयुगल ततः ईशानस्ततः पचदशनभासि ततः सत्यकननय श्रीमहावी
रजिनकाले स्यात् । इत्येव क्रमेण स्थापनीय ॥ ८४६ ॥

अथ तीर्थंकरशरीरवणाद्विक्र तदश च गाथात्रयेणाह, —

पडमप्पहवसुपुजा रत्ता धवला हु चदपहसुविही ।

णीला सुपासपासा णेमीमुणिसुवया किण्हा ॥ ८४७ ॥

पद्मप्रभासुपुज्यौ रत्तौ धवलयौ हि चद्रप्रभसुविधी ।

नीलौ सुगार्ध्वगार्ध्वौ नेमिमुनिमुत्रतौ कृष्णौ ॥ ८४७ ॥

पडम । पद्मप्रभासुपुज्यौ रक्तवर्णौ चद्रप्रभपुत्रतौ धवलयौ सुगार्ध्वगार्ध्व
इति तौ नीलयौ नेमिमुनिमुत्रतौ कृष्णवर्णौ ॥ ८४७ ॥

सेसा सोलस हेमा वसुपुञ्जो महिणमिपासजिणा ।
 धीरो कुमारसयणा महवीरो णाहकुलतिलओ ॥ ८४८ ॥

शेषा, शोडश हेमा वासुपुञ्जो महिनेमिपार्श्वजिना ।

धरि कुमारधमणा महावीरो नाथकुलतिलक ॥ ८४८ ॥

सेसा । शेषा शोडशतीषकरा हेमवर्णा वासुपुञ्जो महिर्नमिपार्श्वजि
 नो धीराजिन इति पञ्च कुमारधमणा महावीरो नाथकुलतिलक ॥ ८४८ ॥

पासो दु उग्गवसो हरिवसो सुध्वओ वि णेमीसो ।

धम्मजिणो कुधु अरा कुरुजा इक्खाउया सेसा ॥ ८४९ ॥

पाश्वस्तु उग्रवश हरिवश सुनोपि नेमीश ।

धमजिन कुधु अर कुरुजा इक्खाव शेषा ॥ ८४९ ॥

पासो । पार्श्वजिनस्तुग्रवशा मुनिसुवतो नेमीश्वरश्च हरिवश धर्मकुंध्य
 रजिना कुरुवशाजा शपा इक्खाकुर्वशाजा ॥ ८४९ ॥

इदानीं शककल्किनोरुत्पत्तिमाह,—

पणहस्मयवस्म पणमास जुद गमिय वीरणिव्वुइदो ।

सगराजा ता कक्की चट्टणवतिपमहियसगमास ॥ ८५० ॥

पञ्चपञ्चशतवष पञ्चमासयुत गत्वा वीरनिवृत्ते ।

शकराजा तत्र कक्का चतणवत्रिकमधिकमममास ॥ ८५० ॥

पण । आचारनाथानेवत सकापाल पचानवपञ्चउत्तवषणि ६ ५ पञ्च
 मामयनातन गत्वा पञ्चान विक्रमाक १६राजा जायत । तत्र त्परि चतु
 णव यत १२११ २ वषाण मसमामाधिकानि गत्वा पञ्चात् कल्की
 जायत ॥ ० ॥

इदानीं का क्तन कृ प ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

सा उम्भगाहिमुहा चउम्भहा सदग्निवासपरमाऊ ।

चालीस रजआ जिदभर्मा पुच्छइ ममतिगण ॥ ८५१ ॥

त । तमपराध सोढुमक्षमोऽसुरपतिभ्रमद्रो धन्नायुधेन त राजानं निहति
स मृत्वा रत्नप्रभाया दुःसपाहोःकजलराशि भुक्ते ॥ ८५४ ॥

तम्भयदो तस्स सुतो अजिदजयसण्णिदा सुरारि त ।

सरण गच्छह चेलयसण्णाए सह समहिलाए ॥ ८५५ ॥

तद्भयत तस्य मुन अनितजयसन्नित सुरारि त ।

शरण गच्छति चेलकासज्ञया सह स्वमहिलया ॥ ८५६ ॥

तमय । तस्मादसुरपतिभयात्तस्य राज्ञ सुतोऽजितजयसन्नित चेलका-
सज्ञया स्वमहिलया सहित सुगारिशरण गच्छति ॥ ८५५ ॥

सम्महसणरयण हिययाभरण च कुणदि सो सिग्घ ।

पच्चकस दहणिह मुरकयजिणधम्ममाहण्य ॥ ८५६ ॥

सम्पद्दर्शनरत्न हृदयाभरण च करोति स शीघ्र ।

प्रत्य न दृष्ट्वा हृह मरकृतजिनभ्रममाहात्म्य ॥ ८५६ ॥

सम्म । स पत्न मरकृतजिनभ्रममाहात्म्य प्रत्य न दृष्ट्वा तत्र सम्पद्दर्श-
नरत्न हृदयभरण करोति ॥ ८५६ ॥

अ ३ उरमक १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

इदि पटिमहम्मउम्म वाम कव्वणिणत्थिम उरिमा ।

जलमथणा भाउम्मत्थि कक्का मम्मग्गम उणजा ॥ ८५७ ॥

त जलमह १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

जलमथन १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

इदि इत्तरायपिग्गा वारमत्त मात्त वारमत्त उरिमा ।
अजा अरिमात्त मात्तय धम्मविद्य पममणात्त ॥ ८५८ ॥

इदि इत्तरायपिग्गा वारमत्त मात्त वारमत्त उरिमा ।

अजा अरिमात्त मात्तय धम्मविद्य पममणात्त ॥ ८५८ ॥

इह इद्रराजशिष्यो वीरागः साधुश्चरम सर्वश्री ।

आर्या अग्निः श्रावकः षरश्राविका पंगुमेनापि ॥ ८५८ ॥

इह । तस्मिन्काले इद्रराजाचार्यशिष्यो वीरागश्चरम साधु आर्यका
सर्वश्री श्रावकोऽग्निलो षरश्राविका पंगुमेनापि ॥ ८५८ ॥

पचमचरिमे पक्षमासतिवासोवसेसए तेण ।

मुणिपढमपिडग्रहणे सण्णसण करिय दिवसतिया ॥ ८५९ ॥

पचमचरमे पक्षाष्टमासत्रिनेपे अशेषे तेन ।

मुनिप्रथमपिडग्रहणे संन्यसन कृत्वा दिवसत्रयं ॥ ८५९ ॥

पचम । ते चत्वार पचमकालचरमे एकपक्षे अष्टमासे त्रिनेपे अशेषो
सति तेन राज्ञा मुनिप्रथमपिडग्रहणे कृते सति दिवसत्रय संन्यसन
कृत्वा ॥ ८५९ ॥

सोहम्मे जायते कत्तियअमवास सादि पुव्वण्हे ।

इगिजलहिठिदी मुणिणो सेसतिए साहिय पल्ल ॥ ८६० ॥

सौधमे जायते कार्तिकामावस्या स्वातौ पूर्वाह्णे ।

एकमधिम्यितयो मुनय शेषत्रय साधिक पल्यं ॥ ८६० ॥

सोहम्मे । तत्र मुनय कार्तिकामावस्यां स्वातिनक्षत्रे पूर्वाह्णे एकसागरा
पमायुष सौधर्म जायते शेषाद्यस्तत्रैव साधिकपल्यायुषो जायते ॥ ८६० ॥

तव्वासरस्स आदीमज्झते धम्मरायअग्गीण ।

णासो ततो मणुसा णग्गा मच्छादिआहारा ॥ ८६१ ॥

तद्वासरस्य आदिमज्झते धर्मरामाग्गीना ।

नाश ततो मनुष्या नाना मत्स्याद्याहारा ॥ ८६१ ॥

तव्वासर । तद्वासरस्याशौ मध्ये जते च यथाधर्म धमस्य राजशोभे-
द्य नाश । तत परं मनुष्या नाना मत्स्याद्याहारा ॥ ८६१ ॥

अथ धर्मादीनां विनाशकारणमाह,—

पोग्गलअद्दरुक्खादो जलणे धम्म गिरासएण हदे ।
अमुरवइणा णरिद्वे सपलो लोओ हवे अधो ॥ ८६२ ॥

पुद्गलतिरोक्ष्यात् ज्वलने धम निराश्रयेण हते ।

अमुरपतिना नरेद्वे सकलो लोको भवेत् अध ॥ ८६२ ॥

पोग्गल । पुद्गलानामतिरोक्ष्यात् ज्वलने नष्टे निराश्रयण धर्मे हते अमु-
रपतिना नरेद्वि च हते सति एधात् सकलो लोकौषो भवेत् ॥ ८६२ ॥

अथ तत्रम्यर्जीवानां गत्यंतरगमनागमनस्वरूपमाह,—

एत्थ मुदा गिरयदुग गिरयतिरक्खादु जणणमेत्थ हवे ।
थोयजलदाइ मेहा मू निस्तारा णरा तिष्ठा ॥ ८६३ ॥

अत्र मृता निरपद्रव्य नरकतियाम्या जननमत्र भवेत् ।

स्तोकजलदायिनो मेधा मू निस्तारा नरास्तीमा ॥ ८६३ ॥

एत्थ । अत्र मृता नरकद्रव्य गच्छन्ति नान्यत्र, नरकानियमात्तेभ्यामता-
नामेवात्र जनने भवेत् नायेषां । अत्र मधा स्तोकजलदायिनो मू निस्तारा
नरास्तीमा ॥ ८६३ ॥

इदानीमतिदुष्कर्मचरमवननाक्रम गायचतुष्टयेनाह,—

सवत्तयणामणिलो गिरितरुभूपदुदि चुण्णण करिय ।
ममदि दिस्तत जीवा मरति मुच्छति उट्टते ॥ ८६४ ॥

सर्वकर्मनामानिल गिरितरुभूपभृतीनां चुण्णन कृत्वा ।

भ्रमन्ति दिशान्त जीवा भ्रियन् मुश्नि पणान् ॥ ८६४ ॥

सवत्तय । सवत्तकनामानिल दण्डान्त गिरितरुभूपभृतीनां सर्वकर्म
कृत्वा दिशान्त भ्रमन्ति । तत्राय जीवा म रान् भ्रियन् च ।

इह इद्रराजशिष्यो वीरगन् साधुश्रम सर्वत्रा ।

आर्या अग्निउ धारक वरध्रामिना पगुमेनापि ॥ ८५८ ॥

इह । तस्मिन्काले इद्रराजाचार्यशिष्यो वीरगन्श्रम साधु अयका
सर्वश्री आवक्रोऽग्निउ वरध्रामिना पगुमेनापि ॥ ८५८ ॥

पचमचारिमे पकरउमामतिवासोरमेसए तेण ।

मुणिपटमपिडगहणे सण्णमण करिय दिवसतिय ॥ ८५९ ॥

पचमचरम पलाष्टमामत्रिवप अवशये तेन ।

मनिप्रथमापत्प्रहण मन्यमन क्वा त्विमत्रय ॥ ८५९ ॥

पचम । तत्र चार पचमकालचरम एकपथ अष्टमाम त्रिवप अवशयो
मनि तत्र गता मुनिप्रथमपिटप्रहण कृते मनि दिवसत्रय सन्यसन
कृत्वा ॥ ८५९ ॥

साहम्म जायते कत्तिरअमराम मादि पुत्रण्हे ।

इगिजलहिठिदी मुणिणा मसतिण माहिय पहा ॥ ८६० ॥

माधम जयत सातकामावम्या स्वता पूवाह ।

एकत्रयिस्त्रिनया मनय गपत्रय माधिक पय ॥ ८६० ॥

साहम्म । तत्र मनय कानिकामावम्या स्वातिनश्चत्र पूवाह्ने एकसागरा
रमायण साधर्म जायत गपाव्यमत्रय माधिकपन्यायुवा जायते ॥ ८६० ॥

तत्रासरम्म आदीमज्झते धम्मरायअग्गीण ।

णामा तत्ता मणुमा णग्गा मच्छादिआहारा ॥ ८६१ ॥

तद्वामग्य आत्तिम यान उमराजागाना ।

नाश तना मनुया नग्गा मन्म्यायाहारा ॥ ८६१ ॥

तत्रासर । तद्वामग्यादा मध्य अत च यथाक्रम धमस्य रासोऽग्गी
श्च नाश । तत्र पर मन्या तदा मन्म्यायाहारा ॥ ८६१ ॥

उत्सर्पिणीप्रथमे पुष्करशीरघृतमृत्तसान् मेघः ।

समह वर्षति च नान् मन्नाद्याहारः ॥ ८६८ ॥

उत्सर्पिणीप्रथमकाण्डे मेघः पुष्करशीरघृतमृत्तसान् सम समाहं
वर्षति । मन्नाद्याहारः ॥ ८६८ ॥

उष्णं छटदि भूमीं छविं सणिद्धत्तमोसहि धरदि ।

षड्विडदागुम्मुतरु वट्टेदि जटादिशरसेहि ॥ ८६९ ॥

उष्णं त्यजति भूमिं छविं सन्निगच्छत्वमौषधिं धरति ।

षड्विडदागुम्मुतरु वट्टेदि जटादिशरसेहि ॥ ८६९ ॥

उष्णं । जटादिवर्षेर्भूमिरुष्णं त्यजति छविं सन्निगच्छत्वमौषधिं
धरति । षड्विडदागुम्मुतरु वट्टेदि जटादिशरसेहि । षड्विडदागुम्मुतरु
षड्विडदागुम्मुतरु वट्टेदि जटादिशरसेहि । षड्विडदागुम्मुतरु
षड्विडदागुम्मुतरु वट्टेदि जटादिशरसेहि ॥ ८६९ ॥

णदितीरगुहादिठिया मूसीयलमधगुणसमाहूया ।

णिग्गामिय तदा तीवा सद्व भमि भरति कम ॥८७०॥

नदीनाम्गताः सन्ति भगवन् गधगणममा न ।

निग्गामिय तदा तीवा सद्व भमि भरति कम ॥ ८७० ॥

णदि नदीनाम्गताः सन्ति भगवन् गधगणममा न ।
सद्व तदा तीवा सद्व भमि भरति कम ॥ ८७० ॥

इत्यानामसिग्गामिय तदा तीवा सद्व भमि भरति कम ॥ ८७० ॥

उत्सर्पिणीयवित्तिण सहम्मममम कलधरा कणय ।

कणयप्पहगायद्धयपगव तह णत्तिण पउम महपउमा ॥

खगगिरिगगदुवेडी गुदपिलादिं विमति ।
णति दया सचरसुरा मणुम्सजुगलादिबहुजीये ॥८

खगगिरिगगाद्वयवेदी क्षुद्राविलादिं विशति आमन्ना ।

नयनि दया सचरामुरा मनुप्ययुगलादिबहुजोवान् ॥ ८६

खग । विजयार्धगगासिंधूना वेदी तत्क्षुद्राविलादिक च न
प्राणिनो विशति सदया सचरा सुराश्च ३ ३ ३
नयति च ॥ ८५ ॥

छट्टमचरिमे हांति मरुदादी सत्तसत्त दिवसवही ।
अदिसीदरारविसपरुसगीरजधूमवरिसाओ ॥८६६॥

षष्ठचरमे भवति मन्दादय सप्तमस दिवसावधि ।

अतिशीतसागविषपम्पाग्निरजोधूमवर्षा ॥ ८६६ ॥

उट्टम । षष्ठकालचरमे मन्दादय सप्त सप्त दिवसावधि ८^०
ते के ? मरुदतिशीतसागविषपम्पाग्निरजोधूमवृष्टय ॥ ८६६ ॥

तेहितो सेसजणा णम्मति विमग्गिावरिसदबुमही ।
इगिजोयणमेत्तमधो चुण्णीकिज्जादि हु कालमा

तेभ्य शेषजना नश्यति विषाग्निवर्षात्त्वमही ।

एकयोजनमात्रमत्र चूर्णात्रियते हि काटवशात् ॥ ८६७ ॥

तेहि । तेभ्यो मयभ्यो वशेषजना नश्यति विषाग्निवर्षात्त्वमही
नमानमघ कालवशात् चूर्णाभवति ॥ ८६७ ॥

इदानीमु त्तिर्णीप्रवेशश्च न माथात्रयेणाह,—

उम्सपिण्णियपटमे पुक्कररगीरघदमिदरसा मेधा ।
सत्ताह धरसति य णग्गा मथादि आहारा ॥ ८६८ ॥

उत्सर्पिणीप्रथमे पुष्परक्षीरघृतामृतसान् मेघा ।

ससाह वर्षति च नग्ना मताद्याहारा ॥ ८६८ ॥

उत्स । उत्सर्पिणीप्रथमकाले मेघा उदकक्षीरघृतामृतरसान् सप्त ससाह वर्षति । तःकालम्या जीवा नग्ना मृत्तिकायाहारा ॥ ८६८ ॥

उण्ह छडदि भूमी छविं सणिद्धत्तमोसहि धरदि ।

बह्लिलदागुम्मुतरू बड्हेदि जलादिवरसेहिं ॥ ८६९ ॥

उण्ह त्यजति भूमि छवि सस्निग्धत्वमौषधिं धरति ।

बह्लिन्तागुम्मनरको वर्षने जगदिवर्षे ॥ ८६९ ॥

उण्ह । जगदिवर्षेर्भूमिरुण्ह त्यजति छवि सस्निग्धत्व धा यायोषधि च धरति । बह्लुद्यादयो वर्षत तत्र भूमौ पाद मुक्त्वा पसरती वृक्षा वृक्षाश्च येन पसरती लता कदाचिदपि स्थूलस्कधतामपानुवतो गुमा स्थूलस्क धयोग्या वृक्षा एते वर्षने जलादिवष ॥ ८६९ ॥

णदितीरगुहादिविया भूसीयलगधगुणसमाहूया ।

णिग्गमिय ततो जीवा सव्व भूमि भरति कम ॥ ८७० ॥

नदीतीरगुहादिभिन्ना भूशीतलगधगुणसमाहूता ।

निगत्य ततो जावा सर्व भूमि भरति कमेण ॥ ८७० ॥

णदि । नदीतीरगुहादिभिन्ना जावा भूशीतलगधगुणसमाहूता सप्त सर्व ततो निर्गत्य कमण भूमि भरति ॥ ८७० ॥

इदानीमुत्सर्पिणाद्वितीयकालादिवर्तनकममाह --

उत्सर्पिणीयधिदिण सहम्मसेसेसु कुलयरा कणय ।

कणयप्पहरायद्धयपुगव तह णलिण पउम महपउमा ॥

उत्सापर्णाद्वितीये सहस्रशेषेषु कुलकरा वनक ।

वनकप्रमराजध्वजपुगवा तथा नलिना पद्मा महापद्म ॥ ८

उस्त । उत्सर्पिणाद्वितीयकाले सहस्रत्रय अवाशिष्टे सति
भवति । त तु वनक वनकप्रम वनकराज वनकध्वज
स्तथा नलिनो नलिनप्रमो नलिनराजो नलिनध्वजो नलिनपुगव
पद्मप्रम पद्मराज पद्मध्वज पद्मपुगवो महापद्म इति षोडश
स्यु ॥ ८७१ ॥

अथ तेषा कृत्य तृतीयकालम्यत्रिषष्टिशलाकापुरुषाश्च

तस्मालसमणुहि कुलायाराणलपद्मपद्मुदिया होति ।
तेवाट्टिणरा तदिए सेणियचर पद्ममतिथ्यरो ॥

तत्षोडशमनुभि कुलाचारानलपद्मप्रभृतयो भवति ।

त्रिषष्टिनरामृतनाये श्रेणिकचर प्रथमर्तोभकर ॥ ८७२ ॥

तस्मालम् । ते षोडशमनुभि कुलाचारानलपद्मप्रभृतयो
तृताय काले पनन्विषष्टिशलाका पुण्या भवति । तत्र श्रेणिकचर
यकर स्यात् ॥ ८ ॥

महापद्मा सुरदया सुपामणामा सयपहा तुरियो ।
मन्वप्पमद् दयादीपुत्ता हाहि फुलपुत्तो ॥ ८७३ ॥

महापद्म मन्वप्प मन्वप्पनामा स्वयप्रम तय ।

सर्वा मन्वप्पना मन्वप्पना भवति मन्वप्प ॥ ८७४ ॥

महापद्मा मन्वप्प मन्वप्प मन्वप्पनामा स्वयप्रभस्तुप सर्वा
मन्वप्पना मन्वप्पना भवति

ति थयम्दक पाट्टिल जयकिर्ती भुणिपदादिमुद्वदओ
अरणिप्पायकसाया विउला किण्हचरणिम्मलओ ८७५

तत्र पंचमपष्ठकालो न प्रवर्तते । उत्सर्पिण्या तु तृतीयकालस्यादित आत्स्य
 तस्यैवातपर्यंत वृद्धिरेव स्यात् । तत्र चतुर्थपंचमपष्ठकाला न प्रवर्तते ॥८८३॥

पढमो देवे चरिमो णिरए तिरिण णरेवि छक्काला ।

तदियो कुणरे दुस्ममसरिसो चरिमुअहिदीपद्धे ॥८८४॥

प्रथम देवे चरम निरये तिरश्चि नरेवि षट्काल ।

तृतीय कुनरे दुपमसदश चरमोअधिदीपार्थे ॥ ८८४ ॥

पढमो । देवगतौ प्रथमकालो वर्तते, नरके चरमकालो वर्तते, तिरिण-
 तो मनुष्यगतौ च षट्कालो वर्तते, कुमनुष्यभोगमूर्तौ तृतीयकालो वर्तते,
 स्वयम्भूरमणदीपार्थे तत्समुद्रे च दुपमसदश कालो वर्तते ॥ ८८४ ॥

एव जब्दीपवर्गर्न परिसमाप्प लण्णाणरवणनमुअक्कममाणस्योर्मप्यरिणि
 प्राङ्कारस्वरूपनिरूपणयाजेन शेषदीपसमुद्रांतास्थितान् प्राङ्कारान् शेष-
 द्वयेन निरूपयति,—

अउगीउरसजुत्ता भूमिमुहे चार चारि अहोदया ।

सपल्लरयणप्यया ते चैकोसअगाढया भूमि ॥ ८८५ ॥

चतुर्गापुमयुक्ता भूमिमुहे द्वादश चार अहोदया ।

सक्कत्तमात्मकान्ने डिओशावगाग भूमि ॥ ८८५ ॥

अउ । चतुर्ग परम युक्ता भूमा द्वादशयाजेन यासा मुहे चतुर्पत्तनप्या
 सपल्लयणप्यया ॥ सक्कत्तमात्मकान्ने भूमि दिक्काशादयमवगाग
 डि

अत्तमयमत्तमाणा अत्तृग्गिअकयाइरम्ममिहरनुद्धा ।

दीवअवदाणमन पाणाग हांनि मअअध ॥ ८८६ ॥

अत्तमयमत्तमाणा अत्तृग्गिअकयाइरम्ममिहरनुद्धा ।

दीवअवदाणमन पाणाग हांनि मअअध ॥ ८८६ ॥

वज्र । वज्रमयमूर्धभागो वैद्व्यकृतः।तिरम्यशिरसयुता प्राकारा वेदिका
इत्यर्थः । द्विषानामुद्धर्षितामने तावन्न भवति ॥ ८८६ ॥

अथ तेषां प्राकाराणामुपरि स्थितवदिकां निरूपयति -

पापाराणं उवर्णि पृह मज्ज्ञे पउमवेदिषा हेमी ।

वेकोसपयसयधणुतुगा विस्थाप्या कमसो ॥ ८८७ ॥

प्राकाराणामुपरि पृषद् मध्ये पद्मवेदिका हेमी ।

द्विकोशपयानघनुमुगविस्तारा कमसा ॥ ८८७ ॥

पापाराणं । तेषां प्राकाराणामुपरि पृषद् पृषद् मध्ये द्विकोशोत्तुंगा
पंक्त्यनुगम्यासा हेमी पद्मवेदिकास्ति ॥ ८८७ ॥

अथ वेदिकांतद्वि स्थितवदिकां गायत्र्यनुष्ठेण निवेदयति,—

तिस्मे अतो वाहिं हेमसिखातलजुद् घण रम्म ।

वावी प्रासादोवि य चित्ता अस्थति तर्हि घाणा ॥८८८॥

सम्प्रा अत्रवदि हेमसिखातलजुद् वन रम्य ।

वाप्य प्रासादा अपि च चित्रा आमन तत्र वाना ॥ ८८८ ॥

तिरसा । ताया पद्मवेदिषाया अनर्वात्मनिल तन्वयन रम्भ वनमस्ति
तत्र चित्र वाप्य प्रासादाश्च सान व प्रम । १ । १ । १ । १ ।

वरमज्ज्ञजहण्णाण वावीण चाव विमद् वि प्राणा ।

पण्णासुण कमसा गाटा समवासदसभागा ॥ ८८९ ॥

वरम यन्वयाना वावीणा चावा वि प्राणा । १ । १ । १ । १ ।

पनाशदून कमसा गावा स्वक याम शमम । १ । १ ।

यित्वा ४५ तेन भक्तवा शेवे ३६ पचभिरपवर्तिते सति २२२२३ इमेके
 ऋदिनस्य जलवातहानिबुद्धिप्रमाण स्यात् । एवं लवणसमुद्रशिलायामितस्त
 तालद्रुपे च क्रमेण मध्यमशिलयोर्हानिबुद्धिक्रमो ज्ञातव्य ॥ ८९९ ॥

एव हानिबुद्धियुक्तस्य लवणसमुद्रस्य भूमुरभ्यासावाहः—

पुण्णदिणे अमवासे सोलङ्कारससहस्र जलउदओ ।
 वास मुहभूमि ए दसयसहस्रा य बेलकसा ॥ ९०० ॥

पूर्णादिने अमावास्याया षोडशशसहस्रं जलोदय ।

व्यास मुरभूम्यो दशमहस्र च द्विलक्ष्य ॥ ९०० ॥

पुण्ण । पूर्णिमादिने अमावास्यायां च यथासंख्यं षोडशसहस्रं १६०००
 मेकादशसहस्रे च ११००० लवणे जलोदय स्यात् तस्य षोडशसहस्रोदये
 मुरायासो दशसहस्रं १०००० षोडशसहस्रोदयस्य १६००० एतावदानौ
 १९००० पंचसहस्रोदयस्य ५००० किमिति सपारयापवर्त्य गुणयित्वा
 २५९६ स्वजागे भक्तवा ५० ३७९ अग्नि-मुसत्रवासे १०००० मुंज्या
 ६९ ३ इदमेकादशसहस्रा ११० ० दय मुरायास स्यात् । मुराया
 मस्त दिने स्यात्तत् ३ ॥

इव नो जवनीयस्य इति यथाशक्त्येन तत्र निर्वर्तितमाह,—

मुरवायासा जलही हाणिदस्तं मादपण मंगुणियं ।
 विममुन्चारमघ्राह जय इदरवि अंतरयं ॥ ९०१ ॥

यस्य च तस्य १० न न म्वायेन मंगुण्य ।

विममुन्चारमघ्राह जय इदरवि अंतरयं ॥ ९०१ ॥

मुरवा न न ६ तत्र च कानिदं मुर तदाशाकं ८८०
 इति न न म ग ३ १ विगतमत्रपारं यत् तदपुत्रेर्भुक्ति-

पापचक्रयोस्तिर्यगता स्यात् ॥ अमुमकार्य विवरयति—तन्वथ १ मुसे
 १०००० भमो २ ल शोधयित्वा १९०००० अर्धकृत्य ९५००० पथा
 देनाधपोजनोदयस्य १६००० एतावद्दानो ९५००० एक योजनोदयस्य
 किमिति संघात्पापवर्तिते ३३ एकपाजनोदयहानि स्यात् । एक १ योज-
 नोदयस्य एतावद्दानिचये ३३ एतावत् ८०० किमिति सपात्य ३३ । ८८०
 षोडशभिस्तिपगपवत्य ३३ । ५५ गुणयित्वा ५२२५ अत्र समुद्रवारभेज
 ३३०५६ अपनीय ४८९५ अत्रैक गृहीत्वा रविबिम्बेण ५६ समच्छेद कृत्वा
 ५५ अत्र बिम्बे अपनीति ३३ चंद्रांशुभ्योस्तिर्यगतरं स्यात् । तत्रात् एता-
 वद्गतो ३३ एकयोजनोदये एतावद्गतो ३३०५६ किमिति सपात्य चार
 क्षेत्रं ३३० रविबिम्बेन समच्छेदीकृत्वा योन्यं मेलयित्वा ३३०५६ एतद्धारस्य
 ९५ हारेण च १६ गुणयित्वा ३३३३६ भक्ते ८५५ ५५ शेष ५३३३३
 चंद्राणिधिजलधे जलोदय स्यात् । एतच्छदोदय ८८० अपनीति ८२४
 शेष ३३३३३ चंद्राणवोर्ध्वतरं स्यात् । सांप्रत रवस्तिर्यगतरादिक्रमानीयते ।
 एकपाजनादयस्य १ तटादेतावद्गतिरे ३३ एतावत् ८०० किमिति
 सपात्य षोडशभिस्तिपगपवत्य ३३ । ५० गुणयित्वा ४७५० अत्र समुद्र
 चार ३३०५६ अपनीति ४४१९३३ सति सूर्यार्णवतिरधानांतरं स्यात् ।
 चंद्रार्णवोर्ध्वतरे ८०४ शेष ३३३३३ अशीति ८० योजने अपनीत ७४४ ।
 ३३३३३ सूर्यार्णवोर्ध्वतरं स्यात् । अथ प्रसंगेन लवणसमुद्रसबधिसुयप्रणिधौ
 जलोदय सायते । रविबिम्बस्य व्यास ५६ द्विगुणीकृत्य ३३ तत्समच्छे-
 दीकृतं लवणयासे ३३३३३ — अपनयेत् । ३३३३३ — इदं सवर्तित-
 लभेजं स्यात् । द्वयोरतरयोरेतावति क्षेत्रं ३३३३३ — एकांतरस्य किमिति
 सपात्य द्वाभ्यामपवत्य ६ भक्ते ९९९९९ भा ३३ इदं लवणस
 मुदीयसुययोस्तरं स्यात् । अस्मिन्नर्धित ४९९९९ शेष ३३ इदं लवणसमु
 दीयसुयवर्धितं स्यात् । एतत्स समच्छेदीकृत्य स्वांशेन मलयित्वा
 ३३ पथाद्तावदायाम एकपाजनादयश्चत एतावदायाम

३०५९९७५ किमिति सपात्य हारस्य हारेण संगुण्य $\frac{४८७९९९९}{५७९९५}$ मन्वे
 ८४०० शे $\frac{५७९९५}{५७९९५}$ सतीद लवणसमुद्रीयसूर्यप्रणिधौ जगोदर
 स्यात् ॥ ९०१ ॥

इदानीं पाताळानामतरालं निरूपयति,—

मज्झिमपरिधिचउत्थ विवरमुह तपि मज्झामुहमन्त्रं ।
 सयगुणपणघणहीण तं सयच्छब्दसिभाजिदे विरह ॥ ९०२ ॥

मध्यमपरिधिचतुर्थ विवरमुहं तपि मध्यमुरामर्ष ।

शतगुणपचनहीन तत् शतपदिशभाजिते विरह ॥ ९०१ ॥

मज्झिम । लवणसमुद्रस्य मध्यव्यासस्य ३ लक्ष्युत्परिधौ ९ ल
 चतुर्भिर्मत सति दिग्गतपाताळानां मुलामुगघातक्षेत्रं स्यात् २२५०००
 इदं दिग्गतमर्ष्यं १ ल क्षेत्रदिग्गतपाताळयोर्मर्ष्यांतरं स्यात् २२५००० एत
 द्द्वयं दिग्गतमुहं १०००० क्षेत्रं तयो पाताळयामुगघोरेतरं स्यात् ९१५०००
 एतदेव त्रिदिग्गतपाताळमुहं १००० हीनं २१५००० मर्षिणं चत्तुर्विदि
 ग्गन्त्यानं त्रयामसयांतरात् तत्रं स्यात् १७००० एतस्मिन् पुन शतगुणि
 लवणचनं १०५० ईने कृत्वा १२५०० एतस्मिन् वर्द्धिशा यमरानेन १२६
 मर्षि एतं त्रिदिग्दिग्गतपाताळानां यत् पाताळमनांतरं स्यात् ७५० ॥ ९०२ ॥

अनन्तं लवणादुद्धरं पाताळानां मत्तानां विमानमन्वयां स्यान्वप्यत्र
 १०१ ॥

ब्रह्मं इह बुजगविमाणाण महत्समाणि पाहिर सिहर ।

अन चात्रमहि अहर्षाम वाडात्स्य लवण ॥ ९०३ ॥

१०१ ॥ १०१ ॥ १०१ ॥ १०१ ॥ १०१ ॥ १०१ ॥

१०१ ॥ १०१ ॥ १०१ ॥ १०१ ॥ १०१ ॥ १०१ ॥

रिमजलोदययोयमि जलप्रमित्तत्तद्दीपोत्रय जलादुपरि ते द्वीपा सन्निदिष्टा
 षड्योजनोदया तदेकयोजनमपि जलगतोदये मिलिते सर्वोदय स्यात् ।
 लब्ध ९० शे ३६ । ९० शे ३६ । ९९ शे ३६ । १०८ शे ३६ एवमुक्त-
 विधान सर्व कौस्तुमादिष्वपि दृष्टव्यम् ॥ ९१५ ॥

इदानीं तेषु भोगभूमिषु उत्पन्नानी मनुष्याणामाकृतिं तत्स्थान मायान-
 चकेनाह-
 एगुरुगा लगलिगा वेषणगा भासगा य पुञ्वादी ।

सङ्कुलिकण्णा कण्णप्पावरणा लवकण्ण ससकण्णा ९१६

एकोरुका लागलिका वैशाणिका अमापका च पूर्वादिषु ।

शङ्कुलिकर्णा कर्णप्रावरणा लवकर्णा शशकर्णा ॥ ९१६ ॥

एगुरु । एकोरुका लागलिका पुञ्जवत इत्यर्थं वैशाणिका शृंगिण
 इत्यर्थं अमापणा एते यथासुरय पूर्वादिदिक्षु तिष्ठति । शङ्कुलिकणा
 कर्णप्रावरणा लवकर्णा शशकर्णा एते विदिक्षु तिष्ठति ॥ ९१६ ॥

सिंहस्ससाणमहिसवराहमुहा वग्घघूयकपिवदणा ।

सप्तकालमेसगोमुहमेघमुहा विज्जुदप्पाणिमवदणा ९१७

सिंहाश्वश्वामहिपवराहमुखा व्याघ्रमुक्कपिवदना ।

सप्तकालमेपगोमुलेमेरुमुखा विद्युदर्पणेमवदना ॥ ९१७ ॥

सिंह । सिंहमुखा अश्वमुखा शुनकमुखा महिपमुखा व्याघ्रमुखा
 भूकवदना कपिवदना इत्यष्टौ ८ सप्तमुखा कालमुखा मेघमुखा गोमुखा
 विद्युददना दर्पणवदना इमवदना इत्यष्टौ ८ ॥ ९१७ ॥

सङ्कुलिकण्णादी सिंहवदण्णरपमुहा ।

अतरे णेया ॥ ९१८ ॥

रिजलोदययोयोगि जलप्रमिततर्हीपोदय जलादुपरि ते द्वीपा सर्वोदिका
 एकयोजनोदया तदेकयोजनमपि जलगतोदये मिलिते सर्वोदय स्यात् ।
 लब्ध ९० शे ३६ । ९० शे ३६ । ९९ शे ३६ । १०८ शे ३६ एवमुक्त-
 विधान सर्व कौस्तुमादिष्वपि दृष्टव्यम् ॥ ९१५ ॥

द्वानीं तेषु मोगभूमिषु उत्पन्नानां मनुष्याणामाकृतिं तत्स्थान गापारं
 चक्रेनाह-
 एगुरुगा लगलिगा वेसणगा मासगा य पुञ्वादी ।

सकुलिकण्णा कण्णप्पावरणा लबकण्ण ससकण्णा ९१६
 एकोरका लागलिका वैषाणिका अमापका च पूर्वादिषु ।

शम्कुलिकर्णा कर्णप्रावरणा लबकर्णा शशकर्णा ॥ ९१६ ॥

एगुरु । एकोरका लागलिका पुच्छवत इत्यर्थं वैषाणिका शुभिण
 इत्यय अभाषणा एते यथासस्य पूर्वादिदिश तिष्ठति । शम्कुलिकर्णा
 कणप्रावरणा लबकर्णा शशकर्णा एत विदिशु तिष्ठति ॥ ९१६ ॥

सिंहसमाणमहिमवराहमहा उग्रधूयकपिवदणा ।
 झमकालमसगामुहमघमुहा विज्जुदप्पाणिभवदणा ९१७

सिंह । सिहसमा मविमवा हमावा यात्रापरपिवदना ।

उग्रकालमेपगामुवमघमुवा विज्जुदरणभवदना ॥ ९१७ ॥

सिंह । सिहसमा अत्रमवा पुनकमसा महिममुसा व्याघ्रमुसा
 उग्रवदन कपिवदना इ यथा / उग्रमसा कालमुसा मेषमुसा गामुसा
 मघमघ उग्रवदना उग्रवदना भवदन इत्यर्थो ८ ॥ ९१७ ॥

अग्निदिमादी सकुलिकण्णादी सिंहवदणणरपमुहा ।
 एगुरुगमकुलिसुद्विपहर्णा अत्र पण ॥ ९१८ ॥

माणिक्यद-दिगम्बरजैनग्रथमालामिति ।

(प्रथमकारिणी सभाके सख्य ।)

संस्कृत-शिलालिपि

- १ सा नाइय संठ स्वरूपणन्द हुकुमवन्द ।
- २ शय बहादुर ,, निनाकचन्द कन्याणमल ।
- ३ आकारजी इरनुगण्ड ।
- ४ सा शास्त्रसंग्रहणी समान ।
- ५ ही । ३ नमिर । ॥ सांगण्ड ।
- ६ मि लल गद प्रमानक परीस पल सी इ ।
- ७ स ६ म भगवानराम जीणी ।
- ८ लल गद । नरपरायणी ।
- ९ नल गद । नल गद ।
- १० नल गद । नल गद ।
- ११ नल गद । नल गद ।
- १२ नल गद । नल गद ।
- १३ नल गद । नल गद ।
- १४ नल गद । नल गद ।
- १५ नल गद । नल गद ।
- १६ नल गद । नल गद ।
- १७ नल गद । नल गद ।
- १८ नल गद । नल गद ।
- १९ नल गद । नल गद ।
- २० नल गद । नल गद ।